हास्य-मन्दाकिनी

नारायणप्रसाद जैन

भारतीय ज्ञानपीठ काशी

समर्पण

परम सौभाग्यवती श्रीमती नीलमभट्ट बी०ए०

एवं

कविवर श्री कालिदास भट्ट

को

सप्रेम

आमुख

श्री नारायणप्रसाद जैनकी प्रसिद्ध सुभाषित-संकलन कृति 'ज्ञानगंगा' से हिन्दी पाठक सुपरिचित हैं। ज्ञानगंगाके दोनो भाग भारतीय ज्ञानपीठसे प्रकाशित हुए हैं। इस बीच लेखककी दूसरी कृति 'सन्त विनोद' भी यहीं से प्रकाशित हो चुकी है। दोनों कृतियाँ 'सत्साहित्य' की कोटिमें ही नहीं आतीं, सत्साहित्यका व्यावहारिक मानदण्ड भी प्रस्तुत करती हैं।

लेखककी यह नयी कृति 'हास्य-मन्दाकिनी' उनके अनेक वर्षोंके परिश्रमका फल है। हास्य, व्यंग्य, विनोदकी और लतीफ़ों और चुटकुलोंकी हिन्दीमें बीसियों पुस्तकें हैं। किन्तु 'हास्य-मन्दाकिनी' इनमें 'सर्वश्रेष्ठ' की संज्ञा पायेगी, इसमें हमें तनिक भी सन्देह नहीं। इस विश्वासके दो कारण हैं—एक तो यह कि श्री नारायणप्रसादमें अद्भुत सूझ और सुरुचि है और दूसरा यह कि संकलनोंके श्रमके लिए उनमें पर्याप्त धैर्य और परिश्रमकी क्षमता है। 'हास्य-मन्दाकिनी'में एक अन्य विशेष गुण भी प्रमुख है जो इस संकलनको सप्राण बनाता है—लेखक बातको सजीव ढंगसे कह सकता है, उसे मालूम है कि किसी विनोद-वार्ताका या व्यंग्यका मर्म-स्थान कौन-सा है और उसकी प्रतीति पाठकको किस प्रकार करायी जा सकती है। अच्छेसे-अच्छा व्यंग्य विनोद या चुटकुला प्रभावहीन और लचर हो जाता है यदि उसकी मूलभूत विशेषताको कथाके ठीक स्थलपर ठीक ढंगसे न रखा जाये। लतीफ़ा कहना या व्यंग्य-विनोदपूर्ण घटना या वार्ता-कथाको प्रस्तुत करना दुधारी तलवारसे खेलना है। यदि उसकी काट ठीक स्थानपर नहीं पड़ी तो उलटकर वह प्रयोक्तापर ही प्रहार करती है। 'हास्य-मन्दाकिनी' का प्रत्येक व्यंग्य-विनोद और चुटकुला अपने आपमें एक सम्पूर्ण स्फुरण और पुलक है। भाषामें ऐसा मिठास है, महा-

विनोद-वृत्ति

"अगर मेरे जीवन में विनोद-वृत्ति न होती तो मैं आत्महत्या कर लेता।"

—महात्मा गाँधी

विषयानुक्रमणिका

धर्म और धार्मिक

दर्शन और दार्शनिक

विषयानुक्रमणिका

कलाकार

लेखक

शिक्षण

नौकरी

दूकानदार

विषयानुक्रमणिका

यात्रा

माल और मालिक

रंगशाला

विषयानुक्रमणिका

व्यसन

हास्य-मन्दाकिनी

मूर्ख

वकील

डॉक्टर

हास्य-मन्दाकिनी

राजनीति

सिपाही

वक्ता

हास्य-मन्दाकिनी

महापुरुष

मित्र

प्रेम

स्त्री

हास्य-मन्दाकिनी

शादी

दम्पति

बालक

हास्य-मन्दाकिनी

घरेलू

परिभाषाएँ

विविध

विषयानुक्रमणिका

धर्म और धार्मिक

मन्दिर-प्रवेश

अछूतोद्धारक वक्ता : "जिस मन्दिरमें मुसलमान जा सकते हैं, ईसाई जा सकते हैं, कुत्ते जा सकते हैं, गधे जा सकते हैं,........"

एक अछूत श्रोता : "ऐसे मन्दिरमें मन्दिर-प्रवेशके विरोधी खुशीसे जायें।"

रोनी शक्ल

एक प्रसिद्ध उपदेशक ईसाई-धर्म-प्रचारकोंकी एक सभामें बोल रहा था, "जिस विषयपर आप प्रवचन करें उसके अनुरूप अभिनय करनेका बड़ा महत्त्व है। मसलन् जब आप स्वर्गका ज़िक्र करें तो आपका चेहरा देदीप्यमान हो जाना चाहिए और स्वर्गीय प्रकाशसे दमक उठना चाहिए, आपके नेत्रोंसे ज्योति बरसने लगनी चाहिए; लेकिन जब आप नरकका वर्णन करने लगें तब तो केवल आपके रोज़मर्राके चेहरेसे काम चल जायेगा।"

प्रार्थना

लिटिल क्रिस(प्रार्थनाके अन्तमें) : "और प्रभो, कृपा करके विटामिनोंको पूनी और पालकके बजाय बिस्कुट और मिठाईमें भर दे ! आमीन !"

कुंजी

"पादरी साहब, क्या ही अच्छा होता यदि स्वर्गकी कुंजी आपके पास होती, तब आप मुझे अन्दर आ जाने देते !"

"तुम्हारे हक़में यह अच्छा होता कि 'दूसरे स्थान'की कुंजी मेरे पास होती, तब तुम्हें बाहर निकल जाने देता।"

मूर्खका धन

"आज पादरी साहबने बड़े अविवेकसे काम लिया !"

"क्यों, क्या बात हुई ?"

"उन्होंने चन्दा इकट्ठा करनेसे पहले ही 'मूर्खका धन अधिक देर नहीं टिकता' विषयपर प्रवचन शुरू कर दिया !"

जान बची

तीन स्कॉच किसी इतवारकी सुबह किसी गिरजाघरमें थे। प्रवचनके बाद वहाँ पादरी साहबने किसी सत्कार्यके लिए चन्देकी पुरज़ोर अपील की और पूर्ण आशा दर्शायी कि मजमेमें-से हरेक कमसे-कम एक डॉलर तो देगा ही। किन्तु चन्देकी थाली ज्यों-ज्यों नज़दीक आती गयी, स्कॉच-जन बहुत 'बेचैन' होते गये—यहाँतक कि उनमें-से एक बेहोश हो गया और बाक़ी दो उसे उठाकर बाहर ले गये।

शुक्र है

एक पादरीने प्रवचनके बाद चन्देके लिए अपना टोप घुमाया। कुछ देरके बाद उनका शिष्य टोप लेकर वापस आ गया। मगर उसमें एक पाई भी नहीं थी।

पादरी : "शुक्र है परवरदिगारका कि मेरी टोपी सही-सलामत आ गयी !"

बहु-जननी

पादरी : "आपके इस सुन्दर शिशुकी उम्र क्या होगी ?"

मां (सगर्व) : "पाँच हफ्ते !"

पादरी : "यह आपका सबसे छोटा बच्चा है न ?"

खुदा मालूम !

बेटा : "पिताजी, गुरुजी कहते थे कि हम यहाँ दूसरोंकी सेवा करनेके लिए हैं ?"

बाप : "हाँ बेटा।"

बेटा . "और दूसरे किस लिए हैं ?"

झूठोंका बादशाह

एक पादरी साहबने देखा कि कुछ लड़के एक कुत्तेके चारों ओर जमा हैं। जाकर पूछा,

"बच्चो, क्या कर रहे हो ?"

"झूठ-झूठ खेल रहे हैं। हममें-से जो सबसे बड़ा झूठ बोले, यह कुत्ता उसका।"

"शर्मिंग ! मैं जब तुम्हारी उम्रका था तो झूठ बोलने का ख्याल तक नहीं कर सकता था !"

"तुम जीत गये ! कुत्ता तुम्हारा है।"

आमीन !

एक पादरी साहब लम्बी तकरीरके दौरानमें बीचमें जरा अटककर बोले, "मैं और ज्यादा क्या कहूँ ?"

एक श्रोता : "आमीन कहिए !"

अजातशत्रु

एक नौजवान पादरी एक बूढ़े ईसाईको सार्वत्रिक भ्रातृ-प्रेमकी महत्ता समझा रहा था।

बूढ़ा बोला : "ठीक है श्रद्धेय ! गत मास मैं सौ वर्षका हो चुका, और मैं सीनेपर हाथ रखकर कह सकता हूँ कि दुनियामें मेरा कोई दुश्मन नहीं है।"

पादरी : "यह तो आपके लिए बड़े ही गौरवकी बात है ! ऐसा कैसे सम्भव हुआ ?"

बूढ़ा : "बड़ी आसानीसे, वे सब मेरे देखते-देखते मर गये।"

अतिक्रमण

एक जहाज़ तूफ़ानमें घिर गया। बचनेके कोई आसार नहीं थे। डर-कर एक आदमी प्रार्थना करने लगा,

"हे प्रभो, मैंने तेरे अधिकांश आदेशोंको तोड़ा है। मैं व्यसनी और दुराचारी रहा हूँ, लेकिन अगर आज मेरी जान बच गयी तो मैं तेरे सामने प्रतिज्ञा करता हूँ कि अब कभी........"

"ज़रा ठहरो," उसका दोस्त बोला, "इतने आगे न बढ़ो, किनारा नज़र आ रहा है !"

नियाग्रा

एक अमेरिकन मरकर स्वर्ग पहुँचा। वहाँ वह अपने मुल्ककी तारीफ़ोंके पुल बाँधने लगा।

बोला, "देवगण ! क्या आप जानते हैं कि नियाग्रा फ़ॉल्स (जल-प्रपात) से एक सेकिण्डमें अस्सी खरब घनफ़ीट पानी गिरता है ?"

हज़रत नूह : "आँह ! शबनम !"

गिरजाघर

पादरी : "अब तुम गिरजाघर क्यों नही आते ?"

ऐण्ड्रूज . "इसकी तीन वजहें है जनाब ! पहले तो मुझे आपका कर्मकाण्ड पसन्द नही, दूसरे गाना पसन्द नही, तीसरे आपके ही गिरजेमें मेरी बीवीसे मेरी आँखें चार हुई थीं।"

टूटनीय

एक स्त्री अपने घरानेकी पुरानी बाइबिलको अपने भाईके पास दूर देश भेज रही थी। डाकके कर्मचारीने उस पार्सलको सावधानीसे जाँचकर पूछा कि इसमें टूटने लायक तो कोई चीज नही है ?

"दस आदेश (टेन कमाण्डमेण्ट्स) के अलावा तो कुछ नही," स्त्रीने तुरत जवाब दिया।

ईश्वरमें अविश्वास

समयपर बरसात न होते देख वर्षाके लिए प्रार्थना करने ईसाई लोग इकट्ठे हुए। प्रार्थना खत्म होनेपर पादरी साहब बोले,

"बारिशके लिए प्रार्थना तो हुई ही, साथ ही यह भी मालूम हो गया कि हमें ईश्वरमें कितना विश्वास है। मेरे सिवाय कोई भी छतरी लेकर नहीं आया !"

गरीबोंके लिए

एक महिला किसी धर्मार्थ फण्डके लिए चन्दा लेने एक धनी मूजीके पास आयी और दान-पात्र बढ़ा दिया। वह बोला,

"मेरे पास कुछ नही है।"

महिला : "तो इसमेंसे कुछ ले लीजिए ! आप तो जानते ही है कि मैं गरीबोंके लिए ही चन्दा इकट्ठा कर रही हूँ।"

खम्भा

एक आदमी अँधेरेमें खम्भेसे टकरा गया। झुँझलाकर बोला, "कम-बख्तोंने इस खम्भेको नरकमें क्यों नहीं खड़ा किया ?"

एक सुननेवाला बोला, "इसे वहाँ न खड़ा कराइए वर्ना आप फिर टकरा जायेंगे।"

स्वर्गका टिकट

एक मौलवी साहबने जन्नत (स्वर्ग) की टिकटें बेच-बेचकर बहुत-सा धन इकट्ठा कर लिया। एक नौजवानने उन्हें एक रात तमंचा दिखाकर सारा धन लूट लिया।

"बदमाश ! तू दोजख़में जायेगा !"

"मैंने आपसे जन्नतकी टिकट पहले ही खरीद रखी है।"

ब्लैकमेल

एक पादरी साहब किसी अन्तरंग सभामें चन्दा उगाह रहे थे। बोले,

"यहाँ एक ऐसा शख्स मौजूद है जो एक पर-स्त्रीसे नाजायज़ ताल्लुक़ रखता है। अगर उसने चन्देके झोलेमें एक पौंड नहीं डाला तो मंचसे उसका नाम घोषित कर दिया जायेगा।"

जब झोली वापस आयी तो उसमें पौंड-पौंडके छह नोट निकले। एक नोट दस शिलिंगका भी था जिसके साथ एक पुरज़ा टँका हुआ था। उसमें लिखा था : "इस वक़्त मेरे पास नक़दी इतनी ही है, लेकिन बाक़ीके दस शिलिंग मैं बुधवारको भेज दूँगा।"

धर्म-यात्री

"ये लोग देव-दर्शनके लिए जा रहे हैं या प्रवचन सुनने ?"

"यह बॉल-डांसमें जा रही है, यह सिनेमा जा रहा है।"

परमेश्वरका बेटा

एक पादरी साहब किसी गाँवमें अपना प्रवचन सुना रहे थे। "ईसापर विश्वास लाओ, वही तुम्हारा उद्धार करेगा…"।

एक देहाती : "ईसा कौन है ?"

पादरी : "ईसा परमेश्वरका बेटा है।"

देहाती : "ईसाका बाप जिन्दा है या मर गया ?"

पादरी : "जिन्दा है।"

देहाती : "तो जबतक बाप जिन्दा है, हम तो उसीकी भक्ति करेंगे। जब वह मर जायेगा तब उसका बेटा मालिक है ही।"

डबल भूल

आदमी (मरनेके बाद स्वर्गके द्वारपालसे) : "क्या स्वर्गमें मुझे जगह मिल सकती है ?"

द्वारपाल : "तुमने कभी अपनी गलतियोंपर पश्चात्ताप किया है ?"

आदमी : "जी हाँ, मैं शादी करके जिन्दगी-भर पछताता रहा।"

द्वारपाल : "हाँ तुम भीतर आ सकते हो, क्योंकि शादी एक बड़ी तपस्या है और तुम उसके कष्ट उठा चुके हो।"

दूसरा आदमी : "तब तो मैं भी अन्दर आ सकता हूँ, मैंने दो शादियाँ की थीं।"

द्वारपाल : "जी नहीं, यह स्वर्ग है कोई पागलखाना नहीं।"

गुप्त-दान

"महाशयजी, आशा है आप भी इस शुभ कार्यमें कुछ सहायता देंगे।"

"जी, लीजिए यह चैक ले जाइए।"

"पर आपने इसमें अपना नाम तो लिखा ही नहीं !"

"मैं नामके लिए नहीं दे रहा हूँ। मैं तो गुप्तदान ही देना चाहता हूँ।"

प्रवचन

उपदेशक : "क्यों जी, प्रवचन कैसा रहा ?"

श्रोता : "बहुत ही उपदेशपूर्ण ! आपके यहाँ आनेसे पहले हम लोग आपका नाम भी नहीं जानते थे।"

व्यक्तिगत

एक सम्पादकने अपने अखबारका एक खाली कोना भरनेके लिए बिना सम्पादकीय टिप्पणीके दस आदेश (टेन कमाण्डमेण्ट्स) छाप दिये।

अगले दिन एक पाठकका पत्र आया, "मैं ग्राहक नहीं रहना चाहता; आप बहुत व्यक्तिगत (पर्सनल) होते जा रहे हैं।"

उपदेश

किसी इतवारको एक पादरी साहबने इस सूक्तिपर कि 'घासकी हर पत्तीपर एक उपदेश है' एक लम्बा प्रवचन झाड़ डाला।

अगले रोज जब वह अपने मैदानकी घास काट रहे थे, एक श्रोता उधरसे गुजरा। बोला, "अहह पादरी साहब ! देखकर खुशी होती है कि आप अपने उपदेशोंको काटकर छोटा कर रहे हैं।"

आरती

"पुजारी जी, आरतीमें आप कितना समय लगाते हैं ?"

"जैसी भक्तोंकी भीड़ हो।"

फ़ादर

"मैं यह नहीं समझ पाती कि ईसाई पादरियोंको 'फ़ादर' क्यों कहते हैं ?"

"क्योंकि वे बीबी-बच्चों वाले होते हैं।"

धर्म

नास्तिक : "दुनियामें आज जितनी अशान्ति और खून-खरावी मची हुई है उससे साबित होता है कि धर्म बेकारकी चीज़ है।"

गाँधीजी : "ज़रा सोचो तो, जब धर्मके रहनेपर भी लोग इतनी अशान्ति और खून-खराबी मचाये हुए हैं, तो धर्मके न रहने पर वे क्या नहीं कर गुज़रेंगे !"

ख़ामोशी

एक गिरजाघरमें स्त्री-पुरुष अलग-अलग बैठे थे। शोरकी वजहसे पादरी साहबको सरमनके बीचमें ही रुक जाना पड़ा। स्त्रियोंकी नुमाइन्दगी करती हुई एक महिला बोली, "हम शोर नहीं मचा रहीं।"

पादरी : "तब तो और अच्छी बात है। यह कोलाहल अधिक जल्दी शान्त हो जायेगा।"

इस्लाम ख़तरेमें

अरबिस्तानमें जब पहली दफ़ा टेलिफ़ोन लगा तो मुल्लोंने उसे धर्म-विरुद्ध कहकर उसके ख़िलाफ़ वावेला मचाना शुरू कर दिया।

सुलतान इब्न सऊदको एक युक्ति सूझी। उसने टेलिफ़ोनसे लोगोंको क़ुरानकी आयतें सुनानी शुरू कर दीं और बादमें एक सार्वजनिक सभा बुलाकर उसमें मौलवियोंसे पूछा कि जो चीज़ क़ुरानकी वाहक बन सकती है वह मज़हबके ख़िलाफ़ कैसे ? लोगोंको सुलतानकी बात जँच गयी; उन्होंने मौलवियोंका साथ न देकर टेलिफ़ोनको धर्मानुकूल घोषित कर दिया।

प्रार्थना

लिली प्रार्थना करती थी : "हे प्रभो, मैं अपने लिए कुछ नहीं माँगती, लेकिन कृपा करके मेरी माँको दामाद दो !"

रिपोर्ट

एक हब्शी पादरी सहायताके लिए अपने विशपको बार-बार अर्जियाँ भेजता था। आखिर तंग आकर विशपने उसे चेतावनी दी कि आइन्दा कोई ऐसी अर्जी न भेजें।

इसपर पादरीने पत्र लिखा, "यह कोई सहायताके लिए अपील नहीं है। यह तो रिपोर्ट है। मेरे पास पतलून नहीं है। इत्तिलाअन् अर्ज है।"

नरक कैसा है ?

एक गिरजाघरमें होनेवाले व्याख्यानकी विज्ञप्ति नोटिस-बोर्डपर यूँ की गयी,

"नरक कैसा है ?—यह जानने के लिए आप अन्दर आइए।"

उपदेशक

"आपकी आजीविकाका साधन क्या है ?"

"मैं उपदेशक हूँ।"

"क्या तनख्वाह पाते हैं ?"

"दस रुपया महीना।"

"यह तो बड़ी दरिद्र रकम है।"

"मैं भी तो एक दरिद्र उपदेशक हूँ।"

दूसरेकी औरत

एक नास्तिकने एक पादरीसे मज़ाकमें ही पूछा, "आदमकी बीबी कौन थी ?"

पादरी (गम्भीरतापूर्वक) : "सत्यके ज्ञानके हर खोजीकी मैं इज़्ज़त करता हूँ, लेकिन इस प्रश्नकर्ताको चेतावनी-स्वरूप दो शब्द कहूँगा, दूसरोंकी बीबियोंके पीछे अपने स्वर्गको न बिगाड़ो !"

क़हरनाक

एक पादरी साहब उपदेश दे रहे थे : "आनेवाले क़हरसे तो बचिए ! मार-धाड़ होगी, रोना-पीटना होगा, दाँत किटकिटाये जायेंगे……"

एक बुढ़िया : "मेरे दाँत नहीं हैं, साहब।"

पादरी : "मेम साहिबा, दाँत दे दिये जायेंगे।"

वंशज

एक नास्तिकने एक पादरीसे छेड़खानीके लिए पूछा, "क्या आप बता सकते हैं कि शैतानकी उम्र क्या है ?"

पादरी : "अपने खान्दानवालोंका रिकार्ड तुम्हें ही रखना चाहिए।"

दुआ

"क्या तुम हर रातको दुआ पढ़ते हो ?"

"नहीं, कुछ रातें ऐसी होती हैं जब मुझे कुछ नहीं चाहिए होता।"

अमल

एक पादरी बाइबिलका बड़ा भक्त था। वह बाइबिल खोलता और जिस लाइनपर नज़र पड़ती उसीके मुताबिक़ चलता। एक बार बाइबिल खोलनेपर उसकी निगाह इस लाइनपर पड़ी, "जुडासने खुद अपने-आपको फाँसीपर लटका दिया।"

यह करनेमें अपनेको असमर्थ पाकर पादरी साहबने दिलको बहलाया कि एक बार फिर बाइबिल खोली जाये, खोली तो देखा, "तुम्हें उसीका अनुकरण करना चाहिए।"

घबराकर पादरीने तीसरी बार बाइबिल खोली। इस बार पंक्ति थी, "तुम किस सोचमें पड़े हो ? जल्दीसे इसपर अमल क्यों नहीं करते ?"

चमत्कार

एक ईसाई पादरी इस इतमीनानके साथ हिन्दुस्तान आया कि लोग ईसाइयतके चमत्कार सुनकर ईसाई बन जायेंगे। लेकिन कुछ ही दिनों बाद उसने अपने देशको खत लिखा कि यहाँ हमारे चमत्कारोंका कोई असर नहीं पड़ता, यहाँ तो पहलेसे ही बन्दर समुद्रको लाँघा करते हैं।

शैतान

दो नौजवान एक पादरीसे बोले, "सुनी आपने वह खुशखबरी ? अगर वह सच निकली तो आपके तो धन्धेको ही चौपट कर देगी !"

पादरी : "क्या ?"

नौजवान : "यही कि शैतान मर गया !"

पादरी (नौजवानोंके सिरोंपर हाथ रखकर) : "या खुदा ! अब इन गरीब यतीम बच्चोंका क्या होगा !"

दर्शन और दार्शनिक

●

ओ सॉरी !

एक प्रोफ़ेसर एक होटलमें गये। टेब्लपर गिलास रखा हुआ था। प्रोफ़ेसर साहबने उसपर हाथ रखा तो कहा, "अरे, इसका तो मुँह बन्द है।" फिर नीचे हाथ दिया तो बोले, "और पेंदी भी ग़ायब है !"

वेटर बोला : "हुज़ूर, गिलास उलटा रखा हुआ है।"

प्रोफ़ेसर : "ओ सॉरी !"

भुलक्कड़

एक श्रोता : "क्या यह सच है कि प्रोफ़ेसर लोग बड़े भुलक्कड़ होते हैं ?"

प्रोफ़ेसर (बिगड़कर) : "यह बिलकुल झूठ बात है। प्रोफ़ेसरोंकी याददाश्त बिलकुल ठीक होती है और उनके होश-हवास भी हमेशा दुरुस्त रहते हैं...... कोई और सवाल ?"

दूसरा श्रोता : "क्या यह सच है कि प्रोफ़ेसर लोग बड़े भुलक्कड़ होते हैं ?"

प्रोफ़ेसर (प्रसन्न होकर) : "मैं जानता था कि यहाँ यह सवाल ज़रूर पूछा जायेगा। बात यह है कि......."

अच्छा हुआ बता दिया

दार्शनिक (अपनी स्त्रीसे) : "अरे भई, मैं कितनी देरसे अपनी टोपी देख रहा हूँ, मिलती ही नहीं, जरा देखो तो !"

स्त्री : "टोपी तो आपके सिरपर ही है।"

ग़ैरहाज़िर-दिमाग़ [illegible] मे देखकर) "अरे हाँ ! अच्छा हुआ तुमने [illegible] बीमार हूँ।" [illegible] रोज़ जाना पड़ता।"

परिचित

वह इस कदर गैरहाज़िर-दिमाग है कि दो घण्टे तक आइनेके सामने खड़ा होकर सोचता रहा कि मैंने इसे पहले कहाँ देखा था।

बेखुद

एक प्रोफ़ेसर साहब अपनी घड़ी हमेशा अपनी 'वेस्ट कोट'की दाहिनी जेबमें रखा करते थे। एक दिन जब वह क्लासमें पढ़ानेके लिए आये और दाहिनी जेबमें हाथ डाला तो मालूम हुआ कि घड़ी नहीं है। तब उन्होंने सब लड़कोंकी तरफ़ देखकर एक लड़केसे कहा, "तुम हमारे घर दौड़ जाओ और घड़ी ले आओ।"

लड़का जाने लगा। तभी प्रोफ़ेसर साहबने अपनी बाँयी जेबमें हाथ डाला और उसमें-से घड़ी निकालकर उस लड़केसे कहा, "देखो, इस वक़्त दस बजकर बीस मिनट हैं, तुम दस-चालीस तक लौट आना। खबरदार, देर न लगाना !"

छतरी

ग़ैरहाज़िर-दिमाग़ प्रोफ़ेसर (गिरजाघरसे निकलते हुए) : "अब बताओ भुलक्कड़ मैं हूँ या तुम ? तुम अपनी छतरी वहीं छोड़ आयी, मगर मैं न सिर्फ़ अपनी छतरी लाया बल्कि तुम्हारी भी लेता आया।"

पत्नी (साश्चर्य) : "लेकिन हममें-से तो कोई छतरी लेकर गिरजाघर नहीं गया था !"

...ाहब, मगर वह मेरा विश्वास नहीं करता !"

... खैर, तब तो मुझे खुद ही जाकर यह कहना पड़ेगा।"

कहीं और, और कहीं !

"आज शामको तुम हमारे साथ खाना खाने आओ, वहाँ तुम्हारा दोस्त डैविस भी होगा।"

"लेकिन डैविस तो मैं ही हूँ।"

"अरे अरे, भूल गया ! लेकिन फिर भी आना तो सही; मुझे यक़ीन है तुम उससे मिलकर खुश होगे।"

जीवित-समाधि

प्रोफ़ेसर अध्ययनमें व्यस्त थे। उनकी पत्नी अखबार लिये दौड़ी आयी और साक्रोश बोली,

"देखा है यह तुमने ? इसमें तुम्हारे मरनेकी खबर छपी है !"

"हमें फूल भेजना न भूलना चाहिए," प्रोफ़ेसर बिना सिर उठाये बोले।

पुड़िया ग़ायब !

फ़िलॉसफ़र साहब अपनी बीवीको लेकर बाज़ार करने गये। घर आकर वे पैकेटों और पुड़ियोंको गिनने लगे; जेबोंमें भी हाथ डालकर देखते। बोले, "कुछ-न-कुछ चीज़ बाज़ारमें रह गयी मालूम होती है बिन्नी !"

बिन्नी : "पर पिता जी, अम्मी कहाँ हैं ?—आपके साथ ही तो गयी थीं वह।"

अच्छा हुआ बता दिया

दार्शनिक (अपनी स्त्रीसे) : "अरे भई, मैं कितनी देरसे अपनी टोपी देख रहा हूँ, मिलती ही नहीं, ज़रा देखो तो !"

स्त्री : "टोपी तो आपके सिरपर ही है।"

दार्शनिक : (सिरपर हाथसे देखकर) "अरे हाँ ! अच्छा हुआ तुमने बता दिया, नहीं तो मुझे आज नंगे सिर ही कॉलेज जाना पड़ता।"

युगलिया

नर्स : "श्रीमान् बधाई है, आपके दो बच्चे हुए हैं !"

पिता : "अच्छा ! मेरी पत्नीसे न कहना, मैं उसे आश्चर्यमें डालना चाहता हूँ।"

अकेली

प्रोफ़ेसर काममें गर्क थे। एक नवयुवक विद्यार्थी मिलने आया।

प्रोफ़ेसर : "हूँ, बैठो—बैठो, हूँ ! तुम्हारी बीवीकी तबीयत अब कैसी है ?"

विद्यार्थी : "पर मैं तो अभी अविवाहित हूँ !"

प्रोफ़ेसर : "अच्छा ? हूँ, यह बात है ! ठीक, तब तो तुम्हारी बीवी भी तुम्हारी तरह अकेली ही होगी न ?"

शुभ समाचार

एक सम्पादक महोदय अपने अध्ययनमें निमग्न थे। उस समय दासीने आकर शुभ समाचार सुनाया,

"भगवान्ने आपके घरमें एक सुन्दर बालक भेजा है !"

सम्पादकजीने उसी ध्यानमग्न अवस्थामें कहा,

"अच्छा, उससे पूछो कि क्या चाहता है।"

भेदाभेद

एक ग़ैरहाज़िर-दिमाग़ प्रोफ़ेसरको सुबहके दो बजे टेलिफ़ोनव
जगा दिया।

आवाज़ : "क्या यह वन, वन, वन, वन है ?"

प्रोफ़ेसर : "नहीं, यह इलैव्न, इलैव्न है।"

आवाज़ : "ओह, ग़लत नम्बर; माफ़ कीजिए मैंने आपक
किया !"

प्रोफ़ेसर : "कोई मुज़ायका नहीं, आखिर टेलिफ़ोनका जवा
उठना था ही।"

कमीकी पूर्ति

मशहूर मनोवैज्ञानिक ऐड्लर किसी सभामें बोल रहे थे,
किसी खास कमीकी वजहसे ही अपनी ज़िन्दगीको किसी खास
तरफ़ ले चलता है। मसलन्, कमज़ोर आँखोंवाला चित्रकार बन
पसन्द करता है।"

एक आवाज़ : "मिस्टर ऐड्लर, और शायद इसीलिए
दिमाग़वाले मनोवैज्ञानिक बन जाते होंगे ?"

होशमन्द

प्रोफ़ेसर बिसरभोले अपने स्नेही डाक्टरके यहाँ आये। ए
गपें मारने के बाद प्रोफ़ेसर मज़कूर जानेके लिए उठे। डाक्टर स
पहुँचानेके लिए ज़ीने तक आकर बोले, "और आपके परि
सब ठीक है न ?"

प्रोफ़ेसर एकदम चौंककर बोले, "अरे-अरे, सब गड़बड़ है

तीन छतरियाँ

"आप तीन छतरियाँ क्यों लिये हुए हैं ?"

"एक ट्रेनमें भूलनेके लिए, एक होटलमें छोड़ देनेके लिए और एक वारिशमें काममें लानेके लिए।"

"मगर बड़ी देरमें तवज्जह फ़र्मायी, आप तो पानीसे तर-बतर हैं !"

छतरी भूल गये

"आज मैं अपनी छतरी घरपर ही भूल गया।"

"आपको कैसे याद आया कि छतरी भूल आये हैं ?"

"क्या बताऊँ, वारिशके बाद मैंने उसे बन्द करनेके लिए जो हाथ उठाया तो मालूम हुआ कि छतरी कहाँ लाया हूँ।"

इधर भी तो है !

एक फ़िलॉसफर तेल लेने गये। बोतल भर गयी तो दूकानदार बोला, "साहब, थोड़ा-सा तेल और बचा है।"

फ़िलॉसफ़रने बोतल उलटकर पेंदीका गड्ढा उसकी ओर करके कहा, "वह इसमें भर दो।" यूँ तेल लेकर वे घर आये।

ज़रा-सा तेल देखकर उनकी पत्नी बोली, "आठ आनेका बस इतना ही तेल लाये हो ?"

फ़िलॉसफ़रने बोतल सीधी करते हुए कहा, "और इधर भी तो है!"

कवि

"वसन्त, कल मैंने तेरी कविता पिताजीको दिखायी। देखकर बड़े खुश हुए!"

"सचमुच?"

"हाँ, बोले, अच्छा हुआ इस पागलको अपनी लड़की नहीं दी।"

चित्रकारी

समालोचक: "अहा! और यह क्या है? बड़ी कमालकी चीज है? क्या आत्मा है! और कैसा मस्ताना चित्रीकरण! वाह-वा!"

चित्रकार: "यह? यह तो वह कैनवस है जिसपर मैं अपने ब्रशके रंग पोंछता हूँ!"

वसन्त

एक संकोचशील सज्जन किसी चित्रशालामें एक लड़कीके चि... नग्नतम रंग-चित्रको निर्निमेष दृष्टिसे देख रहे थे। पोशाकके ना... उसमें अंगूर गुच्छोंपर केवल चन्द पत्तियाँ थीं। चित्रका शीर्षक... 'वसन्त'। एकाएक उनकी संरक्षिका कर्कश स्वर सुनायी दिया, "अब दि... किस बातका किया जा रहा है?—क्या पतझड़का?"

संगीत

"जब मैं गाता हूँ, तुम बार-बार खिड़कीके बाहर क्यों झाँकते हो ?"

"पड़ोसियोंको यह दरसानेके लिए कि गानेवाला मैं नहीं हूँ।"

जुल्फ़े-दराज

एक पॉलिशवाला छोकरा एक कविके रूबरू पहुँचा।

"पॉलीश ?"

"नहीं वत्स, परन्तु यदि तुम अपने मुखारविन्दको धो डालो तो तुम्हें इकन्नी दूँगा।"

"अच्छी बात है !" कहकर लड़का उनके घड़ेसे पानी लेकर मुँह धो आया। कविने इकन्नी दी। लड़का अपनी तरफ़से तीन आने और मिलाकर बोला, "यह लीजिए, और अब आप जाकर अपने बाल कटवा आइए !"

बुंदूखाँ

"कहिए, सितार कैसा बज रहा है ?"

"क्या कहने हैं ! सुनकर बुंदूखाँकी याद आ रही है।"

"पर बुंदूखाँ तो सारंगीमें प्रवीण थे, सितार बजाना वे नहीं जानते थे।"

"तभी तो कह रहा हूँ।"

सीता

एक चित्रकारने सीताकी एक आधुनिक नख़र सोसाइटी गर्ल-सी मुस्काती तसवीर बनायी। उसे ग्राहकको उसे दिखलाते हुए बोला,

"और यह लीजिए सीताकी लेटेस्ट फ़ैशनकी तसवीर !"

ग्राहक : "वाह भाई वाह, क्या कहने हैं! भला ऐसी सीताको रावन क्यों न चुराकर ले जाते !"

चन्द्रक

"आपको यह छोटा मैडिल किस उपलक्ष्यमें मिला ?"

"गानेके लिए।"

"और यह बड़ा मैडिल ?"

"गाना बन्द करनेके लिए।"

विचित्र कृति

चित्रकार : "देखो, यह मेरी नवीनतम कृति है। यह मेरे सर्वोत्तम चित्रोंमें-से एक है। मैंने इसे अभी समाप्त किया है। जब मैंने इसे बनाना आरम्भ किया, यह नहीं जानता था कि मैं क्या बना रहा हूँ।"

मित्र : "और जब तुम बना चुके तो तुम्हें यह कैसे पता चला कि तुमने क्या बनाया है ?"

कलाकृति

"उन्होंने उस तसवीरको क्यों टाँग रखा था ?"

"क्योंकि उन्हें उस चित्रका चित्रकार न मिल सका।"

तारीफ़

पिकासोके चित्रोंकी एक प्रदर्शनीमें एक तसवीरके आगे सबसे ज्यादा दर्शक खड़े थे और तारीफ़ोंके पुल बाँध रहे थे। तभी वहाँ पिकासो आया और उसने तसवीरको उलटकर सीधा कर दिया। पहले तसवीर उलटी टँगी थी।

सन्ध्या-वन्दन

"यह देखिए सन्ध्याका चित्र! मेरी बेटीने इसे जंगलमें जाकर खींचा है।"

"तभी! वर्ना ऐसी सन्ध्या शहरमें कहाँ दिखती!"

आधुनिक कला

"और मैं समझता हूँ यही उस भोंडी खाका-कशीका नमूना है जिसे आप आधुनिक कला कहते हैं ?"

"नहीं नहीं, यह तो केवल दर्पण है।"

तोबा-तोबा

एक पार्टीमें एक स्त्री गाना गा रही थी। एक शख्सको उसका गाना निहायत बुरा लग रहा था। पासवालेसे बोला,

"क्या गला फाड़ रही है ! कौन है यह ?"

"हाँ ! वह मेरी पत्नी है।"

"ओह, माफ कीजिए, गलती हो गयी। इनकी आवाज तो ठीक है मगर इन्हें बेढंगा गीत गाना पड़ रहा है। न जाने किस नौसिखियेने इसे लिखा है ?"

"मैंने।"

दयादान

लड़का : "पिताजीने पूछा है कि आजके लिए अपना हारमोनियम देनेकी आप कृपा करेंगे क्या ?'

सीखनेवाला (उत्सुकतासे) : "क्यों, आज कोई पार्टी है क्या ?"

लड़का : "नहीं, पिताजी आज आराममें सोना चाहते हैं।"

रे रे !

संगीतज्ञ : "देवीजी, आपने इस संगीतकी प्रारम्भिक शिक्षा कहाँ से प्राप्त की ?"

मिस सोमा : "क्यों ? डाकके कोर्ससे।"

संगीतज्ञ : "कहीं कोई पाठ डाकमें ही तो नहीं रह गया ?"

दौलतकी वदौलत

"मेरी समझमें नहीं आता कुछ लोग रेखाके गानेकी इतनी तारीफ़ क्यों करते हैं। रेखासे तो जमुना हज़ार दर्जे अच्छा गाती है।"

"लेकिन रेखाका पिता जमुनाके पितासे लाख दर्जे धनी है।"

स्वर्गवासी

"क्या आप मेरे काशीवासी काकाका चित्र वना देंगे ?"

"हाँ हाँ, लाना उन्हें।"

"मैंने कहा न, वे काशीवासी हो गये हैं।"

"तो वे जब भी आवें लेकर आना।"

मामूली बात

"वह इतना महान् चित्रकार है कि एक बार उसने एक हँसते बालकके चित्रको ब्रुशके एक इशारेसे रोते बालकके रूपमें बदल दिया।"

"यह कोई बड़ी बात नहीं। ऐसा तो मेरी माँ झाड़ूसे ही कर दिया करती थी।"

मग़रूर

एक धनी-मानी व्यक्ति किसी मग़रूर चित्रकारसे मिलने आया। बात-चीतके दौरानमें उसने चित्रकारसे पूछा,

"आप यहाँके राजाको तो जानते होंगे ?"

"नहीं।"

"बड़ी अजीब बात है ! कुछ दिन पहले मैं राजासे मिला था। उसने तो कहा था कि वह आपसे अच्छी तरह परिचित है।"

"झूठी शान बघार रहा होगा।"

नृत्य

"कहा जाता है कि एक बार नाचना दस मील चलनेके बराबर होता है।"

"वह गुज़िश्तः ज़मानेकी बात है। आजकलका एक नाच तो सौ दरख़्तों पर चढ़नेके बराबर होता है।"

तीक्ष्णालोचना

चित्रकार : "तो आपका ख्याल है कि मैं क़ुदरतको वैसा ही चित्रित करूँ जैसा उसे देखूँ ?"

आलोचक : "बशर्ते कि तुम उसे वैसा न देखो जैसा चित्रित करते हो।"

नाम

ग़रीब कलाकार : "आप यह तो सोचिए कि कुछ साल बाद लोग आपके मकानको देखकर कहा करेंगे कि यहाँ मैं चित्र बनाया करता था।"

मालिक-मकान : "अगर आज राततक पिछला तमाम किराया अदा न कर दिया तो कलसे ही कहने लगेंगे।"

बिम्ब-प्रतिबिम्ब

"मैं इस चित्रको पसन्द नहीं करता—इसमें तो मैं बिलकुल बन्दर-सा लगता हूँ!"

"यह तो आपको चित्र खिंचवानेसे पहले सोचना चाहिए था।"

नासमझ

कवि : "मेरी पत्नी मुझे समझ ही नहीं सकती। तुम्हारी ?"

मित्र : "कहाँसे समझे! वह तुमसे परिचित ही कहाँ है!"

मिश्रण

"तुम अपने रंगोंमें क्या मिलाते हो कि इतनी अच्छी तसवीरें बना लेते हो ?"

"अपना दिमाग़ मिलाता हूँ।"

कवि

सम्पादक : "शि शि ! आपके अक्षर नितान्त ख़राब हैं। लिखनेकी बजाय आप अपनी कविता टाइप करके क्यों नहीं भेजते ?"

कवि : "टाइप करके लाऊँ ? मुझे टाइपिंग आता होता तो कविता करनेमें अपना वक़्त क्यों ख़राब करता ?"

दिगम्बर

"आपको नग्न चित्रकलाके अध्ययनमें इतनी दिलचस्पी क्यों है ?"

"क्योंकि मैं पैदा होते वक़्त दिगम्बर था।"

रसज्ञ

एक पक्के गवैयेकी दो आँख-मूँद अलापोंमें ही सारी सभा उठकर चल दी। सिर्फ़ एक आदमी रह गया।

गवैया : "अहो ! पक्के गानेका एक क़द्रदाँ तो है ! लो भाई, मैं तुम्हें ही संगीत सुनाकर अपनी मेहनत सफल समझूँगा।"

श्रोता : "उठ जानेवालोंकी बनिस्बत मैं पक्के गानेका कोई विशेष रसज्ञ नहीं हूँ। मैं भी चला गया होता, मगर मुझे इसलिए ठहरना पड़ा कि जिस दरीपर आप बैठे हैं वह मेरी है। मैं इसी इन्तज़ारमें हूँ कि कब आपका गाना ख़त्म हो और कब मैं दरी लेकर घर जाऊँ।"

सदर-मुक़ाम

वायलिनका अभ्यास करनेवाली एक स्त्रीको वायलिनपर एक ही स्थानपर एक अँगुली मज़बूतीसे जमाकर, घण्टों तार आगे-पीछे खींचते देखकर निर्मलाने उनसे कहा, "दूसरे वायलिन बजानेवाले तो चारों तारों पर अपनी अँगुलियाँ नचाते रहते हैं। पर तेरा ढंग तो उनसे अलग है।"

"अरी, वे अँगुलियाँ नचा-नचाकर जिस जगहको ढूँढ़ते रहते हैं, वह मैंने ढूँढ़ निकाली है।"

ड्रेस-निर्णय

एक अमीर औरत किसी चित्रकारसे अपना चित्र बनवाना चाह रही थी। सिटिंगके वक़्त चित्रकारने पूछा,

"शामकी ही पोशाकमें खींचूँ ?"

"अरे नहीं," औरत बोली, "कोई भी चलेगी—धोती-कुरता ही पहने रहो।"

कवि या चित्रकार

"मैं कवि बनूँ या चित्रकार ?"

"चित्रकार बनना।"

"ऐसा कैसे कहता है ?"

"मैंने तेरी कविताएँ पढ़ी हैं।"

कवि

एक ठग अपने साथीसे बोला, "कल रात तो मैंने एक कविको पकड़ा।"

साथी : "मज़ाक करते हो !"

ठग : "मज़ाक नहीं, उसे भोजन करानेमें उलटे मेरे ही दो रुपये खर्च हो गये।"

संगीतका शौक़

"तुम्हें संगीतका शौक़ है?"

"हां हां।"

"कौन-सा बाजा बजाते हो?"

"ग्रामोफ़ोन।"

संगीतज्ञ

एक देहाती एक पक्के गवैयेको गाते देखकर जार-जार रोने लगा। पास बैठे हुए एक सज्जनने पूछा, "आपपर तो इस गानेका बड़ा असर पड़ा! आप इस रागको खूब समझते मालूम होते हैं।"

देहाती बोला, "कैसे न समझूंगा! परसाल मेरा बकरा भी इसी तरह बिलबिला-बिलबिलाकर मर गया। जब किसीको यों राग अलापते देखता हूँ तो रंजसे सिर धुनने लगता हूँ।"

भागमभाग

"अगर मेरी [illegible]शालामें आग लग जाये तो आप कौनसे [illegible] देखना चाहेंगे?"

"दरवाजे वाले।"

[illegible]

"क्या तुम्हारी बीबी [illegible] किफायतशार है?"

"[illegible] इतनी किफायतशार है कि अगर मुझको [illegible]"

वापस

कवि : "मुझे आश्चर्य होता है कि मेरी कविताएँ वापस क्यों आ जाती हैं !"

मित्र : "टिकट न भेजा करो, वापस नहीं आयेंगी।"

आवरण

सम्पादक : "आपकी यह कहानी नहीं छप सकती क्योंकि इसमें नायिकाको नग्न कर दिया गया है।"

लेखक : "ज़रा आगे पढ़िए। अगले ही वाक्यमें मैंने उसे लज्जासे ढँक दिया है।"

अख़बारमें 'जन्म' और 'मृत्यु'

एक अख़बारमें निकला,

"स्थानाभावसे हमें कितने ही 'जन्मों' और 'मरणों' को लाचार होकर अगले महीने तकके लिए मुल्तवी करना पड़ रहा है।"

इनाम

आगन्तुक : "मैंने यहाँके अख़बारमें अपने खोये हुए कुत्तेका विज्ञापन दिया था। दस डॉलर इनामकी घोषणा की थी। लगा कुछ पता ?"

चपरासी : "तमाम एडीटर और रिपोर्टर आपके कुत्तेकी तलाशमें बाहर गये हुए हैं।"

तो पेशगी !

"इस मकानका भाड़ा क्या है ?"

"बीस रुपया माहवार।"

"आप जानते हैं मैं कवि हूँ।"

"तो बीस रुपया पेशगी !"

अख़बारी रिपोर्ट

"क्वेटाके भूकम्पसे ज़मींदोज़ एक इमारत खोदी गयी। उसके नीचे चालीस मुरदे निकले। उनमें-से एकके भी ज़िंदा रहनेकी उम्मीद नहीं है।"

लेखक

०

एक समर्पण

"मेरी बीबीको—जिसकी ग़ैरहाज़िरीके बग़ैर नहीं जा सकती थी।"

मूर्ख

सम्पादक : "आप ऐसी भाषामें लिखा करें कि आसानीसे समझ सके!"

नया लेखक : "तो इस लेखमें कौन-सा शब्द आया ?"

—

लेखक : "वह, वह!

प्रकाशक : "

लेखक

घोड़ा और गदहा

फ्रान्सके मशहूर उपन्यासकार विक्टर ह्यूगो और अलेक्जैण्डर ड्यूमा कहीं मिले। बात-चीतके दौरानमें ड्यूमाने ह्यूगोके सामने सुझाव रक्खा, "क्यों न हम दोनों मिलकर कोई लाजवाब उपन्यास लिखें?"

ह्यूगो : "यह क़तई ग़ैरमुमकिन है। कहीं गधे और घोड़ेका भी साथ हुआ है!"

ड्यूमा : "ख़ैर, आपको साथ लिखना मंज़ूर नहीं तो न सही, पर बराय-मेहरबानी मुझे घोड़ा तो न बनाइए।"

दिमाग़ी काम

एक कवि सख़्त बीमारीसे उठे। डाक्टरने ताकीद की,
"तीन महीने तक आप हर्गिज़ कोई दिमाग़ी काम न करें!"
"कुछ कविता करूँ तो कोई आपत्ति है?"
"नहीं, कविता चाहे जितनी कर सकते हैं।"

अपढ़ लेखक

एक धनिक आदमी ज़रूरतमन्द लेखकोंसे किताबें लिखवाकर अपने नामसे छपवाया करता था।

एक रोज़ उसने गर्वके साथ अपने लड़केसे कहा, "तूने मेरा आख़िरी उपन्यास पढ़ा?"

लड़केने उलटकर पूछा, "आपने पढ़ा?"

लेखकका गुण

"नये लेखकमें आप किस गुणकी आशा रखते हैं?"
"कम भूखकी।"

शब्द-कोश

किसीने एक महान् कोशकारसे पूछा, "आपने इतना बड़ा कोश कैसे बना डाला ?"

"इसका तरीका बीवीसे झगड़नेके मानिन्द है—एक शब्दके बाद दूसरा आता जाता है।"

वधू चाहिए !

कनाडाके एक पत्रमें विज्ञापन निकला—"एक करोड़पति नौजवान ऐसी लड़कीसे शादी करना चाहता है जो '........' (अमुक) उपन्यासकी नायिकाकी तरह हो।"

नतीजा यह हुआ कि २४ घण्टेके अन्दर उस उपन्यासकी सभी प्रतियाँ बिक गयीं !

प्रार्थना

एक कविने अपनी कविताके साथ सम्पादकको पत्र लिखा, "तनख्वाहमें गुज़ारा नहीं होता। कुछ अतिरिक्त आमदनीकी आशासे आपके प्रख्यात मासिक-पत्रके लिए कविताएँ भेजते रहना चाहता हूँ।"

सम्पादकका जवाब आया, "ईश्वरसे प्रार्थना है कि आपकी तनख्वाह फ़ौरन् बढ़ जाये !"

लाइफ़-वर्क

"यह आपका पहला ही उपन्यास है ?"

"जी, इसके लिए मैंने जिन्दगीके बीस वर्ष दिये हैं।"

"इतना वक़्त ?"

"लिखा तो इसे मैंने तीन ही महीनेमें, लेकिन उन्नीस साल नौ महीने प्रकाशक ढूँढ़नेमें गये।"

घोड़ा और गदहा

फ्रान्सके मशहूर उपन्यासकार विक्टर ह्यूगो और अलेक्जेण्डर ड्यूमा कहीं मिले। बात-चीतके दौरानमें ड्यूमाने ह्यूगोके सामने सुझाव रक्खा, "क्यों न हम दोनों मिलकर कोई लाजवाब उपन्यास लिखें ?"

ह्यूगो : "यह कतई ग़ैरमुमकिन है। कहीं गधे और घोड़ेका भी साथ हुआ है !"

ड्यूमा : "ख़ैर, आपको साथ लिखना मंज़ूर नहीं तो न सही, पर बराय-मेहरबानी मुझे घोड़ा तो न बनाइए।"

दिमाग़ी काम

एक कवि सख्त बीमारीसे उठे। डाक्टरने ताकीद की,
"तीन महीने तक आप हर्गिज़ कोई दिमाग़ी काम न करें !"
"कुछ कविता करूँ तो कोई आपत्ति है ?"
"नहीं, कविता चाहे जितनी कर सकते हैं।"

अपढ़ लेखक

एक धनिक आदमी ज़रूरतमन्द लेखकोंसे किताबें लिखवाकर अपने नामसे छपवाया करता था।

एक रोज़ उसने गर्वके साथ अपने लड़केसे कहा, "तूने मेरा आख़िरी उपन्यास पढ़ा ?"

लड़केने उलटकर पूछा, "आपने पढ़ा ?"

लेखकका गुण

"नये लेखकमें आप किस गुणकी आशा रखते हैं ?"
"कम भूखकी।"

व्याख्यान

रविबाबू : "आज आपका 'कबीर' पर व्याख्यान क्यों मौक़ूफ़ रहा ?"

क्षितिबाबू : "दाँतमें दर्द था।"

रविबाबू : "आपको सिर्फ़ व्याख्यान देना था, श्रोताओंको काटना तो था नहीं !"

पद्य बनाम गद्य

एक कवि अपनी कविताओंको एक समालोचकके पास ले गया। जब कहा गया कि इनमें कुछ सार नहीं है, तो कवि आग-बबूला होकर गालियों और कटूक्तियोंकी शोला-अफ़शानियाँ करने लगा। कुछ शान्त होनेपर समालोचक बोला, "मेरे विचारसे आपका यह गद्य आपके पद्यसे कहीं सुन्दर है।"

हैङ्ग हिम

ईरानके कवि जामी बड़े हाज़िर-जवाब थे। एक कवि उनसे कहने लगा, "मैं अपनी सब कविताओंको शहरके फाटकपर टँगवाऊँगा ताकि तमाम लोग मेरी शायरीके कमालसे वाक़िफ़ हो जायें।"

जामी बोले, "लेकिन लोग कैसे जानेंगे कि यह तुम्हारी शायरी है तावक़्ते कि तुम भी उनके साथ न टाँग दिये जाओ ?"

देर-सवेर

क्लर्कीके कामका नियमित रुटीन चार्ल्स लैम्बकी साहित्यिक अभिरुचि और आज़ादाना मिज़ाजके खिलाफ़ था। एक रोज़ हैड-क्लर्क ने कहा :

"मिस्टर लैम्ब, तुम दफ़्तर देरसे आते हो।"

"जी हाँ, मगर मैं जाता जल्दी हूँ।"

इस विचित्र उत्तरको सुनकर शिकायत करनेवाला ठंडा पड़ गया।

प्रेमांगणा

किसीने मोपासाँसे पूछा—

"आप खराब औरतोंकी ही कहानियाँ क्यों लिखते हैं ?"

"अच्छी औरतोंकी भी कोई कहानी होती है क्या ?" मोपासाँने प्रति-प्रश्न किया।

षड्यन्त्र

लेखक : "ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकाशकोंने मेरे प्रतिकूल षड्यन्त्र रच रखा है।"

मित्र : "इस मान्यताका आधार ?"

लेखक : "मेरी एक ही कहानीको दस प्रकाशकोंने वापस लौटा दिया।"

कवि-सम्मेलन

एक कवि-सम्मेलनमें एक कवि महोदयने आखिरतक बैठे हुए एक श्रोतासे पूछा, "भाई, सभी लोग चले गये, आप ही क्यों रह गये ?"

श्रोता महाशयने कहा, "आपके बाद मेरे सुनानेका नम्बर जो है !"

मातृभाषा

पुत्र : "हमारी भाषा 'मातृ-भाषा' क्यों कही जाती है ?"

पिता : "क्योंकि पिताको उसे बोलनेका शायद ही कोई मौक़ा मिलता हो।"

इतमीनान

शान्ति-निकेतनसे कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोरके दो चित्र चोरी चले गये।

संचालकोंको इस इतमीनानसे सन्तोष है कि आखिरश चोरोंको इन चित्रोंका मतलब समझनेके लिए इधर आना ही पड़ेगा।

चिर-कुमारी

महाकवि अकबर इलाहाबादी, वैभवशालिनी गौहरका गाना सुन-कर बोले—

खुदाको क़ुदरत सिवाय शौहरके
खुदाने सब-कुछ दिया है गौहरको !

लेखककी पत्नी

आधीसे ज़्यादा रात बीत चुकी थी। लेखकके चेहरेपर चिन्ता और गम्भीरता छायी हुई थी। वह उपन्यास पूरा करनेमें लगा हुआ था।

"क्यों, अभी सोनेका विचार है कि नहीं ?" उसकी पत्नीने पूछा।

"नहीं", लेखकने कहा, "मेरी नायिका खलनायकके पंजेमें फँस गयी है, उसे छुड़ाये बग़ैर मुझे नींद कहाँ आयेगी।"

"उसकी उम्र क्या है ?"

"क़रीब बाईस।"

"तो चिराग़ बुझा दो और सो रहो। वह बालिग़ है, अपनी रक्षा आप कर सकती है। नाहक़ परेशान न होओ।"

बिस्मिल्लाह

युवती : "आपकी कहानीका अन्त बहुत सुन्दर है।"

लेखक : "आरम्भके विषयमें आपका क्या विचार है ?"

युवती : "मैं अभी उसे पढ़ना शुरू करनेवाली हूँ।"

लिख डालूँ

बर्नार्ड शॉसे किसीने पूछा, "किसी विषयमें आप कुछ न जानते हों तो क्या करें ?"

"तो उस विषयपर कोई किताब लिख डालूँ।"

नामकरण

"मैं अपने नये उपन्यासका नाम क्या रखूँ ?"
"क्या उसमें कहीं 'ढोल' शब्द आया है ?"
"नहीं तो।"
"उसमें कहीं 'नगाड़ा' शब्द आया है क्या ?"
"ना।"
"तो उपन्यासका नाम रखो—'न ढोल न नगाड़ा'"

प्रकाशन

एक प्रयत्नशील लेखक अपनी रचनाके प्रकाशनके विषयमें प्रकाशकसे मिलने आया।

प्रकाशक : "यह है तो सुन्दर कृति, परन्तु हम मशहूर नामोंवाले लेखकोंकी ही चीजें छापते हैं।"

लेखक : "क्या ही अच्छी बात है ! मेरा नाम किशनचन्दर है।"

मजबूर लेखक

लेखक : "दस साल तक बराबर लिखनेके बाद कहीं मुझे पता लग सका कि दरअसल मैं लेखक होने योग्य नहीं हूँ।"

मित्र : "फिर क्या आपने लिखना छोड़ दिया ?"

लेखक : "अजी कहाँ, तबतक तो मैं लेखकके रूपमें बहुत प्रसिद्ध हो चुका था !"

गजल

आगा हश्र : "कोई गजल सुनाओ।"
तवाइफ : "कौ हजूर गजल सुनिहो ?"
हश्र साहब : "बस रहने दो, सुन लिया।"

छोटी कहानी

लेखक : "मैं जो कुछ जानता हूँ, वह सब इस कहानीमें है।"
सम्पादक : "तब तो यह बहुत ही छोटी कहानी होनी चाहिए।"

भाड़ा

मकान मालिक : "तुम अपने कमरेका भाड़ा कब चुकानेवाले हो?"

परेशान लेखक : "ज्यों ही प्रकाशकका चेक मिला जिसे वह मेरे उपन्यासको स्वीकार करनेकी सूरतमें भेजेगा; वह उपन्यास मैं अच्छा-सा विषय और माक़ूल 'इन्सपिरेशन' मिलते ही शुरू कर देना चाहता हूँ।"

कविता

सम्पादक : "कृपया आप अपनी कविता काग़ज़के एक तरफ़ ही लिखकर दिया करें।"

कवि : "परन्तु अबतक तो आप दोनों ओर लिखी स्वीकारते रहे हैं।"

सम्पादक : "वह तो निबाह लेते थे।"

कवि : "तात्पर्य?"

सम्पादक : "यही कि हमारा बस चले तो आपको एक तरफ़ भी न लिखने दें।"

ईश्वर

श्रीमती एडी नामक लेखिका अपनी कृतियोंको ईश्वर-प्रेरित मानती थी। एक बार उसने अपनी किसी किताबके कॉपीराइटके लिए अर्ज़ी दी। उसमें उसने लेखकका नाम 'ईश्वर' दिया।

उसकी अर्ज़ी यह कहकर नामंजूर कर दी गयी कि ईश्वरको अभी अमेरिकन नागरिक नहीं बनाया गया।

पारिश्रमिक

सम्पादकने किसी लेखकको लिखा, "कृपया कोई नया लेख भेजिए; अगर लेख अच्छा होगा तो पारिश्रमिक भेज दिया जायेगा।"

लेखकने जवाब लिखा, "कृपया आप पारिश्रमिक भेजिए। पारिश्रमिक अच्छा होगा तो लेख भेज दिया जायेगा।"

प्रीति

राजकुमार : "मुझे सख्त ताज्जुब है कि मेरे दरबारी आप सरीखे विद्वानुसे नफ़रत करते हैं और मुझ सरीखे मूर्खसे प्यार करते हैं!"

दाँते : "आपको इतना ताज्जुब न होगा जब आप यह हक़ीक़त जान लेंगे कि लोग अपने सरीखे लोगोंसे प्यार करते हैं!"

स्थूल-काया

सम्पादक : "अफ़सोस है कि हम आपकी कविताका इस्तेमाल न कर सकेंगे।"

कवि : "क्यों, क्या नुक्स है उसमें ? क्या बहुत लम्बी है ?"

सम्पादक : "हाँ, बहुत लम्बी है, बहुत चौड़ी है और बहुत मोटी है।"

तब और अब

मशहूर लेखक : "दस बरस पहले आपने मेरी एक कहानी पच्चीस रुपयेको खरीदी थी न ?"

सम्पादक : "हाँ, लेकिन हमने अभी उसे छापा नहीं है।"

मशहूर लेखक : "अच्छा, तो उसे अब मुझे ढाई सौ रुपयेमें वापस कर दीजिए, अब मेरी कुछ प्रतिष्ठा है और उसे मैं बिगाड़ना नहीं चाहता।"

पर्याप्त-ज्ञान

प्रोफ़ेसर : "तुम अठारहवीं सदीके वैज्ञानिकोंके बारेमें क्या जानते हो ?"

विद्यार्थी : "यही कि सब मर चुके हैं ।"

ज़मीन

शिक्षक : "पृथ्वीका आकार कैसा है ?"

जॉनी : "गोल ।"

शिक्षक : "तुमने कैसे जाना कि पृथ्वी गोल है ?"

जॉनी : "अच्छा चौकोर सही । मैं इस विषयमें बहस नहीं करना चाहता ।"

इतिहासवेत्ता

शिक्षक : "१६२७ में क्या हुआ रे रामू ?"

रामू : "शिवाजी महाराजका जन्म हुआ, सर ।"

शिक्षक : "अच्छा १६४८ में क्या हुआ ?"

रामू (ज़रा सोचकर) : "शिवाजी महाराजको इक्कीसवाँ वर्ष लगा, सर ।"

स्त्री

तॉलस्तॉयने गोर्कीसे कहा, "जब मेरा एक पैर क़ब्रमें होगा, जब मैं मरनेवाला होऊँगा, तब मैं औरतकी हक़ीक़त बताऊँगा; और फिर जनाज़ेमें घुसकर कह दूँगा—अब तुमसे जो हो सो कर लो !"

कृति

"क्या आपकी 'साहस-विकास' नामक पुस्तक समाप्त हो गयी ?"

"हो तो गयी है, मगर मुझे उसे किसी प्रकाशक तक ले जानेका साहस नहीं होता।"

रहम

"कल रात मेरे यहाँ चोर घुस आये।"

"अच्छा !"

"उन्होंने मेरा सारा घर छान मारा। वहाँ था ही क्या ! आख़िर वे मेरी टेब्लपर दस रुपये रखकर चले गये !"

शिक्षण

पर्याप्त-ज्ञान

प्रोफ़ेसर : "तुम अठारहवीं सदीके वैज्ञानिकोंके बारेमें क्या जानते हो ?"

विद्यार्थी : "यही कि सब मर चुके हैं।"

ज़मीन

शिक्षक : "पृथ्वीका आकार कैसा है ?"

जोनी : "गोल।"

शिक्षक : "तुमने कैसे जाना कि पृथ्वी गोल है ?"

जोनी : "अच्छा चौकोर सही। मैं इस विषयमें बहस नहीं करना चाहता।"

इतिहासवेत्ता

शिक्षक : "१६२७ में क्या हुआ रे रामू ?"

रामू : "शिवाजी महाराजका जन्म हुआ, सर।"

शिक्षक : "अच्छा १६४८ में क्या हुआ ?"

रामू (ज़रा सोचकर) : "शिवाजी महाराजको इक्कीसवाँ वर्ष लगा, सर।"

शुमार

शिक्षक : "पानीपतके मैदानमें कितनी लड़ाइयाँ हुई थीं ?"

विद्यार्थी : "जी तीन।"

शिक्षक : "गिनाओ।"

विद्यार्थी : "एक, दो, तीन।"

ग़नीमत

पिता (सरोष) : "तो तू तीस लड़कोंके क्लासमें आखिरी रहा ?"

पुत्र : "अगर और बड़ा क्लास होता तो मामला बदतर हो गया होता।"

क्या करें

एक काहिल विद्यार्थी : "अब क्या करें ?"—

उसके भाईबन्द : "पैसा उछालें, अगर चित पड़े तो सिनेमा देखने चला जाये। अगर औंधा पड़े तो नाटक देखने चला जाये। अगर किनारेपर खड़ा रहे तो पढ़ने बैठें।"

कृषि-विशारद

कृषि-कॉलेजका ताजा ग्रेजुएट : "तुम्हारे खेतीके तरीक़े बिलकुल 'आउट ऑफ़ डेट' (युगबाह्य) हैं, उस दरख्तसे पाँच सेर भी सेब मिल जायें तो मुझे ताज्जुब होगा।"

बूढ़ा किसान : "मुझे भी ताज्जुब होगा, वह तो नाशपातीका पेड़ है।"

दिक्-मूढ़

एक राजनीतिक वक्ता तक़रीर करते हुए कह रहा था, "मैं न पूरब जानता हूँ न दक्खिन, न उत्तर न पच्छिम।"

एक श्रोता : "तो आप घर जाइए और जुग़राफ़िया सीखिए।"

मालिक-मकान

एक अँग्रेजी गाइड बम्बईके कुछ विद्यार्थियोंको कैनिलवर्थका किला दिखा रहा था। वह बोला, "सैंकड़ों सालोंसे इस इमारतका एक भी पत्थर नहीं छुआ गया, किसी चीजकी मरम्मत नहीं की गयी!"

"क्या इत्तिफ़ाक है!" एक विद्यार्थी बोला, "हमारी खोलीका और क़िलेका मालिक एक ही शख्स मालूम होता है!"

चट्टे-बट्टे

शिक्षक : "आदमीसे मिलता हुआ अगर कोई प्राणी है तो वह बन्दर है।"

विद्यार्थी : "और भी एक प्राणी है।"

शिक्षक : "कौन?"

विद्यार्थी : "औरत।"

गधा

शिक्षक (गुस्सेमें) : "लड़को, जानते हो मेरी छड़ीके सिरेकी ओर एक गधा बैठा है।"

एक (बे-ध्यान) लड़का (उत्सुकतासे) : "छड़ीके किस सिरेकी तरफ है, साहब?"

मुश्किल वह आ पड़ी है कि···

प्रोफेसर (परीक्षा-भवनमें) : "क्या सवाल मुश्किल है?"

परीक्षार्थी : "सवाल तो आसान है, जवाब मुश्किल है।"

पाजामा

शिक्षक : "पाजामा एक वचन है या बहुवचन?"

विद्यार्थी : "ऊपरसे एक वचन है, नीचेसे बहुवचन।"

हास्यास्पद

क्लासको लगातार हँसता देखकर प्रोफ़ेसरने खीजकर कहा, "क्या तुम लोग मुझपर हँस रहे हो?"

"जी नहीं।"

"तब इस कमरेमें हँसनेकी और चीज़ ही क्या है?"

सर्वनाम

शिक्षक : "रमेश, सर्वनामके दो उदाहरण तो दो।"

रमेश (घबड़ाकर) : "कौन? मैं?"

शिक्षक : "शाबाश! ठीक है।"

चमड़ा

शिक्षक : "अच्छा अब गायके चमड़ेका कोई फ़ायदा बताओ।"

विद्यार्थी : "वह गायको लपेटे रखता है।"

भूतकाल

गुरु : "जागना क्रियाका भूतकाल क्या है?"

शिष्य : "सोना।"

गधा

"प्रोफ़ेसर साहब, अगर मैं आपको 'गधा' कह दूँ तो इसमें अपमान हो जायेगा?"

"अवश्य।"

"और अगर गधेको 'प्रोफ़ेसर' कहूँ तो?"

"तब न होगा।"

"ठीक है, प्रोफ़ेसर साहब!"

गरमीका असर

शिक्षक : "गरमीका चीज़ोंपर क्या असर होता है ?"

विद्यार्थी : "गरमीसे चीज़ें बढ़ जाती हैं और ठंढसे सिकुड़ जाती है।"

शिक्षक : "जैसे ?"

विद्यार्थी : "जैसे गरमीमें दिन बड़ा और जाड़ोंमें छोटा हो जाता है।"

एक दिनकी देर

"तू कभी काम वक्तपर नहीं करता। तुझ सरीखा अनियमित लड़का मैंने नहीं देखा। तू कब जन्मा था ?"

"दूसरी अप्रैलको"

"वहां भी तूने एक दिनकी देर की !"

क्या बनेगा ?

मास्टर : "विज्ञान, तू क्लासका सबसे निकम्मा लड़का है। तू न लिख सकता है, न पढ़ सकता है, न तुझे हिसाब आता है, न भूगोल, न इतिहास। समझमें नहीं आता तू आगे चलकर क्या करेगा !"

विज्ञान : "मैं मास्टर बनूँगा। लड़कोंसे लिखने, पढ़ने, सवाल हल करने, वगैरहके काम कराया करूँगा। आप भी तो यही करते हैं !"

क्रिकिट

व्याकरण और निबन्धका इम्तहान था, शिक्षकने क्रिकिटपर निबन्ध लिखनेको कहा। एक छोटे लड़केके सिवा सब विद्यार्थी लिखनेमें व्यस्त थे। वक्त जब खत्म होनेको आया तो एकाएक उस लड़केमें जीवन आ गया। एक वाक्य लिखा और उत्तर पुस्तक दे दी—जुमला था,

"बरसातकी वजहसे खेल बन्द रहा।"

मर्दे-मैदाँ

शिक्षक : "फ़तहपुर सीकरीके मैदानमें बाबरका मुक़ाबला किसने किया था, अबदुल क़ादिर !"

क़ादिर मियाँ (एकाएक जगकर) : "साहब, मैंने नहीं किया; मैं तो कल छुट्टीपर था।"

डूबतेको पानी

परीक्षामें सफल होनेके बाद रमेश अपने प्राइवेट ट्यूटरकी तारीफ़ करते हुए बोला, "सर, क्या बताऊँ, आपके पाठ मेरे लिए ऐसे साबित हुए, जैसे डूबतेको पानी।"

रेखागणित

शिक्षक : "जब जार्ज वाशिंग्टन तुम्हारी उम्रका था तब तक सर्वेअर बन गया था।"

विद्यार्थी : "और जब वह आपकी उम्र तक पहुँचा अमेरिकाका प्रेसिडेन्ट बन गया था।"

उच्चारण

"एक लफ़्ज़ है जिसका तलफ़्फ़ुज़ हमेशा ग़लत किया जाता है।"

"कौन-सा ?"

"ग़लत।"

फ़ुल बैंच

एक मास्टर साहब कुछ भेंड़े थे। जब वे क्लासमें किसी लड़केकी तरफ़ मुखातिब होकर 'स्टेंड-अप' कहते तो तीन लड़के बैंचपर खड़े हो जाते थे।

दूरी

शिक्षक : "बताओ नीलाम्बर, चन्द्रमा दूर है या चीन ?"

नीलाम्बर : "चीन।"

शिक्षक : "चीनको तुम दूर क्यों समझते हो ?"

नीलाम्बर : "क्योंकि चन्द्रमाको तो हम देख सकते हैं, मगर चीन कहीं दिखाई देता है ?"

खुद बतायेगा

मास्टरने लड़केसे एक सवाल पूछा। सवाल पेचीदा था। उसकी समझमें नहीं आ रहा था। दूसरे लड़केने उसके कानमें चुपकेसे कहा, "मास्टर गधा है।"

मास्टर (दूसरे लड़केसे) : "हाँ-हाँ, तुम उसे क्यों बताते हो ? वह खुद ही समझकर बतायेगा।"

गणित

प्रोफ़ेसर : "अगर क्लासमें लड़की हो तो लड़कोंको गणित पढ़ा सकना ग़ैर-मुमकिन है।"

श्रोता : "लेकिन कोई लड़का ऐसा भी हो सकता है कि लड़कियोंकी मौजूदगीके बावजूद...।"

प्रोफ़ेसर : "हो सकता है; पर ऐसे लड़केको पढ़ाना फ़िजूल होगा।"

विद्या-वारिधि

एक : "इस वक़्त बारिश हो जाय तो बड़ा फ़ायदा हो !"

दूसरा : "हाँ, इस वक़्तको एक मिनिटकी बारिश एक सेकण्डमें वह काम करेगी जो बादकी एक बरसकी बारिश एक महीनेमें भी नहीं कर सकती।"

अन्तर

शिक्षक : "कुमारी और श्रीमतीमें क्या अन्तर है ?"

विद्यार्थी : "श्रीमान्‌का अन्तर है ।"

प्रमाण-पत्र

शिक्षक : "विजय, तेरे सब सवाल ग़लत है, तुझे कुछ नहीं आता, जब मैं तेरी उम्रका था तो तुझसे दो क्लास आगे था ।"

विजय : "आपको अच्छा मास्टर मिला होगा ।"

तीसरा फल

एक किसानका लड़का कॉलेजसे घर आया। सब नाश्ता करने बैठे। एक तश्तरीमें दो अमरूद रखे थे। नवयुवक विद्यार्थी अपने वाल्दैनको अपनी चतुराई दिखलानेके लिए बोला,

"मैं साबित कर सकता हूँ कि ये दो नहीं तीन अमरूद हैं ।"

"कैसे ?" पिताने पूछा ।

लड़का : "इस तरह—देखो, यह 'एक', यह 'दो', पर एक और दो तीन होते हैं हो गये न तीन ?"

पिता : "इनमें-से पहला मैं खाऊँगा; दूसरा तेरी माँ खायेगी; तीसरा तू खाना ।"

मोस्ट इम्पॉर्टेण्ट

प्रोफ़ेसर (गम्भीर होकर) : "प्रश्न-पत्र अब मुद्रकके पास है । परीक्षाका सिर्फ़ एक हफ्ता रह गया है । आप लोगोंको कोई सवाल पूछने है ?"

क्लासकी पिछली लाइनसे एक आवाज आयी, "मुद्रकका नाम क्या है ?"

आसान काम

शिक्षक : "बढ़िया चित्रकार हाथके दो-तीन इशारोंमें ही हँसती शकलको रोती बना सकता है।"

लड़का : "इसमें कौन-सी बड़ी बात है। मेरे बाप तो एक हाथमें बना देते हैं।"

गर्व-खर्व

एक प्रोफ़ेसर : "मेरे हाथके नीचेसे हज़ार बारह सौ विद्यार्थी निकल चुके होंगे····।"

विनोबा : "हज़ार बारह सौ विद्यार्थी निकल गये यह तो ठीक है, पर कोई हाथ भी आया ?"

अर्जुन कौन था ?

"बापू जी, अर्जुन कौन था ?"

"ले ! तो फिर तू स्कूलमें जाकर पढ़ता क्या है ? पैसे ही बिगाड़ता है ? इतना भी नहीं जानता ? तुझे अपने अज्ञानपर शर्म नहीं आती। ला वह रामायण, अभी तुझे बताऊँ कि अर्जुन कौन था।"

ग्रहण

शिक्षक : "ग्रहण कितने प्रकारके होते हैं ?"

विद्यार्थी : "अनेक प्रकारके—चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण, पाणिग्रहण,····"

आफ़रीं

"अगर डीनने अपने लफ़्ज़ वापस न लिये तो मैं कॉलेज छोड़ दूँगा।"

"क्या कहा था उसने तुमसे ?"

"यह कि : 'कॉलेज छोड़ दो'।"

अन्तर

शिक्षक : "कुमारी और श्रीमतीमें क्या अन्तर है ?"
विद्यार्थी : "श्रीमानका अन्तर है।"

प्रमाण-पत्र

शिक्षक : "विजय, तेरे सब सवाल गलत हैं, तुझे कुछ नहीं आता, जब मैं तेरी उम्रका था तो तुझसे दो क्लास आगे था।"

विजय : "आपको अच्छा मास्टर मिला होगा।"

तीसरा फल

एक किसानका लड़का कॉलेजसे घर आया। सब नाश्ता करने बैठे। एक तश्तरीमें दो अमरूद रखे थे। नवयुवक विद्यार्थी अपने वालदैनको अपनी चतुराई दिखलानेके लिए बोला,

"मैं साबित कर सकता हूँ कि ये दो नहीं तीन अमरूद हैं।"

"कैसे ?" पिताने पूछा।

लड़का : "इस तरह—देखो, यह 'एक', यह 'दो', पर एक और दो तीन होते हैं हो गये न तीन ?"

पिता : "इनमें-से पहला मैं खाऊँगा, दूसरा तेरी माँ खायेगी, तीसरा तू खाना।"

मोस्ट इम्पॉर्टेण्ट

प्रोफेसर (गम्भीर होकर) : "प्रश्न-पत्र अब मुद्रकके पास है। परीक्षाका सिर्फ एक हफ्ता रह गया है। आप लोगोंको कोई सवाल पूछने हैं ?"

क्लासकी पिछली लाइनसे एक आवाज आयी, "मुद्रकका नाम क्या है ?"

दो कारण

एक दार्शनिक प्रोफ़ेसरको खुद अपनेसे ही बातें करनेकी आदत थी। एक रोज़ उसके एक सहयोगीने मज़ाक़ उड़ानेकी ग़रज़से पूछा,

"आप अपनेसे बातें किया करते हैं। यह आप आदतन करते हैं या इसका कोई और कारण है?"

प्रोफ़ेसर : "कारण हैं, एक नहीं दो! एक तो यह कि मैं हमेशा बुद्धिमान् आदमीकी ही बातें सुनना चाहता हूँ और दूसरा यह कि मैं केवल बुद्धिमानोंसे ही बातें करना पसन्द करता हूँ!"

विचक्षणा

एक माँ अपनी लड़कीको किसी किण्डरगार्टन स्कूलमें भर्ती कराना चाहती थी, लेकिन लड़कीकी उम्र सिर्फ़ पाँच बरसकी थी, जब कि दाख़िलेके लिए उसे छह सालकी होना जरूरी था। माँ परीक्षकसे बोली,

"मेरे विचारसे उसमें छह वर्षकी लड़कीके सब लक्षण मौजूद हैं।"

परीक्षक : "अच्छा देखें।" फिर लड़कीसे : "बेटी, तुम्हारे मनमें आयें सो कुछ शब्द बोलो तो।"

पाँच वर्षकी बालिका बोली, "तर्क-सम्मत वाक्य बोलूँ या विशृङ्खलित शब्दावली?"

मासूम

एक सण्डे-स्कूलकी शिक्षिका परलोकपर प्रवचन कर रही थी। उसने स्वर्गके सुखों और नरकके दुःखोंका सविस्तार चित्रण किया।

पूर्णाहुति करती हुई बोली, "अच्छा, हैलेन! तुम स्वर्ग जाना चाहोगी या नरक?"

बच्ची हैलेन, जो बड़े ध्यानसे सुन रही थी, विचार-मग्न होकर बोली, "मैं तो दोनों जगह देखना चाहूँगी।"

भाग्यशाली

पण्डितजी : "प्राचीन आर्य लोग किस विषयमें हमारी अपेक्षा अधिक भाग्यशाली थे ?"

विद्यार्थी : "उन्हें सीखे बग़ैर संस्कृत आती थी।"

जनरल डैबिलिटी

मास्टर : "तेरा इतिहास कमज़ोर देखकर मैंने तुझे उसका एक पन्ना बीस दफ़ा लिखकर लानेको कहा था, मगर तू पन्द्रह ही बार लिखकर लाया है !"

विद्यार्थी : "क्या करूँ मास्टर साहब, मेरा गणित भी तो कमज़ोर है।"

ग़ैरमुमकिन

सुबोधिनी (क्लासमें अपनी शिक्षिकासे) : "बहनजी, आज मेरी सहेली कहती थी कि एक बच्चेको हथिनीके दूधपर रखा। वह उसके ऐसा माफ़िक आया कि उसका वज़न पाँच सेर रोज़ बढ़ता गया !"

"बिलकुल ग़ैरमुमकिन बात है !"

"नहीं, वह कहती थी बिलकुल सच्ची बात है।"

"ऐसा हो ही नहीं सकता। कहीं किसी बच्चेका वज़न पाँच सेर रोज़ बढ़ते सुना भी है ? किसका बच्चा था ?"

"हथिनीका।"

कुत्तेपर निबन्ध

शिक्षक : " 'हमारा कुत्ता', पर तुम्हारा निबन्ध बिलकुल वैसा ही है जैसा तुम्हारे भाईका !"

विद्यार्थी : "इसलिए कि हमारे घरमें एक ही कुत्ता है।"

दो कारण

एक दार्शनिक प्रोफ़ेसरको खुद अपनेसे ही बातें करनेकी आदत थी। एक रोज़ उसके एक सहयोगीने मज़ाक़ उड़ानेकी ग़रज़से पूछा,

"आप अपनेसे बातें किया करते हैं। यह आप आदतन करते हैं या इसका कोई और कारण है ?"

प्रोफ़ेसर : "कारण हैं, एक नहीं दो ! एक तो यह कि मैं हमेशा बुद्धिमान् आदमीकी ही बातें सुनना चाहता हूँ और दूसरा यह कि मैं केवल बुद्धिमानोंसे ही बातें करना पसन्द करता हूँ !"

विचक्षणा

एक माँ अपनी लड़कीको किसी किण्डरगार्टन स्कूलमें भर्ती कराना चाहती थी, लेकिन लड़कीकी उम्र सिर्फ़ पाँच बरसकी थी, जब कि दाखिले के लिए उसे छह सालकी होना ज़रूरी था। माँ परीक्षकसे बोली,

"मेरे विचारसे उसमें छह वर्षकी लड़कीके सब लक्षण मौजूद हैं।"

परीक्षक : "अच्छा देखें।" फिर लड़कीसे : "बेटी, तुम्हारे मनमें आयें सो कुछ शब्द बोलो तो।"

पाँच वर्षकी बालिका बोली, "तर्क-सम्मत वाक्य बोलूँ या विशृङ्खलित शब्दावली ?"

मासूम

एक सण्डे-स्कूलकी शिक्षिका परलोकपर प्रवचन कर रही थी। उसने स्वर्गके सुखों और नरकके दुःखोंका सविस्तार चित्रण किया।

पूर्णाहुति करती हुई बोली, "अच्छा, हैलेन ! तुम स्वर्ग जाना चाहोगी या नरक ?"

बच्ची हैलेन, जो बड़े ध्यानसे सुन रही थी, विचार-मग्न होकर बोली, "मैं तो दोनों जगह देखना चाहूँगी।"

लेटलतीफ़

शिक्षक : "तुम इतनी देरसे क्यों आते हो ?"
लतीफ़ : "घरसे चलते वक्त देर हो जाती है।"
शिक्षक : "जल्दी क्यों नहीं रवाना होते ?"
लतीफ़ : "जल्दी रवाना होना चाहता हूँ मगर उसके लिए भी देर हो जाती है।"

महायात्री

शिक्षक : "तुम जानते हो कि ऊँट बिना पिये आठ रोज चलता है ?"
विद्यार्थी : "पी ले तो न मालूम कितना चले !"

छुट्टी

"छुट्टी किस रोज होनी चाहिए ?"
"जिस रोज पाठ याद न हो।"

ऐन कही !

शिक्षक : "यह एक पुरानी कहावत है कि बेवकूफ़ ऐसे सवाल कर सकता है जिनका अक्लमन्द जवाब न दे सके।"
विद्यार्थी : "कोई ताज्जुब नहीं कि मैं किसी सवालका जवाब न दे सका।"

हिन्दी-ज्ञानी

"मैंने हिन्दीके तीन सबक पढ़े हैं।"
"तो क्या तुम किसी हिन्दी-भाषीसे बातचीत कर सकते हो ?"
"नहीं तो, लेकिन जिस-किसीने भी शुरूके ये तीन सबक पढ़े हों उसके साथ मैं धड़ाकेसे बातचीत कर सकता हूँ।"

स्मरण-शक्ति

एक स्मरण-शक्ति-संवर्धिनी संस्थाने अपने एक स्नातकको पत्र लिखा,

"श्रीमन्, हमारी संस्थाका पूर्ण कोर्स ले चुकनेके उपलक्ष्यमें आपको हार्दिक अभिनन्दन। क्या हम आपसे अनुरोध कर सकते हैं कि आप कृपा करके हमारे कोर्सकी उपयोगिता, गुणकारिता और लाभदायकताका दिग्दर्शन कराते हुए हमें एक क़ीमती सम्मति प्रदान करें ?

पुनश्च—आप यहाँसे जाते वक़्त जो अपनी टोपी, छड़ी और जूतियाँ भूल गये थे उन्हें हम पार्सल पोस्ट-द्वारा आपकी सेवामें प्रेषित कर रहे हैं।"

हिसाब बराबर

शिक्षण : "रमेश, तुम्हारे घटानेके सवालमें नौ पाईकी कमी है।"

रमेश (तीन पैसे देते हुए) : "लीजिए; अब तो ठीक है।"

तालीम

हबशी : "आपने अपने कुत्तेको ऐसी तालीम कैसे दे दी। मैं तो अपने कुत्तेको कुछ सिखा ही नहीं सकता।"

वहशी : "आसान बात है। बस आपका ज्ञान कुत्तेसे ज़्यादा होना चाहिए।"

हिमालय

"हिमालय न होता तो क्या होता ?"

"हिमालय न होता तो तेनसिंह उसपर चढ़ नहीं सकता था।"

फल

शिक्षक : "गरमीमें होनेवाला कौन-सा फल सबसे मीठा और खट्टा होता है ?"

विद्यार्थी : "परीक्षा-फल !"

लेटलतीफ़

शिक्षक : "तुम इतनी देरसे क्यों आते हो ?"

लतीफ़ : "घरसे चलते वक्त देर हो जाती है।"

शिक्षक : "जल्दी क्यों नहीं रवाना होते ?"

लतीफ़ : "जल्दी रवाना होना चाहता हूँ मगर उसके लिए भी देर हो जाती है।"

महायात्री

शिक्षक : "तुम जानते हो कि ऊँट बिना पिये आठ रोज चलता है ?"

विद्यार्थी : "पी ले तो न मालूम कितना चले !"

छुट्टी

"छुट्टी किस रोज होनी चाहिए ?"

"जिस रोज पाठ याद न हो।"

ऐन कही !

शिक्षक : "यह एक पुरानी कहावत है कि बेवकूफ़ ऐसे सवाल कर सकता है जिनका अक्लमन्द जवाब न दे सके।"

विद्यार्थी : "कोई ताज्जुब नहीं कि मैं किसी सवालका जवाब न दे सका।"

हिन्दी-ज्ञानी

"मैंने हिन्दीके तीन सबक़ पढ़े हैं।"

"तो क्या तुम किसी हिन्दी-भाषीसे बातचीत कर सकते हो ?"

"नहीं तो, लेकिन जिस-किसीने भी मुझसे ये तीन सबक़ पढ़े हों उसके साथ मैं धड़ाकेसे बातचीत कर सकता हूँ।"

अटपटी अँग्रेज़ी

स्कूलमें मास्टरने सिखाया, "माई हेड माने मेरा सिर।"

लड़का घर पहुँचकर सबक़ याद करने लगा, "माई हेड माने मास्टर-का सिर"—यह उसके बापने सुन लिया। उसने ग़लती ठीक करायी, "माई हेड माने 'मास्टरका सिर' नहीं 'मेरा सिर'।"

अगले दिन स्कूलमें मास्टरने पूछा, "माई हेड माने ?"

लड़का : "स्कूलमें मास्टरका सिर, घरपर मेरे बापका सिर।"

अनुकूलता

शिक्षक : "विलियम, क्या तुम बता सकते हो कि शरीर किस तरह अपनेको बदलते हुए हालातके माफ़िक़ बना लेता है ?"

विली : "जी हाँ, मेरी चचीका हर साल ४५ पौण्ड वजन बढ़ता है, मगर उसकी चमड़ी चटखती नहीं।"

टैक्स

अर्थशास्त्रका प्रोफ़ेसर : "परोक्ष टैक्स (Indirect taxation) का कोई उदाहरण दो।"

नया विद्यार्थी : "कुत्तेका टैक्स, साहब।"

प्रोफ़ेसर : "वह कैसे ?"

विद्यार्थी : "उसे कुत्तेको नहीं अदा करना पड़ता।"

ग़लतियाँ पिताजीकी

शिक्षक : "क्यों गिरीश ! यह निबन्ध जो तुम घरसे लिखकर लाये हो, तुमने ही लिखा है ?"

गिरीश : "जी मैंने ही लिखा है। सिर्फ़ इसकी ग़लतियाँ मेरे पिता-जीकी हैं।"

निर्यात

परीक्षक : "किसी भी सालमें अमेरिकासे निर्यात किये गये की मात्रा बताइए।"

विद्यार्थी : "१५९२ में—बिलकुल नहीं !"

बड़ी कुरबानी

"सण्टी लगे चम-चम विद्या आवे घम-घम" का जमाना था।

एक दफ़ा कुछ लड़के स्कूल जा रहे थे। रास्तेमें देखा कि एक क़साई एक बकरेको खींचे लिये जा रहा है। बकरेकी जानेकी इच्छा नहीं मालूम होती थी, रोता था, चिल्लाता था।

लड़के : "इसे कहाँ ले जा रहे हो ?"

कसाई : "कुरबानीके लिए।"

लड़के : "हम तो समझे कि इसे स्कूल ले जा रहे हो। कुरबानीके लिए जानेमें इसपर ऐसी क्या आफ़त पड रही है जो इतना दुःखी हो रहा है।"

डेली ब्रेड

ईसाई शिक्षक : "बच्चो, प्रार्थनामें तुम 'रोजकी रोटी' ही क्यों माँगते हो, हफ्ते-भरके लिए क्यों नहीं ?"

लड़का : "क्योंकि हर रोज़ ताजा मिल जाती है।"

सर्वस्व

शिक्षक : "चुन्नू, अगर तुम्हारे बापको दो रुपये रोज मिलें तो चार दिन बाद उनके पास क्या होगा ?"

चुन्नू : "एक बँगला, एक मोटर, एक रेडियो, एक टेलिफोन, बहुत-सी मिठाई, कपड़े, खिलौने.........।"

यू नो

शिक्षक : "बोलो विनोद, 'यू नो' माने क्या ?"

विनोद : "आप जानो, साहब।"

संयोग

मास्टर : "संयोगका कोई अच्छा उदाहरण बताओ !"

एक लड़का : "मेरी माँ और बापका विवाह एक ही दिन हुआ था।"

तस्वीर

शिक्षक : "मैदानमें घास चरती हुई गायकी तस्वीर बनाकर लाये, रुस्तम ?"

रुस्तमने एक कोरा काग़ज़ शिक्षकके हाथमें थमा दिया।

शिक्षक : "यह तो कोरा काग़ज़ है !"

रुस्तम : "एक मैदानकी घास चट कर जानेके बाद गाय और घास चरने दूसरे मैदानमें गयी है।"

शिक्षण

पिता : "आज तुमने स्कूलमें क्या सीखा ?"

छोटा लड़का : "आज मैंने स्कूलमें 'जी हाँ' 'जी नहीं', सीखा।"

पिता (खुश होकर) : "यह सीखा तुमने ?"

लड़का : "हाँ आँ !"

इन्सपेक्टर

एक इन्सपेक्टरने क़रीब चार घण्टे तक स्कूलका मुआइना किया और खुश होकर बोला, "कोई लड़का मुझसे कुछ पूछना चाहता है ?"

एक लड़केने उठकर पूछा, "आप स्कूलसे कब जायेंगे ?"

डबल हाफ़

बुकसेलर : "यह वह किताब है जो तुम्हारा आधा काम कर देगी !"
विद्यार्थी : "वाह वा ! मुझे इसकी दो प्रतियाँ दे दो।"

शिक्षण

जार्ज बर्नार्ड शॉके एक परिचित युवकने उसे बताया कि वह लेखक बनना चाहता है।

"लेकिन कुछ लिखना शुरू करनेसे पहले मैं दो साल तक भ्रमण करना चाहता हूँ।"

"अच्छा है। फिर क्या करोगे ?"

"तब चार साल तक यूनिवर्सिटीमें रहूँगा।"

"अरे ! क्या तुम अपने शिक्षणमें बाधा डालोगे ?" शॉने हैरतमें आकर कहा।

दीर्घायुष्य

एक आदमी अपना १०५ वाँ जन्मदिन मना रहा था। अखबारवालों ने उसके दीर्घ-जीवनका रहस्य पूछा, बूढ़ा बोला, "तुम्हें पैंड्रोके कत्लका तो किस्सा याद होगा। मेरे दीर्घ-जीवनका रहस्य यही है कि पुलिस उसके कातिलका पता न लगा सकी।"

शुक्र

शिक्षक : "तो तुम शुक्रके दिन जन्मे हो ?"
विद्यार्थी : "जी"
शिक्षक : "तो तुम्हारे वाल्दैनको शुक्र-गुज़ार होना चाहिए कि……"
विद्यार्थी : "जी, वे कहते थे—खुदाका शुक्र है कि जुड़वाँ न हुए।"

क्रिया-कर्म

परीक्षक : "डूबे हुए आदमीको बाहर निकालनेपर पहले क्या करना चाहिए ?"

विद्यार्थी : "पर वह आदमी है किस जातिका ?"

परीक्षक : "इसमें जातिका क्या सवाल ?"

विद्यार्थी : "वाह ! ऐसा कैसे ? हिन्दू, मुसलमान, ईसाईकी व्यवस्था अलग-अलग है।"

सबक़

एक यहूदीका क़रीब पाँच वर्षका लड़का एक ऊँची जगहपर चढ़कर कहने लगा, "पिताजी, मैं कूद पड़ूँ ? आप झेल लेंगे ?"

"हाँ बेटा, कूद पड़ो मैं झेल लूँगा।"

"कूद पड़ूँ ?"

"हाँ, कूद पड़ो।"

लड़का कूद पड़ा। पर उसके पिताजी एकदम हटकर खड़े हो गये। लड़केके पैरकी हड्डी टूट गयी।

एक पड़ोसी यह सब देख रहा था। उसने उसके बापको कुछ सीधी-टेढ़ी सुनायी। वह बोला, "मैं अपने लड़केको फ़िलफ़ौर यह सबक़ देना चाहता था कि दुनियामें अपने बापका भी विश्वास न करो।"

सही तारीख़

परीक्षा-हॉलमें जाते समय एक विद्यार्थीने अपने अध्यापकसे पूछा, "आज क्या तारीख़ है, सर ?"

"तारीख़की फ़िकर मत करो। इम्तहानकी फ़िकर करो।"

"सर, मैं अपनी परीक्षा-कॉपीमें कमसे-कम एक बात तो सही लिखना ही चाहता हूँ।"

देरसे आनेका सबब

मास्टर : "नटवर, तू आज स्कूल देरसे क्यों आया ?"
नटवर : "साहब, मैं गिर गया था।"
मास्टर : "कहाँसे ?"
नटवर : "चारपाईसे।"

शयन

शिक्षक : "मदन, तू आज इतनी देर करके कैसे आया ?"
मदन : "साहब, आज मैं देर तक सोता रहा।"
शिक्षक : "अरे ! क्या तू घरपर भी सोता है ?"

नैपोलियन

"नैपोलियन जर्मन होता तो कितना अच्छा होता !"
"क्यों ? उससे क्या होता ?"
"क्योंकि मैंने परीक्षाके उत्तर-पत्रमें ऐसा लिखा है।"

शॉट !

एक लड़का काँपता हुआ अपने सहपाठीके पास आकर बोला, "जाडिया मास्टरके पीछे एक साँड़ बुरी तरह पड़ा है। बेचारे जान लेकर भाग रहे हैं। चलो जल्दी !"

सहपाठी फ़ौरन् साथ हो लिया।

पहला : "अरे ! यों ही चल रहे हो ! कैमरा तो ले लो, बड़ा बढ़िया शॉट है !"

अभेद

शिक्षक : "कुछ बड़े और कुछ छोटे पैग़म्बरोंके नाम बताओ।"
विद्यार्थी : "मैं उनमें छोटे-बड़ेका फ़िज़ूल भेद नहीं करता।"

प्रतिष्ठा

शिष्य : "गुरुदेव, आप तो कहते हैं कि जो प्रतिष्ठासे दूर भागता है, प्रतिष्ठा उसके पीछे दौड़ती है। मैं पिछले २० वर्षोंसे प्रतिष्ठासे दूर ही भागना चाहता रहा हूँ। पर प्रतिष्ठा तो मेरे पीछे कभी नहीं दौड़ी !"

गुरु : "ठीक है। मगर शायद तुम्हारी नजर सदा इसीपर रहती होगी कि देखें, प्रतिष्ठा पीछे आ रही है या नहीं !"

महाभारत किसने लिखा ?

मास्टर अपनी क्लासमें पढ़ा रहा था। मौजीलाल पढ़ाईकी तरफ़ ध्यान न देकर अपनी कॉपीपर गधेकी तस्वीर बना रहा था।

मास्टर : "मौजीलाल, बता 'महाभारत किसने लिखा ?' "

मौजीलाल : "मास्टर साहब, मुझे नहीं मालूम। मैंने नहीं लिखा। क्लासके किसी और लड़केने लिखा होगा !"

व्याख्या

स्कूल-इन्सपेक्टरने पाँच वर्षकी तरलासे पूछा, "राजनीतिज्ञ किसे कहते हैं ?"

तरला : "वह आदमी जो लैक्चर देता फिरता है।"

इन्सपेक्टर : "काफ़ी ठीक है, पर बिलकुल ठीक नहीं। लैक्चर तो मैं भी देता फिरता हूँ पर मैं राजनीतिज्ञ नहीं हूँ।"

तरला (हँसते-मुसकराते हुए) : "राजनीतिज्ञ वह है जो अच्छे लैक्चर देता है"

भाईचारा

शिक्षक : "अगर मैंने किसी आदमीको किसी गधेको पीटते देखा और उसे ऐसा करनेसे रोक दिया तो मैंने कौन-सा गुण दर्शाया ?"

विद्यार्थी : "भ्रातृ-प्रेम।"

खामोशी

शिक्षक : "खामोशी माने ?"

विद्यार्थी : "वह चीज जिसे सुनना चाहें तो सुन नहीं सकते।"

डरके मानी

गुरु : "लड़को, नैपोलियन बोनापार्ट इतना बहादुर और बलवान था कि वह जानता ही न था कि डरके मानी क्या होते हैं...।"

एक विद्यार्थी . "तो वह बड़ा बेवकूफ था !"

गुरु : "क्यों ?"

विद्यार्थी · "अगर डरके मानी उसे नही मालूम थे तो किसी कोशमे देख क्यों नही लिये ?"

कीड़ेकी खूराक

कैशियर : "मेरे ख्यालसे आप कीटाणुओंसे तो डरती नही। आपकी तनख्वाह जरा जीर्ण-शीर्ण नोटोंमें दे रहा हूँ।"

शिक्षिका . "चिन्ता न कीजिए। मेरी तनख्वाहपर कोई कीड़ा जिन्दा नही रह सकता।"

हाफ़िज़ा

शिक्षक : "जितेन्द्र, मुझे तुम्हारी हालतपर दुःख होता है। जब मैं तुम्हारी उम्रका था तो कांग्रेसके तमाम प्रेसीडेण्टोके नाम फ़रफ़र सुना देता था।"

जितेन्द्र : "सुना देते होंगे; मगर तबतक तीन-चार ही हुए होंगे।"

सहशिक्षणकी शुरूआत

"सहशिक्षणकी शुरूआत कब और कहाँसे हुई ?"

"एडनके बागमें आदम और हव्वासे।"

नौकरी

●

नवाँ*

यह देखकर कि जहाज़ कैसे साफ़-सुथरे रखे जाते हैं मैं नौसेनामें भरती हो गया। लेकिन यह मुझे भरती हो जानेके बाद मालूम हो सका कि उन्हें ऐसा साफ़-सुथरा कौन रखता है।

नेक-बद

मालिक : "तुम्हें पिछली जगह क्यों छोड़नी पड़ी ?"

उम्मीदवार : "नेकचलनीकी वजहसे।"

मालिक : "कोई नेकचलनीकी वजहसे भी निकाला जाता है ?"

उम्मीदवार : "जी, सज़ा तो मुझे पाँच बरसकी हुई थी, मगर जेलमें नेकचलनीकी वजहसे नौ महीने पहले छोड़ दिया गया।"

तरक्क़ी

क्लर्क : "मैं पाँच सालसे आपके यहाँ नौकरी कर रहा हूँ मगर अभी तक मुझे वही तनख्वाह मिल रही है।"

मैनेजर : "हाँ मुझे मालूम है। मगर क्या करूँ, मैं अपने दिलको सख्त नहीं बना पाता, क्योंकि हरबार जब मैं तुम्हें निकालनेका इरादा करता हूँ, मुझे तुम्हारे बाल-बच्चोंका खयाल हो आता है!"

रज

"क्यों रे रामा, इस कुरसीपर इतनी धूल क्यों है ?"

"मैं क्या करूँ साहब, सुबहसे इसपर कोई बैठा ही नहीं।"

नक़ल

क्लर्क : "साहब, दफ़्तरमें पुराने निकम्मे काग़ज़ातका अम्बार लग गया है। आप इजाज़त दें तो उन्हें जला डाला जाये।"

अफ़सर : "जलानेमें कोई ऐतराज़ नहीं है, मगर शायद भविष्यमें ज़रूरत पड़ जाये इसलिए उनकी नक़लें करा लो।"

पूर्व-रंग

दफ़्तरका मालिक : "मिस जोन्स, तुम सचमुच बड़ी ख़ूबसूरत लड़की हो !"

टाइपिस्ट गर्ल (लजाती हुई) : "सचमुच ?"

मालिक : "तुम्हारी पोशाक़ बड़ी सजीली होती है; आवाज़ निहायत रसीली है; लट घुँघराली और चाल मतवाली है।"

गर्ल (लज्जासे गड़ती हुई) : "इतनी तारीफ़ न कीजिए।"

मालिक : "हाँ यह तो ठीक है। पर हिज्जे और विरामोंकी चर्चा करनेसे पहले मैं तुम्हें प्रसन्नावस्थामें लाना चाहता हूँ।"

ठीक !

मिस्टर चपलूकी नौकरी बैंकमें लग गयी। कैशियरने उसकी तरफ़ एक-एक रुपयेके नोटोंका पैकेट उछालकर कहा, "चेक कर देखो कि सौ ही हैं न।" चपलू मियाँ जब '५६', '५७', '५८' पर पहुँचे तो अधीर हो उठे और पैकेटको दराज़में धरते हुए बोले, "जब यहाँतक ठीक है तो अख़ीर तक ठीक ही होंगे।"

जिगरी दोस्त

चपरासी : "साहब, टेलिफ़ोनपर आपका कोई जिगरी दोस्त आपको पूछ रहा है।"

साहब : "जिगरी दोस्त?"

चपरासी : "हाँ सरकार।"

साहब : "तुमने कैसे पहचाना कि हमारा जिगरी दोस्त है?"

चपरासी : "हुज़ूर बोलता है कि भाई, देख तो ज़रा कि दफ्तरमें वो बेवकूफ़ आया है या नहीं?"

वाय नाकामी !

मैनेजरने उम्मीदवारकी अर्जीपर नज़र डाली और निराशा-सूचक सिर हिलाते हुए कहा,

"सोरी ! हमें अकेला आदमी चाहिए इस कामके लिए।"

"और जब मैं कल यहाँ आया था तो आपने कहा था शादीशुदा आदमी चाहिए।"

"सोरी ! गलतीसे कहा होगा।"

"गल्तीसे ! मैंने कल सीधे यहाँसे जाकर शादी की !"

नौकरी

"मैंने अभी सपनेमें देखा कि मुझे नौकरी मिल गयी !"

"इसीलिए थके-माँदे नज़र आ रहे हो।"

नींद

मालिक : "तुम आज सुबह देरसे कैसे आये?"

क्लर्क : "साहब, मैं देरसे उठा।"

मालिक : "क्या तुम घरपर भी सोते हो?"

दासता

मालकिन : "देखो, तुम्हें मकान साफ़ करना होगा; लॉनकी घास काटनी होगी; फूलोंके पौधे लगाने होंगे; सामान खरीदकर लाना होगा; कपड़े इस्त्री करने होंगे; बच्चे सँभालने होंगे;........।"

उम्मीदवार : "देवीजी, यह एक दिनका काम है या पञ्चवर्षीय योजना है ?"

तुम कौन हो ?

एक रोज़ एक नवाब साहब अपनी पशुशालाके मुआइनेके लिए गये। हाथी, घोड़े वग़ैरह जानवरोंके विभागोंके कारिन्दोंने कोर्निश बजायी और अपना परिचय दिया। अन्तमें वे ऊँट-विभागमें पहुँचे। वहाँका मुंशी नया आदमी था। नवाबने पूछा, 'तुम कौन हो ?' बिचारा नरवस होकर बोला, "हुज़ूर मैं मुंशीखानेका ऊँट हूँ।" नवाब साहब हँस पड़े।

परीक्षा

"सेठजी, लो यह रुपया; मुझे दुकान झाड़ते हुए मिला है।"

"वाह, लड़का है तो ईमानदार! मैंने तेरी परीक्षा लेनेके लिए ही रखा था।"

"मेरा भी यही खयाल था।"

बरखास्त

"तो तुम्हें नौकरीसे जवाब मिल गया है ?"

"हाँ"

"क्यों"

"मेल नहीं बैठा।"

"तुममें और मालिकमें ?"

"नहीं, कैशबुकमें और कैशमें !"

सर्विस

इण्टरव्यूके दौरानमें मैनेजरने प्रार्थीसे पूछा, "पिछली जगह तुमने कितने वर्ष काम किया ?"

"पचास साल।"

"हूँ। और तुम्हारी उम्र कितनी है ?"

"पैंतीस साल।"

"लेकिन पैंतीस सालके होकर तुम पचास साल तक काम कैसे कर सकते हो ?"

"ओवर टाइम !"

नो वैकेंसी

अफसर : "कोई जगह खाली नहीं; नौकरीके लिए इतनी अर्जियाँ आती हैं कि सँभाले नहीं सँभलती।"

उम्मेदवार : "साहब, तो मुझे उनका रिकार्ड रखनेका ही काम दे दीजिए।"

कामेश्वरी

मालिक : "तुम इस साल चार बार तो दादाके मरनेकी छुट्टी ले चुके हो, अब फिर काहेकी छुट्टी चाहिए !"

नौकर : "आज मेरी दादी फिर विवाह कर रही है।"

आलसी

मालिक : "तुम एक ही थैला क्यों लिये हो जब कि दूसरे मजदूर दो ले चल रहे हैं ?"

मजदूर : "क्योंकि वे एकको जगह दो चक्कर करनेमें आलस करते हैं !"

आज़ादी

"इस नये काममें तो आपको काफ़ी आज़ादी है न ?"

"कहना तो यही चाहिए ! सुबह सात बजेसे जितना पहले चाहूँ पहुँच सकता हूँ और रातको नौ बजे बाद जब चाहूँ छूट सकता हूँ ।"

तरक़्क़ी

कोमलचन्द : "साहब, मेरी पत्नीने मुझसे कहा था कि मैं तरक़्क़ीके लिए आपसे दरख्वास्त करूँ ।"

प्रधान : "ऐसा ? तो, मैं अपनी पत्नीसे पूछूँगा कि तरक़्क़ी दूँ या नहीं ।"

काम ?

साथी : "इतवारको तुम्हें काम है क्या मिस ग्लोरिया ?"

टाइपिस्ट गर्ल : "नहीं, काम तो क़तई नहीं है ।"

साथी : "तो सोमवारको ज़रा जल्दी दफ़्तर आना ।"

द्रुत-विलम्बित

साहब : "क्यों, तुम आज देरसे क्यों आये ?"

कारकुन : "मैं आज ज़ीनेसे गिर गया था ।"

साहब : "तब तो तुम्हें और भी जल्दी आ पहुँचना चाहिए था ।"

नया सिपाही

ऑफ़िसके बाहर एक नोटिस लगा था, "सिपाही चाहिए ।"

एक छोकरा उस नोटिसको लेकर मैनेजरसे मिलने पहुँचा । मैनेजरने पूछा, "यह नोटिस साथ क्यों लाये हो ?"

"अब इसकी क्या ज़रूरत है आपको ? मैं आजसे आपका नया सिपाही हो तो गया ।"

छुट्टी

नया कर्मचारी (मैनेजरसे) : "आप अपने क्लर्कोंको दो हफ्तेकी छुट्टी देते हैं न ?"

"एक महीनेकी ।"

"एक महीनेकी । यह तो और भी अच्छा है ।"

"१५ दिनकी छुट्टी तो उन्हें मिलती ही है । १५ दिनकी तब मिल जाती है, जब मैं १५ दिनकी छुट्टी लेता हूँ ।"

बेंगन

नवाब : "वज़ीरे आज़म, बेंगनका शाक बड़ा लज़ीज़ होता है ।"

वज़ीर : "जी हुज़ूर बजा फर्माया । बेंगन तो शाकोंका राजा है, तभी तो इसके सरपर मुकुट रखा है ।"

नवाब : "मगर बेंगनका शाक इसलिए खराब है कि बादी करता है ।"

वज़ीर : "बिला शक खराब है, खुदावन्द । तभी तो इसका 'बेगुन' नाम पड़ा है ।"

नवाब (हँसते हुए) : "मगर अभी तो आप उसकी तारीफ़ कर रहे थे, अभी बुराई करने लगे !"

वज़ीर : "आलमपनाह, मैं आपका गुलाम हूँ, बेंगनका नहीं ।"

मायाचार

एक बेकारको सर्कसकी नौकरी दी जाने लगी,

मालिक बोला : "तुम्हें बस यह करना है कि शेरके पिंजड़ेमें घुसकर उसे गोश्तका टुकड़ा दो और चले आओ । रहस्य इतना ही है कि तुम शेरको यह विश्वास दिला दो कि तुम उससे डरते नहीं हो ।"

"मुझे यह नौकरी नहीं करनी", आदमी बोला, "मैं इतना धोखेबाज़ नहीं हो सकता ।"

बेदाग़

एक आदमीने किसी फ़र्ममें ख़ज़ानचीकी जगहके लिए अर्ज़ी दी और उसमें यह भी लिख दिया कि अमुक क्लर्कसे मेरे विषयमें विशेष जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

मैनेजरने उस क्लर्कसे पूछा, "क्या यह आदमी ईमानदार है ?"

"ज़रूर ईमानदार है ! चोरीके इलज़ाममें ग्यारह बार गिरफ्तार हुआ है, मगर हर बार बरी कर दिया गया है।"

चुनाव

एक मैम अपने खाविंदके लिए कमीज खरीदने किसी स्टोरपर पहुँची। दूकानदारने यके-बाद-दीगरे सारा स्टॉक उलट दिया, मगर मैम साहिबा हर बार सिर हिलाती रही।

"आपको तकलीफ हुई !"

"ना ना, हमें क्या तकलीफ होवी है ! हमारे पास सात कमीजें और हैं, अगर उनमेंसे भी कोई पसन्द न आये तो बेहतर हो कि आप ही ......कुछ बदल डालें।"

कॉलर

श्रीमती जोन्स : "मुझे अपने पतिके लिए कुछ कॉलर खरीदने हैं, मगर मैं साइज भूल गयी !"

दूकानदार : "साढ़े तेरह इन्च।"

श्रीमती जोन्स : "ठीक है। आपने कैसे जाना ?"

दूकानदार : "मैम साहिबा, जो लोग अपनी बीवियोंको कॉलर खरीदने भेजते हैं उनको हमेशा यही साईज होती है।"

सफलता

"व्यापारमें सफलताके लिए दो बातें जरूरी है—ईमानदारी और दानिश्मन्दी।"

"ईमानदारी क्या ?"

"हमेशा—चाहे कुछ भी हो जाये, चाहे कितना ही नुकसान उठाना पड़े—हमेशा अपने दिये हुए वचनका पालन करना।"

"और दानिशमन्दी ?"

"कभी वचन न देना।"

दूकानदार

शर्तिया

विलियम : "कोई बढ़िया इत्र दिखलाइए, मुझे अपनी प्रेयसीको नज़र करना है।"

इत्र-फ़रोश : "यह लीजिए। इसका नाम है 'शायद'। सौ रुपये तोलेका है।"

विलियम : "सौ रुपये तोलेका? मुझे 'शायद' नहीं, 'शर्तिया' चाहिए।"

गटर-गंगा

किसी मॉडर्न होटलमें एक जेंटिलमैन किसी चीज़की बदमज़गीसे [illegible] कर बैरासे बोला,

"इसे क्या कहते हैं, भई ?"

"व्यवस्थापक लोग या ग्राहक लोग ?" बैराने पूछा।

मापदण्ड

सरदारजी : "मुझे अपने लड़केके लिए एक जूता चाहिए।"

दूकानदार : "क्या नाप है उसका ?"

सरदारजी : "नाप-वाप तो मुझे मालूम नहीं, मगर वह [illegible] इञ्ची पहनता है।"

चुनाव

एक मैम अपने खाविंदके लिए कमीज खरीदने किसी स्टोरपर पहुँची। दूकानदारने यके-बाद-दीगरे सारा स्टॉक उलट दिया, मगर मैम साहिबा हर बार सिर हिलाती रही।

"आपको तकलीफ हुई!"

"ना ना,हमें क्या तकलीफ होनी है! हमारे पास सात कमीजें और हैं, अगर उनमें-से भी कोई पसन्द न आये तो बेहतर हो कि आप ही ··· कुछ बदल डालें।"

कॉलर

श्रीमती जोन्स : "मुझे अपने पतिके लिए कुछ कॉलर खरीदने हैं, मगर मैं साइज भूल गयी!"

दूकानदार : "साढ़े तेरह इञ्च।"

श्रीमती जोन्स : "ठीक है। आपने कैसे जाना?"

दूकानदार : "मैम साहिबा, जो लोग अपनी बीवियोंको कॉलर खरीदने भेजते हैं उनकी हमेशा यही साईज़ होती है।"

सफलता

"व्यापारमें सफलताके लिए दो बातें जरूरी हैं—ईमानदारी और दानिशमन्दी।"

"ईमानदारी क्या?"

"हमेशा—चाहे कुछ भी हो जाये, चाहे कितना ही नुकसान उठाना पड़े—हमेशा अपने दिये हुए वचनका पालन करना।"

"और दानिशमन्दी?"

"कभी वचन न देना।"

सीटी

फेरीवाला : "मैम साहिबा, आज कुछ लेंगी—चाकू, छुरी, क़लम, पेन्सिल, चमची, तश्तरी, हेअर-पिन, पेपरवेट, आसन, टोकरी....।"

मैम : "अगर तुम फ़ौरन् न चले गये तो मैं पुलिसको बुलाती हूँ।"

फेरीवाला : "वाह ! तो लीजिए मैम साहिबा सीटियाँ, छह-छह पैसे की हैं।"

दाल कम है

"आपको दालमें नमक ज़्यादा नहीं लग रहा ?"

"नहीं; नमक तो ठीक है पर नमकके हिसाबसे दाल कम है।"

मिठाई

हलवाईने साईनबोर्ड लगाया :

"तीन-सौ बरस पुरानी मिठाईकी दूकान।"

सामनेवाले हलवाईने यह :

"रोज़-ब-रोज़की ताज़ी मिठाईकी दूकान।"

पतेकी कही

दवा बेचनेवाला (अपने चारों तरफ़ आदमियोंका झुण्ड इकट्ठा करके) : "भाइयो, मैं इन गोलियोंको बीस बरससे बराबर बेच रहा हूँ, और आज तक किसीने भी इसकी शिकायत नहीं की। आखिर क्यों ?"

एक आवाज़ : "क्योंकि मुर्दे शिकायत करने नहीं आते।"

व्यापारमें सफलताकी कुंजियाँ

'टारज़न, दी एप-मैन'का लेखक ऐडगर व्यापारमें असफल रहा था। फिर वह लेखन-कार्यमें जुट गया और 'व्यापारमें सफलताकी कुंजियाँ' नामक पुस्तकमाला निकालनी शुरू की। इसमें उसने खूब कमाया !

बजाज

एक बजाज अपनेमें तेरह आने गज मारकीन बेच रहा था। ग्राहकने गज-भर मारकीन माँगी। बजाजने झटसे अपनी ओढ़नेकी चादर दो हाथ नापकर फाड़ डाली।

उसकी स्त्री चिल्लायी : "हैं हैं! यह क्या कर रहे हो?"

बजाज बोला : "मैंने तुमसे बीस दफ़े कह दिया है कि दूकानके काममें दख़ल मत दिया करो!"

बड़ा अज़ाब

एक शख़्स एक सिगरेट ख़रीदकर चला गया। पाँच मिनिट बाद ही वह दूकानपर भड़भड़ाता हुआ वापस आया। और चिल्लाकर बोला,

"यह सिगरेट तो महा वाहियात है!"

दूकानदार : "आपकी शिकायत बेजा नहीं है, लेकिन आपके मत्थे तो एक ही सिगरेट पड़ी है,यहाँ तो इस बलाके सैकड़ों डब्बे भरे पड़े हैं।"

बीमा एजेण्ट

सेठ : "नौजवान, तुम्हें अपनेको सौभाग्यशाली समझना चाहिए। तुम्हें मालूम है आज मैंने बीमाके सात आदमियोंसे मिलनेसे इनकार कर दिया?"

एजेण्ट : "जी, मालूम है। वह सातों मैं ही हूँ।"

सँभालकर

एक स्कॉचने एक बक्स ख़रीदा।

दूकानदार : "कहिए लपेटकर बाँध दूँ इसे?"

स्कॉच : "अजी नहीं, शुक्रिया, कागज और डोरीको इसके अन्दर रख दीजिए।"

पूँजी और अनुभव

"जब मैंने धन्धा शुरू किया तो मेरे पास अनुभव था और मेरे भागीदारके पास पूँजी ।"

"तब तो पूँजी और अनुभवके मेलसे आपका रोज़गार ख़ूब चमका होगा ?"

"और क्या अख़ीरमें मेरे पास पूँजी और उसके पास अनुभव हो गया ।"

साइनबोर्ड

एक दूकानपर साइनबोर्ड था—

"जब आप यहाँ आ सकते हैं तो और कहीं धोखा खाने क्यों जाते हैं ?"

काल-अभेद

ग्राहक : "कचौड़ियाँ तो कलकी हैं !"

होटलवाला : "तो क्या हुआ ? कल कोई खराब दिन था क्या ?"

ख़रीदो-बेचो

"आपको १०३ बुखार है, सेठजी ।"

"जब १०५ हो जायेगा, बेच दूँगा ।"

घोड़ा

"यह लीजिए, आपके लायक़ घोड़ा यह है। उम्र पाँच वर्ष है। स्वस्थ, बलिष्ठ, सर्वाङ्गसुन्दर । दस मील तक बिना रुके जाता है ।"

"मेरे कामका नहीं, मैं तो शहरसे सिर्फ़ आठ मीलपर रहता हूँ । इसे लिया तो दो मील पैदल वापिस चलना पड़ा करेगा ।"

हक़का भुगतान

एक मारवाड़ी कम्पनीका आदमी रुईकी खरीदके लिए शहर गया हुआ था। वहाँ तूफ़ानकी वजह उसे रुक जाना पड़ा। उसने तार किया, "शहरमें सख्त तूफ़ान और गड़बड़ है। कुछ दिनों कोई काम नहीं हो सकता।"

"तो फिर गुज़रे हुए कलसे अपनी हक़की छुट्टियोंपर रहो।" जवाब मिला।

लखपती

एक लखपती मरकर स्वर्गका दरवाज़ा खटखटाने लगा,

देव : "कौन हो तुम ?"

लखपती (सगर्व) : "मैं लखपती हूँ !"

देव : "क्या चाहते हो ?"

लखपती : "अन्दर आना।"

देव : प्रवेशाधिकार पानेके लिए तुमने क्या किया है ?"

लखपती : "मैंने एक भूखी बुढ़िया भिखारिनको दो पैसे दिये। एक मोटरके नीचे कुचले हुए दुखी दरिद्र विद्यार्थीको एक पैसा दिया ?"

देव . "और कुछ किया ?"

लखपती : "और तो कुछ याद नहीं आता।"

देव (दूसरे देवसे) : "भई, क्या करें इसका ?"

दूसरा : "इसके तीन पैसे लौटाकर इसे जहन्नुम भेज दो।"

खरीद-फ़रोख्त

एक : "मेरा इरादा है कि दुनियाकी तमाम सोने, चाँदी, हीरे, पन्नोंकी खदानें खरीद लूँ।"

दूसरा : "मगर मेरा इरादा अभी उन्हें बेचनेका नहीं है।"

चिट

ग्राहक : "तुम तो कहते थे यह कमीज़ बिलकुल ऊनी है । इसके अन्दर लगी हुई चिटपर तो लिखा है, 'बिलकुल सूती' ।"

दूकानदार : "आप समझे नहीं, यह चिट तो कीड़ोंको धोखेमें डालनेके लिए लगायी हुई है ।"

मैडलिस्ट

"मेरे पास पाँच मीलकी दौड़में जीता हुआ सोनेका एक मैडल, हॉकीमें जीता हुआ कप, तैराकीमें जीती हुई शील्ड, कुश्तीमें जीती हुई दो चाँदीको मुगदर हैं ।"

"तब तो तुम बड़े स्पोर्ट्समैन हो !"

"स्पोर्ट्समैन ? अरे मैं तो गिरवी रखनेका धन्धा करता हूँ !"

घड़ी कितनेमें बेची ?

एक जेबकतरेने किसीकी घड़ी उड़ा ली । अगले दिन चोरबाज़ारमें उसे बेचने जा रहा था कि रास्तेमें एक उससे भी बड़े उस्ताद जेबकतरेने वह घड़ी तान दी । हज़रत मुँह लटकाये घर लौटे । बीबीने पूछा, "घड़ी कितनेको बेची ?" बोले, "जितनेको ख़रीदी थी उतनेको ही बेच दी ।"

द्रुत-विलम्बित

किसी व्यापारीने अपनी दूकानका बीमा कराया । बीमेका काम पूरा हुआ और आग लग गयी । कम्पनी बदमाशी समझ गयी । मगर प्रमाण न मिलनेके कारण कैफ़ियतमें लिखा,

"चार बजे बीमा हुआ और पाँच बजे आग लगी, समझमें नहीं आता कि एक घण्टेकी देर भी किस लिए हुई !"

ताज़ा

"क्या यह दूध ताज़ा है ?"

"ताज़ा ? अमां, तीन घण्टे पहले तो यह घास था।"

दूध

एक दूधवालेकी दुकानपर पटिया लगा हुआ था,

बिल्कुल असली दूध : १२ आने सेर

असली दूध : ८ आने सेर

दूध : ५ आने सेर

प्रियं ब्रूयात्

एक जूता-फ़रोश एक क्लर्क रखना चाहता था। एक उम्मेदवारसे बोला, "मान लो तुम किसी लेडीको जूते पहिना रहे हो। और वह तुमसे कहे, 'क्या तुम्हें मेरा एक पैर दूसरेसे बड़ा नहीं लगता ?' तो तुम क्या कहोगे ?"

"मैं कहूँगा, 'बड़ा नहीं, मैडम, एक दूसरेसे छोटा है।'"

"जाओ तुम्हारी नियुक्ति की गयी।"

बूमरेंग (Boomerang)

एक रैडीमेड कपड़ोंके दूकानदारके पास सात-सात रुपयेकी छह कमीज़ें थी जो बिक नहीं रही थीं। उसने अपनी मुश्किल अपने एक दोस्तको बतायी। दोस्त बोला, "इसकी आसान तदबीर है—नौ-नौ रुपयेके हिसाबसे पाँच कमीज़ोंके बिलके साथ छठी कमीज़ ऐंजेलोके यहाँ भेज दो। वह तुम्हारी ग़लती समझकर फौरन् लेगा।"

बनियेने ऐसा ही किया। लेकिन ऐंजेलोने पाँच कमीज़ें और उनका बिल यह कहकर वापस करा दिया कि उसे उनकी ज़रूरत नहीं है।

गुजारा

"मेरा यह कोट अद्भुत है !"

"मुझे तो मामूली लगता है।"

"तू समझा नहीं। देख इसकी रूई भड़ोंचकी है; वह मानचेस्टरमें कती; बुनायी अहमदाबादमें हुई; कपड़ा कानपुरसे खरीदा गया और कोट सिलवाया गया बम्बईमें !"

"पर इसमें नयी बात क्या है ?"

"क्यों नहीं? जिसके मैंने अभी तक पैसे भी नहीं चुकाये उसपर कितने लोगोंको रोजी मिली है !"

वापस

जूतेकी किसी दूकानके मुलाज़िमने एक ग्राहकको जूतोंकी जोड़ी दिखलायी। उसे पसन्द आ गयी, खरीद ली, मगर ग्राहकके पास पैसे कुछ कम थे। मुलाजिम बोला, 'कोई बात नहीं पैसे कल दे जाना।' जब ग्राहक चला गया तब मालिकको मालूम हुआ। उसने नौकरसे पूछा, "यह तुमने क्या किया! अब वह क्यूँ आने लगा ?"

नौकर: "आयेगा कैसे नहीं ? मैंने एक ही पैरके दो जूते बाँध दिये हैं।"

विशेषाधिकारी

एक रेशमकी दूकानके आगे बड़ी लम्बी क्यू लगी हुई थी।

एक ठिगना बनिया आगे बढ़नेकी कोशिश कर रहा था, मगर एक हृश घाटी (घरेलू मराठा नौकर) ने उसे धकेलकर पीछे कर दिया।

उसने फिर कोशिश की, मगर फिर नाकामयाब। बीस बार वह यूँ ही पीछे धकिया दिया गया। इसपर वह इत्मीनानसे बोला, "नहीं जाने देते तो मत जाने दो। मेरा क्या बिगड़ता है। मैं दूकान ही नहीं खोलूँगा।"

मुस्तक़िल-मिजाजी

मालिक-मकान (फेरीवालेसे चिढ़कर) : "अगर तुम दरवाजेसे तीस सेकण्डके अन्दर नहीं चले गये तो मैं⋯⋯"

फेरीवाला (प्रसन्न-वदन रहकर) : "अब आप ही फ़रमाइए कि आधी मिनिटमें मैं आपको क्या दूँ ?"

हमवज़न

दूकानदार : "कल तुम्हारा मक्खन वज़नमें कम निकला।"

ग्वालिन : "अच्छा ! तो इसकी वजह यह हुई कि कल बच्चेने सेर कहीं रख दिया था इसलिए मैंने तुम्हारी दी हुई एक सेर शक्करको बाटकी तरह इस्तेमाल किया था।"

दृष्टिभ्रम

ग्राहक : "मालूम होता है अब चीजें पहलेसे बहुत कम परोसी जाती हैं।"

होटलवाला : "महाशय, यह तो केवल दृष्टिभ्रम है। बात यह है कि हमारा होटल अब बड़ा हो गया है। इसलिए चीजें छोटी नज़र आती हैं।"

सैकिण्ड

उम्मेदवार : "मैं दुनियाका सबसे अच्छा सैल्समैन हूँ।"

मैनेजर : "अगर ऐसा मानते हो तो इन सिगरेटोंके ये बीस बक्स बेच डालनेकी कोशिश करो।"

उम्मेदवार : "मुझे अपने कथनमें एक संशोधन करना है। मैं केवल दूसरा सर्वोत्तम सैल्समैन हूँ। पहला तो वह है जिसने इन सिगरेटोंको तुम्हें बेच दिया।"

जटिल प्रश्न

सैल्समैन : "यह ऐसा कंघा है कि इसे आप दुल्लर कर सकते हैं; इसे हथौड़ेसे पीट सकते हैं; इसे मरोड़ सकते हैं; इससे हाथी…"

श्रोता : "मिस्टर, यह तो बताओ कि इससे तुम अपने बाल भी काढ़ सकते हो या नहीं !"

चावल भी है !

एक सज्जन रेशनके ज़मानेमें बम्बईके किसी होटलमें राइस-प्लेट खा रहे थे, कि कंकरी दाँतोंके बीच आकर 'कट'से बोली, इत्तिफ़ाक़से मैनेजर पास ही खड़ा था। पूछने लगा, "क्यों साहब, क्या कंकड़ियाँ हैं ?"

"सब कंकड़ियाँ नहीं हैं, चावल भी हैं," साहब बोले।

कल उधार

लड़का (दूकानदारसे) : "यह पैन मुझे दे दीजिए।"

दूकानदार ('आज नक़द कल उधार' वाले बोर्डकी ओर संकेत करके) : 'पहले इसे पढ़ लो।'

लड़का (हँसते हुए) : "कोई बात नहीं, मैं कल आकर उधार ले जाऊँगा।"

संक्षिप्त

"पाँच मिनिट ले सकता हूँ आपके ?"

"ज़रूर, मगर संक्षेपमें ही बोलें, दूसरोंके लिए मेरे पास बहुत ही कम शब्द हैं।"

"जी हाँ, इसीलिए तो मैं आया। मेरे पास बड़ा सुन्दर 'शब्दकोष' है। ज़रूर खरीदें, आपके बड़े कामका है।"

शुद्ध

कॉलेजियन : "क्या यह गोघृत शुद्ध है ?"
दूकानदार : "ऐसा शुद्ध जैसी तुम्हारे सपनोंकी रातें !"
कॉलेजियन (विचारमग्न होकर) "डालडा ही दो।"

जन्म-स्थान

अमेरिकाके एक हज्जामने लोगोंको आकर्षित करनेके लिए, हॉलीवुडकी एक अभिनेत्रीके नामपर साइनबोर्ड लगाया,

"एलिज़ाबेथ टेरीका जन्म-स्थान यह है।" सामनेवाले दूसरे हज्जामने मुकाबलेमें साइन बोर्ड लगाया,

"एलिज़ाबेथ टेरीका मूल जन्म-स्थान यह है।"

बाईसे-परेशानी

छोटे साझीदारने बड़ेसे शिकायत की, "मुझे अपनी टाइपिस्ट बदलनी पड़ेगी।"

"क्यों ?"

"वह मेरे कमरेमें कदम-कदमपर रुककर मामूलीसे-मामूली लफ्ज़ोंके हिज्जे पूछती है। हर बार 'मुझे नहीं मालूम', कहनेमें मुझे तो बड़ी अकुलाहट होती है।"

विषम अनुपात

किसान : "अब तो अनाज सस्ता हो गया है, तुम्हें हजामतके पैसे आधे कर देने चाहिए।"

हज्जाम : "ना रे ! और ज्यादा लेने चाहिए।"

अनाजका भाव जब सस्ता हो जाता है तो किसान लोग ऐसे लम्बे चहरे बनाते हैं कि मुझे दूना मैदान साफ़ करना पड़ता है !"

क्लोअरेंस सेल !

मैनेजर : "तो तुम्हारे कहनेका तात्पर्य यह है कि तुमने वे सब साड़ियाँ बेच डालीं जिन्हें हम रद कर देनेवाले थे !"

नया सैल्समैन : "हाँ, मैंने अखबारमें एक छोटा-सा विज्ञापन दे दिया कि 'अब हमारे पास कुछ ऐसी साड़ियाँ बची हैं जिन्हें साधारण महिला नहीं खरीद सकतीं।' नतीजा यह हुआ कि दोपहर तक सब साफ़ हो गयीं !"

भण्डाफोड़

कैमिस्ट (अपनी चर्बीली औरतसे) : "नवनीता, अभी ज़रा देर दूकानमें नहीं आना, मैं चर्बी कम करनेकी छह बोतलें बेचनेकी कोशिश कर रहा हूँ।"

इश्तहारबाज़ी

इंग्लैण्डमें पहले फाँसी सरेआम दी जाती थी। और फांसी देनेसे पहले सज़ायाफ़्ताको भीड़के सामने बोलने दिया जाता था।

एक बार कोई विशिष्ट आदमी शीघ्र ही फाँसी दिये जानेवाले एक आदमीसे मिलने आया। उसने जेलरको रिशवत देकर रज़ामन्द कर लिया कि वह उसे अपराधीसे एकान्तमें मिल लेने दे। उनकी बातचीतका आखिरी जुमला सुन पड़ा, "याद रखना हाँ, मेरे वारिसोंके लिए सौ पौण्ड !"

फाँसी दिये जानेसे पहले शैरिफ़ने पूछा कि क्या वह लोगोंसे कुछ कहना चाहता है। अपराधीने कहा, "हाँ।" और तख़्तेपर चढ़कर बोलने लगा,

"लोगो ! जानेसे पहले मैं तुमसे एक बात कह जाना चाहता हूँ। उसे याद रखना। और वह यह है कि 'टावर ब्राण्ड' साबुन दुनियामें सबसे अच्छा है।"

ऊनी कोट

ग्राहक : "क्या यह कोट बिलकुल ऊनी है ?"

दूकानदार : "मैं आपसे झूठ नहीं बोलूँगा। सर्वथा ऊनी नहीं है, इसके बटन प्लास्टिकके हैं।"

ताजा

ग्राहक : "क्या ये सन्तरे ताजे हैं ?"

दूकानदार : "पिछले हफ्ते मैंने आपको जो सन्तरे दिये थे क्या वे ताजे थे ?"

ग्राहक : "हाँ।"

दूकानदार : "तो ये भी उसी ढेरके हैं !"

जूतोंकी धूल

एक किसान खेतमें पानी देकर आया और एक होटलमें घुसकर इधर-उधर घूमने लगा। पैरोंसे झड़ती हुई मिट्टीसे होटलका फर्श खराब होते देख मालिक बोला,

"जब आप यहाँ अन्दर आया करें तो मेहरबानी करके अपने जूतोंकी धूल झाड़कर आया करें।"

किसान (ताज्जुबसे) : 'किन जूतोंकी धूल ?"

चाय या काफ़ी

ग्राहक : "यह चाय है या काफ़ी ? पैट्रोल सरीखी लगती है।"

होटलवाला : "अगर यह पीनेमें पैट्रोल सरीखी लगती है तो यकीन मानिएगा यह काफ़ी है, क्योंकि हमारी चायका स्वाद पानीकी मानिन्द होता है।"

समान सुर

मॅनेजर : "मिस्टर रुस्तम, अब ग्राहककी शिकायत क्या है ?"

क्लर्क : "शिकायत तो कुछ नहीं है, साहब। ये ऐसे दो जूते चाहते हैं जो समान सुरमें बोलें।"

असिस्टेण्ट

एक आदमीने अपने घरकी चोरोंसे रक्षा करनेके लिए, एक बड़ा कुत्ता खरीदा। पर, जब एक दिन उसके घरमें चोर आये, तो वह कुत्ता सो रहा था। चोर काफ़ी सामान चोरी करके ले गये। वह आदमी दूसरे दिन उस दूकानपर पहुँचा, जहाँसे उसने कुत्ता खरीदा था। दूकानके मालिकसे उसने कहा, "देखा आपने अपने कुत्तेका कमाल !"

दूकानदारने कुछ सोचकर कहा, "असलमें, अब आपको एक ऐसे छोटे कुत्तेकी जरूरत है, जो समयपर उस बड़े कुत्तेको जगा सके।"

मिल्क-सॉल्यूसन

स्वास्थ्य विभागका एक इन्सपेक्टर किसी दूधकी दूकानपर मुआइनेके लिए आया। उसने दूधके डब्बोंमें-से एकका ढक्कन खुलवाया।

बोला, "यह तो बिलकुल पानी है ! दूध कहाँ ?"

दूकानदार : "अरे ! अरे ! माफ़ कीजिएगा; मेरी पत्नी इसमें दूध डालना भूल गयी होगी।"

चाय और काफ़ी

होटलवाला : "आपने चाय ली या काफ़ी साहब ?"

ग्राहक : "मालूम नहीं पड़ सका। लेकिन वह लेही जैसी लगती थी।"

होटलवाला : "तब तो वह चाय होगी; हमारी काफ़ी सरेशके मानिन्द लगती है।"

तबदीली

ग्राहक : "क्या इस फ्रान्सीसी सेण्डविचकी जगह अमरीकी सेण्डविच ला सकते हो ?"

वेटरने कुकसे कहा : "भई,इस फ्रेञ्चको जरा अमरीकी बना देना।"

थैंक यू

दूकानदार : "धेलेका खानेका सोडा आधी रातको खरीदने आयी है चुड़ैल ! एक गिलास गरम पानी पीकर कब्ज नहीं मिटा सकती थी ? सारी नींद खराब कर डाली !"

बुढ़िया : "अच्छी तरकीब बता दी बेटा ! राम तेरा भला करे। अब मैं तुझे क्यों तक़लीफ दूँ ? जाती हूँ, जीता रह।"

इलाजका इलाज

ग्राहक : *"मैं आपके यहाँसे कपड़ोंमें चायके दाग छुड़ानेका सौल्यूशन ले गया था न ?"*

दूकानदार : *"हाँ हाँ ! और दूँ क्या एक शीशी ?"*

ग्राहक : "नहीं, उस सौल्यूशनसे कपड़ोंपर जो दाग पड़ गये हैं उनके *छुड़ानेका सौल्यूशन चाहिए।"*

भीमकाय

३०० पौण्डसे अधिक वजनवाला एक पहलवान तैयार कपड़ोंकी एक दूकानके आगे खड़ा तैयार कमीज़ों, पैण्टों, पाजामों आदिको देख रहा था। *इतनेमें दूकान-मालिकने बाहर आकर कहा,* "आइए, नया स्टॉक आया है, आपको बहुत-सी चीज़ें पसन्द आयेंगी।"

"अरे साहब कहाँ ? मैं तो बस देख-भर रहा था। तैयार कपड़ोंमें तो बस रूमाल ही मुझे 'फिट' आता है।"

भोजन

"छोकरा, मैं यह खाना नहीं खा सकता, मैनेजरको तो बुलाकर लाओ !"

'बुलानेसे कोई फ़ायदा नहीं साहब, वह भी नहीं खायेंगे।'

भेलसेल

दूकानदार : "यह कोइला कोइला है !"

ग्राहक : "यह जानकर खुशी हुई। पिछली बार तो आधा कोइला आधा पत्थर निकला !"

अक्ल बड़ी कि···?

एक दूकानदारकी ग्राहकी घटती जा रही थी। आखिरी उपायके तौर-पर उसने एक तोतेको इस तरह पढ़ाकर टाँगा कि चाहे जैसी स्त्री आवे मगर वह बोले, "आहा ! क्या सौन्दर्य है !"

आज उस दूकानदारकी तीन दूकानें धड़ाधड़ चल रही हैं !

कुत्तेका पट्टा

ग्राहक : "मुझे कुत्तेके लिए एक अच्छा पट्टा चाहिए।"

दूकानदार : "लीजिए, कुत्ता कहाँ है, नाप कर देखूँ ?"

ग्राहक : "मैं ही देखे लेता हूँ।"

दूकानदार : "तो कुत्तेके लिए दूसरा पट्टा दूँ !"

एजेण्ट

"कहो, भाई, आज कोई ऑर्डर-वॉर्डर मिले ?"

"एक जगहसे मुझे दो ऑर्डर मिले—एक तो यह कि 'बँगलेसे बाहर निकल जाओ !' और दूसरा यह कि, फिर 'कभी यहाँ क़दम न रखना' !"

लूटने ही बैठा है !

दो चोर एक कपड़ेकी दूकानमें चोरी करने गये। कपड़ोंपर कीमतकी चिटें देखकर एक बोल उठा, 'ले, यह कापड़िया भी अब लूटने ही बैठा है !'

दूनी बिक्री

एक हलवाई चार आने गिलास दूध बेचता था। एक ग्राहकने एक गिलास तैयार करनेको कहा। उसे एक और गिलास पीना पड़ा। पीकर, हलवाईसे पूछा, "आप रोज कितने गिलास दूध बेच लेते हैं ?"

"पचास गिलास", हलवाई गर्वसे बोला।

"मैंने एक तदबीर सोची है जिससे आप सौ गिलास रोज बेच सकते हैं।"

आश्चर्यचकित होकर हलवाईने पूछा,

"कैसे ?"

"आसान बात है। गिलासोंको भरकर दिया कीजिए।"

धुआँधार धन्धा

"आज-कल मेरा धन्धा खूब धुआँधार चल रहा है। एक ही दिनमें मुझे दस हजारका ऑर्डर मिला !"

"ऐसी मन्दीके जमानेमें ! मुझे यकीन नहीं आता।"

"लेकिन अगर मैं तुम्हें ऑर्डर कैन्सिल करनेवाला खत दिखलाऊँ तो ?"

राय

होटलवाला : "हमारे होटलके विषयमें ये चन्द रायें हैं जिन्हें आप अपने साथ ले जा सकते हैं।"

मेहमान : "शुक्रिया, लेकिन आपके होटलके बारेमें मेरी निजी रायें हैं।"

भोजन

"छोकरा, मैं यह खाना नहीं खा सकता, मैनेजरको तो बुलाकर लाओ !"

'बुलानेसे कोई फ़ायदा नहीं साहब, वह भी नहीं खायेंगे।'

भेलसेल

दूकानदार : "यह कोइला कोइला है !"

ग्राहक : "यह जानकर खुशी हुई। पिछली बार तो आधा कोइला आधा पत्थर निकला !"

अक़्ल बड़ी कि···?

एक दूकानदारकी ग्राहकी घटती जा रही थी। आखिरी उपायके तौर-पर उसने एक तोतेको इस तरह पढ़ाकर टाँगा कि चाहे जैसी स्त्री आवे मगर वह बोले, "आहा ! क्या सौन्दर्य है !"

आज उस दूकानदारकी तीन दूकानें धड़ाधड़ चल रही हैं !

कुत्तेका पट्टा

ग्राहक : "मुझे कुत्तेके लिए एक अच्छा पट्टा चाहिए।"

दूकानदार : "लीजिए, कुत्ता कहाँ है, नाप कर देखूँ ?"

ग्राहक : "मैं ही देखे लेता हूँ।"

दूकानदार : "तो कुत्तेके लिए दूसरा पट्टा दूँ !"

एजेण्ट

"कहो, भाई, आज कोई ऑर्डर-वॉर्डर मिले ?"

"एक जगहसे मुझे दो ऑर्डर मिले—एक तो यह कि 'बँगलेसे बाहर निकल जाओ !' और दूसरा यह कि, फिर 'कभी यहाँ क़दम न रखना' !"

लूटने ही बैठा है !

दो चोर एक कपड़ेकी दूकानमें चोरी करने गये। कपड़ोंपर कीमतकी चिट्ठें देखकर एक बोल उठा, 'ले, यह कापड़िया भी अब लूटने ही बैठा है !'

दूनी बिक्री

एक हलवाई चार आने गिलास दूध बेचता था। एक ग्राहकने एक गिलास तैयार करनेको कहा। उसे एक और गिलास पीना पड़ा। पीकर, हलवाईसे पूछा, "आप रोज़ कितने गिलास दूध बेच लेते हैं ?"

"पचास गिलास", हलवाई गर्वसे बोला।

"मैंने एक तदबीर सोची है जिससे आप सौ गिलास रोज़ बेच सकते हैं।"

आश्चर्यचकित होकर हलवाईने पूछा,

"कैसे ?"

"आसान बात है। गिलासोंको भरकर दिया कीजिए।"

धुआँधार धन्धा

"आज-कल मेरा धन्धा खूब धुआँधार चल रहा है। एक ही दिनमें मुझे दस हज़ारका ऑर्डर मिला !"

"ऐसी मन्दीके ज़मानेमें ! मुझे यकीन नहीं आता।"

"*लेकिन अगर मैं तुझे ऑर्डर कैन्सिल करनेवाला खत दिखलाऊँ तो ?*"

राय

होटलवाला : "हमारे होटलके विषयमें ये चन्द रायें हैं जिन्हें आप अपने साथ ले जा सकते हैं।"

महमान : "शुक्रिया, लेकिन आपके होटलके बारेमें मेरी निजी रायें हैं।"

तालीम

लड़का : ([illegible]) : "पिताजी, मालिक पूछता है कि इस न सिकु-ड़नेवाली ऊनकी कमीज कुछ सिकुड़ेगी या नहीं।"

पिताजी : "क्या वह उसके फिट आती है ?"

लड़का : "नहीं, ढीली है।"

पिताजी : "तो वह सिकुड़ेगी ?"

ठण्डा-गरम

"क्या इस होटलमें ठण्डा और गरम पानी मिलता है ?"

"हां हां, गरमीमें गरम और जाड़ेमें ठण्डा।"

बहता पानी

महमान (चिढ़कर) : "देखिए, मेरे शयनागारकी छतसे बारिशका पानी धड़ाधड़ आ रहा है।"

होटलवाला : "बिलकुल हमारी परिचय-पत्रिकाके अनुसार, महाशय। हर कमरेमें बहता पानी।"

इन्तज़ार

गाड़ियोंके लेट आनेका ज़माना था।

टिकिट कलक्टर : "आप नहीं जा सकते इस गाड़ीसे !"

मुसाफ़िर : "क्यूँ ?"

टिकिट कलक्टर : "क्यूँ कि यह कलकी गाड़ी है। आपकी टिकिट आजकी गाड़ीकी है, जो कि कल सुबहसे पहले नहीं आयेगी।"

खोटी चवन्नी

एक औरत ट्रामपर चढ़ गयी। जब कण्डक्टर आया तो उसने एक चवन्नी दी।

कण्डक्टर : "माफ़ कीजिए, यह चवन्नी तो खोटी है।"

स्त्री चवन्नीको गौरसे देखकर बोली,

"बिलकुल वाहियात बात है; इसमें सन् १८०० पड़ा हुआ है। अगर खोटी होती तो अब तक चलती कैसे ?"

क़सूरवार

चेकर : "आपकी टिकिट बम्बईकी है मगर यह गाड़ी तो कलकत्ता जा रही है !"

मुसाफ़िर : "अब यह तो आप ड्राइवरसे कहिए !"

कट गये !

एक बसमें एक वृद्धा बैठी हुई थी। पास ही की सीटपर एक हज़रत सिगरेट पीने लगे। धूआँ जो स्त्रीकी आँखोंमें गया तो वह सिहर कर रह गयी, मगर कुछ न बोली। इधर ये कशपर-कश खींचने लगे। स्त्रीने मृदुतापूर्वक 'सिगरेट पीना मना है' के साइनबोर्डकी ओर इशारा किया। मगर ये न माने। स्त्रीके होठोंपर दृढ़ निश्चयकी रेखा खींच गयी। उसने अपनी पर्समें हाथ डाला;और जब वे महाशय खिड़कीके बाहर देख रहे थे। स्त्रीने अपनी कैंची निकालकर उनकी सिगरेटके जलते सिरेको काट दिया। पियक्कड़ महोदयके काटो तो खून नहीं, खींचो तो धुआँ नहीं !

सुरक्षा

एक किसी क़दर-खब्ती आदमी दो-मंज़िला बसपर सवार होकर ड्राइवरके पास जा बैठा और उसके साथ लगातार बातें करने लगा। ड्राइवरने दानिश्मन्दीसे काम लेते हुए कह दिया कि ऊपरके डैकपर ताज़ा हवाका मज़ा लें। वह बखुशी ऊपर चला गया। मगर चन्द मिनिटमें ही वापस आ गया।

"क्यों क्या हुआ ? ड्राइवरने पूछा,"ऊपर अच्छा नहीं लगा आपको ?"

"हाँ, हाँ बहुत अच्छा लगा। अच्छी हवा है; खुशनुमा दृश्य है। मगर सुरक्षा नहीं है—कोई ड्राइवर नहीं !"

आलमे-मस्ती

दो आदमी दावत खाकर घर मोटरपर वापस आ रहे थे। तेज़ मोटरमें ठण्डी हवाके झोकोंका दोनों मज़ेसे आनन्द लूट रहे थे। इतनेमें मोटर एक लैम्पके खम्भेसे टकरा गयी। एक चौंक पड़ा और बौखलाकर बोला, 'भाई ज़रा सँभालके।"

दूसरा : "अरे ! मैं इस खयालमें था कि तुम चला रहे हो !"

पहला या दूसरा !

आते हुए मुसाफिरोंकी सहूलियतके लिए जहाजका एक कर्मचारी रास्तेमें खड़ा हिदायत दे रहा था,

"फ़र्स्ट क्लास दाहिनी तरफ ! सैकिण्ड क्लास बाँयी तरफ !"

इतनेमें एक नवयुवती एक बच्चेको गोदमें लिये हुए पाससे गुजरी। उसे किसी क़दर हिचकिचाते देख कर्मचारी उसके पास आकर बोला, "फ़र्स्ट या सैकिण्ड ?"

लजाती हुई लड़की बोली, "मेरा नहीं है,यह तो मेरी बहनका है !"

नौका-विहार

"देखूँ तो सही तुम नावके बारेमें कितना जानते हो। एकाएक तूफान आ जाये तो तुम क्या करो ?"

"लङ्गर डाल दूँगा।"

"इसके बाद एक और तूफान आ जाये तो क्या करोगे ?"

"एक और लङ्गर डाल दूँगा।"

"ठहरो आपके पास दो लङ्गर कहाँसे चले आ रहे हैं ?"

"वहींसे जहाँसे आपके तूफान चले आ रहे हैं।"

चाँटा

दिल्लीकी एक बसमें दो आदमियोंमें कुछ कहा-सुनी हो गयी। एक बोला, "ऐसा चाँटा मारूँगा, काश्मीरी गेट जा पड़ोगे !"

दूसरा : "भई ज़रा हलका मारना मुझे चाँदनी चौक ही उतरना है !"

रफ़्तार

"क्या मैं मोटर बहुत तेज चला रही थी ?"

"जी नहीं, आप बहुत नीची उड़ रही थीं।"

पाइलट

हवाई जहाज जब काफ़ी ऊँचाईपर पहुँचा तो उसका उड़ाका एकाएक ठहाके मार-मार कर हँसने लगा।

एक मुसाफ़िरने पूछा, "क्या मजाक़ है, भई ?"

"मैं यह सोच-सोचकर हँस रहा हूँ कि जब पागलखानेवालोंको मालूम होगा कि मैं निकल भागा तो वे क्या कहेंगे !"

मंगल-यात्रा

एक अमेरिकनने मंगल-ग्रह जानेवाले पहले रॉकेटमें जगह रिजर्व करायी और एक ब्रिटिश कम्पनीमें ज़िन्दगीका बीमा कराना चाहा। कम्पनीने उसका प्रस्ताव मंजूर कर लिया। प्रीमियम ड्योढ़ा रखा गया और पॉलिसी में एक क्लॉज़ जोड़ा गया,

"लौट कर न आना मर जानेका सबूत न होगा !"

गुप-चुप

एक जहीमशहीम लाला साहब सामनेसे आते हुए ताँगेको रुकवाकर बोले,

"अरे स्टेशन चलेगा ? क्या लेगा ?"

ताँगेवाला : "लालाजी, ज़रा पीछेको तरफ़ आकर बात करिए। घोड़ी देख लेगी तो बैठने न देगी।"

शराब-बन्दी

"गाड़ी क्यों रुक गयी ?"

"अलकोहोल कम हो गया है।"

"क्या यह गाड़ी अलकोहोलसे चलती है ?"

"नहीं, मगर ड्राइवर चलता है।"

टाइम !

तेज़ीसे साइकिलपर जाते हुए एक सज्जनसे एक राहगीरने घबराहटमें पूछा, "बाबूजी, आपकी घड़ीमें क्या घड़ा है ?"

बिना घड़ी देखे हुए ही बाबूजी बोले, "नौने पौ।"

ठण्डके मारे !

उत्तरी ध्रुवका यात्री : "जहाँ हम थे वहाँ ऐसी ठण्ड थी कि हमारी मोमबत्तीकी लौ जम गयी और हम उसे बुझा न सके।"

हरीफ़ : "यह तो कुछ नहीं है। जहाँ हम थे वहाँ लफ़्ज़ हमारे मुँहसे बर्फ़के टुकड़े बन-बनकर निकलते थे। और यह जाननेके लिए कि हम क्या बातें कर रहे हैं हमें उन्हें भूनना पड़ता था।"

एटम

"वैज्ञानिक धन्य हैं, उन्होंने आख़िर अणुके टुकड़े कर ही दिये!"

"इसमें धन्यकी क्या बात है ? वैज्ञानिकोंने तो इतने वर्ष लगा दिये। अगर अणुपर यह लेबल लगाकर कि 'सावधानीसे उठाओ, टूटनेका डर है', उसे रेलवे पार्सलसे भेजा जाता तो दसियों बरस पहले उसके टुकड़े हो गये होते।"

भागो !

हैमिंग्वेसे उसकी साहसपूर्ण अफ़रीका-यात्रापर लोग सवालपर-सवाल पूछते चले जा रहे थे। एकने पूछा, "क्या यह सच है कि अगर हमारे पास टॉर्च हो तो जंगली जानवर नुक़सान नहीं पहुँचा सकते ?"

"यह तो इसपर निर्भर है कि तुम उसे लेकर कितना तेज़ भाग सकते हो!" हैमिंग्वेने जवाब दिया।

लेट !

"आज तो गाड़ी विलकुल वक़्तपर आ गयी !"

"ठीक वक़्तपर ? यह तो कलकी गाड़ी है !"

चिड़िया

एक नवयुवती पहली बार हवाई जहाज़में उड़नेवाली थी। उसने किसी क़दर सशंक होकर उड़ाकेसे पूछा, "तुम हमें सुरक्षित नीचे तो ले आओगे न ?"

पाइलट : "ज़रूर ले आऊँगा मिस साहिबा, इत्मीनान रखें, आजतक तो मैंने किसीको ऊपर छोड़ा नहीं।"

गज-गामिनी

एक अमेरिकन किसी भारतीयको अपने देशकी विशालताका आइडिया दे रहा था, बोला, "आप सुवह टैक्सास राज्यकी रेलमें सवार हो जाइए, २५ घण्टे वाद आप अपनेको टैक्सास राज्यमें वापिस पायेंगे !"

भारतीय बोला : "ऐसी रेलगाड़ियाँ हमारे यहाँ भी हैं, २५ घण्टे बाद वहींकी वहीं।"

चमक

एक महिला हवाई जहाज़में पहली वार सफ़र कर रही थी।

"जहाज़ रुकवाना ज़रा !" वह एकाएक एयर होस्टैससे बोली।

"क्यों, क्या हुआ ?"

"मुझे नीचे उतरना पड़ेगा।"

"क्यों ?"

"शायद मेरा हीरेका बटन गिर गया है, नीचे पड़ा दीख रहा है।"

"आप अपनी जगहपर इत्मीनानसे बैठी रहिए। यह तो डल लेक है।"

सावधानी

ज्योतिषी : "एक सुन्दर युवती आपके रास्तेमें बार-बार आयेगी, पर उससे आप सावधान रहना।"

इञ्जिन ड्राइवर : "मुझे सावधान रहनेकी क्या जरूरत है ? सावधान तो उसे रहना चाहिए।"

"कोई मंज़िल हो मगर गुज़रा चला जाता हूँ मैं"

"क्षमा कीजिएगा, क्या यह गाड़ी माटुंगापर खड़ी होगी ?"

"हाँ, मुझे देखते रहिए और मैं जहाँ उतरूँ उससे एक स्टेशन पहले उतर जाइए।"

"धन्यवाद !"

मिसेज़ कैमिल

एक ऊँटनी रेलसे कट गयी। रेलवे कर्मचारी हिन्दुस्तानी था, ज्यादा अँग्रेज़ी नहीं जानता था। उसने हैड ऑफिसको तार किया—'मिसेज कैमिल कट गयी है।' तार पानेवाला अफसर अँग्रेज था। उसने यह समझकर कि कोई अँग्रेज महिला कट गयी है, स्वयं घटना-स्थलपर आया। आकर 'मिसेज कैमिल'को देखा, तो सख्त परेशाँ हुआ।

शुभ-लाभ

एक वोहरा अपने पीछे खड़ी हुई आतुर वधूका खयाल किये बगैर एक टिकिट-खिड़कीपर सावधानीसे बार-बार पैसे गिन रहा था। टिकिटबाबू यह नजारा देख-देखकर घुटता जा रहा था। बोला, "आपको इतमीनान हुआ या नहीं कि पैसे ठीक हैं ?"

आक्रोशसे भरे हुए वोहरेजी बोले,

"हाँ, बस सिर्फ ठीक ही निकले।"

यह तो कोई रेलवेका आदमी है !

एक सिख महाशय रेलमें सैकण्ड क्लासमें सफ़र कर रहे थे । सण्डास गये तो दरवाज़ा खोलते ही सामनेके आईनेमें उनका प्रतिविम्व पड़ा। उन्होंने यह समझकर कि अन्दर कोई और सिख मुसाफ़िर है कहा, "माफ़ कीजिए" और फ़ौरन् दरवाज़ा वन्द कर दिया।

अव वे वाहर वैठकर उन 'सरदारजी'के निकलनेका इन्तज़ार करने लगे। वहुत देर हो गयी मगर किसीको न निकलते देख तंग आकर गार्डसे शिकायत करने गये कि 'कोई सण्डासमें घुस गया है,निकलता ही नहीं है।' गार्ड आया। वह भी 'सरदारजी' था। उसने आकर सण्डासका दरवाज़ा जो खोला तो देखकर वोला, "यह तो कोई रेलवेका आदमी है।"

उत्तर दिशामें

ही : "प्रिये, ज़रा मोटरमें सैर करने चलें तो कैसा ?"
शी : "क्या तुम उत्तरकी ओर जा रहे हो ?"
ही : "हाँ, उत्तर दिशामें ही।"
शी : "एस्किमो लोगोंसे मेरा नमस्कार कहना।"

बिजली

"आपकी वीबी तो बिजलीकी रफ़्तारसे मोटर चलाती है।"
"जी, हमेशा दरख्तोंपर टूटती हुई।"

वैजनाथकी टिकिट

मुसाफ़िर : "एक हरदुआगंजकी टिकिट दीजिए;एक वैजनाथकी भी।"

वुकिंग क्लर्क : "हरदुआगंजकी तो यह लो, मगर यह वैजनाथ कहाँ है, मिलता ही नहीं।"

मुसाफ़िर : "यह कैसा खड़ा है प्लैटफ़ार्मपर !"

समझदार

मुसाफिर : "कुली ! कुली ! मेरा असबाब कहाँ है ?"

कुली : "आपके असबाबको आपसे ज्यादा अक्ल है। आप ग़लत गाड़ीमें बैठे हैं !"

ड्राइविंग

एक साहब मैदानमें खड़े होकर, दूरसे हिदायतें दे-देकर, अपनी बीबीको मोटर चलाना सिखा रहे थे। चालक और चालित दोनोंकी क़ाबिले-दीद हालत थी !

मैं : "क्या आप मोटरमें बैठकर उन्हें ड्राइविंग नहीं सिखा सकते ?"

वो : "सिखा तो सकता हूँ, मगर मोटरका तो बीमा है, मेरी जिन्दगी का नहीं है।"

आवाज़से तेज़

अपने प्रेमीके साथ सफ़र करती हुई युवती हवाई जहाज़के पाइलटसे बोली, "अब आवाज़से तेज़ न चलाना। हम बातचीत करना चाहते हैं।"

आदर्श महायात्रा

तीन बूढ़े आदमी इस दुनियाको छोड़नेके आदर्श तरीक़ेपर बहस कर रहे थे।

७५ वर्षका : "मैं तो जल्दी जाना पसन्द करता हूँ। मेरी मोटर तेज़ दौड़ रही हो और अकस्मात् ख़त्म हो जाऊँ।"

८५ वर्षका : "द्रुत मृत्युके विचारसे मैं भी सहमत हूँ। लेकिन मुझे हवाई जहाज़ अकस्मात् अधिक पसन्द है।"

९५ वर्षका : "मेरा उपाय बहतर है। मैं तो चाहता हूँ कि कोई ईर्ष्यालु पति मुझे गोली मार दे।"

रास्ता

एक ट्रक-ड्राइवर अपनी मंजिले-मक़सूदपर पहुँचनेकी जल्दीमें सड़कके अमुक मार्ग पकड़ना भूल गया। वह बड़बड़ाता हुआ एक किसानके अहातेमें गाड़ी ले आया और घरके ठेठ रसोईघर तक जा पहुँचा, जहाँ किसानकी स्त्री खाना पका रही थी। उसने उसपर एक खफ़ीफ़-सी सीधी निगाह डाली और फिर चूल्हेपर चढ़ी दालको निर्द्वन्द्व चलाने लगी। ड्राइवर यह देखकर सकपकाया-सा रह गया। कठिनतासे बोला,

"क्या आप मुझे शेखूपुरका रास्ता बता सकती हैं?"

स्त्री (शान्त भावसे): "हाँ हाँ, क्यूँ नहीं। हमारे भोजनालयके आसनसे गुज़रकर, पालनेसे सीधी ओर मुड़ जाना।"

स्वस्थ विरोध

ट्रामका भाड़ा दो आनेसे छह पैसे कर देनेके विरोधमें एक सभा हुई! एक चलता-पुरज़ा बोला, "विरोधकी वजह यह है कि पहले हम चलकर दो आने बचा सकते थे, अब डेढ़ आना ही बचा सकेंगे।"

वीक एण्ड

मुसाफ़िर: "एक वीक-एण्ड टिकिट दीजिए।"

क्लर्क: "कहाँका?"

मुसाफ़िर: "बस जहाँसे यहाँतक एक हफ़्तेके अन्दर वापस आ सकूँ।"

राहोरस्म

मुसाफ़िर: "यह जो गाड़ी अभी गयी, इस स्टेशनपर ठहरी क्यों नहीं?"

पोर्टर: "उसके इञ्जिनड्राइवर और हमारे स्टेशन मास्टरका सम्बन्ध अच्छा नहीं है।"

चुप्पा

एक महाशय चुप्पा प्रकृतिके थे, बहुत कम बोलते थे। एक बार वे रेलमें सफ़र कर रहे थे। उनके डब्बेमें एक सज्जन और थे। उनको यूँ चुप देखकर छेड़नेके इरादेसे बोले, "भाई साहब, आपकी टाई हवामें उड़ रही है।" इसपर चुप्पाजी चिढ़कर बोले, "मेरी टाई हवामें उड़ रही है इससे आपको मतलब ? आपका कोट आपकी सिगरेटसे जलता रहा, मैं तो कुछ बोला ही नहीं।"

रेलगाड़ी

एक देहातीको जिन्दगीमें पहली बार रेलगाड़ीसे सफर करनेका मौका मिला। स्टेशन गया। टिकिट ले ली। गाड़ीके आनेमें कुछ देर थी। उसने उत्सुकतावश किसीसे पूछा, "क्यों जी, रेलगाड़ी कैसी होती है ?" जवाब मिला, "काली होती है और उसके मुँहसे धुआँ निकलता है।"

देहातीने देखा कि एक काले रंगका साहब सिगरेटके धुएँके फक़ छोड़ता हुआ प्लैटफ़ार्मपर टहल रहा है। उसने सोचा कि हो-न-हो यही रेलगाड़ी है! वह उछलकर उसकी पीठपर चढ़ बैठा। साहब लगा बेतरह बिगड़ने, गामड़िया बोला, 'जानता नहीं है,टिकिट लेकर सवार हो रहा हूँ!'

ओ ताँगेवाले !

"ओ ताँगेवाले ! स्टेशन जा रहा है क्या ?"

"जी सरकार !"

"अच्छा जाओ, चले जाओ।"

बताइए

"गाड़ियाँ लड़ जानेपर अकसर आगेके डब्बे ही चकनाचूर होते हैं।'

"तो वे आगेके डब्बे लगाये ही क्यों जाते हैं ?"

उम्र-चैकर

एक बड़ी बी अपनी १५–१६ सालकी लड़कीके साथ रेलमें सफ़र कर रही थीं। आधा ही टिकिट ले रखा था। टिकिट-चैकरने देखा तो कहा, "इस लड़कीका पूरा टिकिट लगेगा, भाई!"

बड़ी बी चमककर बोलीं, "क्यों पूरा टिकिट लगेगा? यह बारह साल की भी नहीं है अभी!"

टिकिट-चैकर शरीफ़ आदमी था। मुलायमियतसे बोला, "भाई! टिकिटके बाक़ी पैसे निकाल। यह लड़की बारह सालसे ज़्यादा उम्रकी है।"

बड़ी बीके ग़ुस्सेका क्या कहना! हाथ नचाकर बोलीं, "तुझे कैसे मालूम, यह बारह सालसे ऊपरकी है? इसकी माँ मैं हूँ या तू?"

तुम्हें तो गाड़ी मिल जायेगी

दो जनोंको दस बजेकी गाड़ीसे जाना था। पर वे बाज़ारमें सौदा खरीदनेमें ऐसे मसरूफ़ हुए कि जानेकी बात भूल गये। एकको नज़र घड़ी पर पड़ी और याद आ गया कि आज तो दस बजेकी गाड़ीसे जाना था! देखा कि सवा दस बज गये हैं। उसने साथीसे कहा, साथीने अपनी घड़ीमें देखते हुए कहा, "मेरी घड़ीमें तो पौने दस बजे हैं। पहलेने घबराकर कहा, "तुम जल्दी स्टेशनपर पहुँच जाओ, तुम्हें तो गाड़ी मिल जायेगी।"

लीजिए!

मुसाफ़िर: "आपने पैसे गिननेमें ज़रा भूल की है।"

बुकिंग क्लर्क (खीजकर): "पैसे लेते वक़्त ही आपको गिन लेने चाहिए थे।"

मुसाफ़िर: "गिनकर ही आया हूँ। आपको भी ठीक गिनकर देने चाहिए। एक रुपया आपने ज़्यादा दे दिया है।"

गाय

एक रेलगाड़ी जंगलमें एकाएक रुक गयी। पूछनेपर मालूम हुआ कि रास्तेमें कोई गाय आ गयी थी।

एक घण्टे बाद गाड़ी फिर रुक गयी। वजह बतायी गयी कि वही गाय फिर पटरियोंपर आ गयी थी।

गालियाँ तो वह देगा जिसे पीछे उतार आया हूँ

रेलका रातका सफर था। एक मुसाफ़िरने रेलके गार्डसे दरख्वास्त की कि उसे पालघर स्टेशनपर उतार दें। पालघर स्टेशनपर गार्ड साहबने डब्बेके पास आकर बुलन्द आवाज़से कहा, 'उतरो भई! तुम्हारा स्टेशन आ गया। बेचारा एक सोता हुआ आदमी मुसाफिर भड़भड़ाकर उतर पड़ा। और गार्ड साहबने मुतमइन होकर गाड़ी स्टार्ट कर दी।

जब उतरना चाहनेवाले मुसाफ़िरकी आँख खुली तो उसने देखा कि पालघर कभीका निकल गया और गार्डने उसे उतारा नहीं। वह गार्डको बुरा-भला कहने लगा। एकने गार्डको खबर दी कि एक मुसाफिर उन्हें वहाँ गालियाँ दे रहा है। गार्ड साहब बोले, यह बेचारा क्या गालियाँ देगा! गालियाँ तो वह दे रहा होगा जिसे पीछे उतार आया हूँ।"

हिसाब बराबर

सखी : "अगर मैं दस रुपये उधार चाहूँ तो दोगे ?"

सखा : "हाँ, हाँ, क्यों ?"

सखी : "अच्छी बात है, तो,दस देना,मगर अभी तो मुझे पाँच दो।

सखा : "अच्छा, मगर क्यों ?"

सखी : "तब तुम्हें मुझे पाँच रुपये देने रह जायेंगे, और मुझे तु पाँच। और इस तरह हिसाब साफ़ हो जायेगा।"

दो-चार कारण

मालिक : "तुम्हारी तनख्वाह क्यों बढ़ायी जाये इसके दो-चार का होंगे ?"

मुनीम : "हम दो और चार बालक।"

फ़िलफ़ौर

मकानमालिक (फ़ोनसे) : "हम अपने मकानका बीमा कराना चाहते हैं।"

मैनेजर : "शौक़से ! लेकिन पहले हम आपका मकान देखना चाहेंगे।"

मकानमालिक : "तो जल्दी आओ, मकानमें आग लग रही है।"

जुर्माना देनेवाला कोई और होगा

एक तालाबपर नहाने-धोनेकी मनाही थी । वरना जुर्माना । एक कंजूस
ानी भरने गया । लेकिन पैर फिसलनेसे पानीमें गिर पड़ा । लगा हाथ-पैर
ारने । किनारेपर खड़ा हुआ एक आदमी बोला,

“आपने यह पाटिया बाँचा नहीं मालूम होता । अब आपको सौ रुपये
ुर्मानेके अदा करने होंगे ।”

बोला, “जुर्माना देनेवाला कोई और होगा, मैं नहीं ।”

यह कहकर उसने किनारेपर आनेकी कोशिश छोड़ दी,और डूब मरा ।

पैट्रोल खत्म

ड्राइवर : पैट्रोल खत्म हो गयी लालाजी ! अब गाड़ी आगे नहीं
जायेगी ।”

लालाजी : “तो पीछे लौटाकर घर ले चलो ।”

हॉर्न क्यों नहीं बजाया ?

सरदारजी (ड्राइवरसे) : “गाड़ी क्यों उछली ड्राइवर साब ?”

ड्राइवर : “आगे पत्थरका टुकड़ा आ गया था ।”

सरदारजी : “तो फिर हॉर्न क्यों नहीं बजाया ?”

टपाटपी

सेठ (गुस्सेमें) : “इस गद्दीके सेठ तुम हो या मैं ? जवाब दो !”

मुनीम : “मैं सेठ कहाँ हूँ, साहब ?”

सेठ : “सेठ नहीं हो तो फिर बेवकूफकी तरह क्यों बकते हो ?”

दो-तिहाई

सर्वेयर : “आपके दफ्तरमें कितने आदमी काम करते हैं ?”

प्रोप्राइटर (हिचकिचाकर) : “करीब दो-तिहाई ।”

भेड़िया

एक अति दुबले-पतले लालाकी पत्नी महा मोटी थीं। एक दिन शाम को एक भेड़िया उनके आँगनमें घुस आया। लाला डरके मारे एक सन्दूक में घुस गया। पत्नी बोलीं, "मुझे भी छिपा लो ज़रा।"

लाला : "भेड़िया कोई पालकी लेकर आया है कि तुझे ले जायेगा? तीन भेड़िये मिलकर भी तुझे एक इञ्च नहीं हिला सकते!"

साहूकार

किसी क़र्ज़दारको उसका साहूकार सामनेसे घोड़ेपर सवार आता दिखायी दिया। क़र्ज़दारकी जान खुश्क होने लगी। छिपनेकी कोई जगह थी न वक़्त। आखिर उसका साहूकारसे मुक़ाबला हो गया।

क़र्ज़दार : "आज तो आप खूब जँच रहे हैं! घोड़ा भी क्या लाजवाब है!!"

साहूकार : "घोड़ा आपको पसन्द आया?"

क़र्ज़दार : "वाह! क्यूँ नहीं? कैसा खूबसूरत है! दौड़ता भी खूब होगा?"

साहूकार : "हाँ! हाँ! देखिए, अभी इसकी चाल दिखाता हूँ।"

चाबुक पड़ते ही घोड़ा हवासे बातें करने लगा और चन्द लमहोंमें नज़रोंसे ओझल हो गया और इधर मौक़ा पाकर क़र्ज़दार रफ़ूचक्कर हो गया!

रफ़ै-दफ़ै

मालिक : "मेरी दराज़में-से दस रुपये कहाँ ग़ायब हो गये, मनोहर? इस दराज़की चाभी सिर्फ़ मेरे और तुम्हारे पास ही तो रहती है।"

मनोहर : "तो लाइए हम दोनों पाँच-पाँच रुपये डालकर मामला खत्म करें।"

भेड़िया

एक अति दुबले-पतले लालाकी पत्नी बड़ी मोटी थीं। एक दिन रा को एक भेड़िया उनके आँगनमें घुस आया। लाला डरके मारे एक सन्दू में घुस गया। पत्नी बोलीं, "मुझे भी छिपा लो ज़रा।"

लाला : "भेड़िया कोई पालकी लेकर आया है कि तुझे ले जायेगा! तीन भेड़िये मिलकर भी तुझे एक इञ्च नहीं हिला सकते!"

साहूकार

किसी क़र्ज़दारको उसका साहूकार सामनेसे घोड़ेपर सवार आता दिखायी दिया। क़र्ज़दारकी जान खुश्क होने लगी। छिपनेकी कोई जगह थी न वक़्त। आख़िर उसका साहूकारसे मुक़ाबला हो गया।

क़र्ज़दार : "आज तो आप ख़ूब जँच रहे हैं! घोड़ा भी क्या लाजवाब है !!"

साहूकार : "घोड़ा आपको पसन्द आया ?"

क़र्ज़दार : "वाह ! क्यूँ नहीं ? कैसा ख़ूबसूरत है ! दौड़ता भी ख़ूब होगा ?"

साहूकार : "हाँ ! हाँ ! देखिए, अभी इसकी चाल दिखाता हूँ।"

चाबुक पड़ते ही घोड़ा हवासे बातें करने लगा और चन्द लमहोंमें नज़रोंसे ओझल हो गया और इधर मौक़ा पाकर क़र्ज़दार रफ़ूचक्कर हो गया!

रफ़ै-दफ़ै

मालिक : "मेरी दराजमें-से दस रुपये कहाँ ग़ायब हो गये, मनोहर? इस दराजकी चाभी सिर्फ़ मेरे और तुम्हारे पास ही तो रहती है।"

मनोहर : "तो लाइए हम दोनों पाँच-पाँच रुपये डालकर मामला ख़त्म करें।"

दिवाला

बनिया मर रहा था।

"बेटा रतनी, तू कहाँ है ?"

"तुम्हारे पास ही हूँ, बापूजी"

"और तेरी माँ ?"

"यह बैठी हैं, तुम्हारी बायी तरफ।"

"और मेरा चाँदीचन्द ?"

"आपके पैर दबा रहा है।"

"और लक्खू ?"

"दूकानसे बुलाने आदमी गया है। लो वह भी आ गया।"

"दमड़ीलाल ?"

"यह रहा दायी ओर।"

"उधारमल"

"सिर दबा रहा है।"

"सब आ गये ?" बनियेने बेचैनीसे पूछा,

"हाँ जी।"

"तो दूकान कौन सँभाल रहा है ? इस तरह तो तुम लोग मेरा दिवाला ही निकाल दोगे।"

क्या करोगे ?

"यदि तुम्हारा विवाह किसी धनी विधवासे हो जाये, तो तुम क्या करोगे ?"

"एकदम कुछ नहीं।"

आवजो

"लोग कहते हैं कि पैसा बोलता है।"

"मुझसे तो वह हमेशा 'खुदाहाफ़िज़' ही बोलता रहा।"

रुपया कब निकाल सकते हैं ?

एक आदमी बैंकमें रुपये जमा करने आया, और पूछने लगा, "आज रुपये जमा करें तो निकाल कब सकते हैं ?"

क्लर्क : "आज जमा करें तो कल ही निकाल सकते हैं; हमें सिर्फ़ पन्द्रह दिन पहले खबर दीजिए कि आप रुपये निकालना चाहते हैं ।"

गमनागमन

"मैं गया जा रहा हूँ । जबतक लौटूँ तबतकके लिए बीस रुपये देना ।"

"कबतक लौटेंगे ?"

"जा ही कौन रहा है !"

दौलतसे नुक़सान

एक रिपोर्टरने दुनियाके सबसे दौलतमन्द व्यक्ति मि० हेनरी फ़ोर्डसे पूछा, "मि० फ़ोर्ड, क्या आप बता सकते हैं कि ज़्यादा दौलत मिलनेसे क्या नुक़सान होता है ?"

फ़ोर्ड : "मेरा तो एक ही नुक़सान हुआ है और वह यह कि श्रीमती-जीने खाना पकाना बन्द कर दिया है !"

परिवर्तन

पुराना दोस्त : "मुझे यह देखकर खुशी हो रही है कि अतुल सम्पत्ति पाकर भी तुम्हारे अन्दर परिवर्तन नहीं हुआ ।"

दौलतमन्द : "हुआ है एक परिवर्तन मुझमें । पहले जब कि मैं 'बदतहज़ीब' था अब 'विचित्र' हो गया हूँ, और पहले जब कि 'जंगली' था अब 'खुशगवार हाज़िरजवाब' बन गया हूँ ।"

कैश या नोट

अफ़वाहोंसे घबराकर एक व्यापारी बैंकमें जमा रक़म निकालने चैक लेकर बैंक गया। बैंकके कैशियरने पूछा, "क्या दूं, कैश या नोट ?"

व्यापारी : अगर आपके पास कैश है तो मुझे कुछ नहीं चाहिए। अगर कुछ न हो तो मेरे सब रुपये दीजिए।"

स्वर्णलता

प्रेमिका : "मेरे जन्मके समय मेरे पिताने मेरे हर जन्मोत्सवपर दस रुपये देनेका वचन दिया था। आज इस तरह मेरे पास १९० रुपये जमा हो गये हैं।"

उम्मीदवार प्रेमी : "बाकीका रुपया वे कब दे देंगे ?"

दूसरी

बीमावाला : "हम आपको कोई रकम नहीं देंगे,लेकिन आपको दूसरी कार दे देंगे।"

कारवाला : "खैर, इस मामलेमें तो यह ठीक है। लेकिन अगर आपकी कारगुज़ारीका यही क़रीना है तो मैं अपनी बीवीकी पालिसी रद्द करता हूँ।"

वारिस

"आज तो एक ज्योतिषीने मुझे बताया कि बड़ा होनेपर मुझे बहुत धन मिलेगा।"

"उस धनका तुम क्या करोगे ?"

"मेरे बेटे खायेंगे ?"

"तुम्हारे बेटे न हुए तो ?"

"मेरे नाती-पोते खायेंगे।"

क़र्ज़

एक आदमी (क़र्ज़ लेनेकी नीयतसे एक महाजनसे) : "मेरे दोस्त तो बहुतेरे हैं, मगर मैं दोस्तोंसे कुछ माँगना पसन्द नहीं करता।"

महाजन : "फिर क्या ! हाथ मिलाइए। आजसे हम और आप भी दोस्त हुए।"

स्कीम

"अगर कोई मेरी स्कीममें तीस हज़ार रुपये लगानेवाला मिल जाये तो मैं कुछ धन कमा लूँ।"

"कितना धन कमा लोगे ?"

"क्यों, तीस हज़ार रुपये।"

किसका सुख ?

एक बीमा कम्पनीका इश्तहार था, 'हर आदमीको काफ़ी कमाना चाहिए और उससे भी अच्छा तो यह है कि काफ़ी बचावे, ताकि उसकी पत्नी सुखमें रह सके....'

पत्नी कि विधवा ?

मध्यम मार्ग

"देखो, तुमने इस बिलके पैसे अभी तक नहीं चुकाये ! चलो बीचमें मामला तय हो जाये—तुम्हारे ऋणका आधा भाग मैं भूल जानेको तैयार हूँ।"

"मंजूर ! बाक़ी आधेको मैं भूल जानेको तैयार हूँ।"

मूर्ख !

ग़रीब आदमी (जागकर, चोरोंसे) : "आप लोग कितने मूर्ख हैं ! यहाँ रातमें कुछ पानेकी आशा करते हैं, जब कि मैं यहाँ दिनमें भी कुछ नहीं पाता !"

भोली-भाली शक्लवाला

"बैंकमें पैसे जमा न रहनेपर भी चैक भुनाते रहनेके जुर्ममें सोहन गिरफ्तार कर लिया गया।"

"वह ऐसा तो आदमी नहीं दिखता।"

"तभी तो वह ऐसा कर सका।"

निष्काम

सज्जन : "तुम पड़े-पड़े क्या करते हो ? कुछ काम क्यों नहीं करते?"

मस्तराम : "क्यों ?"

सज्जन : "ताकि तुम्हारे पास कुछ पैसा हो जाये और तुम उसे बैंकमें जमा कर सको।"

मस्तराम : "क्यों ?"

सज्जन : "ताकि तुम रिटायर हो सको और फिर कुछ काम न करना पड़े।"

मस्तराम : "लेकिन काम तो मैं अब भी नहीं करता।"

बड़े सयाने

एक फ़क़ीरको एक दिन कुछ नहीं मिला। दुआ करने लगा, "या अल्लाह, अगर मुझे चवन्नी मिल जाये तो दो आने तेरे।" आगे चलकर उसे एक दुअन्नी मिली। उठाकर बोला,

"अल्लाह मियाँ ! हो बड़े सयाने ! दो आने पहले ही काट लिये।"

एक बात

"मुझे सख्त अफ़सोस है कि मैं इस महीने अदायगी नहीं कर सकता।"

"यही तो तुमने गत-मास कहा था।"

"देख लीजिए, मैं अपने वचनपर क़ायम रहता हूँ।"

सब आनन्दमें

"धन्यवाद, महाशय क्या आप मुझे पाँच रुपये उधार दे सकते हैं ?"

"मुझे अफ़सोस है कि इस वक़्त यहाँ मेरे पास एक पैसा भी नहीं है।"

"और घरपर ?"

"सब आनन्दमें हैं ।"

दौलत

"आप इतने दौलतमन्द कैसे हो गये ?"

"इसकी लम्बी कहानी है । जबतक सुनाऊँ तबतकके लिए लैम्प बुझाये देता हूँ ।"

"अब सुनानेकी ज़रूरत नहीं, मैं समझ गया ।"

धनका बिछोह

जाते वक़्त चचाने भतीजेको दो रुपये देते हुए कहा, "लो सँभालकर रखना । देखो, मूर्ख और उसके धनका बिछोह बड़ी जल्दी होता है !"

"हाँ, मगर मैं तो आपको धन्यवाद ही दूँगा ।"

फ़िज़ूल ख़र्च

"गणपतराव अपने पैसे कहाँ उड़ाता है, कौन जाने !"

"ऐसा ?"

"हाँ, कल भी उसके पास पैसे नहीं थे, आज भी नहीं थे !"

"तो ? क्या वह तुमसे पैसे उधार माँगता था ?"

"नहीं तो ! मैंने ही उससे उधार माँगे थे !"

बैंक-बैलेन्स

"तुम्हारा बैंकमें कुछ है ?"

"हाँ, सिर्फ़ विश्वास !"

उधार

एक आदमीने किसी बनियेसे पांच रुपये उधार मांगे ।

बनिया : "मैं तो तुम्हें पहचानता भी नहीं, रुपये कैसे उधार दे दूं ?"

आदमी : "इसीलिए तो मैं आपके पास आया हूँ । जो मुझे जानता है वह तो पांच पैसे भी उधार नहीं देगा, लालाजी !"

सेवा

उपदेशक : "मैं सबके लिए प्रार्थना करता हूँ ।"

वकील : "मैं सबकी वकालत करता हूँ ।"

डॉक्टर : "मैं सबका इलाज करता हूँ ।"

सामान्य नागरिक : "सबके लिए पैसा मैं अदा करता हूँ ।"

नफा या नुक़सान

एक सुन्दर लड़की किसी पब्लिक सर्विसकी परीक्षामें बैठ रही थी। उससे सवाल पूछा गया,

"अगर कोई आदमी किसी चीजको १२ रुपये ३ आनेमें खरीदता है और ९ रुपये ६ आनेमें बेच देता है तो उसे क्या नफ़ा या नुकसान होता है ?"

नवयुवती विचारमग्न हो गयी, और बोली,

"आनोंमें उसे नफा होता है मगर रुपयोंमें नुक़सान ।"

टोटल

"अगर तुम्हें शुक्रवारको चार पैसे दिये जायें और शनिवारको एक, तो तुम्हारे पास कितने पैसे हो जायेंगे ?"

"सात ।"

"तुम पागल तो नहीं हो गये ? चार और एक पांच होते हैं ?"

"लेकिन दो मेरे पास पहले ही से हैं ।"

पूँजी और श्रम

"पूँजी और श्रम क्या है ?"

"मान लो मैंने तुम्हें दो रुपये उधार दिये, तो यह पूँजी है। जब उन्हें वसूल करनेकी कोशिश करता हूँ तो यह श्रम है।"

क़र्ज़

"मेरे खयालसे किसीसे क़र्ज़ लेना बरबादीका कारण है ?"

"जी नहीं, क़र्ज़ लेना नहीं, क़र्ज़ चुकाना बरबादीका कारण है।"

सन्तोष

"पर आप तो कहते थे कि सन्तोष न हो तो पैसे वापस।"

"पर हमें आपके पैसोंसे सन्तोष हुआ है", दूकानदारने कहा।

क़ीमत

एक दार्शनिक किसी नदीके किनारे टहल रहा था। उसने देखा कि एक ग़रीब आदमीने अपनी ज़िन्दगीको खतरेमें डालकर एक धनिक सेठको डूबनेसे बचा लिया। इसके लिए सेठ उसे एक चवन्नी देने लगा। लोग उसकी नाक़द्रदानीपर भड़कने लगे और सेठको फिरसे पानीमें फेंक देनेके लिए आमादा हो गये।

दार्शनिक बोला, "भाई, वह अपनी जानकी क़ीमत जानता है।"

दौलत और मेहनत

"पूँजी क्या है ?"

"जो दौलत दूसरेके पास है।"

"और श्रम ?"

"उसमें-से कुछ पा जानेकी कोशिश।"

भाड़ा

मालिक-मकान : "कई महीने हो गये हैं, आप भाड़ा भर दीजिए।"

किरायेदार : "मैं अपना भी भाड़ा नहीं दे पाता हूँ, आपका कैसे भर दूँ?"

चैक

"तुम्हें मेरा चैक मिला या नहीं?"

"हाँ हाँ ! एक बार तुम्हारी तरफ़से, एक बार तुम्हारे बैंककी तरफ़से !"

धन-लग्न

"जब मैं शशिके साथ प्रेममें पड़ा तो मैंने उससे कहा कि मेरे काकाके पास बहुत धन-सम्पत्ति है।"

"तब तो उसने शादी कर ली होगी.......।"

"हाँ मेरे काकाके साथ।"

बशौक तमाम

"क्या आप मुझे पाँच...... ..."

"नहीं........"

"........मिनिट दे सकते हैं?"

".........कोई मुज़ाइका नहीं, इरशाद फ़रमाइए।"

रंगशाला

•

अन्तिम दृश्य

डायरेक्टर : "देखो, इस पहाड़ीसे तुम्हें नीचे कूदना है।"

ऐक्टर : "ठीक, लेकिन अगर चोट लग गयी या मर गया तो ?"

डायरेक्टर : "कोई गुंजाइश नहीं। यह पिक्चरका आखिरी सीन है।"

जैसेका-तैसा

स्कूलके एक नाटकमें किसी विद्यार्थीको मूर्खका पार्ट करना था। उसने अपने एक दोस्तसे सलाह ली, "मुझे मूर्ख दिखनेके लिए क्या करना चाहिए ?"

दोस्त : "कुछ नहीं; जैसा है वैसा ही दिखना।"

साइनपोस्ट

एक सिनेमाप्रेक्षक महोदय अन्तरालके बाद अँधेरेमें अपनी सीटकी तरफ़ आ रहे थे।

"मैंने बाहर जाते वक़्त आपके पैरपर पैर रख दिया था न ?"

पासका प्रेक्षक जिनका पैर अभी तक दुख रहा था, बोला,

"हाँ हाँ"

पहला : "तब तो यही मेरी लाइन है !"

प्लॉट

"आपको अपने दूसरे उपन्यासका प्लॉट कहाँसे मिला ?"

"अपने पहले उपन्यासके फिल्मी संस्करणसे ।"

सहमत

पत्नी (उत्फुल्ल) : "फिल्म बिलकुल किताबके मानिन्द ही लगी न आपको ?"

पति : "हाँ, मुझे उन्हीं जगहोंपर ऊँघ आयी ।"

अकाल-मृत्यु

मैनेजर : "आजकी रातके बाद मैं तुम्हें तीसरे एक्टके बजाय पहले एक्टमें ही मरवा दूँगा ।"

खल-नायक : "ऐसा क्यों करते हैं ?"

मैनेजर : "क्योंकि मैं यह खतरा नहीं लेना चाहता कि दर्शक यह काम करें ।"

चूक

एक गाँवमें एक ऐसा शख्स तमाशा दिखाने आया जिसे छुरियाँ फेंकनेमें कमाल हासिल था । उसने लकड़ीका एक बड़ा तख्ता खड़ा किया और उससे सटाकर एक नवयुवतीको खड़ा किया । कुछ फ़ासलेपर खड़े होकर उसने जल्दी-जल्दी छुरियाँ फेंकनी शुरू कीं । वे लड़कीके बिलकुल नजदीक तख्तेमें घुस जाती थीं । कभी-कभी तो लड़की बाल-बाल बच जाती थी । लड़की चमचमाती छुरियोंसे घिरी शान्त खड़ी थी ।

एक देहातीका जी यह देखकर घुट रहा था । एक और छुरीको भी इसी तरह लड़कीके न लगते देखकर अकुलाकर अपने साथीसे बोला,

"चल यार, इसमें क्या रखा है, कम्बख्त फिर चूक गया !"

अभिनय

दो मित्र नाटक देखने गये। नाटकका पार्ट देखकर पहला बोला, "क्या भावनाके साथ काम करता है! नायिकाके प्रति क्या अद्भुत रीतिसे प्रेम प्रदर्शित करता है!"

दूसरा: "हाँ, वे दोनों तो पति-पत्नी हैं, इनकी शादी हुए बरसों हो गये।"

पहला: "तब तो सचमुच अभिनय करता है!"

कॉमेडियन

एक घबराया हुआ नाटे कदका आदमी एक स्टोरमें आया और बोला,

"मुझे आपकी तमाम सड़ी तरकारियाँ, गले टमाटर और सड़े अण्डे चाहिए।"

स्टोर कीपर (खुश होकर): "मालूम होता है आप आज उस नये कॉमेडियनका तमाशा देखने थियेटर जा रहे हैं!"

आदमी (घबराहटसे इधर-उधर देखते हुए): "धीमे बोलिए, वह नया कॉमेडियन मैं ही हूँ।"

अनुभवी अभिनेता

एक सनकी आदमी किसी नाटक कम्पनीके मैनेजरसे कोई पार्ट देनेका निरन्तर अनुरोध करता रहता था। लेकिन मैनेजरको उसके अभिनय-अनुभवपर शक था, इसलिए पूछने लगा,

"तुम कहते हो तुमने शेक्सपीयरके सुखान्त नाटकोंमें काम किया है। अच्छा बताओ तो सही किन-किनमें किया है?"

नरवस होकर भावी अभिनेताने जवाब दिया, "मुझे 'जस्ट एज यू लाइक' और 'नथिंग मच डूइंग' में छोटे-छोटे पार्ट मिले थे!"

तड़प

हॉलीवुडके एक फिल्म-प्रोड्यूसर साहब कहानी-लेखकसे बोले,

"मुझे एक ऐसी कहानी लिखकर दीजिए जो एटम और हाइड्रोजन बमोंके धुआँधार युद्धसे शुरू हो और फिर रफ़्ता-रफ़्ता 'क्लाईमैक्स'पर पहुँचे।"

फ़िल्म-जाल

नेहरूकी रूस-यात्रावाली फिल्म देखकर एक सरदारजी बड़े उदास हुए। खेद प्रकट करते हुए अपने साथीसे बोले,

"इस दुनियाकी गन्दगीसे कोई पाक नहीं रह सकता! भले आदमियोंमें ले-देके एक नेहरू बचा था सो वह भी फ़िल्म-ऐक्टर बन गया!!"

डैथ सीन

किसी नाटकमें हीरोके मरनेका सीन दिखाया जा रहा था कि पर्दा एका-एक गिरा दिया गया। दर्शकोंमें शोर मच गया। तभी, नाटक कम्पनी का मैनेजर स्टेजपर आकर बोला, "माफ कीजिएगा, इस सीनमें मरनेवाला ऐक्टर अचानक बेहोश हो गया है। ज्यों ही वह होशमें आयेगा, वह फिर मरना शुरू कर देगा।"

गंजापन

एक अभिनेताके बाल बड़े सुन्दर थे, इसलिए उसके प्रशंसक उसके बालोंकी माँग करते रहते थे। अभिनेता भी ऐसी प्रत्येक माँगके उत्तरमें अपने दो-चार बाल भेज देता था। एक दिन उसके एक मित्रने कहा, "यदि इस प्रकार अपने प्रशंसकोंको अनुगृहीत करते रहे, तो एक दिन ऐसा आयेगा, जब तुम बिलकुल गंजे हो जाओगे।"

"मैं क्यों गंजा हूँगा, गंजा होगा, मेरा कुत्ता!"

रियाज़ चाहिए

पहली नटी (शेख़ीसे) : "कल तमाशेमें मेरे गानेपर इतनी तालियाँ पिटी कि मुझे हर गाना तीन-तीन दफे गाना पड़ा।"

दूसरी नटी (जलकर) : "हाँ दर्शकोंने ताड़ लिया था कि तुम्हें अभी मश्क़की ज़रूरत है।"

मरनेका सीन

मृत्यु-शय्याका सीन था, लेकिन डायरेक्टरको हीरोके ऐक्टिंगसे सन्तोष नहीं हो रहा था।

वह चिल्लाकर बोला, "आओ भी ! भाई ज़रा अपने मरनेमें ज़िन्दगी डालो !"

अल्प-मत

बर्नार्ड शॉका एक नाटक खेला जा रहा था। शॉ भी दर्शकोंमें थे। पास बैठे हुए सज्जनने एक जगह नापसन्दगी दरशायी। शॉ बोले, "भाई, मुझे भी अच्छा नहीं लगता, पर तमाम दर्शकोंके सामने हम दोनोंकी क्या गिनती है ?"

पतिसे मुलाक़ात

फ़िल्म ऐक्ट्रेस : "लाइए अपने पतिसे आपका परिचय कराऊँ।"

डायरेक्टर : "अवश्य अवश्य ! मुझे आपके हर पतिसे मिलकर खुशी होती है।"

कमसिन

डायरेक्टर : "आपकी उम्र ?"

अधेड़ एक्ट्रेस : "२६ वर्ष।"

डायरेक्टर : "किस तरफसे ! जीवनके आरम्भसे या अन्तसे ?"

शादियोंका रिकार्ड

"तुमने उस फ़िल्म ऐक्ट्रेसका क़िस्सा सुना ?"

"नहीं तो, क्या बात थी ?"

"उसके सेक्रेटरीने उसकी शादियोंका हिसाब बराबर नहीं रखा। नतीजा यह हुआ कि शादियोंसे तलाक़ोंकी संख्या दो ज्यादा निकल रही है।"

आइडियाज

"आपके ख़यालसे ये सिनेमावाले विचार कहाँसे ग्रहण करते हैं ?"

"इनकी कृतियोंसे मालूम पड़ता है कि एक दूसरेसे ग्रहण करते हैं।"

अब आप

सिनेमा अभिनेत्री : "अब आपके बारेमें कुछ बातें करें। आपका मेरी पिक्चरके बारेमें क्या ख़याल है ?"

धर्म-परिवर्तन

दो अभिनेता किसी आत्मोद्धत व्यवस्थापकका जिक्र कर रहे थे। एक अभिनेता दूसरेसे बोला, "मैंने सुना है वह अपना विश्वास बदल रहा है।"

दूसरा : "क्या तुम्हारा मतलब यह है कि अब वह अपनेको ख़ुदा नहीं मानता ?"

सुखद अन्त

"क्या उस नये नाटकका अन्त सुखद था ?"

"हाँ सब सुखी थे कि उसका अन्त आ गया।"

होता है

डायरेक्टर : "ग़ैरशादी शुदा ?"

अभिनेत्री : "दो बार।"

किञ्चित् कम

"आपके नये नाटकमें उपस्थिति कैसी रही ?"

"बात यह हुई कि पहली रातको तो कोई नहीं आया। लेकिन अगले दिन मैटिनी-शोमें उपस्थिति किञ्चित् कम हो गयी।"

नटीकी सन्तान

एक दिन अमेरिकन फ़िल्म-निर्माता मिस्टर सेमुएल गोल्डविनने एक एक्ट्रेससे पूछा, "तुम्हारे कोई सन्तान है क्या ?"

एक्ट्रेस : "हाँ, मेरे दूसरे पतिकी तीसरी पत्नीसे एक पुत्र और मेरे पहले पतिकी दूसरी पत्नीसे दो पुत्रियाँ हैं।"

मुजरिम

"जब मैं रंगमञ्चपर होता हूँ अपने पार्टमें बिलकुल ग़र्क़ हो जाता हूँ। तमाम श्रोता ग़ायब हो जाते हैं।"

"मैं उन्हें दोषी नहीं ठहराता।"

कबहू कबहू

डायरेक्टर : "क्या आप अविवाहित ही रहती हैं ?"

अभिनेत्री : "कभी-कभी।"

कलकल

बहुत-कुछ विज्ञापन करनेपर भी नाटक देखने सिर्फ़ दो जन आये। मैनेजर उनके पैसे लौटाकर नाटक-गृहके दीप बुझाने आये तो रंगभूमिसे यों बोले,

"किन्हीं विशेष कारणोंसे आजका खेल रद्द किया गया है। कल ऐसा नहीं होगा। आज जो खेल दिखाया गया वही कल दिखाया जायेगा।"

शादियोंका रिकार्ड

"तुमने उस फ़िल्म ऐक्ट्रेसका क़िस्सा सुना ?"

"नहीं तो, क्या बात थी ?"

"उसके सेक्रेटरीने उसकी शादियोंका हिसाब बराबर नहीं रखा। नतीजा यह हुआ कि शादियोंसे तलाक़ोंकी संख्या दो ज़्यादा निकल रही है।"

आइडियाज़

"आपके ख़यालसे ये सिनेमावाले विचार कहांसे ग्रहण करते हैं ?"

"इनकी कृतियोंसे मालूम पड़ता है कि एक दूसरेसे ग्रहण करते हैं।"

अब आप

सिनेमा अभिनेत्री : "अब आपके बारेमें कुछ बातें करें। आपका मेरी पिक्चरके बारेमें क्या ख़याल है ?"

धर्म-परिवर्तन

दो अभिनेता किसी आत्मोद्धत व्यवस्थापकका ज़िक्र कर रहे थे। एक अभिनेता दूसरेसे बोला, "मैंने सुना है वह अपना विश्वास बदल रहा है।"

दूसरा : "क्या तुम्हारा मतलब यह है कि अब वह अपनेको ख़ुदा नहीं मानता ?"

सुखद अन्त

"क्या उस नये नाटकका अन्त सुखद था ?"

"हाँ सब सुखी थे कि उसका अन्त आ गया।"

होता है

डायरेक्टर : "ग़ैरशादी शुदा ?"

अभिनेत्री : "दो बार।"

इस रिज़्क़से मौत अच्छी

स्टेज मैनेजर : "यह क्या बदतमीज़ी की तुमने ? आख़िर सूझा क्या था कि मरनेके सीनमें हँसने लगे ?"

एक्टर : जो तनख्वाह मैं पाता हूँ उस तनख्वाहसे मौतका हँसकर ही आलिंगन किया जा सकता है, रोकर नहीं।"

समाधि-लेख

अभिनेत्री : "अपनी समाधिपर मैं क्या लेख लिखवाऊँ ?"

मसख़रा दोस्त : "आख़िर यह अकेली सो रही है।"

नया बाप

सिनेमा-स्टार (अपने ताज़ातरीन ख़ाविन्दका परिचय अपनी दोशीज़ा को देते हुए) : "देखो डार्लिंग, यह तुम्हारे नये डैडी हैं।"

बालिका : "क्या आप कृपया मेरी विज़िटर्स बुकमें कुछ लिखेंगे ?"

तालियाँ

"जब आप मञ्चसे जा रहे थे, उस वक़्त दर्शकोंने बड़ी ज़ोरदार हर्षध्वनि की।"

"वह तो इसलिए की थी कि मैं फिर वापस नहीं आनेवाला था।"

फ़ुलपार्ट

एक एक्टर लिंकनका पार्ट खेलते-खेलते अपनेको लिंकन ही समझने लगा ! वह उसीकी तरह चलता, बोलता और उसीके-से कपड़े पहनता।

एक दिन वह लिंकनकी पोशाकमें ब्राडवेके पाससे गुज़रा चला जा रहा था। किसीने उसकी तरफ़ इशारा करके कहा, "यह शख्स गोली खाये बग़ैर सन्तुष्ट नहीं होगा !"

क़िस्मत

दो अंग्रेज एक सड़कके किनारे किसी कुत्तेको सिगरेटके फ़क़ छोड़ते हुए देख रहे थे।

एक बोला : "कमाल है ! है न ?"

दूसरा : "कमाल तो है ही ! यह कुत्ता सिगरेट फूँक रहा है और मुझे दो हफ़्तेसे एक पैकिट भी नहीं मिला।"

ग्यारह

"मुझे ११ नवम्बर हमेशा मुबारक रहा है। ११वें महीनेकी ११वीं तारीखको ११ बजे हमारी शादी हुई। हमारे मकानका नम्बर भी ११ है···· एक रोज मुझे ११ बजकर ११ मिनिट ११ सैकिण्डपर किसीने बताया कि आज बड़ी रेस होनेवाली है। मैंने सोचा कि मेरे लिए ११ के नम्बरमें जरूर चमत्कार छिपे हुए हैं, मैं गया और ११वें नम्बरकी रेसके ११वें घोड़ेपर ११ हजार रुपये लगा दिये।"

"और घोड़ा जीत गया ?"

"यही तो रोना है !—कम्बख्त ११वें नम्बरपर आया !"

मार डाला !

साक़ी : "इस गिलासको सँभालकर लीजिए।"

रिन्द : "क्यों ? क्या ज्यादा भर दिया है ?"

साक़ी : "नहीं, जरा छलक गया है।"

आबे-जमजम

"तुम्हारी जबान इतनी काली !"

"मेरी ह्विस्कीकी बोतल उस सड़कपर गिर गयी जिसपर हाल ही कोलतार बिछाया गया था।"

मंज़िल-दर-मंज़िल

"जरा एक सिगरेट देना।"

"मैंने तो सोचा था कि तूने पोना छोड़ दिया।"

"मैं त्यागकी पहली मंज़िलपर हूँ, अर्थात् खरीदना छोड़ दिया है।"

चेन-स्मोकर

"तुम चेन-स्मोकर हो! इस तरह तो तुम बेशुमार सिगरेटें फूँक डाल होगे?"

"हाँ! लेकिन तुम्हें यह नहीं मालूम कि मैं इस तरह कितनी दिया सलाइयाँ बचाता हूँ।"

चाय

सत्येन्द्र : "चाय धीमा जहर है!"

ज्योतीन्द्र : "तो यहाँ किसे मरनेकी जल्दी है?"

जीत-ही-जीत

हो : "मैं जूएमें एक रात जीतता हूँ, एक रात हारता हूँ।"

ची : "तो तुम एक रात छोड़कर क्यों नहीं खेला करते?"

क़िस्मत

दो अंग्रेज़ एक सड़कके किनारे किसी कुत्तेको सिगरेटके फ़क छोड़ते हुए देख रहे थे।

एक बोला : "कमाल है! है न?"

दूसरा : "कमाल तो है ही! यह कुत्ता सिगरेट फूँक रहा है और मुझे दो हफ़्तेसे एक पैकिट भी नहीं मिला।"

ग्यारह

"मुझे ११ नवम्बर हमेशा मुबारक रहा है। ११वें महीनेकी ११वीं तारीख़को ११ बजे हमारी शादी हुई। हमारे मकानका नम्बर भी ११ है.... एक रोज़ मुझे ११ बजकर ११ मिनिट ११ सैकिण्डपर किसीने बताया कि आज बड़ी रेस होनेवाली है। मैंने सोचा कि मेरे लिए ११ के नम्बरमें ज़रूर चमत्कार छिपे हुए हैं, मैं गया और ११वें नम्बरकी रेसके ११वें घोड़ेपर ११ हज़ार रुपये लगा दिये।"

"और घोड़ा जीत गया?"

"यही तो रोना है!—कम्बख़्त ११वें नम्बरपर आया!"

मार डाला!

साक़ी : "इस गिलासको सँभालकर लीजिए।"

रिन्द : "क्यों? क्या ज़्यादा भर दिया है?"

साक़ी : "नहीं, ज़रा छलक गया है।"

आबे-ज़मज़म

"तुम्हारी ज़बान इतनी काली!"

"मेरी ह्विस्कीकी बोतल उस सड़कपर गिर गयी जिसपर हाल ही कोलतार बिछाया गया था।"

पिये हुए

मजिस्ट्रेट : "अरे, तुम मेरे सामने फिर मौजूद हो ! कौन लाया तुम्हें यहाँ ?"

मुलजिम : "जी, ये दोनों सिपाही ।"

मजिस्ट्रेट : "हूँ....फिर पी होगी ।"

मुलजिम : "बिलकुल सच सरकार दोनों ही पिये हुए थे ।"

कह नहीं सका

मुलजिम : "साहब, मैं पिये हुए नहीं था । और यह बात मैंने अफ़सर से कहनी चाही ।"

जज : "और उसने सुनना नहीं चाहा ?"

मुलजिम : "जी, वह तो सुनते थे, मगर मैं कह नहीं सका ।"

'मुँहसे नहीं छूटती है यह काफ़िर लगी हुई'

डॉक्टर : "आपको शराब छोड़नी होगी । वरना आँखोंसे हाथ धोना होगा ।"

रिन्दूमियाँ (सोच-साचकर) : "जी, डॉक्टर साहब अब तो मैं बूढ़ा हो गया हूँ; मैंने सब-कुछ देख लिया है ।"

हज्जाम

एक पुजारीजी किसी नौसिखिए नाईसे हजामत बनवा रहे थे । बनाते-बनाते नाईका हाथ जरा बहक गया और पुजारी महाराजका गाल जरा कट गया ।

पुजारी : "देखो जी, यह भंग पीनेका नतीजा है ।"

नाई : "हाँ सरकार ! यह गालको बहुत मुलायम कर देती है ।"

जहर

एक शराबी पत्नीसे छिपाकर शराब पीता था। बोतलपर 'जहर'का लेबल लगा रखा था। एक रोज पत्नीको मालूम पड़ गया। अगले दिन उसने पतिके सामने बोतल उठाकर पीना शुरू कर दिया।

"अरे अरे ! यह तो जहर है !!"

"मेरा पति अगर जहर पीता हो तो मुझे भी जीकर क्या करना है ?"

सार्सापारिला

तीन कछुए, दो बड़े और एक छोटा, किसी मदिरालयमें सार्सापारिला के एक गिलाससे अपनी तृषा-तृप्ति करने गये। जब वह पीने लगे तो बड़े कछुएमें-से एक बोला, "बारिश हो रही मालूम होती है।" गरमागरम बहसके बाद यह तै हुआ कि छोटा कछुआ उनकी छतरी लेने घर जाये। छोटा कछुआ घुर्राया, "मेरे जानेपर तुम मेरी सार्सापारिला पी जाओगे।" उसे इतमीनान दिलाया गया कि नहीं पीयेंगे, उसके हिस्सेकी ज्योंकी-त्यों रखी रहेगी। तब कहीं छोटे मियाँ छतरी लेने चले।

तीन हफ़्ते हो गये। अन्तमें बड़ोंमें-से एक बोला, "उन हजरतके हिस्सेकी पी क्यों न डाली जाये ?"

दूसरा : "यही मैं भी सोचता रहा हूँ। लाओ पी लें।" नीचे मदिरालयके सिरेके दरवाजेके पाससे एक तेज आवाज आयी। "अगर पीओगे तो मैं छतरी लेने नहीं जाऊँगा।"

आजीवन त्याग

"डॉक्टर मुझसे जिन्दगी-भरके लिए शराब पीना छोड़ देनेके लिए कहता था।"

"बड़ा कठिन त्याग है। लेकिन क्या मुश्किल है; खुशीसे यह व्रत पालो; ज्यादा दिन थोड़े ही जीना है।"

क्या ठिकाना ?

दो शराबी किसी शराबखानेसे निकलकर जंगलमें कहीं दूर भटक गये। चलते-चलते रात हो गयी। उनमें-से एक अँधेरेमें किसी पत्थरसे टकरा गया, और बोला, मालूम होता है हम क़ब्रिस्तानमें आ गये।" दूसरेने दियासलाई जलायी और पढ़ा, "माइल्स सोलह, लन्दन।"

पहला शराबी रोकर कहने लगा, "यार देख यह बेचारा माइल्स, जो लन्दनका रहनेवाला था कुल सोलह सालकी नौजवानीमें मर गया! मौतका क्या ठिकाना!"

त्याग

"आपने सिगरेट पीना छोड़ दिया?"

"बहुत बार।"

अमल

शराबके खिलाफ़ किसीने बड़ी पुरज़ोर किताब लिखी। उसे पढ़कर लाखोंने शराब पीना छोड़ दिया। सारे शहरमें शायद ही कोई पीनेवाला बचा हो। एक रोज़ एक पीये हुआ आदमी बड़ी दुर्दशामें एक गटरसे निकाला गया। उपचारसे वह होशमें आया। लोगोंने उसे प्रेमसे समझाया कि भाई...लेखककी वह शराब-विरोधी किताब पढ़ लो तो फिर तुम कभी न पीओगे। आदमी बोला कि "उस किताबका लिखनेवाला मैं ही हूँ।"

घुड़दौड़

जीतनेवाले जॉकीके सामने माइक रख दिया गया और उससे अनुरोध किया गया कि राष्ट्रको कोई सन्देश दे। बेचारा हड़बड़ाकर बोला, "मैं दूसरे जॉकियोंका बड़ा आभारी हूँ जिनके सहयोगके बिना यह विजय सम्भव नहीं थी।"

क्या ठिकाना ?

दो शराबी किसी शराबखानेसे निकलकर जंगलमें बड़ी दूर भटक गये। चलते-चलते रात हो गयी। उनमें-से एक अँधेरेमें किसी पत्थरसे टकरा गया, और बोला, मालूम होता है हम क़ब्रिस्तानमें आ गये।" दूसरेने दियासलाई जलायी और पढ़ा, "माइल्स सोलह, लन्दन।"

पहला शराबी रोकर कहने लगा, "यार देख यह बेचारा माइल्स, जो लन्दनका रहनेवाला था कुल सोलह सालकी नौजवानीमें मर गया! मौतका क्या ठिकाना!"

त्याग

"आपने सिगरेट पीना छोड़ दिया?"

"बहुत बार।"

अमल

शराबके खिलाफ किसीने बड़ी पुरज़ोर किताब लिखी। उसे पढ़कर लाखोंने शराब पीना छोड़ दिया। सारे शहरमें शायद ही कोई पीनेवाला बचा हो। एक रोज़ एक पीये हुआ आदमी बड़ी दुर्दशामें एक गटरसे निकाला गया। उपचारसे वह होशमें आया। लोगोंने उसे प्रेमसे समझाया कि भाई....लेखककी वह शराब-विरोधी किताब पढ़ लो तो फिर तुम कभी न पीओगे। आदमी बोला कि "उस किताबका लिखनेवाला मैं ही हूँ।"

घुड़दौड़

जीतनेवाले जॉकीके सामने माइक रख दिया गया और उससे अनुरोध किया गया कि राष्ट्रको कोई सन्देश दे। बेचारा हड़बड़ाकर बोला, "मैं दूसरे जॉकियोंका बड़ा आभारी हूँ जिनके सहयोगके बिना यह विजय सम्भव नहीं थी।"

शराबखाना

एक नौजवानको शराबखानेसे निकलते देख एक महिला बोली, "तुम्हें इस जगहसे निकलते देख मुझे दुःख होता है !"

"तो क्या मैं हमेशा अन्दर ही रहता ?"

मद्यनिषेध

वक्ता महोदयने मद्यनिषेधपर भाषण दिया। अन्तमें पूछा, "अच्छा मान लीजिए, मैं एक बालटी पानी और एक बालटी शराब मँगाकर यहाँ रख दूँ और एक गधेको बुलवाऊँ तो वह किस बालटीमें मुँह डालेगा ?"

श्रोता : "पानीकी बालटीमें।"

वक्ता : "आखिर क्यों ?"

श्रोता : "वह गधा जो ठहरा !"

जागरण

पहला : "मुझे अनिद्रा रोग है।"

दूसरा : "तुम इसका क्या उपाय करते हो ?"

पहला : "आध-आध घण्टेपर ह्विस्कीका एक गिलास पीता हूँ।"

दूसरा : "इससे कुछ फ़ायदा होता है ?"

पहला : "नहीं, पर इससे जागना सफल हो जाता है।"

असमर्थ

एक साहब अपने नये दामादकी शिकायत करते हुए कह रहे थे, "वह पी नहीं सकता, न वह ताश खेल सकता है।"

एक मित्र : "दामाद हो तो ऐसा हो।"

महाशय : "नहीं, वह ताश नहीं खेल सकता फिर भी खेलता है; वह पी नहीं सकता फिर भी पीता है।"

शराब

"यह कैसी गड़-गड़ाहट हुई ?"

"भाई साइमन एक ह्विस्की लिये जीनेसे लुढ़क पड़े।"

"शराब गिरायी तो नहीं उसने ?"

"नहीं, उन्होंने अपने मुँहको बन्द रखा।"

काश !

"काश! कि मैं सिगरेट पी सकता।"

"पर तुम हमेशा पीते तो रहते हो ?"

"मालूम है। पर काश ! कि मैं खरीद कर पी सकता।"

दृढ़ निश्चय

स्त्री : "मेरे पति महाराजको बचपनसे धूम्रपानका तीव्र व्यसन था। मगर अब छूते तक नहीं।"

सहेली : "जिन्दगी-भरकी लतको छोड़ना बहुत मुश्किल है। इसके लिए दृढ़ निश्चय चाहिए।"

स्त्री : "वह मेरे पास है तभी तो वह लत छूट सकी।"

८

शरावखाना

एक नौजवानको शरावखानेसे निकलते देख एक महिला बोली, "तुम्हें इस जगहसे निकलते देख मुझे दुःख होता है !"

"तो क्या मैं हमेशा अन्दर ही रहता ?"

मद्यनिषेध

वक्ता महोदयने मद्यनिषेधपर भाषण दिया। अन्तमें पूछा, "अच्छा मान लीजिए, मैं एक बालटी पानी और एक बालटी शराब मँगाकर यहाँ रख दूँ और एक गधेको बुलवाऊँ तो वह किस बालटीमें मुँह डालेगा ?"

श्रोता : "पानीकी बालटीमें।"

वक्ता : "आखिर क्यों ?"

श्रोता : "वह गधा जो ठहरा !"

जागरण

पहला : "मुझे अनिद्रा रोग है।"

दूसरा : "तुम इसका क्या उपाय करते हो ?"

पहला : "आध-आध घण्टेपर ह्विस्कीका एक गिलास पीता हूँ।"

दूसरा : "इससे कुछ फ़ायदा होता है ?"

पहला : "नहीं, पर इससे जागना सफल हो जाता है।"

असमर्थ

एक साहब अपने नये दामादकी शिकायत करते हुए कह रहे थे, "वह पी नहीं सकता, न वह ताश खेल सकता है।"

एक मित्र : "दामाद हो तो ऐसा हो।"

महाशय : "नहीं, वह ताश नहीं खेल सकता फिर भी खेलता है; वह पी नहीं सकता फिर भी पीता है।"

हौसला

एक देहाती दिल्ली जा पहुँचा। वहाँ एक नाईसे बोला, "हजामतका क्या लेता है रे ?"

नाई : "जैसी हजामत। इकन्नीसे अठन्नी तक।"

देहाती : "अच्छा बना एक आनेवाली।" नाईने उस्तरेसे उसका सिर घोटकर रख दिया।

देहाती : "अच्छा अब दो आनेवाली बना।"

नाई : "लो बन गयी। लाओ पैसे।

नाई : "!"

देहाती (खीसा बजाकर बोला) : "अबे घबराता क्यों है, अभी तो आठ आनेवाली तक बनवाऊँगा।"

पोस्टेज

डाक बाबू : "इस लिफाफेका वजन एक तोलेसे ज्यादा है। इसपर एक आनाकी टिकिट और लगाओ।"

देहाती : "साहब, टिकिट लगानेसे तो वजन और बढ़ जायेगा।"

सुधार

"मैंने यहाँ गाँव छोड़ा तबसे इसमें कोई सुधार-बुधार हुआ है ?"

"कह नहीं सकता। पिछले छह महीनेसे मैं बाहर गया हुआ था।"

"और कोई सुधार ?"

टू कप टी

चायकी दूकानपर एक साहबने आकर इस दूकानदारके नये देहाती नौकरसे कहा, "टू कप टी (Two cup tea)"।

नौकर झल्लाकर बोला, "तू कपटी, तेरा बाप कपटी।"

मूर्ख

●

फ़ौरी फ़ैसला

"भला यह भी क़ोई वात है ? वातचीत करनेके ५ मिनिट वाद ही वह मुझे मूर्ख कहकर पुकारने लगा !"

"पांच मिनिट भी कैसे लग गये ?"

जानकार

तीन मूर्ख एक तालावके किनारे बैठे ग़प्पें लगा रहे थे।

एक : "भाई, यह सव तो ठीक; पर मान लो कि तालावमें आग लग जाये तो ये मछलियाँ कहाँ जायेंगी ?"

दूसरा : "और कहाँ जायेंगी, पेड़पर चढ़ जायेंगी। तुझे इतना भी नहीं मालूम ?"

तीसरा : "तू भी मूरखका मूरख ही रहा ! मछलियाँ कोई भैंसे हैं कि आग लगनेपर पेड़पर चढ़ जायें !"

निश्चित

"अगर कोई आदमी किसी विषयमें निश्चित मत रखता हो तो वह मूढ़ होता है।"

"क्या आपका यह निश्चित मत है ?"

"विलकुल !"

हौसला

एक देहाती दिल्ली जा पहुँचा। वहाँ एक नाईसे बोला, "हजामतका क्या लेता है रे?"

नाई : "जैसी हजामत। इकन्नीसे अठन्नी तक।"

देहाती : "अच्छा बना एक आनेवाली।" नाईने उस्तरेसे उसका सिर घोटकर रख दिया।

देहाती : "अच्छा अब दो आनेवाली बना।"

नाई : "लो बन गयी। लाओ पैसे।

नाई : "!"

देहाती (खोपड़ा बजाकर बोला) : "अबे घबराता क्यों है, अभी तो आठ आनेवाली तक बनवाऊँगा।"

पोस्टेज

डाक बाबू : "इस लिफाफेका वजन एक तोलेसे ज्यादा है। इसपर एक आनाकी टिकिट और लगाओ।"

देहाती : "साहब, टिकिट लगानेसे तो वजन और बढ़ जायेगा।"

सुधार

"मैंने यहाँ गाँव छोड़ा तबसे इसमें कोई सुधार-वुधार हुआ है?"
"कह नहीं सकता। पिछले छह महीनेसे मैं बाहर गया हुआ था।"
"और कोई सुधार?"

टू कप टी

चायकी दूकानपर एक साहबने आकर इस दूकानदारके नये देहाती नौकरसे कहा, "टू कप टी (Two cup tea)"।

नौकर झल्लाकर बोला, "तू कपटी, तेरा बाप कपटी।"

फ़ौरी फ़ैसला

"भला यह भी कोई बात है ? बातचीत करनेके ५ मिनिट बाद ही वह मुझे मूर्ख कहकर पुकारने लगा !"

"पांच मिनिट भी कैसे लग गये ?"

जानकार

तीन मूर्ख एक तालावके किनारे बैठे गप्पें लगा रहे थे।

एक : "भाई, यह सब तो ठीक; पर मान लो कि तालाबमें आग लग जाये तो ये मछलियां कहां जायेंगी ?"

दूसरा : "और कहां जायेंगी, पेड़पर चढ़ जायेंगी। तुझे इतना भी नहीं मालूम ?"

तीसरा : "तू भी मूरखका मूरख हो रहा ! मछलियां कोई भैंसे हैं कि आग लगनेपर पेड़पर चढ़ जायें !"

निश्चित

"अगर कोई आदमी किसी विषयमें निश्चित मत रखता हो तो वह मूढ़ होता है।"

"क्या आपका यह निश्चित मत है ?"

"बिलकुल !"

हौसला

एक देहाती दिल्ली जा पहुँचा। वहाँ एक नाईसे बोला, "हजामतका क्या लेता है रे ?"

नाई : "जैसी हजामत। इकन्नीसे अठन्नी तक।"

देहाती : "अच्छा बना एक आनेवाली।" नाईने उस्तरेसे उसका सिर घोटकर रख दिया।

देहाती : "अच्छा अब दो आनेवाली बना।"

नाई : "लो बन गयी। लाओ पैसे।

नाई : "!"

देहाती (खीसा बजाकर बोला) : "अबे घबराता क्यों है, अभी तो आठ आनेवाली तक बनवाऊँगा।"

पोस्टेज

डाक बाबू : "इस लिफाफेका वजन एक तोलेसे ज्यादा है। इसपर एक आनाकी टिकिट और लगाओ।"

देहाती : "साहब, टिकिट लगानेसे तो वजन और बढ़ जायेगा।"

सुधार

"मैंने यहाँ गाँव छोड़ा तबसे इसमें कोई सुधार-वुधार हुआ है ?"

"कह नहीं सकता। पिछले छह महीनेसे मैं बाहर गया हुआ था।"

"और कोई सुधार ?"

टू कप टी

चायकी दूकानपर एक साहबने आकर इस दूकानदारके नये देहाती नौकरसे कहा, "टू कप टी, (Two cup tea)"।

नौकर झल्लाकर बोला, "तू कपटी, तेरा बाप कपटी।"

शिकायत

"गाँवका जीवन भी कैसा सुखकर है ! खुली हवा, शान्त वातावरण, अच्छा घी-दूध, सस्ती शाक-भाजी......। जबतक मैं वहाँ रहा डॉक्टरका एक भी बिल नहीं चुकाया।"

"डॉक्टर भी यही शिकायत करता था।"

दहक़ानी

एक गँवार आदमी इत्तिफ़ाक़से किसी रसायनशालामें पहुँच गया। प्रयोग करते हुए कुछ वैज्ञानिकोंसे पूछने लगा,

"यह आप क्या कर रहे हैं ?"

"हम ऐसी चीज बनानेकी कोशिश कर रहे हैं जिसमें हर चीज घुल जाये।"

देहाती बोला, "अगर वह चीज आपने बना भी डाली तो आप उसे रखेंगे किस बरतनमें ?"

हलका-भारी

सेठ : "तुम पत्थर कितना बड़ा उठा सकते हो ?"

देहाती : "एक मनका।"

सेठ : "और कपास कितनी उठा सकते हो ?"

देहाती : "कपास तो साब, मैं दस मन भी उठा ले जा सकता हूँ।"

विपरीत गति

छात्र : "सर, आपने उलटा हैट पहन रखा है। पीछेका हिस्सा आगे लगा हुआ है !"

प्रोफ़ेसर : "तुम पागल हो। तुम्हें क्या मालूम कि मैं किस दिशामें जानेवाला हूँ !"

अकारण कष्ट

देहाती : "राम राम ! कहाँ चले दादा ?"

डाकिया : "सामनेके गाँवमें यह अखबार देने जा रहा हूँ।"

देहाती : "इसके लिए इतनी तकलीफ़ क्यों करते हो ? डाकसे भेज दो न !"

प्रतिबिम्ब

एक देहातीको दर्पण मिल गया। मुँह देखा तो उसमें उसे अपने मृत-पिताकी-सी झाँकी नज़र आयी।

बोला, "यह तो अजीब जादू है ! इसे छिपाकर रखूँगा।" घर जाकर वह उसे जगह-ब-जगह तरह-तरहसे छिपानेके जतन करने लगा। उसकी पत्नीको बड़ा कुतूहल हुआ। एक दिन उसने उसे ढूँढ़ निकाला। देखा। बोली, "अच्छा तो यह चुड़ैल है जिसके वह पीछे पड़ा हुआ है !"

आबोहवा

एक अजनबीने एक गाँवमें आकर वहाँके किसी निवासीसे पूछा,

"यहाँकी आबोहवा कैसी है ?"

"निहायत तन्दुरुस्ती-बख्श ! जब मैं यहाँ आया था तब मैं कमरेमें चल-फिर तक नहीं सकता था, चारपाईसे भी मुझे कोई उठाता तो उठता........।"

"तब तो बड़े कमालकी जगह है ! तुम यहाँ हो कबसे ?"

"मैं तो यहाँ ही पैदा हुआ हूँ।"

सबसे पहले

"अगर कोई तुझे एक हजार रुपया दे दे तो तू सबसे पहले क्या करे ?"

"उन्हें गिन लूँ।"

शिकायत

"गाँवका जीवन भी कैसा सुखकर है! खुली हवा, शान्त वातावरण, अच्छा घी-दूध, सस्ती शाक-भाजी.........। जबतक मैं वहाँ रहा डॉक्टरका एक भी बिल नहीं चुकाया।"

"डॉक्टर भी यही शिकायत करता था।"

दहक़ानी

एक गँवार आदमी इत्तिफ़ाक़से किसी रसायनशालामें पहुँच गया। प्रयोग करते हुए कुछ वैज्ञानिकोंसे पूछने लगा,

"यह आप क्या कर रहे हैं?"

"हम ऐसी चीज़ बनानेकी कोशिश कर रहे हैं जिसमें हर चीज़ घुल जाये।"

देहाती बोला, "अगर वह चीज़ आपने बना भी डाली तो आप उसे रखेंगे किस बरतनमें?"

हलका-भारी

सेठ: "तुम पत्थर कितना बड़ा उठा सकते हो?"

देहाती: "एक मनका।"

सेठ: "और कपास कितनी उठा सकते हो?"

देहाती: "कपास तो साब, मैं दस मन भी उठा ले जा सकता हूँ।"

विपरीत गति

छात्र: "सर, आपने उलटा हैट पहन रखा है। पीछेका हिस्सा आगे लगा हुआ है!"

प्रोफ़ेसर: "तुम पागल हो। [illegible] [illegible] आनेवाला हूँ!"

आराम-काम

1. एक किसानने एक चित्रकारको अपना कैनवास लिये बैठे देखकर पूछा, "क्या आराम कर रहे हो?"

"नहीं, काम कर रहा हूँ।"

शामको किसानने अपने खेतसे लौटते वक़्त देखा कि चित्रकार अपने बग़ीचेमें काम कर रहा था। किसानने रायज़नी की, "काम तो तुम अब कर रहे हो!"

"नहीं, मैं अपने कामसे विश्रान्ति ले रहा हूँ।"

कम वक़्त

एक सरदार जी, बसमें जगह खाली होते हुए भी खड़े-खड़े सफ़र कर रहे थे।

कण्डक्टर : "बैठिए सरदारजी......।"

सरदारजी : "मुझे बैठनेका वक़्त नहीं, फ़ौरन् स्टेशन पहुँचना है!"

स्वधर्म-निर्णय

एक मूर्ख एक भैंसके घुमावदार सुन्दर सींगोंको देख-देखकर सोचा करता कि *अगर मैं इनमें अपनी टाँगें डाल दूँ तो क्या हो!* आखिर एक रोज़ उसने फ़ैसला कर ही डाला और अपने पैर भैंसके सींगोंमें डाल दिये। इसपर, भैंस फुनफुनाती हुई चौकड़ी भरती हुई भागने लगी। आदमीकी हालत देखने लायक थी। *आखिर भैंस बड़ी मुश्किलसे रोकी गयी। लोगों* ने मूर्खसे पूछा,

"तुम्हें ऐसी बेवक़ूफ़ी करनेसे पहले कुछ तो सोचना चाहिए था!"

"आप ऐसा कैसे कहते हैं कि सोचा नहीं; छह महीने तक सोचते रहने के बाद मैंने यह काम किया है," मूर्ख बोला।

नमूना

एक देहाती पहली बार बम्बई आया । किसी होटलमें दूध पीने गया । बेटरने हस्ब-मामूल जब एक प्यालीमें आध पाव दूध लाकर रख दिया तो गँवार बौखलाया,

"नमूना किसने मँगाया था ? नमूनेका क्या होगा ? दूध लाओ !"

पण्डित और किसान

पण्डित : "भई, सफ़र लम्बा है । वक़्त काटनेके लिए आओ हम एक दूसरेको पहेलियाँ बूझें, जो जवाब न दे सके वह पाँच रुपये दे ।"

पण्डित : "अच्छा, मंजूर ।"

किसान : "बताओ वह कौन-सा जानवर है जो एक पैरसे पानीमें तैरता है, दो पैरोंसे जमीनपर दौड़ता है और तीन पैरोंसे आसमानमें उड़ता है ।"

पण्डितजी चकराये,"आखिर हार मानकर बोले, ये लो पाँच रुपये ।"

लेकिन किसानने उन पाँच रुपयोंमें-से दो रुपये पण्डितजीको लौटाते हुए कहा, "ये दो रुपये तुम लो, क्योंकि मैं खुद भी उस जानवरको नहीं जानता ।"

अदया

एक मूर्ख घोड़ेपर सवार था, और घासका गट्ठा अपने सिरपर रखे हुए था, किसीने कहा, "घास भी घोड़ेकी पीठपर रख लो ।"

मूर्ख बोला : "वाह जी वाह, इस तरहसे भला घोड़ेपर बोझा ज्यादा न हो जायेगा । यह मेरा निजी घोड़ा है, किरायेका नहीं लाया हूँ ।"

धोखा

"आप अजीब मोजे पहने थे, सरदारजी !—एक लाल एक हरा !"

"हाँ दूकानदारने बड़ा धोखा दिया—ऐसी ही एक जोड़ी घरपर पड़ी हुई है", सरदारजी बोले ।

सोडावाटर

दो देहाती पहली बार रेलमें सफ़र कर रहे थे। उन्होंने सोडावाटरके बारेमें सुना तो था, मगर पीया कभी नहीं था। उन्होंने वेण्डरसे एक-एक बोतल ली।

उनमेंसे एकने बोतलको मुँहसे लगाकर लम्बे-लम्बे घूँट भरने शुरू कर दिये और उसी वक़्त गाड़ी एक सुरंगमें दाखिल हुई।

"क्यों कैसा लगा?" साथीने पूछा।

"छूना मत इस वाहियात चीज़को! इसने तो मुझे अन्धा कर दिया था!!"

पटेलकी सलाह

एक देहाती पटेल पहली ही बार रेलमें सफ़र कर रहा था। गाड़ीमें टिकिट-चेकर आया और नम्रतासे बोला, "काका, ज़रा अपनी टिकिट देना।"

काका: "भई, अभी गाडी छूटनेमें देर है। वह सामने जो खिड़की दिखती है वहाँ टिकिट मिलती है। इस वक़्त तो ज़रा भी भीड़ नही है, जाकर ले न आओ। मैं अपनी टिकिट क्यों दूँ?"

चश्मदीद

वकील : "देखो, जो तुमने आँखोंसे देखा हो वही कहना।"

गवाह : "बहुत अच्छा सरकार।"

वकील : "तुम्हारा नाम क्या है ?" गवाह चुप।

वकील : "अपना नाम क्यों नहीं बतलाते ?"

गवाह : "उसे मैंने कानोंसे सुना है, आँखोंसे नहीं देखा।"

ईश्वरकी ग़लती

रेलके एक डिब्बेमें दो मोटे आदमी सारी बेंचको घेरे बैठे थे। खड़ा हुआ एक मुसाफ़िर बोला,

"मैं कहता हूँ मिस्टर ! रेलवेका क़ानून है कि एक बेंचपर तीन आदमी बैठें। १५ इंचसे ज़्यादा जगह रोकनेका किसीको अधिकार नहीं है। आप दोनों चार फ़ीट जगह घेरे बैठे हैं। आपको समझना चाहिए यह रेलवे क़ानूनकी खिलाफ़वर्ज़ी है।"

जेबसे सिगार निकालकर सुलगाते हुए इतमीनानसे उनमें-से एक बोला,

"बिरादर, रेलवेने बेंचके बारेमें क़ानून बनाया यह ठीक है; लेकिन हमारे शरीर रेलवेके क़ानूनके मुताबिक़ नहीं गढ़े गये। इसमें तो ईश्वरकी ग़लती हुई है। आप उससे फ़रियाद करके जवाब लाइए, तब आगेकी तजवीज़ करेंगे।"

प्रतीति

एक आदमीपर किसी किसानके खेतमें कुछ कबूतर मारनेका आरोप लगाया गया। आदमीके वकीलने किसानको जिरहके दौरानमें डरानेकी कोशिश की। बोला, "क्या तुम क़सम खाकर कह सकते हो कि इस आदमी ने तुम्हारे कबूतर मारे?"

किसान: "मैंने यह नहीं कहा कि इस आदमीने मारे मैंने तो यह कहा है कि मुझे शक होता है कि इसीने मारे हैं।"

वकील: "अहह! अब आ रहे हैं आप ठिकानेपर! अच्छा तुम्हें इस पर शक कैसे हुआ?"

किसान: "इस तरह, अव्वल तो मैंने इसे बन्दूक लिये अपने खेतपर पकड़ा। दोयम, मैंने बन्दूककी आवाज़ सुनी और कुछ कबूतरोंको गिरते देखा। सोयम, मैंने अपने चार कबूतर इसकी जेबमें देखे, मैं नहीं सोचता कि वे उड़कर उसकी जेबमें घुसे होंगे और वहाँ उन्होंने आत्महत्या की होगी।"

कहा-सुनी

मजिस्ट्रेट: "गवाह कहता है कि तुममें और तुम्हारी पत्नीमें कुछ कहा-सुनी हुई।"

मुद्दाअलैह: "जी हुज़ूर, मगर कहा उसने, सुनी मैंने।"

बड़ा आदमी

आगन्तुक: "वकील साहब! आप मुझे नहीं जानते मेरे पिता ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं—"

व्यस्त वकील: "कुर्सी ले लीजिए।"

आगन्तुक: "और मेरे ससुर लोकलबोर्डके प्रेसीडेण्ट—"

वकील: "दो कुर्सी ले लीजिए।"

अनुभव

एक महिला मोटरकी चपेटमें आ गयीं, अदालतमें बचाव पक्षके वकील ने कहा,

"ड्राइवरका क़सूर नहीं हो सकता,क्योंकि वह १५ वर्षसे मोटर चलाते आ रहे हैं।"

इसपर वादी पक्षका वकील बोला,

"तब तो महिलाकी ग़लती भी हरगिज नहीं हो सकती, क्योंकि वह ४० वर्षसे सड़कपर पैदल चलती आ रही हैं।"

अण्डरओथ

वकील : "तुम बड़े होशियार आदमी मालूम पड़ते हो!"

गवाह : "आपकी तारीफ़में भी मैं यही कहता, मगर क्या करूँ शपथ ग्रहण किये हुए हूँ।"

नया चोर

देहाती : "हुज़ूर ये बतखें मेरी ही हैं जो कि चोरी चली गयी थीं।"

जज : "पर तुम दावेके साथ कैसे कह सकते हो कि ये तुम्हारी ही हैं? मेरे यहाँ भी ऐसी बतखें हैं।"

देहाती : "हो सकती हैं। मेरे यहाँसे सिर्फ़ ये ही बतखें थोड़े ही चोरी गयी हैं।"

पसीनेकी रोटी

मित्र : "सुना है कि आपके लड़केको चोरीके इलज़ाममें जेल हो गयी!"

पिता (सगर्व) : "हाँ! आखिर वह पसीनेकी रोटी खाने लगा।"

ह्स्व-जरूरत

जज : "तू घरमें कबतक रहा ?"
चोर : "बाहर आने तक।"

वाहिद सबब

एक मुक़दमेमें एक गवाहने अनेक दलीलोंसे यह साबित किया कि अमुक होटल बदमाशोंका केन्द्र है। मगर वकीलको इसपर भी सन्तोष नहीं हुआ और उसने पूछा, "तुमने क़रीब पन्द्रह कारण तो दिये, लेकिन अब सिर्फ़ एक अन्तिम वजह ऐसी बतलाओ जिससे तुम्हें लगा कि यह होटल बदमाशोंका अड्डा है।"

गवाह : "एक बार आपको मैंने वहाँ बैठे हुए देखा था।"

आदत

जज (मुद्दाअलैहसे) : "तो तुम्हारे कहनेका यह मतलब है कि तुमने अपनी बीवीको दूसरी मंज़िलकी खिड़कीसे भूलसे धकेल फेंका ?"

मुद्दाअलैह (लजाते हुए) : "जी हुजूर, हम पहले ग्राउण्ड फ़्लोरपर रहते थे; और यह मैं बिलकुल भूल गया कि हम अब दूसरी मंज़िलपर रहने लगे हैं।"

सूरत-सीरत

जज : "आप हर मुक़दमेमें हमारी ज्यूरीके मेम्बर क्यों नहीं बनते ?"

सज्जन : "क्या फ़ायदा ? इस आदमीकी शक्ल ही बता रही है कि यही मुजरिम है।"

जज : "श····श····श····! यह मुद्दाअलैह थोड़े ही है, यह तो सरकारी वकील है !"

झेलिए वकील साहब !

वकीलोंकी एक टोलीने एक आयरलेण्ड-निवासीको एक मैखानेमें पीने के लिए बुला लिया।

एक वकीलने उससे पूछा, "तुम्हारा धन्धा क्या है ?"

आयरिश : "घोड़ोंका व्यापार, वही जो मेरे पिताका था, ईश्वर उनकी आत्माको शान्ति बख्शे।"

"अरे अरे, आपके बाप मर गये हैं ?"

"जी हाँ, स्वर्गवासी हो गये हैं।"

वकीलने मक्कारीसे पूछा, "क्या यहाँकी तरह वहाँ भी लोगोंको धोखा देते हैं ?"

"मेरा ख़याल है उनने वहाँ एक शख्सको धोखा दिया था।"

"तो फिर चालान किया गया उनका ?"

"नहीं," आयरिश शान्तिपूर्वक बोला, "क्योंकि जिसे धोखा दिया गया था उसने सारा स्वर्ग देख डाला, लेकिन उसे कोई वकील न मिला।"

मुश्किल कुशायी

"किन शब्दोंमें मैं आपकी तारीफ़ करूँ ?"

मुवक्किलने अपने मुक़दमेकी जीतपर वकीलसे कहा।

"महाशय, शब्द-शास्त्रियोंने 'रुपया' शब्द बनाकर आपकी मुश्किल हल कर दी है।"

मशवरा

"आप किसी वकीलके पास क्यों नहीं जाते ?"

"मेरे भाईने कहा कि यह बात तो कोई भी बेवक़ूफ़ बतला देगा, इसलिए मैंने सोचा, चलो आपही से पूछ लूँ।"

तलाक़

एक आंग्ल महिला अपने वकीलको तलाक लेनेके कारण समझा रही थी,

"और आखिरी चीज़ उसने यह की है कि २५ हज़ार पौण्डका अपना बीमा कराया है।"

वकील : "लेकिन, मैडम, बीमा तो तुम्हारी संरक्षाके लिए है।"

मैडम : "हृ हृ ! अरे तुम उस आदमीको नहीं जानते। उसने बीमा मरनेके इरादेसे नहीं मुझे चिढानेके लिए करवाया है !"

तुर्की-बतुर्की

जज : "तुम क्या काम करते हो ?"

मुजरिम : "कुछ-न-कुछ।"

जज : "कहाँ काम करते हो ?"

मुजरिम : "कहीं-न-कहीं।"

जजने उसे हवालातमें डाल दिये जानेका हुक्म दिया। सुनकर मुजरिम बिलबिलाया।

"मैं यहाँसे कब छूटूँगा ?"

"कभी-न-कभी", जजने जवाब दिया।

आरोप

वकीलोंकी नामावलीमें किसी वकीलके नामके आगे किसी मसखरेने लिख दिया,

"इनमें बुद्धि होनेका आरोप है।"

उसने पढ़ा तो लिख दिया, "मुक़दमा चलाकर इन्हें निर्दोष छोड़ दिया गया है।"

स्थायी-ग्राहक

एक मुलज़िम जब अदालतमें हाज़िर किया गया तो मजिस्ट्रेटको उसकी सूरत कुछ पहचानी हुई मालूम हुई। इसलिए उन्होंने मुलज़िमसे पूछा, "इसके पहले तुम कितनी दफ़े सज़ा पा चुके हो?"

मुलज़िम : "हुज़ूर, पांच दफ़े।"

मजिस्ट्रेट : "पांच दफ़े! तब तो इस बार तुम्हें सबसे बड़ी सज़ा मिलनी चाहिए।"

मुलज़िम : "यह क्या! हुज़ूर, स्थायी ग्राहकोंके साथ सब जगह रियायत की जाती है।"

इन्हीं पैरोंसे

अराजकता फैलानेके जुर्ममें चन्द शख्सोंको शहरसे दस मील पैदल बाहर ले जाकर शूट कर दिये जानेकी सज़ा दी गयी।

एक मुजरिमने बड़बड़ाकर कहा,

"यह क्या बदतमीज़ी है! जब गोलीसे ही मारना है तो खामखां इतनी दूर पैदल घसीटनेकी तकलीफ़ क्यों दी जा रही है?"

नज़दीकके सिपाहीने कहा, "तकलीफ़ आपके लिए क्या है? हमें तो इन्हीं पैरों वापस भी आना है।"

क़ानून

तलाक़के मामलेमें उलझी हुई एक स्त्री अपनी सहेलीसे बोली, "इन वकीलोंकी नीरस मुलाक़ातोंसे तो मैं घबरा उठी हूँ।"

"मुझसे इन कम्बख्तोंका जिक्र न करो! मिलकियतके मुक़दमेमें मुझे इतनी परेशानी उठानी पड़ी कि कभी-कभी तो मैं सोचने लगती हूँ कि मेरा खाविंद न मरता तो अच्छा था।"

अनुमान प्रमाण

प्रोसीक्यूटर : "अब आप अदालतको यह बताइए कि यह कार आपके कब्जेमें कैसे आयी।"

मुद्दालेह : "यह कब्रिस्तानके बाहर खड़ी हुई थी, मैंने समझा इसका मालिक मर गया है।"

वकीलकी रोटी

मुवक्किल : "आपका दफ्तर तो भट्ठीकी तरह गरम है!"

वकील : "क्यों न हो ? मैं अपनी रोटी यहीं पकाता हूँ न !"

शान्तिप्रिय

जज : "तुम कहते हो कि तुम शान्तिप्रिय जीव हो ?"

मुजरिम : "जी हुजूर, जरूर हूँ।"

जज : "और तुमने उस सिपाहीके सिरपर ईंट गिरा दी ?"

मुजरिम : "सच बात है। और ईंट गिरानेके बाद, सरकार, उसकी-सी शान्त छवि मैंने कहीं नहीं देखी।"

जेल-गमन

वकील (एक गवाहसे) : "क्या तुम कभी जेल गये हो ?"

गवाह : "हाँ, एक बार।"

वकील (जजसे) : "अब आप ही देखिए कि जेल पाये हुए गवाहकी बातपर कैसे विश्वास किया जा सकता है।"

जज (गवाहसे) : "तुम किसलिए जेल गये थे ?"

गवाह : "मेरा काम पुताई करना है। मैं जेलमें एक कोठरी पोतने गया था। उस कोठरीमें एक वकील क़ैद था जिसने अपने मवक्किलोंको धोखा दिया था।"

निकालो बाहर !

कचहरीमें बढ़ते हुए शोरको सुनकर मजिस्ट्रेट बोला, "अब कोई जरा भी आवाज़ करेगा तो उसे निकाल बाहर किया जायेगा।"

"हो, हो....", कचहरीके कटहरेमें खड़ा हुआ मुलजिम बोल उठा।

सूमकी धूम !

एक कंजूस व्यक्ति मरते समय, अपने वकीलको अपना वसीयतनामा लिखवा रहा था ! अन्तमें उसने कहा, "और मैं अपने उन सब नौकरोंको, जिन्हें मेरे साथ काम करते हुए, पाँच सालसे अधिक हो गये हैं, दो-दो हज़ार रुपये देता हूँ।"

वकीलने कहा, "आप सचमुच बड़े दयानिधान हैं !"

"वैसे, असलियत तो यह है वकील साहब, कि मेरे किसी भी नौकर को मेरे यहाँ नौकरी करते हुए एक सालसे अधिक नहीं हुआ है।"

"पर अखबारोंमें जब यह वसीयतनामा छपेगा, तो मेरे नामकी धूम मच जायेगी !"

कण्ट्रैक्ट

मुवक्किल : "मेरा उसका जबानी कण्ट्रैक्ट था।"

वकील : "लेकिन जबानी कण्ट्रैक्टका मूल्य तो उस काग़ज़के बराबर भी नहीं है, जिसपर वह लिखा गया है।"

इनसाफ़

मुजरिम (अपने वकीलसे) : "क्या आपको लगता है कि मुझे सच्चा न्याय मिल सकेगा ?"

वकील : "सच्चा तो नहीं मिल पायेगा, क्योंकि जूरीके दो जन फाँसी की सज़ाके ख़िलाफ़ हैं।"

वकील और प्रामाणिक !

दो आदमी एक क़ब्रिस्तानसे होकर जा रहे थे। उनकी नज़र क़ब्रके एक अपताफ़पर पड़ी। लिखा था,

"यहाँ एक कुशल वकील और प्रामाणिक आदमी सोता है।"

"अरे! यहाँ क़ब्रोंके लिए जगहकी इतनी तंगी है कि एक क़ब्रमें दो आदमी दफ़नाये हैं!" एक बोला।

गवाह

"मेरे पास यह बात साबित करनेके लिए गवाह है।"

"मेरे पास उस वक़्त कोई गवाह नहीं था यह साबित करनेके लिए गवाह हैं।"

रहने दीजिए आपकी दुआएँ

जज : "तुम्हें फाँसीकी सज़ा दी जाती है। ईश्वर तुम्हारी आत्माको शान्ति दे।"

मुजरिम : "रहने दीजिए आपकी दुआएँ! आपने जिसके लिए दुआ की होगी वह ज्यादा दिन न जिया होगा।"

ऐडीशनल

एक ऐडीशनल जजके इजलासमें एक मुकदमेकी सुनवाई हो रही थी। ऐडीशनल जजने मुद्दाअलैहसे पूछा,

"तुम्हारे पास कितने बैल हैं?"

"हुज़ूर तीन।"

"तीन? तीन बैलोंसे क्या करते हो?"

"दोसे हल जोता जाता है।"

"और तीसरा?"

"तीसरा ऐडीशनल है!"

निकालो बाहर !

कचहरीमें बढ़ते हुए शोरको सुनकर मजिस्ट्रेट बोला, "अब कोई ज़रा भी आवाज़ करेगा तो उसे निकाल बाहर किया जायेगा।"

"हो, हो....", कचहरीके कटहरेमें खड़ा हुआ मुलज़िम बोल उठा।

सूमकी धूम !

एक कंजूस व्यक्ति मरते समय, अपने वकीलको अपना वसीयतनामा लिखवा रहा था ! अन्तमें उसने कहा, "और मैं अपने उन सब नौकरोंको, जिन्हें मेरे साथ काम करते हुए, पाँच सालसे अधिक हो गये हैं, दो-दो हज़ार रुपये देता हूँ।"

वकीलने कहा, "आप सचमुच बड़े दयानिधान हैं !"

"वैसे, असलियत तो यह है वकील साहब, कि मेरे किसी भी नौकर को मेरे यहाँ नौकरी करते हुए एक सालसे अधिक नहीं हुआ है।"

"पर अखबारोंमें जब यह वसीयतनामा छपेगा, तो मेरे नामकी धूम मच जायेगी !"

कण्ट्रैक्ट

मुवक्किल : "मेरा उसका ज़बानी कण्ट्रैक्ट था।"

वकील : "लेकिन ज़बानी कण्ट्रैक्टका मूल्य तो उस काग़ज़के बराबर भी नहीं है, जिसपर वह लिखा गया है।"

इनसाफ़

मुजरिम (अपने वकीलसे) : "क्या आपको लगता है कि मुझे सच्चा न्याय मिल सकेगा ?"

वकील : "सच्चा तो नहीं मिल पायेगा, क्योंकि जूरीके दो जज फाँसी की सज़ाके खिलाफ़ हैं।"

अप-शब्द

वकील : "मुद्दालेहने क्या शब्द कहे थे, बतलाओ।"

मुद्दई : "मैं उन्हें कहना नहीं चाहूँगा। वे किसी शरीफ़ आदमीको बताने लायक़ नहीं हैं।"

वकील : "तो जज साहबके कानमें कह दो।"

झूठ-सच

एक जज साहब अदालतको समझाने लगे कि, "अगर कोई गवाह अपना बयान बदल दे तो उसे लाज़िमी तौरसे झूठा नहीं मानना चाहिए। मसलन आज जब मैं यहाँ आया तो क़सम खाकर कह सकता था कि मेरी घड़ी मेरी जेबमें है। लेकिन बादमें मुझे खयाल आया कि उसे तो मैं अपने स्नान-घरमें रखी छोड़ आया हूँ।"

जब रातको जज साहब घर पहुँचे तो उनकी बीवी बोलीं, "घड़ीके यहाँ होनेसे आपको यह क्या परेशानी हुई थी कि आपने उसे लेनेके लिए चार-पाँच आदमी भेजे?"

"हरे राम! मैंने तो किसीको नहीं भेजा! फिर तुमने क्या किया?"

"मैंने पहले आदमीको दे दी। उसने यह भी बताया कि कहाँ रखी है।"

शपथ

एक अदालतमें एक गवाह गवाही देने ही वाला था। जजने उसे मन्दमति-सा जानकर सचेत किया,

"जानते हो शपथ लेनेके माने क्या हैं?"

"जी हाँ", गवाह बोला, "इसके मानी हैं कि अगर मैं झूठ बोलूँ तो उसपर डटा रहूँ, चाहे कुछ क्यों न हो जाये।"

इञ्जिन

किसी किसानकी गाय रेलसे कट गयी। उसने हर्जानेका दावा दायर कर दिया। बचाव पक्षके वकीलने बहुत-से कँटीले और ग़ैर-ज़रूरी सवालोंके बाद अन्तमें इञ्जिन-ड्राइवरसे पूछा,

"क्या गाय रेलवे-लाइनपर थी ?"

अदालती घिस-घिसका मारा ड्राइवर उकताहटसे आकण्ठ भरा बैठा था। ठण्डे-ठण्डे बोला, "जी क़तई नहीं ! वह तो मील-भर दूर एक खेतमें थी। लेकिन जब इञ्जिनने उसे देखा तो वह पटरियोंसे उतरकर, बाड़को फलांगकर उसका पीछा करते-करते खेतके उस पार एक पेड़ तक पहुँचा। गाय पेड़पर चढ़ गयी तो इञ्जिन भी चढ़ गया, और वहाँ उसने गायका गला घोंट डाला।"

दाढ़ी और दिल

जज : "तेरी दाढ़ीके बराबर तेरा दिल भी होता तो कैसा अच्छा होता !"

मुजरिम : "आप अगर दाढ़ीसे ही दिलकी विशालता नापते हैं तो, माफ़ कीजिएगा, आपके दाढ़ी ही नहीं है तो दिल कहाँसे होगा ?"

प्रेरणा

जज : "तुम अपनी स्त्रीको मारनेके लिए कैसे प्रेरित हुए ?"

मुजरिम : "एक तो पीठ उसकी मेरी तरफ़ थी; दूसरे बेलन पास ही पड़ा हुआ था; तीसरे पीछेका दरवाज़ा खुला हुआ था। मैंने देखा मौक़ा अच्छा है।"

सच

मुलज़िम : "हुज़ूर, मैंने सच-सच कहनेका हलफ़ उठाया है, मगर मैं ज्योंही सच बोलनेकी कोशिश करता हूँ कोई-न-कोई वकील मुझे बीचमें टोक देता है।"

अप-शब्द

वकील : "मुद्दालेहने क्या शब्द कहे थे, बतलाओ।"

मुद्दई : "मैं उन्हें कहना नहीं चाहूँगा। वे किसी शरीफ़ आदमीको बताने लायक़ नहीं हैं।"

वकील : "तो जज साहबके कानमें कह दो।"

झूठ-सच

एक जज साहब अदालतको समझाने लगे कि, "अगर कोई गवाह अपना बयान बदल दे तो उसे लाज़िमी तौरसे झूठा नहीं मानना चाहिए। मसलन आज जब मैं यहाँ आया तो क़सम खाकर कह सकता था कि मेरी घड़ी मेरी जेबमें है। लेकिन बादमें मुझे खयाल आया कि उसे तो मैं अपने स्नान-घरमें रखी छोड़ आया हूँ।"

जब रातको जज साहब घर पहुँचे तो उनकी बीबी बोलीं, "घड़ीके यहाँ होनेसे आपको यह क्या परेशानी हुई थी कि आपने उसे लेनेके लिए चार-पाँच आदमी भेजे ?"

"हरे राम ! मैंने तो किसीको नहीं भेजा ! फिर तुमने क्या किया ?"

"मैंने पहले आदमीको दे दी। उसने यह भी बताया कि कहाँ रखी है।"

शपथ

एक अदालतमें एक गवाह गवाही देने ही वाला था। जजने उसे मन्दमति-सा जानकर सचेत किया,

"जानते हो शपथ लेनेके माने क्या हैं ?"

"जी हाँ", गवाह बोला, "इसके मानी हैं कि अगर मैं झूठ बोलूँ तो उसपर डटा रहूँ, चाहे कुछ क्यों न हो जाये।"

गठकटे

वकील : "१६ तारीखके तीसरे पहर तुम कहाँ थे ?"
मुद्दाअलैह : "अपने दो मित्रोंके साथ था।"
वकील : "शायद चोर होंगे ?"
मुद्दाअलैह : "जी हाँ दोनों वकील हैं।"

टैक्स

जज : "पत्नीको पीटनेके लिए तुमपर दस रुपये दस आना जुर्माना।"
मुजरिम : "दस रुपये तो मैं समझा, मगर हुजूर ये दस आने काहे के है ?"
जज : "ये मनोरंजन-टैक्स के हैं।"

वसीयत

एक वकीलने वसीयत की कि उसकी तमाम जायदाद बेवक़ूफ़ोंमें बाँट दी जाये।
किसीने इस अजीब वसीयतका कारण पूछा, तो बोले, "मुझे उन्हींसे यह दौलत मिली थी इसलिए उन्हींमें बाँटे भी जा रहा हूँ।"

लुटेरा

एक वकील : "बचपनमें मेरी इच्छा लुटेरा बननेकी थी।"
श्रोता : "आप बड़ी तक़दीरवाले हैं वकील साहब ! जिस तरह आपकी इच्छा पूरी हुई है वैसे कसी-किसीकी ही होती है ?"

द्विविधा

(गवाहसे) : "लड़ाईमें तुमने प्रतिवादीकी मदद क्यों न[illegible]

"मैं जान नहीं सका कि प्रतिवादी कौन बनेगा ?"

आपके रिश्तेदार

मुजरिम : "मुझे बड़ी सख्त सजा दी गयी, हुजूर।"
मुन्सिफ़ : "तो क़ाज़ीके पास जाओ।"
मुजरिम : "वह भी तो आपका चचा है।"
मुन्सिफ़ : "तो वज़ीरके पास जाओ।"
मुजरिम : "वह तो आपका ताऊ है।"
मुन्सिफ : "तो सुलतानके पास जाओ।"
मुजरिम : "उसकी प्रिय सुल्ताना आपकी ही भतीजी है।"
मुन्सिफ़ : "तो जहन्नुममें जाओ।"
मुजरिम : "वहीं आया हूँ साहब! और देखता हूँ कि यहाँ भी आपके रिश्तेदार कम नहीं हैं!"

रोशन-दिमाग़ी

एक लैविल-क्रॉसिंगके पास एक ऐक्सप्रेसने एक मोटर चकनाचूर कर डाली। गेटमैन ही एकमात्र गवाह था। सारे मुक़दमेका दारोमदार इसपर था कि उसने माकूल तरीकेसे खतरेका सिगनल दिखलाया था या नहीं। वह हरचन्द यही कहता रहा कि "अँधेरी रात थी। मैंने अपनी लालटेन बहुतेरी हिलायी, मगर ड्राइवरने ध्यान ही नहीं दिया।"

मुक़दमेके बाद डिवीज़नल सुपरिण्टेण्डेण्टने उसे बुलाया और अपने कथनपर डटे रहनेके लिए बधाई दी—

"भई वाह! कमाल कर दिया! मैं तो डर रहा था कि कहीं तुम अपनी शहादतमें विचलित न हो जाओ।"

पुराना खुर्राट बोला, "नहीं साहब, नहीं साहब। बल्कि हर मिनिट मुझे यह डर लग रहा था कि कहीं वकील यह न पूछ बैठे कि, 'क्या तुम्हारी लालटेन जली हुई थी?'"

रोकड़

किसी बैंकका कैशियर कभी स्थानीय जज रह चुका था।

एक रोज़ वह एक अजनबीसे बोला, "साहब, आपका चैक तो ठीक है, लेकिन आपने इस बातका पर्याप्त प्रमाण नहीं दिया कि आप ही वह व्यक्ति हैं जिसके नाम चैक है। इसलिए मैं सोच नहीं पा रहा हूँ कि किस तरह इसे भुना दिया जाये।"

मगर वह अजनबी आदमी जजको जानता था। बोला, "जज साहब, मुझे मालूम है कि आपने इससे कम प्रमाणपर एक आदमीको फांसी दे दी थी।"

"वह मुमकिन है, लेकिन जब 'हार्ड कैश'के जानेका सवाल उठता है तो हमें बड़ा सावधान रहना पड़ता है।"

फ़ीस

वकील : "मैं तुम्हारी वकालत तो कर सकता हूँ, मगर तुम्हारे पास रुपये हैं फ़ीसके लिए ?"

मुवक्किल : "जी नहीं, एक फ़ोर्डकार है।"

वकील : "कोई मुजायक़ा नहीं, तुम कारपर कुछ रुपये ले लेना। अच्छा, अब यह बताओ तुमपर किस चीज़की चोरीका इल्ज़ाम है ?"

मुवक्किल : "एक फ़ोर्डकारकी चोरीका।"

ईमानदार

[illegible] हाल आदमीको आवारागर्दीके इल्ज़ाममें पकड़कर अदालतमें [illegible] ने उसे सख्त नज़रसे देखते हुए पूछा, "[illegible] ज़िन्दगीमें कभी ईमानदारीसे भी कुछ कमाया है ?"

"[illegible] र, पिछले चुनावमें वोट देनेके मुझे पाँच रुपये मिले थे।"

जहन्नुम

एक वकीलने अदालतमें मुकदमा पेश किया कि उसका मुवक्किल फ़ीस नहीं देता।

जज : "तुम फ़ीस माँगने मुवक्किलके यहाँ गये थे ?"

वकील : "जी हाँ।"

जज : "क्या कहा उसने ?"

वकील : "जाओ जहन्नुममें ! वहीं मिल जायेगी फ़ीस !"

जज : "फिर ?"

वकील : "यह सुनते ही मैं सीधा यहाँ चला आया।"

लेखक

लेखक : "एक बार मुझे एक-एक शब्दके दस-दस रुपये पड़े।"

सम्पादक : "ओ हो ! कैसे ?"

लेखक : "मैंने जजको उलट कर जवाब दिया था ?"

बताइए !

एक महाशय किसी वकीलसे मशवरा लेने गये, "वकील साहब, ज़रा बताइए कि नये क़ानूनके अनुसार मैं अपनी विधवाकी भाभीसे शादी कर सकता हूँ या नहीं ?"

अपने खर्चसे !

मजिस्ट्रेट : "ओवरकोट चुरानेका जुर्म तू क़बूल करता है। तुझे और कुछ कहना है ?"

मुजरिम : "हाँ साहब, ओवरकोटकी बाँहें लम्बी थीं, वे मुझे अपने खर्चसे छोटी करानी पड़ीं।"

पत्थर

वकील : "मुजरिमने जो पत्थर, फेंका वह कितना वड़ा था ? मेरी मुट्ठीके वरावर ?"

गवाह : "उससे भी वड़ा।"

वकील : "मेरी दो मुट्ठियोंके वरावर ?"

गवाह : "उससे भी ज़्यादा वड़ा।"

वकील : "मेरे सरके वरावर ?"

गवाह : "हाँ, था तो इतना ही वड़ा, मगर ऐसा ठस नहीं था।"

फ़ैसला

मजिस्ट्रेट : "तुम अपनेको अपराधी मानते हो या निरपराध ?"

मुलज़िम : "इसका जवाव दे सकना वड़ा मुश्किल है ! 'यही तो हम मालूम करना है।"

नेक सलाह

"वाह, अच्छी सलाह दी ! तुमने तो कहा था कि जजसे अगर दोस्ताना तौरसे पेश आये तो वह तुम्हें सस्तेमें छोड़ देगा।"

"क्यों, नहीं छोड़ा क्या ?"

"नहीं ! मैंने अन्दर घुसकर कहा, 'नमस्ते जानेमन ! कैसा है आज इ[illegible] वूढ़े लौंडेका मिजाज ?' वह वोला, 'जुर्माना'—पचास रुपये।"

वसीअत

"भीकचन्द वड़ा काइयाँ निकला ! उसने ऐसी वसीअत की है [illegible] वकीलोंको उसके वारिसोंसे कुछ ज़्यादा नहीं मिल सकता, 'कैसे ?'"

"उसने अपनी दौलतका आधा हिस्सा मुल्कके एक उत्तम व[illegible] यक़ीनन् दिल[illegible] ... है, बशर्ते कि वह वाक़ी आधेको उसके वारिसोंको

सबके-सब

मजिस्ट्रेट : "तो तुमने इस शख्सको इसलिए मारा कि यह तुम्हारी रायसे सहमत न हो सका ?"

मुद्दायलेह : "हुजूर, मैं अपनेको रोक न सका। यह आदमी इस क़दर ईडियट है।"

मजिस्ट्रेट : "अच्छा, तो तुम मय खर्चेके जुर्माना अदा करो, और आइन्दा याद रखो कि ईडियट भी मेरी और तुम्हारी तरह आदमी ही होते हैं।"

तौहीन

एक जजने एक वकीलपर अदालतकी तौहीन करनेके लिए, जुर्माना करनेकी धमकी दी। वकील बोला, "मैंने अदालतके लिए कोई तौहीन नहीं दिखलायी, बल्कि हत्तुल इमकान अपने जज़्बातको छिपानेकी कोशिश की है।"

व्यर्थ कष्ट

मजिस्ट्रेट (मुलज़िमसे) : "तुम बरी किये गये !"

मुलज़िम : "माफ़ कीजिएगा, आपको मेरे पीछे फ़िज़ूल तकलीफ़ उठानी पड़ी।"

चोर

जज : "जाओ, तुम रिहा कर दिये गये।"

चोर : "क्या मैं छोड़ दिया गया !"

जज : "हाँ, छोड़ दिये गये।"

चोर : "सरकार, तो अब मुझे उस चुरायी हुई घड़ीको वापस तो न करना होगा ?"

शहादत

जज : "क्या तुम अपराधी हो ?"

कैदी : "मैंने अभी गवाही नहीं सुनी।"

सिखाया हुआ गवाह

किसी मुकदमेमें एक छोटे लड़केकी गवाही थी। उससे जजने पूछा, "अदालतमें बयान देनेके बारेमें किसीने तुम्हें सिखा-पढ़ाकर तो नहीं भेजा ?"

"जी हाँ," लड़का बोला।

विरोधी पक्षका वकील फड़क उठा, "मैं तो पहले ही जानता था, इसे जरूर सिखा-पढ़ाकर लाया गया है।"

जजने वकीलको चुप रहनेका हुक्म देकर लड़केसे फिर पूछा, "किसने सिखाया तुम्हें ?"

लड़का : "पिताजीने।"

वकील जजकी हिदायत भूलकर फिर बोल उठा,

"बिलकुल ठीक कह रहा है यह !"

जज : "क्या सिखाया है तुम्हें ?"

लड़का : "यह कि दूसरी तरफका वकील तुम्हें तरह-तरहसे परेशान करेगा, मगर तुम सच्ची-सच्ची बात ही कहना।"

पुरफ़न

मजिस्ट्रेट : "उसको जरा भी पता न लगा; तुमने उसके पाकिटसे नोट कैसे चुरा लिये ?"

अपराधी : "यह सारी क्रिया सिखानेके लिए मैं पाँच रुपये फ़ीस लेता हूँ।"

आग

जज : "तुम्हारा मालिक कहता है कि तुम पिये हुए थे और तुमने बिस्तरमें आग लगा दी।"

मुलज़िम : "झूठ है साहब, बिलकुल झूठ ! बिस्तरपर मैं सोने गया उससे पहले ही उसमें आग लग रही थी।"

इन्तज़ार

सज़ा पूरी होनेपर एक चोरको जेलरने छोड़ते वक़्त बड़ा उपदेश देकर कहा, 'जाओ, अब अपनी आदत सुधारकर रखना।' मगर क़ैदी खड़ा ही रह गया।

जेलर : "अब किस लिए खड़े हो ?"

क़ैदी : "अपने औज़ारोंके लिए !"

पूर्व आभास

वकील : "मरनेवाला गाड़ीसे कटा उस वक़्त उस मुक़ामसे तुम कितनी दूरपर थे ?"

गवाह : "चार फ़ीट २ इंचपर।"

वकील : "फ़ासला बिलकुल नाप रखा मालूम होता है, आपने।"

गवाह : "जी जनाब ! मुझे इतमीनान था कि इस क़िस्मका सवाल पूछनेवाला कोई अहमक़ जरूर मिलेगा।"

असर

प्रसूतिगृहोंके डॉक्टरोंकी परिषद थी। चर्चामें एकने कहा : "मेरा निजी अनुभव है कि गर्भावस्थामें स्त्रियाँ जो कुछ पढ़ती हैं उसका मनपर बड़ा असर पड़ता है। मेरी पत्नी 'हॅविन्ली ट्विन्स' पढ़ती थी। आप मानेंगे ?—उसने जुड़वाँ बच्चोंको जन्म दिया।"

"आपका कथन बहुत कुछ ठीक है," दूसरे डॉक्टरने कहा, 'मेरी पत्नी अपनी गर्भावस्थामें 'थ्री मस्केटियर्स' पढ़ती थी। और उसके तीन बालक अवतरे।"

"बापरे !" तीसरा डॉक्टर घबराकर पुकार उठा,

"मेरा क्या हाल होगा ?"

"क्यों, तुम्हारा क्या होगा ? ऐसा क्यूँ कहते हो ?"

"मैंने उसे 'अलीबाबा और चालीस चोर' वाली किताब लाकर पढ़ने को दी है।"

बिल टॉनिक

मरीज : "डॉक्टर साहब, मुझे कुछ ऐसी चीज दीजिए जिससे तेजी और तर्रारी आये—कोई ऐसी चीज जो मुझे लड़ाकूपनसे सरशार कर दे। क्या आपने ऐसी कोई चीज इस नुस्खेमें डाली है ?"

डॉक्टर : "नहीं वह तो तुम्हें बिलमें मिलेगी।"

पुर-दर्द

डॉक्टर : "दर्द कितनी बार उठता है ?"

मरीज : "पाँच-पाँच मिनिटपर।"

डॉक्टर : "और कितनी देर रहता है ?"

मरीज : "आध-आध घण्टे तक।"

डॉक्टर

●

यमराज-सहोदर

डॉक्टर : ‘‘पण्डितजी, आप यह किस आधारपर कहते हैं कि पुराने ज़मानेमें लोग सैकड़ों वर्ष जीते थे ?’’

पण्डितजी : ‘‘क्योंकि तब डाक्टर नहीं होते थे ।’’

शान्ति, शान्ति

महिला : ‘‘डॉक्टर, मुझे कुछ हरारत महसूस हो रही है ।’’

डॉक्टर (नब्ज़ देखकर) : ‘‘कोई ख़ास बात नहीं है । ज़रा आराम कीजिए, ठीक हो जायेंगी ।’’

महिला (असन्तुष्ट) : ‘‘मेरी ज़बान तो देखिए ।’’

डॉक्टर (ज़बान देखकर) : ‘‘इसे भी आरामकी ज़रूरत है ।’’

परेशानी

‘‘डॉक्टर साहब, डॉक्टर साहब, ज़रा जल्दी आइए । मेरा लड़ फ़ाउन्टेन पैन निगल गया है !’’

‘‘जनाब, इस वक़्त मैं ज़रा मशग़ूल हूँ ।’’

‘‘तो मैं तबतक क्या करूँ ?’’

‘‘मेरे आने तक आप पेन्सिलसे काम चलाइए ।’’

असर

प्रसूतिगृहोंके डॉक्टरोंकी परिषद थी। चर्चामें एकने कहा : "मेरा निजी अनुभव है कि गर्भावस्थामें स्त्रियाँ जो कुछ पढ़ती हैं उसका मनपर बड़ा असर पड़ता है। मेरी पत्नी 'हैविन्ली ट्विन्स' पढ़ती थी। आप मानेंगे ?—उसने जुड़वाँ बच्चोंको जन्म दिया।"

"आपका कथन बहुत कुछ ठीक है," दूसरे डॉक्टरने कहा, 'मेरी पत्नी अपनी गर्भावस्थामें 'थ्री मस्केटियर्स' पढ़ती थी। और उसके तीन बालक अवतरे।"

"बापरे !" तीसरा डॉक्टर घबराकर पुकार उठा,

"मेरा क्या हाल होगा ?"

"क्यों, तुम्हारा क्या होगा ? ऐसा क्यूँ कहते हो ?"

"मैंने उसे 'अलीबाबा और चालीस चोर' वाली किताब लाकर पढ़नेको दी है।"

बिल टॉनिक

मरीज : "डॉक्टर साहब, मुझे कुछ ऐसी चीज दीजिए जिससे तेजी और तर्रारी आये—कोई ऐसी चीज जो मुझे लड़ाकूपनसे सरशार कर दे। क्या आपने ऐसी कोई चीज इस नुस्खेमें डाली है ?"

डॉक्टर : "नहीं वह तो तुम्हें बिलमें मिलेगी।"

पुर-दर्द

डॉक्टर : "दर्द कितनी बार उठता है ?".

मरीज : "पाँच-पाँच मिनिटपर।"

डॉक्टर : "और कितनी देर रहता है ?"

मरीज : "आध-आध घण्टे "

ले मसीहा

मरीज़ : "डॉक्टर साहब ! बड़ा दर्द हो रहा है, सहा नहीं जाता, मरना चाहता हूँ !"

डॉक्टर : "तुमने अच्छा किया कि मुझे बुलवा लिया ।"

चलाचल

डॉक्टर : "भई, जरा दो चार मील घूमा करो, ठीक हो जाओगे। क्या काम करते हो ?"

मरीज़ : "जी, मैं डाकिया हूँ ।"

उपाय

एक महिला, एक डॉक्टरको अपनी बदनसीबी सुना रही थी,

"मेरे पति, जो कि एक वकील हैं, अक्सर मेरे साथ पार्टियोंमें जाने से इनकार कर देते हैं, क्योंकि लोग उनसे कानूनी मशवरे लेनेमें हमारी शाम ख़राब कर देते हैं । आपके साथ तो ऐसा नहीं होता ?"

डॉक्टर : "हमेशा होता है ।"

महिला : "तो फिर आप उन लोगोंसे अपना पिण्ड कैसे छुड़ाते हैं ?"

डॉक्टर (हँसते हुए) : "इसका मेरे पास रामबाण इलाज है । जब कोई मुझे अपने रोग सुनाने लगता है, तो मैं सिर्फ़ दो लफ्ज़—'कपड़े उतारो ।'—कहकर उसे खामोश कर देता हूँ ।"

शान्ति

डॉक्टर : "लीजिए ये नींदकी गोलियाँ, इनसे आपके पतिको पूर्ण शान्ति मिल जायेगी ।"

पत्नी : "यह उन्हें कब दूँ ?"

डॉक्टर : "उन्हें नहीं देना है, आपको लेना है ।"

हाले-दिल

डॉक्टर . . . .
नर्स : . . . .

याददाश्तकी कमज़ोरी

"अपनी याददाश्तकी कमज़ोरीके लिए मैं आज डॉक्टरसे मिल आया।"
"क्या किया उसने ?"
"दवाके पैसे पहले ले लिये।"

दो-चार

एक आदमीकी आँखोंमें ऐसा रोग था कि एक चीज़की दो दिखती थीं। वह डॉक्टरके पास गया। डॉक्टरने कहा, "फ़िक्रकी कोई बात नहीं है। यह कोई लाइलाज मर्ज नहीं है। लेकिन क्या तुम चारोंको एक ही रोग है ?"

(डॉक्टरको एक चीज़की चार दीखती थीं।)

हार्ट-फ़ेल

एक लाख रुपये जीते मगर स्मिथ साहबका दिल कमज़ोर था, इस लिए उनके फ़ैमिली डॉक्टर-द्वारा यह खबर पहुँचाना तय हुआ।

डॉक्टर : "कोई खास खबर ?"

स्मिथ : "खास तो कुछ नहीं।"

डॉक्टर : "मुझे ससुरालसे एक लाख रुपये मिलनेवाले हैं, पर सोच नहीं पा रहा कि इतनी बड़ी रकम किस तरह खर्च करूँ ? तुम ... तो क्या करते ?"

स्मिथ : "आधी तुम्हें दे देता।"

सुनते ही डॉक्टर साहबका

वह काटा !

डॉक्टर साहबने ऊँघ लेना शुरू किया ही था कि किसीने जोरसे दरवाजा खटखटाया। उन्होंने दरवाजेपर आकर उससे पूछा, "क्या है ?"

"मुझे कुत्तेने काट खाया है !"

"पर क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मेरे मिलनेका समय बारहसे तीन है ?"

"मालूम है; लेकिन कुत्तेको मालूम नहीं था। उसने मुझे चार-बीस पर काटा।"

खड्गासन

दांतका डॉक्टर : "यह हाथ नचकाना और मुँह बिचकाना बन्द करो, अभी तो मैंने तुम्हारे दांतको छुआ भी नहीं है।"

रोगी : "छुआ तो नहीं है, पर आप मेरे पैरकी अँगुलियोंपर खड़े हुए हैं।"

चकनाचूर

आगन्तुक : "वैद्यजी ! जल्दी चलिए ! मेरा भाई........"

कुलवैद्य (खफ़ा होकर) : "तुम लोग खानेमें बड़ी बदपरहेज़ी करते हो ! बाज़ारकी रद्दी-सद्दी चीज़ोंसे पेट बिगाड़ते रहते हो; और बीमार पड़कर वैद्यके पास दौड़े आते हो। मैंने हजार बार कहा है कि सब रोगोंका मूल कारण अजीर्ण है। फिर भी तुम लोग समझते नहीं और क़ाबिज़ चीज़ें भखते ही रहते हो। बोलो क्या हुआ है अब तुम्हारे भाईको ?"

"नसैनीसे गिर गया है।"

ख़ुदा ख़ैर करे !

राजवैद्य : "तुम क्या समझते हो, मैं बादशाहका वैद्य हूँ ?"

जनमन : "गाड सेव दी किंग ?"

क़ब्ज़से पहले

मरीज़ "डॉक्टर साहब, मेरी कमरमें कभी-कभी एकाएक सख़्त दर्द होने लगता है।"

डॉक्टर. "लीजिए दो गोलियाँ दर्द उठनेसे आधा घण्टा पहले पानीके साथ ले लिया कीजिए।"

विस्मरण

रोगी : "क्या कहूँ डॉक्टर साहब, मेरा हाफ़ज़ा हद दर्जे कमज़ोर हो गया है! इस बातको यादसे मैं क़रीबुल-मौत हो जाता हूँ।"

डॉक्टर. "तो आप पहले इस बातको भूलनेकी ही कोशिश करें।"

परेशानी

मरीज़ा : "डॉक्टर, मैं आँखोंके मारे बड़ी परेशान हूँ।"

डॉक्टर : "गनीमत समझिए देवीजी! आप उनके बग़ैर और भी परेशान होंगी।"

ले लिया

डॉक्टर : "आज कैसे हो?"

मरीज़ : "बिलकुल ठीक, शुक्रिया।"

डॉक्टर : "टेम्परेचर तो नहीं है?"

मरीज़ : "वह तो नर्सने ले लिया।"

चुम्बन

डॉक्टर : "चुम्बन तन्दुरुस्तीके लिए नुकसानदेह है।"

मरीज़ : "जी हाँ! पिछले हफ्ते मैंने एकको चूमा तो टूटी हुई हड्डियाँ-पसलियाँ लेकर घर लौटा!"

वह काटा !

डॉक्टर साहबने ऊँघ लेना शुरू किया ही था कि किसीने ज़ोरसे दरवाज़ा खटखटाया। उन्होंने दरवाज़ेपर आकर उससे पूछा, "क्या है ?"

"मुझे कुत्तेने काट खाया है !"

"पर क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मेरे मिलनेका समय बारहसे तीन है ?"

"मालूम है; लेकिन कुत्तेको मालूम नहीं था। उसने मुझे चार-बीस पर काटा।"

खड्गासन

दाँतका डॉक्टर : "यह हाथ नचकाना और मुँह बिचकाना बन्द करो, अभी तो मैंने तुम्हारे दाँतको छुआ भी नहीं है।"

रोगी : "छुआ तो नहीं है, पर आप मेरे पैरकी अँगुलियोंपर खड़े हुए हैं।"

चकनाचूर

आगन्तुक : "वैद्यजी ! जल्दी चलिए ! मेरा भाई........"

कुलवैद्य (ख़फ़ा होकर) : "तुम लोग खानेमें बड़ी बदपरहेज़ी करते हो ! बाज़ारकी रद्दी-सद्दी चीज़ोंसे पेट बिगाड़ते रहते हो; और बीमार पड़कर वैद्यके पास दौड़े आते हो। मैंने हज़ार बार कहा है कि सब रोगोंका मूल कारण अजीर्ण है। फिर भी तुम लोग समझते नहीं और क़ाबिज़ चीजें भखते ही रहते हो। बोलो क्या हुआ है अब तुम्हारे भाईको ?"

"नसैनीसे गिर गया है।"

ख़ुदा ख़ैर करे

राजवैद्य : "तुम क्या समझते ?"

जनमन : "गाड से"

वैद्योंके दुश्मन

वैद्यराज : "इस दुनियामें वैद्योंके दुश्मन बहुत कम हैं।"
रोगी : "मगर उस दुनियामें बहुत हैं!"

निदान

टेलीग्राफ़ीका आविष्कार करनेवाले सेमुअल मोर्स पहले एक चित्रकार थे। एक बार उन्होंने मृत्यु-शय्यापर पड़े एक व्यक्तिका चित्र बनाकर अपने मित्र, एक डॉक्टरसे पूछा, "कहिए, आपकी क्या राय है?"

डॉक्टरने चश्मा उतारकर अच्छी तरह उस चित्रको देखा, और फिर कहा, "मलेरिया!"

तीमारदार

एक लड़केके पैरमें चोट आ गयी। डॉक्टरने पुलटिस बतायी। पहले माँने कोशिश की; मगर लड़का ज़रा ढिगड़ैल था। गरम-गरम लगाने ही नहीं देता था। तब उसके पिताजी आये। उन्होंने झिड़की दी कि अगर पूरी तरह सिकाई हो जानेसे पहले बोला तो मार पड़ेगी। उन्होंने पुलटिस रखना शुरू कर दिया। सिकाईके दौरानमें लड़केने कई बार बोलनेकी कोशिश की, मगर उसे डाँटकर फ़ौरन् खामोश कर दिया गया। जब भरपूर सिकाई हो चुकी, तब उसे बोलनेकी इजाज़त मिली। लड़का बोला, "लेकिन पिताजी, आपने दूसरे पैरपर पुलटिस लगायी है।"

एक ही इलाज

सेठ : "कभी मुझे आलस्य आता है; कभी चक्कर आते हैं; कभी एक के दो दीखते हैं।"

डॉक्टर : "दवा लेनेके बजाय अपनी गिन्नियाँ गिनने बैठ जाया करो, मैं सब शिकायतें रफ़ा हो जायेंगी।"

दीर्घ जीवन

"आपने इतनी लम्बी उम्र कैसे पायी ?"

"मेरा किसी डॉक्टरसे परिचय नहीं था।"

डॉक्टरी नाम

"डॉक्टर साहब, मुझे क्या तकलीफ़ है बताइए तो ?"

"कुछ नहीं है, सिर्फ़ आलस आता है।"

"तो इसका भारी-भरकम डॉक्टरी नाम कहिए ताकि मैं अपनी छुट्टी की अर्ज़ीमें लिख सकूँ।"

यमराज-सहोदर

मरीज़ने बड़ी सरगरमीसे डॉक्टरसे हाथ मिलाया। आभारपूर्ण लहजेमें बोला, "हम दोनों अर्सेसे दोस्त रहे हैं। तुम्हें कुछ फ़ीस देना तुम्हारा अपमान करना है। पर मैंने अपने वसीयतनामेमें तुम्हें याद रखा है। बस मैं यही बताना चाहता था।"

डॉक्टर : "धन्य हो ! बड़ी महरबानी ! जरा वह नुस्खा तो बताना जल्दी जो मैंने तुम्हें अभी लिखकर दिया है। उसमें ज़रा-सी तब्दीली करनी है।"

खतरये-जान

एक विनोदी लेखकके सरमें एकाएक सख्त दर्द होने लगा। उसने अपने डॉक्टर मित्रसे दवाकी गोली ली। गपशपके दौरानमें डाक्टरने कहा,

"आजकल क़स्बेमें एक आदमी रोज़ मर रहा है।" लेखकने गोली सटकते हुए कहा, "मगर यार, यह तो बताओ कि आजका आदमी अभी मरा है, या नहीं !"

वैद्योंके दुश्मन

वैद्यराज : "इस दुनियामें वैद्योंके दुश्मन बहुत कम हैं।"
रोगी : "मगर उस दुनियामें बहुत हैं!"

निदान

टेलीग्राफ़ीका आविष्कार करनेवाले सेमुअल मोर्स पहले एक चित्रकार थे। एक बार उन्होंने मृत्यु-शय्यापर पड़े एक व्यक्तिका चित्र बनाकर अपने मित्र, एक डॉक्टरसे पूछा, "कहिए, आपकी क्या राय है?"

डॉक्टरने चश्मा उतारकर अच्छी तरह उस चित्रको देखा, और फिर कहा, "मलेरिया!"

तीमारदार

एक लड़केके पैरमें चोट आ गयी। डॉक्टरने पुलटिस बतायी। पहले माँने कोशिश की; मगर लड़का जरा बिगड़ैल था। गरम-गरम लगाने ही नहीं देता था। तब उसके पिताजी आये। उन्होंने झिड़की दी कि अगर पूरी तरह सिकाई हो जानेसे पहले बोला तो मार पड़ेगी। उन्होंने पुलटिस रखना शुरू कर दिया। सिकाईके दौरानमें लड़केने कई बार बोलनेकी कोशिश की, मगर उसे डॉटकर फ़ौरन् खामोश कर दिया गया। जब भरपूर सिकाई हो चुकी, तब उसे बोलनेकी इजाज़त मिली। लड़का बोला, "लेकिन पिताजी, आपने दूसरे पैरपर पुलटिस लगायी है।"

एक ही इलाज

सेठ : "कभी मुझे आलस आता है; कभी चक्कर आते हैं; कभी एक के दो दीसते हैं।"

डॉक्टर : "दवा लेनेके बजाय अपनी गिन्नियाँ गिनने बैठ जाया करो, ये सब शिकायतें रफ़ा हो जायेंगी।"

चालीस

डॉक्टर : "चालीस सालकी उम्रके बाद आदमी या तो अपना डॉक्टर है या मूर्ख है।"

दार्शनिक : "क्या वह दोनों नहीं हो सकता ?"

चुभीली

गृहिणी (फ़ोनपर) : "डॉक्टरको फ़ौरन भेज दो। मेरी लड़की सुई निगल गयी है।"

नर्स : "डॉक्टर साहब काममें लगे हुए हैं। तुम्हें सुईकी बहुत ज़रूरत है क्या ?"

निमन्त्रण

एक डॉक्टर साहब थे। उनका खत अच्छा नहीं था। एक दिन उन्होंने अपने मरीज़को ख़त लिखा, जिसमें उसे अपने यहाँ जलसेमें शरीक होने बुलाया था। मगर मरीज़ नहीं आया।

अगले दिन डॉक्टरने मरीज़से पूछा, "मेरा खत आपको मिला था ?"

मरीज़ : "हाँ जी, उसे कैमिस्टके यहाँ भेजकर मैंने तभी दवा मँगा ली। अब तो काफ़ी फ़ायदा मालूम होता है।"

मुँहपर रौनक़

डॉक्टर : कमरेमें आये मरीज़को देखकर मुसकराये। बोले, "आज तो आप बहुत अच्छे मालूम देते हैं !"

मरीज़ : "हाँ मैंने आपकी दवाकी शीशीकी हिदायतका पालन किया था।"

डॉक्टर : "हिदायत क्या थी ?"

मरीज़ : "शीशीकी डाट कसी हुई रखना।"

बीनाई

एक आदमी किसी वैद्यको अपनी आँखें दिखाने गया। वैद्यजीने बहुत कुछ देखा मगर उसकी आँखमें कोई दोष नज़र न आया। बोले, "तुम्हारी आँखें तो बिलकुल ठीक हैं और तुम कहते हो कि......"

आदमी बीचमें बोला, "पर उस खूँटीकी टोपी आपको दिखती है न? पर वह मुझे नहीं दिखती।"

अन्तर-दर्शन

"मेरे पति रातको बर्राते हैं। कोई तदबीर बताइए न?"

"लो यह फंकी सोते वक़्त ठण्डे पानीके साथ दे देना। नहीं बर्रायेंगे।"

"इसके बजाय कोई ऐसी दवा दीजिए न डाक्टर कि वे ज़रा साफ़ शब्दोंमें बर्रायें!"

चट्टे-बट्टे

एक नीम-हकीम अपनी 'दीर्घजीवनी' नामक दवाकी तारीफ़ करते हुए बोला, "......मुझे देखिए, हृष्ट-पुष्ट हूँ। उम्र मेरी २०० बरसमे ज़्यादा की है।"

एक श्रोताने उसके साथीसे पूछा,

"इसकी उम्र क्या सचमुच इतनी है?"

"क्या मालूम! मैं तो इसके साथ सिर्फ़ २०० बरससे हूँ।"

हाथ-कंगन

मरीज़ : "मगर डॉक्टर साहब, मेरे केसमें और सब डॉक्टरोंकी राय आपसे भिन्न है।"

डॉक्टर : "मैं जानता हूँ मगर ज़रा धीरज रखिए। पोस्ट-मार्टम साबित कर देगा कि मैं सच कहता था।"

चालीस

डॉक्टर : "चालीस सालकी उम्रके बाद आदमी या तो अपना डॉक्टर है या मूर्ख है।"

दार्शनिक : "क्या वह दोनों नहीं हो सकता ?"

चुभीली

गृहिणी (फ़ोनपर) : "डॉक्टरको फ़ौरन भेज दो। मेरी लड़की सुई निगल गयी है।"

नर्स : "डॉक्टर साहब काममें लगे हुए हैं। तुम्हें सुईकी बहुत ज़रूरत है क्या ?"

निमन्त्रण

एक डॉक्टर साहब थे। उनका खत अच्छा नहीं था। एक दिन उन्होंने अपने मरीज़को ख़त लिखा, जिसमें उसे अपने यहाँ जलसेमें शरीक होने बुलाया था। मगर मरीज़ नहीं आया।

अगले दिन डॉक्टरने मरीज़से पूछा, "मेरा खत आपको मिला था ?"

मरीज़ : "हाँ जी, उसे कैमिस्टके यहाँ भेजकर मैंने तभी दवा मँगा ली। अब तो काफ़ी फ़ायदा मालूम होता है।"

मुँहपर रौनक़

डॉक्टर : कमरेमें आये मरीज़को देखकर मुसकराये। बोले, "आज तो आप बहुत अच्छे मालूम देते हैं !"

मरीज़ : "हाँ मैंने आपको दवाकी शीशीकी हिदायतका पालन किया था।"

डॉक्टर : "हिदायत क्या थी ?"

मरीज़ : "शीशीकी डाट कसी हुई रखना।"

बीनाई

एक आदमी किसी वैद्यको अपनी आँखें दिखाने गया। वैद्यजीने बहुत कुछ देखा मगर उसकी आँखमें कोई दोष नज़र न आया। बोले, "तुम्हारी आँखें तो बिलकुल ठीक हैं और तुम कहते हो कि........"

आदमी बीचमें बोला, "पर उस खूँटीकी टोपी आपको दिखती है न ? पर वह मुझे नहीं दिखती।"

अन्तर-दर्शन

"मेरे पति रातको बर्राते हैं। कोई तदबीर बताइए न ?"

"लो यह फंकी सोते वक़्त ठण्डे पानीके साथ दे देना। नहीं बर्रायेंगे।"

"इसके बजाय कोई ऐसी दवा दीजिए न डाक्टर कि वे ज़रा साफ़ शब्दोंमें बर्रायें !"

चट्टे-बट्टे

एक नीम-हकीम अपनी 'दीर्घजीवनी' नामक दवाकी तारीफ़ करते हुए बोला, "......मुझे देखिए, हृष्ट-पुष्ट हूँ। उम्र मेरी ३०० बरससे ज़्यादा की है।"

एक श्रोताने उसके साथीसे पूछा,

"इसकी उम्र क्या सचमुच इतनी है ?"

"क्या मालूम ! मैं तो इसके साथ सिर्फ़ २०० बरससे हूँ।"

हाथ-कंगन

मरीज़ : "मगर डॉक्टर साहब, मेरे केसमें और सब डॉक्टरोंके मत आपसे भिन्न हैं।"

डॉक्टर : "मैं

पोस्ट-मार्टम

मौर्फ़िया

प्रोफ़ेसर : "इंजेक्शनके लिए कितने मौर्फ़ियाकी जरूरत होती है ?"

विद्यार्थी : "आठ ग्रामकी।"

प्रोफ़ेसरने सिर हिलाकर दूसरे विद्यार्थीसे पूछा,···तो पहला विद्यार्थी सोचकर बोला,

"साहब, भूल हो गयी एक बटे आठ ग्राम।"

प्रोफ़ेसर : "तुम्हारा मरीज़ तो कभीका मर गया।"

फ़ैमिली डॉक्टर

डॉक्टर : "लेकिन मैम साहिबा, मुझसे मशवरा लेनेसे कोई फ़ायदा नहीं, मैं आपके हसबैण्डका केस नहीं ले सकता।"

मैम : "मगर क्यों नहीं ले सकते ?"

डॉक्टर : "मेरा साइनबोर्ड देखिए, मैं तो घोड़ा-डॉक्टर हूँ।"

मैम : "यही जानकर तो मैं आपके पास आयी हूँ। मेरा खाविंद बड़ा लतख़ना हो गया है।"

ढक्कन

डॉक्टरने दवाकी कुछ गोलियाँ काग़ज़के एक छोटे-से डब्बे-में बन्द कीं और मरीज़से कहा, लीजिए, इन्हें खा लेना। तबीयत ठीक हो जायेगी।"

"अगले दिन मरीजने आकर शिकायत की कि उसे कोई फ़ायदा नहीं हुआ।"

डॉक्टर : "तुमने दवा खायी थी ?"

मरीज़ : "ज़रूर, सारी डब्बी निगल गया था।"

डॉक्टर : "मन-ही-मन कुछ सोचकर मुसकरा कर बोले, 'तो फिर इतने उतावले क्यों होते हो ? ज़रा धीरज रखो अन्दर डब्बीका ढक्कन तो खुलने दो।"

सद्‌गति

एक डॉक्टर साहबको अपनी डॉक्टरी रायके साथ कुछ आध्यात्मिक उपदेश भी दे देनेकी आदत थी। जब एक युवकका इलाज पूरा होने आया तो उन्होंने उससे पूछा,

"अच्छा, यह बताओ वत्स, कि स्वर्ग पानेके लिए हमें क्या करना चाहिए?"

"मरना चाहिए।"

"हाँ, हाँ, लेकिन मरनेसे पहले क्या करना चाहिए?"

"आपको बुलाना चाहिए," लड़का बोला।

अनिद्रा

एक रोगीने सुबहके तीन बजे फ़ोन किया,

"**डॉक्टर**, मुझे नींद नहीं आती।"

डॉक्टर (चिढ़कर) : "ठहरो, मैं अभी लोरी गाता हूँ।"

जोश

रोगी : "डॉक्टर साहब, मुझे ऐसा नुस्खा लिख दीजिए, जिससे खूनमें गरमी पैदा हो।"

डॉक्टर : "अच्छा, अब मैं अपनी फ़ीसका 'बिल' भेज दूँगा।"

निद्रानिद्रा

"क्या आपने अपने अनिद्रा रोगके लिए भेड़ें गिननेकी सरल तदबीर आज़मायी?"

"हाँ डॉक्टर, मैंने दस हज़ार भेड़ें गिनीं, उन्हें गाड़ीमें सवार कराया और बाज़ार भिजवाया। मगर उनकी बिक्रीके पैसे गिन भी न पाया था कि जागनेका समय हो गया।"

शान्ति

एक लड़केको शहदकी मक्खीने नाकपर काट खाया। शीघ्र ही उसके नथुने फूल गये, आँखें लगभग बन्द हो गयीं, साँस लेनेमें कठिनाई होने लगी। व्याकुल होकर उसकी माँने डॉक्टरको फ़ोन किया। डॉक्टर बोला,

"गुनगुने सोडावाटरसे उसकी नाक सेंको, जल्दी ही अच्छा हो जायेगा।"

माँ घबराती हुई बोली, "और कुछ करूँ डॉक्टर?" उसे बड़ी तकलीफ़ हो रही है। एस्प्रिन दे दूँ?"

डॉक्टर : "हाँ, एस्प्रिन शान्ति दे सकती है। उसे एक गोली दे दो—और दो तुम ले लो।"

स्मृति

सेठ : "डॉक्टर, कोई अच्छी-सी दवा दीजिए। मैं आजकल हर बात भूलने लगा हूँ।"

डॉक्टर : "तो फ़ीस आप पहले दे दीजिए।"

यह लीजिए !

वैद्य : "आपके शरीरमें कोई स्थानीय विकार है। आपके कुछ दाँत निकालना ज़रूरी हो सकता है।"

मरीज़ (पंक्तियाँ निकालकर) : "यह लीजिए सब, डॉक्टर साहब।"

मुश्किल

डॉक्टर : "खबरदार ! अपने पतिको पीनेके लिए गरम पानीके सिवाय कुछ मत देना; वरना वह मर जायेंगे !!"

बीमारकी स्त्री : "मगर, मुश्किल तो यह है कि उन्हें मैं गरम पानी दूँगी तो वह मुझे मार डालेंगे !"

कमीशनका हक़दार

"डॉक्टर साहब, मैंने सुना है कि आप मरीज़ लानेवालोंको कमीशन देते हैं।"

"हाँ देता तो हूँ। क्या तुम भी कोई मरीज़ लाये हो?"

"जी हाँ!"

"कहाँ है?"

"मैं ही हूँ।"

काला अक्षर

"डॉक्टर, चश्मेसे मैं पढ़ सकूँगा न?"

"ज़रूर।"

"फिर तो कमाल ही हो जायेगा। मैं पहले कभी पढ़ ही नहीं सकता था।"

परहेज़

डॉक्टर : "कहिए श्रीमतीजी, आपके पति अच्छे हैं? परहेज़ रखते हैं न?"

श्रीमती : "नहीं, वह कहते हैं कि चार दिन और ज़िन्दा रहनेकी खातिर मैं भूखों मरना नहीं चाहता।"

बिलकी अदायगी

मरीज़ : "डॉक्टर साहब, आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहिए। आपने मेरी जान बचा दी।"

डॉक्टर (विनयसे) : "नहीं, नहीं। कर्ता-धर्ता तो ईश्वर ही है। उसीने तुम्हारी रक्षा की।"

मरीज़ : "तब तो आपकी दवाका बिल मैं ईश्वरको ही चुकाऊँगा।"

अहो प्रेम !

"वह आ रही है वह स्त्री जिसे मैं प्रेम करता हूँ ।"

"उससे शादी क्यों नहीं कर लेते ?"

"मेरी हैसियतसे बाहर है, वह मेरी बहतरीन मरीजा है ।"

पशु-चिकित्सक

पशुचिकित्सक : "इस गायको रोज दो चम्मच यह दवा देना ।"

किसान : "लेकिन हमारी गाय चम्मचसे नहीं खाती, नांदसे खाती है ।"

सर्दी

"क्या आपको सर्दी हो गयी है ?"

"हाँ ।"

"कैसी बुरी बात है कि आपको निमोनिया नहीं हुआ । डॉक्टर उसका तो उपाय जानते हैं ।"

कड़वी दवा

मरीज : "डॉक्टर साहब ! ऐसी कड़वी दवा, फ़ीका और बदमजा खाना मुझे कबतक खाना पड़ेगा ?"

डॉक्टर : "मेरा बिल नहीं चुका दोगे तबतक ।"

शर्तिया इलाज

पति : "डॉक्टर, मेरी पत्नी अच्छी हो जायेगी न ?"

डॉक्टर : "ज़रूर ! मैंने उनसे कह दिया है कि अगर आप अच्छी नहीं होंगी तो मैंने आपके पतिदेवके लिए दूसरी पत्नी तलाश कर रखी है । अब कहीं यह मुमकिन है कि वे अच्छी न हों ?"

कमसखुन

एक डॉक्टर साहब बड़े अल्पभाषी थे। एक रोज उनके यहाँ एक समानशील महिला आयी। ये बातें हुईं।

"जली ?"

"छिली।"

"पुल्टिस।"

अगले दिन वह फिर आयी।

"बदतर ?"

"बदतर।"

"और पुल्टिस।"

दो दिन बाद वह फिर आयी।

"बहतर ?"

"अच्छी, फ़ीस ?"

"कुछ नहीं," डॉक्टर बोले, "तुमसे ज्यादा समझदार तो स्त्री नहीं देखी मैंने !"

विशुद्ध जिन्दगी

"आपकी तन्दुरुस्ती इतनी अच्छी कैसे रहती है ?"

"मैं तम्बाकू नहीं पीता, मैं शराब नहीं पीता; मैं रातको देर तक नहीं जागता। मैं विशुद्ध जिन्दगीमें विश्वास करता हूँ।"

"यह विशुद्ध भले ही, मगर मैं इसे ज़िन्दगी नहीं कहता।"

सीधा इलाज

मरीज़ : "डॉक्टर साहब, सुबह जब मैं बिस्तरसे उठता हूँ तो आध घण्टे तक मुझे चक्कर आते रहते हैं।"

डॉक्टर : "तो आप आध घण्टे बाद ही बिस्तरसे उठा करें।"

टैम्परेचर

एक देवीजी (थर्मामीटर ग़लत पढ़कर) : "डॉक्टर साहब ! कृपया फ़ौरन आइए। मेरे पतिका टैम्परेचर १२० है !"

डॉक्टर (शान्तिपूर्वक) : "अगर ऐसा है तो अब मेरा काम नहीं, फ़ायर डिपार्टमेण्टको फ़ोन कीजिए।"

क़ुदरती मौत

एक डॉक्टरके दवाखानेमें बहुतसे रोगी इन्तज़ार कर रहे थे। कुछ बैठे हुए थे, कुछ खड़े हुए। इन्तज़ार, इन्तज़ारका आलम तारी था। आखिर एक बूढ़ा उकता कर उठा और चलते हुए बोला, "इससे तो बहतर है कि घर जाकर क़ुदरती मौत मरूँ।"

भूल न जाइएगा

डॉक्टर : "तुम्हारे बचनेकी मुझे कोई उम्मीद नहीं थी। अपने जिस्म की मज़बूत गठनकी ही बदौलत तुम बच गये !"

मरीज़ : "तो डॉक्टर साहब, बिल बनाते वक़्त इस बातको भूल न जाइएगा।"

ख़ुशख़त

एक महिलाने अपने डॉक्टरको निमन्त्रण भेजा। डॉक्टरका जवाब इस क़दर घसीट लिखा हुआ था कि पढ़ा ही नहीं जा रहा था। उसकी सहेली ने राय दी कि इसे किसी दवा-फ़रोशके पास भेज दो, वह ज़रूर आसानी से पढ़ देगा।

दवाफ़रोशने पुरज़ेपर एक सरसरी नज़र डाली और दवाखानेके पिछले भागमें दाखिल हो गया। चन्द मिनिट बाद एक शीशी थमाते हुए बोला, "यह लीजिए ! दो रुपये छह आने।"

लाइलाज

एक शख्सकी आँखें बाहर निकलती आ रही थी और कानोंमें भन्नाहट ती थी। वह एक डॉक्टरके पास गया। डॉक्टरने टॉनसिलका ऑपरेशन रानेकी सलाह दी। ऑपरेशन हो गया, पर कोई फ़ायदा न हुआ। सरे डॉक्टरके पास गया। उसने राय दी कि सब दाँत निकलवा डालो। फर भी शिकायत बदस्तूर रही। तीसरे डॉक्टरसे मशवरा लिया। ह बोला,

"आप लाइलाज हैं। छह महीनेमें खत्म हो जायेंगे।"

रोगीने सोचा, क्यूँ न छह महीने तक ऐशके साथ जिया जाये। उसने गला लिया, कार ली, नये सूट सिलवानेके लिए दर्ज़ीके यहाँ हुँचा। र्ज़ीने कमीज़के नाप अपने सहायकको लिखाने शुरू किये, "बाँहें चौंतीस कालर सोलह—"

"सोलह नहीं, पन्द्रह।"

"जी नहीं, सोलह ही है।"

"लेकिन मैं कालर पन्द्रह रखवाता आया हूँ, वही अब रखवाना चाहता हूँ।"

"अच्छी बात है। मगर फिर न कहना कि मैंने आपको आगाह नहीं किया था। कालर पन्द्रह रखेंगे तो आपकी आँखें निकलती आयेंगी और आपके कान भन्नाया करेंगे।"

ऑपरेशन

डॉक्टर : "अगर मैं तुम्हारे लिए ऑपरेशन ज़रूरी समझूँ तो क्या तुम उसकी फ़ीस दे सकोगे?"

मरीज़ : "अगर मैं फ़ीस न दे सकूँ तो क्या ऑपरेशनको ज़रूरी समझेंगे?"

जब मैं इलाज करता हूँ

रोगी : "लेकिन, डॉक्टर साहब, क्या मैं अच्छा हो जाऊँगा ? मैंने सुना है कि ग़लत निदानके कारण डॉक्टर निमोनियाका इलाज करता रह जाता है और रोगी टायफ़ॉइडसे मर जाता है।"

डॉक्टर (गर्वसे) : "मगर मेरे इलाजमें निमोनियाका रोगी निमोनियासे ही मरता है।"

यमराज-सहोदर

डॉक्टर : "पण्डितजी, आप यह किस आधारपर कहते हैं कि पुराने ज़मानेमें लोग सैकड़ों वर्ष जीते थे ?"

पण्डितजी : "क्यों कि तब डॉक्टर नहीं होते थे।"

कुछ तो सोच-समझकर बात करो !

डॉक्टर (एक बेहोश मरीज़को देखकर) : "यह तो मर गया है।"

मरीज़ (होशमें आकर) : "मैं तो जीवित हूँ।"

सुनकर मरीज़की स्त्री पतिसे बोली, "कुछ तो सोच-समझकर बात करो ! इतने बड़े डॉक्टर हैं, झूठ बोलेंगे क्या ?"

फिर आ गया

"मेरी तबीयत ठीक नहीं है आज।"

"डॉक्टर भटनागरके पास क्यों नहीं चला जाता ?"

"फ़ीस तो ज़्यादा नहीं है उसकी ?"

"अरे, पहले रोज़की दस रुपये हैं, उसके बाद तो सिर्फ़ एक रुपया रोज़।"

तबीयत नासाज़वाले साहब डॉक्टरके यहाँ यह फ़र्माते हुए जा पहुँचे कि, "लीजिए डॉक्टर साहब, मैं फिर आ गया।"

महीनों आगे

"क्या आपके पतिने वह दवा ली ? खानेसे पहले एक गोली और खानेके बाद कुछ ह्विस्की ?"

"गोलियोंमें वे कुछ पिछड गये होंगे; मगर ह्विस्कीमें तो महीनों आगे निकल चुके हैं।"

मतैक्य

"मेरी बीमारीमें तीन डॉक्टर मुझे देखने आये। लेकिन तीनोंकी मेरे बारेमें अजीब रायें थीं।"

"किसी बातमें उनकी एक राय थी या नहीं ?"

"थी, तीनों अपनी-अपनी 'विजिटिंगफी' छह-छह रुपये मांग रहे थे।"

बचनेकी सम्भावना

"सचसच बताइए डॉक्टर साहब, मेरे बचनेकी कितनी सम्भावना है।"

"सौ फ़ीसदी ! आँकडे बताते हैं कि इस रोगमें दसमें नौ आदमी मरते हैं—और मेरे दस मरीजोंमें-से नौ मर चुके हैं। तुम दसवें हो !"

पहला मरीज

एक डॉक्टरके छोकरेके साथ खेलनेके लिए पड़ोसीका छोकरा आया। खेलते-खेलते दोनों डॉक्टरके ऑपरेशन-रूममें आये। वहाँ आदमीका कंकाल टँगा हुआ था।

"यह क्या है ?"

"मेरे पप्पाका पहला मरीज मालूम होता है।"

राजनीति

०

अविचारक

संवाददाता : "क्या आप कोई वक्तव्य देनेकी कृपा करेंगे ?"

मन्त्री : "मैं एक महत्त्वपूर्ण भाषण करने जा रहा हूँ। फ़िलहाल मेरे पास सोचनेके लिए वक़्त नहीं है।"

आयोजन

एक विदेशी यात्रीको दार्जिलिंगके पास हिमालयकी शोभा-श्री दिखलायी जा रही थी। "जी हाँ !" गाइड बोला, "इन महिमामय पहाड़ोंके बननेमें लाखों बरस लगे !"

"हूँ अँ अँ, सरकारी योजना मालूम देती है !" यात्री बोला।

पुरानी ख़बर

राजनीतिज्ञ : "क्या आपके पत्रने छापा था कि मैं झूठा और बदमाश हूँ ?"

सम्पादक : "नहीं।"

राजनीतिज्ञ : "इस नगरके किसी अखबारने ऐसा ज़रूर छापा है।"

सम्पादक : "सामनेकी इमारतवाला हमारा सहयोगी होगा। हम पुरानी ख़बर नहीं छापते।"

किसी करवट चैन नहीं

राजाजी : "डॉक्टर, इस कांग्रेस बजटसे विरोधी पक्षोंकी शक्ति बढ़ते देखकर मेरी तो नींद हराम हो गयी है।"

डॉक्टर : "लेकिन राजाजी, पहले आपको इस वजहसे नींद नहीं आती थी कि कांग्रेसका विरोध काफी नहीं हो रहा था।"

ठोस प्रमाण

महिला (एक राजनीतिज्ञसे किसी भोजमें) : "मैंने आपके बारेमें बहुत सुना है।"

राजनीतिज्ञ (ग़ैरहाज़िर-दिमाग़ीसे) : "हो सकता है, लेकिन आप उसे साबित नहीं कर सकतीं।"

वोट

"आपको वोट देनेकी बनिस्बत मैं शैतानको वोट देना पसन्द करूँगा!"

"लेकिन अगर आपके दोस्त उम्मेदवार न हों तो मैं आपके समर्थनकी आशा रखूँ!"

राजनीतिज्ञ

अध्यापक : "बताओ, श्रीकृष्ण इतने बड़े राजनीतिज्ञ क्यों थे?"

छात्रा : "क्योंकि वे सोलह हज़ार पटरानियोंकी रायसे काम करते थे।"

अवसर

एक नेता एक चुनाव-आन्दोलन-सभामें भाषण देते हुए कह रहे थे, "इस बार आप हमारी पार्टीको ही वोट दीजिए। हमारा विरोधी दल आपको काफ़ी धोखा दे चुका है, अब हमें भी अवसर दीजिए।"

डैमोक्रैसी

९ फ़रवरी १९५६ को शहीदनगरमें नेहरूजीने डैमोक्रैसीकी नयी परिभाषा की। उन्होंने कांग्रेसकी सब्जैक्ट्स कमेटीको बताया कि डैमोक्रैसी सदा सर्वोच्च सत्यका प्रतिनिधित्व नहीं करती। वह तो "मामूली लोगोंकी मामूली अक़्लका मामूली माप है।" (Common measure of the common intelligenc of the common people.)

चतुराई

अमेरिकाके एक सीनेटरने, एक छोटे राजनीतिज्ञ-द्वारा बहसके लिए ललकारे जानेपर, महज़ यह लतीफ़ा सुनाकर उसे ख़त्म कर दिया, एक गीदड़ने एक शेरको कुश्तीके लिए ललकारा। शेरने फ़ौरन् इनकार कर दिया।

गीदड़ बोला, "डरते हो ?"

"बहुत ज़्यादा, शेरने जवाब दिया, "क्योंकि तुझे शेरसे लड़नेकी वाह-वाही मिल जायेगी और मेरे बारेमें लोग कहने लगेंगे कि मैं गीदड़की संगति कर चुका हूँ।"

पृथ्वी

"एटम बमोंसे पृथ्वी नष्ट तो नहीं हो जायेगी ?"

"ध्वस्त हो भी गयी तो क्या है ? पृथ्वी कोई बड़ा ग्रह तो है नहीं !"

हिसाब साफ़

राजनीतिक वक्ता : "मैं जो कुछ हूँ इसके लिए अपनी माँका ऋणी हूँ।"

भीड़में-से एक आवाज : "तुम उसे आठ आने पैसे भेजकर हिसाब साफ़ क्यों नहीं कर लेते ?"

राजनीतिज्ञ

"वह तो बड़ा सस्ता राजनीतिज्ञ है ?"

"क्या कहें, देशको बड़ा महँगा पड़ा है।"

वाहुनर !

लघुकथा—शकरके दो लड़के हैं : एक तो राजनीतिमें है, और दूसरे का हाल भी शोचनीय ही है !

पैदावार

पाकिस्तान और भारतकी सरहदपर भारतकी तरफ़ रोज़ कूड़ा-कर्कट डाल दिया जाता।

एक दिन पाकिस्तानियोंने देखा कि इसके जवाबमें उनकी सीमामें रोटी, बिस्किट, मक्खन, मिठाई, दूधके डब्बे....बिखरे पड़े हैं। साथमें पर्चे भी, जिनमें लिखा था, "हर मुल्क अपनी बहतरीन पैदावार ही किसी मुल्कको भेजता है।"

अँग्रेज़ी

फ़्रांसीसी : "यह क्या बात है कि अँग्रेज़ी बेड़ा हमेशा विजयी होता है ?"

अँग्रेज़ : "क्योंकि हम लड़नेसे पहले प्रार्थना करते हैं।"

फ़्रांसीसी : "प्रार्थना तो हम भी करते हैं।"

अँग्रेज़ : "हाँ, लेकिन हम अँग्रेज़ीमें करते हैं।"

पार्टियाँ

"अमेरिकामें कितनी राजनीतिक पार्टियाँ हैं ?"

"तीन, डेमोक्रेटिक पार्टी, रिपब्लिकन पार्टी और कॉकटेल पार्टी।"

समयका भान

राजनीतिक प्रवक्ता (पूर्णाहुति करते हुए) : "माफ़ कीजिएगा, मैंने आपका बहुत वक़्त लिया, मेरी घड़ी नहीं थी इस वक़्त मेरे पास।"

एक आवाज़ : "लेकिन आपके पीछे कलेण्डर तो टँगा हुआ था।"

अँग्रेज

एक अँग्रेज (सगर्व) : अंग्रेज़ी साम्राज्यमें सूरज कभी नहीं छिपता !"

हिन्दुस्तानी : "हाँ, और वह इसलिए कि खुदा अँधेरेमें अँग्रेज़का यक़ीन नहीं करता !"

राजनीतिज्ञ

ईमानदार राजनीतिज्ञ : वह जो कि एक बार खरीद लिया गया, कि फिर खरीदा हुआ ही रहे।

दो राजनीतिज्ञ

दो राजनीतिज्ञोंमें बहस छिड़ गयी गरमा-गरम। एक उनमें बहुत ही मोटा था, दूसरा बहुत ही छोटा।

मोटा : "मैं तुझे निगल जाऊँ और पता भी न चले कि कोई चीज़ खायी है।"

छोटा : "तब तेरे मोटे सिरकी बनिस्बत तेरे पेटमें ज़्यादा अक़्ल हो जायेगी !"

फ्राँसका प्राइम-मिनिस्टर

फ्राँसकी पार्लमेण्टमें एक मेम्बर लम्बी बहस सुनते-सुनते सो गया। जब वह जगा तो उसके मित्रने बताया कि इतनी देरमें वह दो बार प्रधान मन्त्री बना दिया गया था।

शिकार

"आप इस चुनावमें हार कैसे गये ?"
"मैं शिकार हो गया।"
"काहेके शिकार हो गये ?"
"सही गिनतीका।"

घास

उम्मेदवार : "हमें गेहूँ अधिक उपजाना चाहिए और—"

भीड़में-से एक : "और घास ?"

उम्मेदवार : "इस वक़्त तो मैं इनसानी ख़ुराकका ज़िक्र कर रहा हूँ, लेकिन आपके विशिष्टाहारपर मैं अभी आता हूँ।"

पूर्वग्रहीत

स्त्री (राजनीतिक प्रचार सभामें जाते हुए) : "मैं क़तई पूर्वग्रहीत नहीं हूँ। मैं तो बिलकुल खुले और साफ़ दिलसे वह सुनने जा रही हूँ जिसके विषयमें मेरी दृढ़ मान्यता है कि विशुद्ध कूड़ा है।"

सुधार देंगे !

जिन्ना साहब एक बार लाहौरका पागलख़ाना देखने गये। भटकता हुआ एक पागल सामने आकर बोला, "कौन है तू ?"

जनाब जिन्ना : "मैं हूँ पाकिस्तानका गवर्नर जनरल मुहम्मद अली जिन्ना।"

पागल : "मैं जब यहाँ आया तो नेपोलियन बोनापार्ट था। पर कोई हर्ज नहीं; तुझे ये लोग सुधार देंगे।"

सिपाही

•

[illegible]

"[illegible] ?"

"[illegible] मुझे [illegible] ।"

मन्त्री

"अब तो वे युद्ध-मन्त्री बना दिये गये हैं ! मुझे विश्वास है कि अब युद्ध नहीं होगा ।"

"सो कैसे ?"

"जब वे खाद्य-मन्त्री थे तब खाद्य-सामग्री नहीं मिलती थी ।"

नम्बरवार

सार्जण्ट : "तुम्हारी शादी हो गयी है ?"

रंगरूट : "हाँ सार्जण्ट ।"

सार्जण्ट : कोई बच्चा है ?"

रंगरूट : "हाँ सार्जण्ट, पाँच लड़कियाँ और चार लड़के ।"

सार्जण्ट : "इकट्ठे नौ !"

रंगरूट : "नहीं सार्जण्ट—एक-एक करके ।"

हसीन वला

"तुम फ़ौजमें क्यों भरती हुए ?"

"मेरे बीबी है नहीं, और मैं लड़ाका मिज़ाजका हूँ, लेकिन तुम कैसे भरती हुए ?"

"इसलिए कि मेरे बीबी है और मैं शान्ति चाहता हूँ।"

मशाक़क़त

अफ़सर : "इतने दिनोंकी ट्रेनिंगमें तुमने क्या सीखा ?"

रंगरूट "यह कि सिपाही मरनेसे क्यों नहीं डरते ?"

सवा सयानी

गाइड (दर्शकोंसे) : "यह वह वास्कट है जिसे लॉर्ड नेल्सन ट्राफ़लगर के युद्धमें पहने हुए थे। और यह वह छेद है जिसमें-से गोली पार गयी थी।"

दाई (बच्चोंसे) : "इससे सबक़ लो, बच्चो ! अगर यह छेद सिलवा लिया होता तो नेल्सन साहब आज जिन्दा होते !"

चाँदमारी

एक सिपाही निशानेबाज़ीको मश्क कर रहा था। मगर उसकी कोई गोली निशानेपर नहीं बैठती थी।

अफ़सर : "तुम्हारी गोलियाँ आज ग़लत क्यों पड़ रही हैं ?"

सिपाही : "मालूम नहीं साहब, यहाँसे तो वे ठीक ही निकल रही हैं।"

सदुद्देश्य

सिपाही : "तुम चोरी क्यों करते हो ?"

चोर : "तुम्हारा और अपना पेट भरनेके लिए !"

शहीद

कमांडिंग ऑफ़ीसर : "तो तुम हो वह शख़्स जो सार्जेण्टके स्पेशल ड्यूटीके लिए वालिण्टियर माँगनेपर आगे आये ?"

"नहीं सरकार ! बाक़ीकी लाइन पीछे हट गयी ।"

क़ानून

पुलिसमैन : (एक मिस साहिबाने जो तालाबमें कूदने ही वाली थीं) "माफ़ कीजिएगा, यहाँ तैरना मना है ।"

मिस : "तो यह तुमने उसी वक़्त क्यों नहीं कह दिया जब मैं कपड़े उतार रही थी ?"

पुलिसमैन : "कपड़े उतारनेके ख़िलाफ़ कोई क़ानून नहीं है ।"

डेड ऐण्ड

एक कमाण्डर अपने सिपाहियोंको २० मील घुमाकर लाया। उन्हें डिसमिस करनेसे पहले उसने कहा, "जो एक और गश्तके लिए बिलकुल थक गये हों वे दो क़दम आगे आ जायें।"

सिवाय एक छह फुट लम्बे-तड़ंगे सिपाहीके सारी कम्पनी आगे आ गयी।

"रॉबर्ट, हो तैयार दस मील और चलनेके लिए?"

"नो सर," रॉबर्ट बोला, "मैं तो इतना थक गया हूँ कि ये दो क़दम भी न रख सका।"

शीन-काफ़

एक सिपाहीने अपने मैडलमें रिबन ज़रा ज़रूरतसे ज़्यादा लम्बी बाँध रखी थी। अफ़सरसे उसका सामना हो गया। वह सिपाहीपर नज़रें गाड़ कर बोला,

"क्यों जवान, यह तमगा तुम्हें भोजनभट्टतामें मिला था क्या?"

"नहीं साहब।"

"तो तुमने इसे पेटपर क्यों लगा रखा है?"

बनाया!

कर्नल : "तुम्हारे पिता क्या थे?"

कारपोरल : "किसान थे"

कर्नल : "अफ़सोस कि उन्होंने तुम्हें अपने धन्धेमें नहीं लगाया!"

कारपोरल : "आपके पिता क्या थे?"

कर्नल : "जेंटिलमेन थे।"

कारपोरल : "अफ़सोस कि उन्होंने तुम्हें वही न बनाया!"

मानव-स्वभाव

मुल्कभर में कहीं कोई हलचल नज़र नहीं आ रही थी। इन्स्पेक्टर [illegible] [illegible] में रहा था। बोला,

"कैसा कम्बख़्त वक़्त है! कोई ख़ून नहीं, डाके नहीं, न कोई शराबबन्दी का केस है, न कोई गड़बड़ीका, ट्राफ़िक तकको कोई गिरफ़्तारी नहीं! यह हाल रहा तो ये लोग हमें यहाँसे हटा ही देंगे।"

"निराशावादी न बनिए", उसका असिस्टेण्ट बोला, "कुछ-न-कुछ ज़रूर होगा। मानव-स्वभावमें मुझे अब भी विश्वास है।"

शहीद

कमाण्डिङ्ग ऑफ़ीसर : "तो तुम हो वह शख़्स जो सार्जण्टके स्पेशल ड्यूटीके लिए वालिण्टियर माँगनेपर आगे आये?"

"नहीं सरकार! बाक़ीकी लाइन पीछे हट गयी।"

क़ानून

पुलिसमैन : (एक मिस साहिबाने जो तालाबमें कूदने ही वाली थीं)

"माफ़ कीजिएगा, यहाँ तैरना मना है।"

मिस : "तो यह तुमने उसी वक़्त क्यों नहीं कह दिया जब मैं कपड़े उतार रही थी?"

पुलिसमैन : "कपड़े उतारनेके ख़िलाफ़ कोई क़ानून नहीं है।"

डेड ऐण्ड

एक कमाण्डर अपने सिपाहियोंको २० मील घुमाकर लाया। उन्हें डिसमिस करनेसे पहले उसने कहा, "जो एक और गश्तके लिए बिलकुल थक गये हों वे दो क़दम आगे आ जायें।"

सिवाय एक छह फुट लम्बे-तड़गे सिपाहीके सारी कम्पनी आगे आ गयी।

"रॉबर्ट, हो तैयार दस मील और चलनेके लिए?"

"नो सर," रॉबर्ट बोला, "मैं तो इतना थक गया हूँ कि ये दो क़दम भी न रख सका।"

शौन-क्राफ़

एक सिपाहीने अपने मैडलमें रिबन ज़रा ज़रूरतसे ज़्यादा लम्बी बाँध रखी थी। अफ़सरसे उसका सामना हो गया। वह सिपाहीपर नज़रें गाड़ कर बोला,

"क्यों जवान, यह तमग़ा तुम्हें भोजनभट्टतामें मिला था क्या?"

"नहीं साहब।"

"तो तुमने इसे पेटपर क्यों लगा रखा है?"

धनाया!

कर्नल: "तुम्हारे पिता क्या थे?"

कारपोरल: "किसान थे"

कर्नल: "अफसोस कि उन्होंने तुम्हें अपने धन्धेमें न रो... !"

कारपोरल: "आपके पिता क्या थे?"

कर्नल: "जेण्टिलमेन थे।"

योग्य-काम

सार्जेण्ट (पल्टनसे) : "क्या कोई संगीतके बारेमें जानकारी रखता है?"

एक रंगरूट (समुत्सुक होकर) : "जी हाँ, मैं !"

सार्जेण्ट : "तो जाओ, मेरे कमरेसे पियानो हटवा कर गोदाममें रखवा दो।"

ज़बान

पुलिसकान्स्टेबिल : "मेरा ख़याल है कि मैंने तुम्हारी स्त्रीको तलाश कर लिया है।"

फ़रियादी : "सचमुच ! आपसे कुछ कहती थी ?"

कान्स्टेबिल : "कुछ नहीं, उसने ज़बान तक नहीं हिलायी !"

फ़रियादी : "ज़बान तक नहीं हिलायी ? तो वह मेरी स्त्री नहीं हो सकती !"

पीछे-पीछे

पुलिसमैन : "पार्कमें कुत्तोंको लानेकी इजाज़त नहीं है, यह कु आपका है ?"

सज्जन : "नहीं, मेरा नहीं है।"

पुलिसमैन : "मगर यह आ तो आपके पीछे-पीछे रहा है।"

सज्जन : "मेरे पीछे-पीछे तो आप भी आ रहे हैं !"

गिरफ़्तार

एक आदमी (थानेमें) : "मुझे अपना बटुआ मिल गया है, एक हफ़्ता हुआ मैंने उसकी चोरीकी रिपोर्ट की थी।"

पुलिस इन्सपेक्टर : "तुम देरसे आये, हमने तो कल चोरको गिरफ़्तार भी कर लिया।"

तितर-बितर

एक कान्स्टेबिलसे मौखिक परीक्षामें पूछा गया,

"अगर लोगोंकी भीड़ इकट्ठी होकर गड़बड़ कर रही हो तो उस भीड़ को तितर-बितर करनेके लिए तुम क्या करोगे ?"

"चन्दा उघाना शुरू कर दूँगा," ठण्डे कलेजेसे कान्स्टेबिल बोला।

चलतीका नाम गाड़ी

मोटरवाला : "साठ मील फ़ी घण्टा ? मैं तो बीस भी नहीं चला रहा था !"

पुलिसवाला : तो मैं तुम्हें 'पार्किंग' (गाड़ी खड़ी रखने) के जुर्ममें धरता हूँ।"

भाई

एक आदमी गधेको बाँधे लिये जा रहा था तो एक फ़ौजी सिपाही ने कहा, "अपने भाईको क्यों बाँध रखा है ?"

"भाई साहब, इसलिए कि कहीं यह भी फौजमें भर्ती न हो जाये !"

गड़बड़

"तुम यह झगड़ा कोर्टके बाहर भी निपटा सकते थे।" मजिस्ट्रेटने आरोपियोंसे कहा,

"हम कोर्टके बाहर ही निपटा रहे थे कि पुलिस हमें गड़बड़ मचानेके इल्जाममें यहाँ पकड़ लायी।"

गिलहरियाँ

"सुना है ग्लोरियाने एक [illegible]

"हाँ पहला [illegible]

मैं कौन हूँ

एक लड़केने अपने अफ़सरको सलाम नहीं किया। अफ़सर उसको पकड़कर बोला, "जानते हो मैं कौन हूँ?"

लड़केने उसे [illegible] आश्चर्यभरी नज़रसे देखा और फिर कुछ दूर खड़े हुए साथियोंको पुकारकर कहा, "अरे देखो, इस आदमीको! [illegible] है और अपना नाम भी नहीं जानता!"

गिरफ़्तार

पुलिसमैन (हेडआफ़िसको फ़ोन करते हुए) : "एक आदमी लुट गया यहाँ है। उसको गिरफ़्तार कर लिया है मैंने।"

अफ़सर : "किसको।"

पुलिसमैन : "लुटे हुए को।"

मामूली

दारोग़ा : "क्या उस आदमीको बहुत चोट लगी है?"

कान्स्टेबिल : "सिर्फ़ दो चोटें ख़तरनाक हैं जिनके कारण वह बच नहीं सकता। बाक़ी तो सब मामूली हैं। उनसे कोई डर नहीं है।"

दुनिया रंग-बिरंगी

एक हबसीकी क़ब्रपर लिखा हुआ था,

"गोरोंके लिए पीलोंसे लड़ते-लड़ते जान देनेवाला एक काला आदमी।"

जीवन-मरण

"इस सिपाहीने तुम्हें जलते घरमें-से बचाया, इसे एक रुपया तो इनाम देना ही चाहिए।"

"जब इसने मुझे खींचा मैं अधमरा था, इसलिए आठ आने दो।"

कचरा

पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट : "मैंने आजके-से कागज़ पार्कमें कभी बिखरे हुए नहीं देखे थे क्या वजह है इसकी ?"

इन्सपेक्टर : "कल मेयरने पर्चे बँटवाये थे कि लोग इधर-उधर कागज़ न फेंकें।"

भीड़

एक स्काचने पुलिस विभागमें किसी जगहके लिए अर्ज़ी दी। उससे मुलाक़ातके दौरानमें पूछा गया, "किसी भीड़को छाँटनेके लिए तुम क्या करोगे ?"

उम्मीदवार : "चन्देके लिए टोप घुमाने लगूँगा।"

जंगखोर

आदमखोर : "पिछले महायुद्धमें तुम लोगोंने इतने आदमी मार डाले, पर मेरी समझमें यह नहीं आता कि तुम उन सबको खा कैसे गये होगे ?"

जंगखोर : "उन्हें खानेके लिए थोड़े ही मारा था ?"

आदमखोर (अत्यन्त घृणाभावसे) : "जंगखोर भी आदमखोरसे किस क़दर बदतर होता है कि बिला वजह आदमियोंको मारता है !!"

सुधार

वक्ता : "मैं लैण्ड रिफ़ार्म चाहता हूँ, मैं हाउसिंग रिफ़ार्म चाहत
मैं एजुकेशनल रिफ़ार्म चाहता हूँ, मैं—"

आवाज़ : "क्लोरोफ़ार्म।"

झक्की

वक्की : "आप इस सन्ततिकी बातें करते हैं, मैं आगामी सन्त
हितकी बात कह रहा हूँ...."

दूसरा : "और जब तक आपके श्रोता न आ जायें आप बोलते र
चाहते हैं ?"

वाह रे मैं !

एक अमेरिकन नार्वेकी एक बड़ी सभामें बोला। लोग चुपचाप सु
रहे। उसके बाद वहींका एक वक्ता स्थानीय भाषामें बोलने लगा। ब
तालियाँ बजीं। अमेरिकन भी तालियाँ बजानेमें किसीसे पीछे नहीं था
ज़ोरसे तालियाँ बजाते-बजाते वह सभापतिकी ओर झुककर पूछने लग
"क्या कहा इन्होंने ?"

"आपके भाषणका भाष्य कर रहे हैं ये," सभापतिने गंभीर मुद्रा
जवाब दिया।

वक्तेरेकी

एक मशहूर मेम्बर पार्लामिण्टमें भाषण दे रहे थे। दक्षिण पक्षसे किसी ने प्रश्न किया,

"आप इस बिलपर वोट देंगे या नहीं ?" एम पी. ने सभापर एक तरफ़से दूसरी ओर तक एक नज़र डाली और धीमेसे कहा,

"मैं दूँगा..."

तुरन्त दक्षिण पक्षने तालियोंकी गड़गड़ाहट मचा दी। जब सुनने लायक शान्ति हुई तो वक्ताने कहना जारी किया। "—नहीं—"

तो तालियोंका तूफ़ान दूसरी तरफ़से उठा और जब कुछ कम हुआ तो उन्होंने अपना वाक्य पूरा किया, "—इस सवालका जवाब।"

दोनों पक्षोंमें पूर्ण शान्ति छा गयी।

फ़ोर्थ डाइमेन्शन

एक विद्वान् प्रोफ़ेसरने 'फ़ोर्थ डाइमेन्शन' पर एक घण्टे तक विद्वत्तापूर्ण लैक्चर दिया। अन्तमें पूछा, "कोई सवाल हो तो पूछिए।"

एक नवयुवती : "फ़ोर्थ डाइमेन्शनको तो मैं खूब अच्छी तरह समझ गयी। लेकिन प्रोफेसर साहब, मैं यह जानना चाहती हूँ कि फ़र्स्ट, सैकिण्ड और थर्ड डाइमेन्शन क्या है ?"

प्राइवेट पराक्रम

एक लेबर लीडर सरकारके सोशलाइज्ड हैल्थ प्रोग्रामके औचित्यका बचाव करते हुए पार्लामिण्टमें बोल रहा था,

"आज ब्रिटेनमें इतने बच्चे पैदा हो रहे हैं जितने पहले कभी नहीं होते थे ! मगर क्यों ?"

"प्राइवेट इण्टर प्राइज," एक टोरी बोल उठा।

त्रुटियाँ !

एक वक्ता महाशय भाषण दे चुके तो उन्होंने अपने एक दोस्तसे पूछा, 'कहो, लैक्चर कैसा रहा ?'

दोस्त : "मुझे उसमें तीन कमियाँ दिखीं। एक तो वह पढ़ा गया, दूसरे वह पढ़ा भी भोंड़े ढंगसे गया, और तीसरे वह पढ़ने लायक़ भी नहीं था।"

शयन

वक्ता (एक श्रोतासे) : "ज़रा अपने पासवाले सज्जनको जगा दीजिए।"

श्रोता : "आप ही जगाइए। आप ही ने उसे सुलाया है।"

लाइलाज

एक पशुचिकित्सकने राजनीतिमें प्रवेश किया। एक बहसमें उनका प्रतिपक्षी उनकी अकाट्य दलीलोंसे तिलमिलाकर बकने लगा,

"क्या यह सच है कि तुम असलमें जानवरोंके डॉक्टर हो ?"

"बिलकुल सच है ! आप बीमार हैं क्या ?" जवाब आया।

फ़ण्ड

एक प्रसिद्ध वक्ता किसी साहित्य परिषद्में बोले। भाषणके अन्तमें मन्त्रीने उन्हें एक चैक नज़र किया, जिसे उन्होंने यह कहकर लौटा दिया कि उसे किसी पारमार्थिक काममें लगा दें।

मन्त्रीने पूछा, "आपको एतराज़ न हो तो इसे अपने स्पेशल फ़ण्डमें जमा कर दें।"

वक्ता : "मुझे कोई आपत्ति नहीं। स्पेशल फ़ण्ड है किसलिए ?"

मन्त्री : "अगले साल बेहतर वक्ताओंको बुलानेके लिए ?"

तालियाँ

एक बार बेन्जामिन फ्रेंकलिन फ्रांसके साहित्य सम्मेलनके सम्मान्य अतिथि हुए। उन्हें फ्रेंच नहीं आती थी। लेकिन मशहूर साहित्यकारोंकी तकरीरोंके वक्त गुपचुप बैठा रहना उन्हें नामुनासिब लगा। इसलिए जब उनके पास बैठे हुए मित्रने तालियाँ बजायी तब इन्होंने भी बजायीं।

सम्मेलनकी समाप्तिपर उनके फ्रेंच-भाषी छोटे पुत्रने पूछा, "पिताजी, जिन-जिन वाक्योंमें आपकी तारीफ़ होती थी उन-उन वाक्योंपर ही आप तालियाँ क्यों बजाते थे?"

कलाका खयाल

बहुत-से सिनेमा-प्रोड्यूसरोंने जार्ज बर्नार्ड शॉके नाटकोंके फ़िल्मी अधिकार ले लेनेकी कोशिश की। शॉको इसमें कोई खास दिलचस्पी नहीं थी। एक बार वे इसके लिए एक गैरमुमकिन रक़म माँग रहे थे। आखिरमें प्रोड्यूसरने उनसे अन्तिम अपील की,

"मिस्टर शॉ, अपनी कलाका खयाल कीजिए। उन लाखों लोगोंका खयाल कीजिए जिन्होंने आपके नाटकोंको रंगमंचपर नहीं देखा है; उन असंख्य दर्शकोंका खयाल कीजिए जो इस माध्यम-द्वारा आपकी कलाका मज़ा ले सकेंगे।"

शॉ पुरगम लहजेमें बोले, "हममें यही तो फ़र्क है। आपको सिर्फ़ कला का खयाल है, मुझे सिर्फ़ पैसेका।"

मंगल-बुध

भोजके बाद क्लबके सभापति महोदय अपनी वक्तृताको दुर्विलम्बित किये जा रहे थे। बीचमें उनके ज़रा थमनेपर एक श्रोताने दूसरेसे कानमें कहा, "इसके बाद क्या है?"

"बुधवार", जवाब मिला।

बदला

सख्त तनातनीके वक़्त इंग्लैण्डके बादशाह हैनरी अष्टमने फ़्रांसके बादशाह फ़्रांसिस प्रथमके पास एक दूत भेजना चाहा। जो दरबारी चुना गया उसने अनुनय-विनय की कि, "इस इज़्ज़तसे मुझे तो माफ़ ही फ़रमाया जाय, क्योंकि ऐसे गरम-मिज़ाज बादशाहके सामने मैं ऐसा धमकी-भरा सन्देश लेकर पहुँचा तो मेरी तो वह जान ही ले लेगा।"

बूढ़ा हैनरी बोला, "डरो नहीं, अगर उसने तुम्हें मरवा डाला तो मैं उन दसों फ्रांसीसियोंके सिर कटवा दूँगा जो मेरे यहाँ क़ैद हैं।"

दरबारी बोला, "मगर जहाँपनाह, उन सिरोंमें-से एक भी मेरे धड़ पर फ़िट नहीं बैठेगा।"

कमसखुन

जज साम रसल बड़े संयत, यथार्थवादी, अल्पभाषी और एकान्तप्रिय थे। एक रोज़ एक विक्रेत्री उनके यहाँ घुस आयी और पूछने लगी,

"आपकी श्रीमती घरपर हैं क्या?"

"नहीं, वह घरपर नहीं हैं।"

"आपको एतराज़ न हो तो मैं इन्तज़ार करूँ?"

"नहीं, कुरसी ले लो।"

एक घण्टेकी इन्तज़ारीके बाद स्त्रीने पूछा,

"आपकी स्त्री कहाँ गयी हैं?"

"वो कबरिस्तान गयी है।"

"आपके ख़यालसे वहाँ कबतक रुकना होगा उन्हें?"

"मुझे मालूम नहीं, लेकिन उसे वहाँ ग्यारह बरस तो हो चुके हैं" जज साहब बोले।

गाँधीजी

गाँधीजी अपने 'ऑटोग्राफ़' (अपना नाम लिखकर देने) के पाँच रुपये लेते थे। एक दिन एक अमेरिकन महिला उनका ऑटोग्राफ लेने आयी। उसने उन्हें पाँच रुपये दिये। गाँधीजीने मुसकराते हुए कहा, "बस ! तुमने मेरी कीमत पाँच रुपये ही आँकी ?"

महिलाने गद्गद होकर पाँच रुपये और दिये।

"ओ हो ! मैं समझ गया, तुम पाँच रुपयेसे आगे नहीं बढ़ सकती !" गाँधीजी हँसकर बोले।

सरल उपाय

लॉर्ड रस्सल : "राजकुमार, कोई मिलने आनेवाला आकर जम ही जाये और टले नहीं तो आप क्या उपाय करते हैं ?"

प्रिन्स बिस्मार्क : "मेरी पत्नी ऐसे अड़ियलोंको पहचाननेमें बड़ी प्रवीण है। ऐसे समय वह आकर मुझे किसी-न-किसी बहानेसे अन्दर बुला ले जाती है।"

यह बात चल रही थी कि प्रिन्स बिस्मार्ककी पत्नी अन्दर घुस आयी और कहने लगी, "देखिए, आप फिर अपनी दवा पीना भूल गये। दस मिनिट पहले पीनी थी। अब और देर न कीजिए। अन्दर चलिए।"

ज़ुक़ाम

स्व० पण्डित मोतीलाल नेहरू अपने विनोदके लिए बहुत प्रसिद्ध थे। एक बार उन्हें ज़ुक़ाम हो गया। तब उन्होंने खादीके कपड़े धारण करने शुरू ही किये थे। खादीके रूमालसे पोंछते-पोंछते उनकी नाक एकदम लाल हो गयी थी। उसी समय एक सज्जन उनसे उनकी तबीयतका हाल पूछ बैठे।

पण्डितजीने ज़रा गम्भीर होकर कहा, "क्या पूछते हो? अब गांधी बाबाके राज्यमें किसीको ज़ुक़ाम नहीं हुआ करेगा।"

वह सज्जन बड़े चकराये और बोले, "आखिर, ज़ुक़ाम और गांधी बाबाके राज्यका क्या मेल?"

मोतीलालजीने उत्तर दिया, "खादीके रूमालसे पोंछते-पोंछते जब नाक ही ग़ायब हो जायेगी तब फिर ज़ुक़ाम कहाँ हुआ करेगा?"

ब्राण्ड

एक अति उत्साही मद्य-निषेधकने प्रेसीडेण्ट अब्राहम लिंकनसे शिकायत की कि जनरल ग्राण्ट व्हिस्की पीते हैं। उसका प्रवचन सुन चुकनेके बाद लिंकन बोले,

"ज़रा मालूम कीजिए कि जनरल ग्राण्ट किस ब्राण्डकी व्हिस्की पीते हैं, मैं वही शराब अपने सब जनरलोंको पिलाना चाहता हूँ।"

परिवर्तन

डगलस : "सज्जनो, एक ज़माना था कि लिंकन शराब बेचा करते थे.......।"

लिंकन : "मैं शराब ज़रूर बेचा करता था। कभी-कभी। और मिस्टर डगलस मेरे बहतरीन ग्राहक थे। मगर ख़ास बात यह है, कि मैंने बेचनी कभीकी छोड़ दी पर उन्होंने पीनी अभी तक नहीं छोड़ी।"

निर्दोष मुजरिम

चेम्बरलेन किसी दावतमें प्रधान मेहमान थे। भोजके बाद नृत्य और संगीतका रंग जमा हुआ था। शहरके मेयरने झुककर चेम्बरलेनसे पूछा, "लोगोंको कुछ देर और आनन्द कर लेने दें या अब आपका लेक्चर शुरू करायें ?"

पालिश

एक सुप्रतिष्ठित अंग्रेज प्रेसिडेण्ट लिंकनसे मिलने आया। उस वक्त लिंकन अपने जूतोंपर पालिश कर रहे थे।

अंग्रेज : "इंग्लैण्डमें कोई अंग्रेज अपने जूतोंकी पालिश नहीं करता ?"

लिंकन : "तो फिर वे किनके जूतोंकी पालिश करते हैं ?"

माई लॉर्ड

एक धनिक परिवारमें लार्ड चेम्सिगकी दावत थी। मेजबानकी पञ्च-वर्षीय कन्या भी साथ जीमने बैठी। उसने देखा कि लोग मेहमानको 'माई लॉर्ड' कह रहे हैं, लड़की अपनी माँकी ओर झुककर बोली,

"मम्मी, गॉडको कुछ आइसक्रीम और दो।"

ऑर्डिनेन्स

गांधीजी (जेलमें) : "तबीयतकी खबर लिखना क़ानूनन् मना है क्या ?"

मेजर : "हाँ, आप-सरीखोंके बारेमें लोग चाहे जो मानकर चिन्ता करने लगते हैं। आपकी बीमारीकी खबर सुनकर यहाँ लोगोंकी टोलियों पर टोलियाँ पूछने आने लगें !"

वल्लभ भाई : "ऑर्डिनेन्स निकलवाओ कि कोई गांधीकी खबर न पूछे।"

स्व० पण्डित मोतीलाल नेह
एक वार उन्हें जुक़ाम हो गया
शुरू ही किये थे। खादीके रू
लाल हो गयी थी। उसी समय
पूछ बैठे।

पण्डितजीने जरा गम्भीर हो
वावाके राज्यमें किसीको जुक़ाम

वह सज्जन बड़े चकराये उ
वावाके राज्यका क्या मेल?"

मोतीलालजीने उत्तर दिया,
ही ग़ायब हो जायेगी तब फिर उ

एक अति उत्साही मद्य-नि
की कि जनरल ग्राण्ट व्हिस्की
लिंकन बोले,

"जरा मालूम कीजिए
हैं, मैं वही शराब अपने सब

डगलस : "सज्जनो,
थे........।"

लिंकन : "मैं शरा
डगलस मेरे बहतरीन
कभीकी छोड़ दी पर

निर्दोप मुजरिम

चेम्बरलेन किसी दावतमें प्रधान मेहमान थे। भोजके बाद नृत्य और संगीतका रंग जमा हुआ था। शहरके मेयरने झुककर चेम्बरलेनसे पूछा, "लोगोंको कुछ देर और आनन्द कर लेने दें या अब आपका लेक्चर शुरू करायें?"

पालिश

एक सुप्रतिष्ठित अँग्रेज प्रेसिडेण्ट लिंकनसे मिलने आया। उस वक़्त लिंकन अपने जूतोंपर पालिश कर रहे थे।

अँग्रेज : "इंग्लैण्डमें कोई अँग्रेज अपने जूतोंकी पालिश नहीं करता?"

लिंकन : "तो फिर वे किनके जूतोंकी पालिश करते हैं?"

माई लॉर्ड

एक धनिक परिवारमें लार्ड चैम्पिगकी दावत थी। मेज़बानकी पञ्च-वर्षीय कन्या भी साथ जीमने बैठी। उसने देखा कि लोग मेहमानको 'माई लॉर्ड' कह रहे हैं, लड़की अपनी माँको ओर झुककर बोली,

"मम्मी, गॉडको कुछ आइसक्रीम और दो।"

ऑर्डीनेन्स

गांधीजी (जेलमें) : "तबीयतकी खबर लिखना क़ानूनन् मना है क्या?"

मेजर : "हाँ, आप-सरीखोंके बारेमें लोग चाहे जो मानकर चिन्ता करने लगते हैं। आपकी बीमारीकी खबर सुनकर यहाँ लोगोंकी टोलियाँ पर टोलियाँ पूछने आने लगें!"

वल्लभ भाई : "ऑर्डीनेन्स निकलवाओ कि कोई गांधीकी खबर न पूछे।"

इमली

गांधीजी सुबह ९ बजे और शामको ६ बजे रोज सोडा और नीबू पीते थे। गरमियोंमें नीबू महँगे हो जाते हैं इसलिए गांधीजीने वल्लभ भाई को इमली सुझायी। इमलीके पेड़ जेलमें बहुत थे। वल्लभ भाईने यह बात हँसीमें उड़ा दी : "इमलीके पानीसे हड्डियां टूटने लगती हैं, वायु हो जाती है !"

बापू : "और जमनालाल पीते हैं सो ?"

वल्लभ भाई : "जमनालालकी हड्डियों तक पहुँचनेका इमलीको रास्ता नहीं मिल सकता।"

बापू : "पर एक बार मैंने खूब इमली खायी है।"

वल्लभ भाई : "उस जमानेमें तो आप पत्थर भी हज़म कर सकते थे। आज वह कैसे हो सकता है ?"

अहिंसा

किसीने पत्र-द्वारा गाँधीजीसे पूछा,

"हम तीन मनका शरीर लेकर धरतीपर चलते हैं, इससे बहुत-से जीव-जन्तु मर जाते हैं। इस हिंसाको किस तरह रोका जाये ?"

वल्लभ भाईने तुरन्त कहा, "इसे लिखो कि पैरोंको सिरपर रखकर चले।"

यश और नक़द

कमिश्नर केडल एक बार गांधीजीसे मिलने आया। गांधीजीसे बोला,

"इस बार लड़ाईमें सरकार और लोगोंके दरमियान कड़वास नहीं है। मुझे इतना क्रैडिट (credit) लोगोंको देना चाहिए।"

गांधीजी बोले, "You may keep the credit and let us hove the cash". (यह यश आप रखिए और नक़द हमें दीजिए।)

लॉयड जार्ज

एक बार इंग्लैण्डके प्रधान मन्त्री लॉयड जार्जको वेल्सके दौरेमें किसी ऐसी जगह रात हो गयी जहाँ कोई होटल न था। लाचार उन्होंने एक इमारतके दरवाज़ेकी घण्टीका बटन दबाया।

एक आदमीने आकर दरवाज़ा खोला।

"महाशय, मैं यहाँ रातको ठहरना चाहता हूँ।"

"मगर यह तो पागलखाना है!"

"हुआ करे, मुझे तो सिर्फ सोने-भरकी जगह चाहिए। मैं ब्रिटेनका प्रधानमन्त्री लॉयड जार्ज हूँ।"

"तब आप शौकसे तशरीफ लाइए। यहाँ पाँच आदमी और हैं जो अपनेको लॉयड जार्ज बताते हैं।"

चहरा

एक बार शॉसे उसका एक दोस्त कहने लगा,

"मेरा चहरा भी तुम्हारे-जैसा था। पर मुझे लगा कि मेरी शक्ल अजीब लगती है इसलिए मैंने दाढ़ी कटवा डाली।"

शॉ बोले, "और जैसा चहरा तुम्हारा इस वक़्त है वैसा ही कभी मेरा भी था। पर चूँकि चहरेको काट फेंकना मुमकिन नहीं था इसलिए मैंने दाढ़ी रखवा ली।"

मैंने भी

अमेरिकामें मिस कार्नेलियाने शॉका नाटक 'कॅण्डिडा' खेला। शॉने उसे अभिनन्दनका तार किया, "सुन्दर, सर्वोत्तम।"

मिस कार्नेलियाने नम्र उत्तर भेजा, "इतनी तारीफ़के लायक़ नहीं।"

शॉने लिखा, "मैंने तुम्हारे लिए नहीं, नाटकके लिए लिखा था।"

कार्नेलियाने दहकता हुआ कटाक्ष लिखा, "मैंने भी।"

शोर्पासन

किसी अमेरिकनने कृष्ण मेननसे पूछा,

"क्या यह सच है कि नेहरू अपने सिरके बल खड़े होते हैं ?"

"मैं सिर्फ़ यह जानता हूँ कि मैं अपने सिरके बल खड़ा नहीं हो सकता।"

बड़े भंगी

हरिजनोद्धारका जमाना था, गांधीजीके पीछे-पीछे बड़े-बड़े नेता भी झाड़ू-टोकरी लेकर निकलने लगे थे।

धारा-सभाकी लॉबीमें,

मोतीलाल नेहरू : "भूला, तुम 'बड़े भंगी' हो।"

भूला भाई देसाई : "नहीं, आप 'बड़े भंगी' हैं।"

मोतीलाल : "नहीं, तुम।"

भूला भाई देसाई : "नहीं आप...."

आवाज सुनकर विट्ठल भाई पटेल बाहर निकल आये। प्रैसीडेंशियल अदासे फ़ैसला देते हुए बोले,

"बड़ा मैं; आप दोनों भंगी !"

कहक़होंसे लॉबी गूँज उठी।

जन्म

चर्चिल : "अगर मैं इंग्लैण्डमें न जन्मा होता तो अमेरिकामें जन्म लेना पसन्द करता।"

रूजवेल्ट : "अगर मैं अमेरिकामें न जन्मा होता तो इंग्लैण्ड पसन्द करता।"

स्टालिन : "अगर मैं रूसमें न जन्मता तो अजन्मा ही रहना पसन्द करता।"

उद्धरण

बर्नार्ड शॉने एक बार कहा था, "मैं अकसर अपने ही उद्धरण सुनाता हूँ। इससे बातचीतमें रंग आ जाता है।"

नो वेकेन्सी

एक होटलमें एक नवाब साहब आये। मगर जगहें सब घिरी हुई थीं। मैनेजरसे जाकर बोले, "मेरे लिए कोई जगह हो सकती है या नहीं? मैं ममदोठका नवाब हूँ"

"खेद है", मैनेजरने जवाब दिया, "मेरा स्टॉफ पूरा है।"

किसका आभार

एक बार लॉर्ड हैलीफैक्स अपनी नौ-जवानीके ज़मानेमें दो गम्भीर चिरकुमारियोंके बीच बैठे हुए रेल-यात्रा कर रहे थे। जब गाड़ी एक सुरंग (Temnel) में होकर गुज़री तो घुप अँधेरा छा गया। हैलीफैक्सने अपने हाथके ज़ोर-ज़ोरसे चुम्बन लेने शुरू कर दिये। सुरंगके बाद ही उनका स्टेशन आ गया। उतरते हुए शरारतसे मुसकराते हुए बोले, "सुन्दरियो! इस परम सुखद कृपादृष्टिके लिए मैं आप दोनोंमें-से किसका आभार मानूँ?"

वो तो उतरकर चले गये, दोनों कनकछुरियाँ एक दूसरीको सशंक दृष्टिसे घूरती रह गयीं!

जैण्टिलमैन

सज्जन : "आप अपने पैसे लेने क्यों नहीं आये?"

दर्जी : "मैं किसी जैण्टिलमैनसे पैसोंका तकाजा नहीं किया करता।"

सज्जन : "अच्छा! पर अगर कोई न दे तो आप क्या करते हैं?"

दर्जी : "कुछ दिनों इन्तज़ार करनेके बाद समझ लेता हूँ कि यह आदमी जैण्टिलमैन नहीं है और तब तकाजा करके वसूल करता हूँ।"

प्रायश्चित्त

गान्धीजी : "अब साढे नौ बज चुके। मैं रातके डेढ बजेका उठा हुआ हूँ और दोपहरको सिर्फ पच्चीस मिनिटके लिए आराम किया है।"

रातके डेढ बजेसे लेकर रातके साढ़े नौ बजे तक पूरे बीस घण्टे !

बनारसीदास चतुर्वेदी : "बापू इतनी मेहनत क्यों करते हैं ?"

हरिहर शर्मा : "प्रायश्चित्त स्वरूप ! हम सब लोग आलसी हैं, उसीका तो प्रायश्चित्त बापू कर रहे हैं।"

फ़र्क़

एक सभामें चर्चिलका परिचय कराते हुए एक वक्ताने विनोदमें कहा, "मिस्टर चर्चिल जैसे दिखते हैं उतने मूर्ख नहीं हैं।"

चर्चिल तुरन्त बोले, "मुझमें और इस वक्तामें इतना ही फ़र्क़ है।"

जहाँ हो वहाँ !

एक विदेशी कलाकारने गाँधीजीको पत्र लिखा। लिफ़ाफ़ेपर पताकी जगहपर गाँधीजीका एक रेखाचित्र बनाया। उसके ऊपर लिखा, 'टू', और नीचे 'दिस मैन, इण्डिया'। (इस आदमीको, भारत)।

एक और भक्तने पता यूँ लिखा,

"महात्मा गाँधी, जहाँ हों वहाँ !"

विराम-चिह्न

मार्क ट्वेन लिखते वक्त हिज्जे और विराम-चिह्नोंका बहुत कम ध्यान रखते थे। एक बार अपनी एक किताबकी पाण्डुलिपिको प्रकाशकके पास भेजते हुए उन्होंने लिखा,

"जनाबमन ! :, ...; !... : ...?...! को। पूरी किताबमें मुनासिब जगहोंपर इस्तेमाल लगा लीजिएगा।"

वकील साहब

एक बार अब्राहम लिंकनको, जब वो वकील थे, एक ही दिन दो समान मुक़दमे लड़ने पड़े, लेकिन एकमें वे वादीकी वकालत कर रहे थे, दूसरेमें प्रतिवादीकी।

पहले मुक़दमेमें वे जीत गये, दूसरे मुक़दमेमें उन्होंने अपनी ही बातों का खण्डन करना शुरू कर दिया।

जजने मुसकराकर पूछा, "मिस्टर लिंकन, सुबह तो आप कुछ कह रहे थे और इस वक़्त कुछ और कह रहे हैं। ऐसा क्यों?"

लिंकन : "हुज़ूर! हो सकता है कि सवेरे मैंने ग़लत बातें कही हों, मगर इस वक़्त तो बिलकुल ठीक कह रहा हूँ, यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ।"

हुस्ने इत्तिफ़ाक़!

मार्क ट्वेनका किसी गाँवमें लैक्चर होनेवाला था। भाषणसे पहले वह किसी सैलूनमें दाढ़ी बनवाने गये। नाईने दाढ़ी बनाते हुए उनसे पूछा, "महाशय, आपको मालूम है कि आज मशहूर वक्ता मार्क ट्वेनका इस गाँवमें भाषण है?"

"सुना है।"

"आप वहाँ जाइएगा क्या?"

"ज़रूर"

"टिकिट ख़रीद लिया है?"

"अभी नहीं।"

"तब तो आपको खड़ा ही रहना पड़ेगा।"

"हाँ भाई, मार्क ट्वेनकी जब-जब तक़रीर होती है मुझे खड़े ही रहना पड़ता है, यह मेरी बदक़िस्मती है।"

"संयोग है!" नाईने गम्भीरतापूर्वक कहा।

कूड़ा

जब चर्चिल विरोधी दलके नेता थे तो एक युवा सदस्य उनके विरोध में 'कूड़ा !' कहते जा रहे थे। चर्चिल बोलते गये, मगर पाँचवीं बार बाधा डाली जानेपर उसको लक्ष्यमें लेकर बोले,

"क्या यह ऑनरेबिल मेम्बर जिमके दिमागमें सिवाय कूड़ेके कुछ नहीं है...."

शेष वाक्य हँसीमें डूब गया।

ज्ञान-विभोर

आइन्स्टीनके विषयमें यह भी कहा जाता है कि जबतक कोई जगा न दे वे सोते ही रहते। रातको वे जागते ही रहते तावक़्ते कि कोई आकर यह न कहे कि "आइन्स्टीन, अब सोनेका वक्त हो गया।" कोई खाना न लाये तो भूखे ही रह जाते, खाना न मँगाते और एक बार खाना शुरू कर दिया तो फिर खाते ही चले जाते जबतक कोई रोके नहीं कि "बस अब रहने दो बहुत खा लिया।"

रस्सी तुड़ाकर भागे

स्वर्गीय प्रेमचन्दजी बम्बईके एक फ़िल्म-निर्माताका इक़रार पूरा करके जब वापस बनारस पहुँचे, तो श्री चन्द्रगुप्त विद्यालंकार उनसे मिलने आये। बातचीतके दौरानमें एक सवालके जवाबमें मुसकराते हुए प्रेमचन्दजी ने कहा, "भाई ! मैं तो एक क़ैदख़ानेसे छूटकर आ रहा हूँ।" और फिर उनकी मुसकराहटने मधुर कहकहेका रूप ले लिया। हँसीका वेग कम होनेपर बोले, "अरे भाई ! कहाँ हम और कहाँ सिनेमावाले ! भला हमारा उनका क्या मेल ? वहाँ जाकर मैंने जिन्दगीकी सबसे बड़ी भूल की। वह तो ग़नीमत हुई कि मौका मिलते ही रस्सी तुड़ाकर भाग आया !"

दावत या अदावत

पंतजीने एक दावत दी। क़िदवई साहब जरा देरसे आये; भोजन-गृह के दरवाजेपर खड़े होकर पूछने लगे,

"जनाव, जूते उतारूँ क्या ?"

"जूते उतारोगे नहीं तो खाओगे क्या ?" जवाब मिला।

अशिक्षित

अलवर्ट आइन्स्टाइन किसी होटलमें भोजनार्थ पहुँचे, लेकिन चश्मा भूल आनेकी वजहसे 'मैनू' नहीं पढ़ सकते थे। वैराको वुलाकर पढ़नेके लिए कहा।

वैरा वोला : "तुम्हारी माफ़क हम वी भणेला (निरक्षर) नहीं है !"

प्रारम्भिक प्रयोगोंका परिणाम

"१९४० में न्यू जरसीके गवर्नरके चुनाव आन्दोलनकी एक तक़रीर करते हुए सुप्रसिद्ध आविष्कारक एडीसनके सुपुत्र चार्ल्सने अपना परिचय यूँ देना शुरू किया, "लोग लाज़िमी-तौरपर मेरे नामको मेरे पिताके नामके साथ जोड़ेंगे, लेकिन इससे यह न समझ लीजिएगा कि मैं एडीसन नामकी तिजारत कर रहा हूँ, वल्कि मैं तो चाहूँगा कि आप सिर्फ़ यह मानें कि मैं तो अपने पिताके प्रारम्भिक प्रयोगोंका परिणाम मात्र हूँ।"

समुद्र-स्नान

प्रेसीडेण्ट टाफ़्ट बड़े मोटे-ताजे थे। एक वार वह खूब ढीले-ढाले कपड़े पहने समन्दरमें नहा रहे थे। दो शख्स एक-दूसरेसे बोले, "चलो हम भी नहायें।"

"हम कैसे नहा सकते हैं ?" दूसरा बोला।

"समन्दरको तो प्रेसीडेण्ट इस्तेमाल कर रहे हैं।"

पुनर्जन्म

कवि शेलीको पुनर्जन्ममें बड़ा विश्वास था। एक बार वह एक रास्ते चलती स्त्रीके बच्चेको गोदीमें लेकर पूछने लगे, "तू कहाँसे आया है? तेरे पुनर्जन्मकी दुनिया कैसी है....?"

बालक बिना बोले किलकारियाँ भरने लगा। शेली बच्चेको उसकी माँको सौंपते हुए बोला, "अजीब हैं आजकलके बालक! पूछो तो जवाब तक नहीं देते।"

कनफ़ेशन

"मैम साहिबा, इस लड़केकी आधी टिकिट लेनी पड़ेगी। पाँच सालसे ज्यादाका है।"

"पाँच सालसे ज्यादाका कैसे हो गया, मेरी शादी हुए तो सिर्फ़ चार साल ही हुए हैं?"

"चाल-चलनकी बात रहने दो, एक आना और दो वर्ना बससे उतर जाओ।"

लाजवाब

मशहूर लेखक किप्लिंग एक बार किताबें खरीदने गये। एक किताबको पसन्द कर उन्होंने दूकानदारसे पूछा, "यह किताब कैसी है?"

दूकानदार: "मैंने इसे पढ़ा नहीं है।"

किप्लिंग (किसी क़दर झुंझलाकर): "किसी किताबको खरीदते वक्त आप पढ़कर देख क्यों नहीं लेते कि यह बिक सकेगी या नहीं?"

दूकानदार इस अजीब सवालको सुनकर शान्तिसे बोला, "जनाब! मान लीजिए आप दवाइयाँ बेचते हैं, तो क्या बेचनेसे पहले उन्हें चखकर देख लिया करेंगे?"

किप्लिंग आँखें फाड़कर दूकानदारको देखते रह गये।

पत्रकार

महात्मा गांधी जहाँ जाते थे वहाँ उनके पीछे पत्रकार लग जाते थे। एक बार एक पत्रकारने गाँधीजीसे पूछा, "क्या आप विश्वास करते हैं कि मरनेपर आप स्वर्गमें स्थान पायेंगे ?"

गांधी : "मैं स्वर्ग पाऊँगा या नरक यह तो मैं नहीं जानता, मगर इतना ज़रूर जानता हूँ कि जहाँ भी जाऊँगा वहाँ पत्रकार ज़रूर मौजूद रहेंगे।"

मिस फ़ौरच्यून और कैलैमिटी

एक बार डिज़राइली बदक़िस्मती और आफ़तका फ़र्क़ बताते हुए बोले,

"अगर ग्लैडस्टन टेम्स नदीमें गिर जायें तो यह बदक़िस्मती होगी; और अगर किसीने उन्हें खींचकर निकाल लिया तो वह आफ़त होगी।"

बोनलैस वण्डर

१९३३ ई० में रैमज़े मैक्डोनल्डपर हमला करते हुए चर्चिल बोले,

"बचपनमें एक बार मुझे अपने वाल्दैनके साथ बोरनम सर्कसमें 'अस्थिशून्य जादू' देखनेकी बड़ी इच्छा हुई। पचास बरस तक इन्तज़ार करनेके बाद आज मैं 'बोनलैस वण्डर' को ट्रैज़री बैंचपर बैठा हुआ देख रहा हूँ।"

तीसरा विश्व-युद्ध

"मान लेता हूँ कि तीसरा विश्व-युद्ध होगा, मगर मैं यह नहीं बता सकता कि उसमें किस तरहके हथियारोंका उपयोग किया जायेगा। हाँ, चौथे विश्वयुद्धके बारेमें निश्चयपूर्वक यह कह सकता हूँ कि वह 'पत्थरकी गदा'से लड़ा जायेगा।"

—अल्बर्ट आइन्स्टाइन

लक़वा

लार्ड सैलिसबरी बड़े हँसोड़ थ। एक दिन मित्र-मण्डली टेबलके चारों तरफ़ कुरसियोंपर बैठी हुई थी, सैलिसबरी अपनी बातोंसे सबको हँसा रहे थे।

एकाएक वे चुप हो गये और उनके चेहरेपर भय और घबराहटके आसार नमूदार होने लगे।

"ख़ैरियत तो है?" मित्रोंने पूछा।

"आख़िर वही बात हुई!"

"क्या बात हुई?"

"वही बात हुई जिससे मैं डर रहा था। डाक्टरने बरसों पहले कह दिया था कि तुम्हें लकवा मारेगा और तुम मर जाओगे। आख़िर वही बात हुई। जान पड़ता है मेरे पैरोंमें लकवा मार गया।"

"आपको कैसे मालूम हुआ कि लक़वा मार गया?"

"मैं पाँच मिनिटसे चुटकी मार रहा हूँ, पर दर्द ही नहीं होता!"

उनके बग़लमें बैठे हुए एक दोस्तने हँसकर कहा, "अजी वाह! आप तो मेरे पैरमें चुटकी ले रहे थे; मैंने संकोचके मारे कुछ कहा नहीं!"

जीना ज़रूरी

बर्नार्ड शॉको मोटर चलानेका बड़ा शौक़ था। एक बार मोटर चलाते वक़्त उनके दिमाग़में एक नये नाटकका प्लॉट आया। बग़लमें बैठे ड्राइवरको आप बड़े उत्साहसे उसकी रूपरेखा समझाने लगे। अचानक ड्राइवरने झपटकर उनके हाथसे स्टीयरिंग थाम लिया।

"यह क्या बदतमीज़ी?" शॉ गरजे।

"क्षमा कीजिए, यह नाटक आपकी अमर कृति होगा। मैं आपको इसे पूरा करनेसे पहले मरने नहीं दूँगा।"

कुछ नहीं आता

एक बार एक छोटा बालक गांधीजीका हाथ पकड़कर चल रहा था। उस वक़्त एक कुत्ता वहाँसे गुज़रा। लड़का बोल उठा, "देखो बापू! कुत्तेके पूँछ है!"

"अच्छा! कुत्तेके पूँछ है? क्या तेरे भी पूँछ है?" बच्चा हँस पड़ा—"बापू! इतने बड़े होकर तुम्हें यह भी नहीं मालूम कि आदमीके पूँछ नहीं होती। तुम्हें तो कुछ भी नहीं आता!"

सफलताका नुस्ख़ा

आइन्स्टाइनसे कुछ विद्यार्थियोंने पूछा, "हमें जीवनमें सफलता पानेका कोई नुस्ख़ा बताइए।"

आइन्स्टाइन बोले,

"सफलता = काम + मनोरंजन + मौन"

"मौनसे क्या मतलब है?"

"मेरे नज़दीक मौनका मतलब है जितना ज़रूरी हो उससे भी कम बोलना। बल्कि मैं तो मौनको कामसे भी ज़्याद क़ीमती मानता हूँ।"

एक न शुद दो शुद

तिलक महाराजका एक मुक़दमा हाईकोर्टमें चल रहा था। उनके बैरिस्टरको आनेमें ज़रा देर हुई। वहींके दो बैरिस्टर मित्र लोकमान्यके पास आकर बोले, "आपके बैरिस्टरको आनेमें देर हो रही है तो कोई बात नहीं, हम लोग आपकी मददके लिए तैयार हैं।"

तिलकने हँसते हुए कहा, "किसी षोडशीके लिए बीस-बाईस सालके पूर्ण युवककी जगहपर दस-दस सालके दो किशोर वर क्या कभी चल सकते हैं?"

बोलती मशीन

एक भोजमें टामस अलवा एडीसनका परिचय कराते वक्त उनके बहु-संख्यक आविष्कारोंका उल्लेख किया गया, खसूसन उनकी बोलती मशीन का। इसके बाद वृद्ध आविष्कारक उठकर खड़े हुए, मुसकराये और मृदुता से बोले, "कद्रदानोंका शुक्रिया। लेकिन एक बात मुझे दुरुस्त कर देनी होगी। बोलती मशीनका आविष्कारक तो खुदा है। मैंने तो सिर्फ वह बोलती मशीन बनायी है जो कि चुप की जा सकती है।"

शर्त

वाशिंग्टनकी एक मेट्रन दावा करती थी कि मैं प्रेसीडेण्ट कूलिजको बोलनेपर मजबूर कर सकती हूँ। एक बार एक दावतमें उसने अपने दावे को सच्चा कर दिखाना चाहा।

अपनी माकूलोई जतलाते हुए वह बोली, "मिस्टर प्रेसीडेण्ट, मैंने शर्त बदी है कि मैं आपसे चार शब्द तो बुलवा ही लूँगी।"

"आप हार गयीं," कूलिजने जवाब दिया।

मित्र

मुलाक़ात

दो दोस्त एकाएक मिले, पहलेने दूसरेसे कहा, "कमाल है ! पहले तो मुझे लगा कि तू है। पर अब देखता हूँ कि तू नहीं तेरा भाई है।"

कुत्ता

"आ जाओ आ जाओ। कुत्तेसे डरो नहीं।"

"क्यों, क्या यह काटता नहीं ?"

"यही तो मैं देखना चाहता हूँ—मैं इसे आज ही खरीद कर लाया हूँ।"

उमर ख़य्याम

दो नवयुवक मित्र अपने दफ़्तरके अफ़सरके यहाँ निमन्त्रित थे। भोजनके समय बातचीतके दौरानमें मेज़बानने उनमें-से एकसे पूछा, "आपको उमर ख़य्याम पसन्द है ?"

नवयुवक बोला, "ठीक, मगर मुझे तो ह्विस्की ज़्यादा पसन्द है,"

यहाँ बात खत्म हो गयी। पर रास्तेमें दूसरा बोला, "जब तू किसी बातको समझता नहीं तो साफ़ क्यों नहीं कह दिया करता कि मुझे मालूम नहीं ? अरे मूर्ख, उमर ख़य्याम शराब नहीं, एक क़िस्मका मुरब्बा होता है !"

चाँद-सूरज

दो चीनी बहस कर रहे थे—चाँद और सूरजमें कौन ज्यादा उपयोगी है।

एक बोला, "निःसंदेह सूरज ! देखो न कितना प्रकाश देता है !"

दूसरा तड़ाकसे बोला, "अरे मूरख, पर वह दिनमें ही तो प्रकाश देता है। उपयोगी तो चाँद है जो रातमें उजाला देता है।"

उत्तर-प्रत्युत्तर

"इस सवालका जवाब तो गधा भी दे सकता है।"

"इसी लिए मैंने खुद न देकर तुमसे पूछा था।"

चार्ज

दो दोस्त बरसों बाद मिले। "अरे, तू कहाँ गया था ?" एकने पूछा।

"जेलमें"

"कबतक रहा !"

"दो महीने।"

"क्या चार्ज (आरोप) था ?"

"वहाँ ! चार्ज-वार्ज कुछ नहीं पड़ता। सब मुफ्त मिलता है।"

अकेले-ही-अकेले

एक महाशय अपने कमरेमें आनन्दसे बैठे हुए लड्डू खा रहे थे। इतने ही में उनके एक खास दोस्त आ पहुँचे और बोले, "क्यों भाई ! अकेले ही अकेले क्या माल उड़ा रहे हो ?"

महाशयजी जल-भुनकर बोले, "जहर खा रहा हूँ।"

दोस्त : "तब तो इस दुनियामें मेरा जीना भी फ़िजूल है।" यह कहते हुए उनके सब लड्डू खा गया।

यारोंकी महफ़िल

एक मेम साहिबाके दोस्तोंका सर्किल बहुत विशाल था। उसके पतिने इस बेहूदगीका ख़ात्मा करना चाहा। चुनांचे एक दिन मिस्टर ब्राउन नामक एक सम्बन्धित व्यक्तिको यह ख़त मिला,

"प्रिय महाशय,

मेरी बीबीके साथ आपके ताल्लुक़ातकी मुझे पूरी जानकारी है। कल दोपहरके ठीक बारह बजे मेरे दफ़्तरमें आयें। आपका, यू० बी० स्मिथ।"

ब्राउनने जवाब लिखवाया,

"प्रियवर स्मिथ, तुम्हारा परिपत्र (सर्क्यूलर लैटर) मिला, मैं महासभाकी बैठकमें ठीक वक़्तपर पहुँच जाऊँगा।"

खुर्राटे

"तूने मुझे भरी नींदमें जगा दिया !"

"इह ! तेरे खुर्राटे ही मुर्दों तक को जगा देनेके लिए काफ़ी हैं।"

ख़त मिला ही नहीं

सरला : "तरला, तूने ख़तका जवाब क्यों नहीं दिया ?"

तरला : "तेरा ख़त मुझे मिला ही नहीं, जवाब कैसे देती ? दोयम, उसमें लिखी हुई कोई बात जवाब देने लायक़ नहीं थी, जवाब क्या देती ?"

विसंवाद

"यहाँ भूलेश्वरमें तू आँखें खुली रखना।"

"क्यों ?"

"बन्द करके चलेगा तो महा बेवकूफ़ दिखेगा।"

आवाजें

एक स्कावर्मेन अपने दोस्तसे बोला,
"मेरे सरमें सांय सांयकी आवाज़ होती रहती है।"
"तुम्हें इसकी वजह मालूम है ?"
"नहीं तो।"
"क्योंकि वह खाली है।"
"तुम्हारे सरमें तो ऐसा नही होता ?"
"क............भी न........ईं !"
"तुम्हें इसकी वजह मालूम है ?"
"नही तो।"
"क्योंकि वह ठसा हुआ है।"

भयंकर प्रियंकर

सभापति महोदय समारोप करते हुए गैर-माक़ुलगुज़ार शैलीमें बोले, "हमारे चिर-परिचित अज़ीज़ दोस्त हमारे दर्मियान चालीस सालसे रहते आये हैं, अभी भी हमारे साथ रहे हैं, और वे कहते है कि वे आगे भी सुदीर्घ काल तक हमारे बीच रहनेकी आशा रखते है। सज्जनो, मुझे सिर्फ यही कहना बाकी रह जाता है कि हम लोग उत्सुकतापूर्वक उस दिनकी प्रतीक्षा करते रहें जबकि हम उनकी समाधि भी यही बनायें।"

कमसिन

"मैं छब्बीस वर्षकी थी, तबसे मैंने किसीको अपनी सही उम्र नहीं बतायी।"

"कभी-न-कभी तो बताओगी ही।"

"नहीं, जब पन्द्रह वर्ष तक छिपाये रह सकी, तो सदा गुप्त रखना क्या मुश्किल है।"

मदद

"आज शाम तक अगर दो हजार रुपयोंका इन्तजाम न कर सका तो वेइज्जतीसे बचनेके लिए मुझे ज़हर पी लेना पड़ेगा ! तू मेरी मदद कर सकता है दोस्त ?"

"क्या करूँ ? मेरे पास तो एक बूँद भी नहीं है !"

बन्दर

"देख रमेश, यहाँ आ। इस शीशेमें देखेगा तो तुझे एक बन्दर दिखायी देगा।"

"शीशेमें देखे बग़ैर भी दिखायी दे रहा है !"

अनर्थ !

"कर्नल, तुम शादी क्यों नहीं कर लेते ?"
"दोस्त, सच बात यह है कि औरतोंसे डर लगता है।"
"मेरी बात इससे बिलकुल उलटी है।"
"औरतें तुमसे डरती हैं ?"

बैरंग ख़त

एक आदमीको अपने दोस्तोंको मज़ाकमें तंग करनेकी बड़ी आदत थी। उसने एक दिन अपने मित्रके पास बैरंग चिट्ठी भेजी जिसमें सिर्फ़ इतना ही लिखा, "मैं अच्छी तरह हूँ, घबरानेकी कोई बात नहीं।" उस मित्रने जवाबमें एक बड़ा-सा बैरंग पार्सल भेजा। जब उस आदमीने पार्सल खोला तो उसमें एक बड़ा पत्थर निकला जिसपर एक पुरज़ा चिपका हुआ था—"पत्र पाकर मेरे मनसे इतना बड़ा बोझ उतर गया !"

मरनेकी खबर

प्रमोद (फोनपर). "प्रमोद, तूने आज मेरे मरनेकी खबर अखबारमें पढ़ी या नहीं ?"

प्रमोद : "पढ़ी तो। पर तू बोल कहाँसे रहा है ?"

ᑕ

जन और धन

"ग्लोरिया, अगर तुझे प्रेम और पैसेमें चुनाव करना पड़े तो तू क्या चुने ?"

"शायद प्रेम·········मैं हमेशा गलत काम जो करती आयी हूँ।"

पागल

शमा : "शम्स मेरे पीछे पागल है।"

परीना : "इसमें तुम्हारी क्या तारीफ है—वह तो तुमसे मिलनेसे पहले भी पागल ही था।"

मौतका सामना

प्रेमिका : "तुम कहा करते हो कि तुम मेरे लिए मौतका भी सामना कर सकते हो। अच्छा जरा इस साँड़के सामने तो खड़े हो जाओ।"

प्रेमी : "लेकिन अभी मरा कहाँ है यह साँड।"

सौभाग्यवान्

"आप प्रेममें सौभाग्यवान् व्यक्तिको क्या कहते हैं ?"

"कुँवारा"

पाषाण-हृदय

प्रेमी : "तुम्हारा दिल पत्थरको तरह सख्त है। इससे बुरी बात क्या हो सकती है ?"

प्रेमिका : "हो सकती है ! दिमाग़का पिलपिला होना।"

कैसे

"प्रिये, भला मैं तुम्हें कैसे छोड़ सकता हूँ ?"

"टैक्सीसे या बससे !"

मूर्ख आदमी

प्रेमी : "प्रिय, हम अपनी शादीकी बात गुप्त ही रखनी चाहिए।"

प्रिया : "हाँ, मगर मैं ओलगासे जरूर कहूँगी ! वह कहती थी कि, शायद ही कोई बेवकूफ मुझसे शादी करेगा।"

समानता

प्रेयसी : "यह बेवकूफ-सा आदमी कौन है ?"

प्रेमी : "मेरा भाई है !"

प्रेयसी : "ओ ! माफ करना मैं समानता न देख सकी !"

निराश

"तुम प्रेममें कभी निराश हुए हो ?"

"दो बार ! एकने मुझे तलाक़ दे दिया, दूसरीको मैं तलाक़ न दे सका।"

कामना

कुँवारा : "कभी-कभी मुझे विवाहित जीवनका आनन्द पानेकी इच्छा होती है।"

विवाहित : "मुझे भी।"

प्रिया-वर्णन

"उसकी आँखें आमकी-सी फाँकें हैं, उसके गाल सेवके मानिन्द हैं, उसके दाँत अनारके-से दाने हैं, उसके होंठ-रसभरीकी तरह हैं, उसके शरीर की कान्ति शफ़तालूकी-सी है। यह है मेरी प्रियतमा !"

"नहीं—यह तो फ्रूट सलाद है !"

तुम्हारी जयमाला

समानाधिकार-पूर्तिकी खातिर प्रियतमने अपनी प्रियतमाका बैंकमें खाता खुलवा दिया, पहली ही बार जब वह चैक भुनाने गयी तो क्लर्कने उसे 'ऐण्डोर्स' करनेके लिए कहा, उलझनमें पड़कर बोली, "ऐण्डोर्स माने ?"

"जैसे तुम खतोंपर दस्तखत करती हो वैसे ही चैकके पीछे करो !"

गम्भीरतापूर्वक उसने हस्ताक्षर किये, "प्रति पल तुम्हें याद करती, तुम्हारी, जयमाला"

चुम्बन

उपदेशक : "तुम लोगोंको मालूम है कि एक बारके चुम्बनसे चालीस हज़ार प्राणघातक कीटाणु एक दूसरेके मुखमें चले जाते हैं !"

नयी जोड़ी : "जी, पर हम उसके लिए चालीस लाख बार मरनेको तैयार हैं !"

नहींमें हाँ

मेरी : "क्यों एथेल, रोती क्यों हो ?"

एथेल : "नहीं, कुछ नहीं, कल जैकसे मेरी लड़ाई हो गयी और मैंने उसे खत लिखकर भी भेज दिया कि, खबरदार, अब कभी मुझसे बोलनेकी हिम्मत न करना और न खत लिखनेकी। मगर उस हत्यारेमें इतनी भी मलमनसाहत नहीं कि मेरे खतका जवाब तो देता !"

पेन्सिल

"एक पेन्सिल दीजिए।"

"सख्त या कोमल ?"

"कोमल, प्रेमपत्र लिखनेके लिए चाहिए !"

सख्त दिल

"प्यारे !"

"हाँ प्यारी।"

"तुम्हारा दिल कितना सख्त है !" प्रेमिकाने बायें कन्धेके नीचे प्रेमीकी छातीपर अपना सर टिकाते हुए फ़रियाद की।

"यह मेरा दिल नहीं।"

"तो............?"

"मेरा सिगरेट केस है, जिसपर अपना सर टिका रखा है।" प्यारेने कहा।

फ़ॉलिंग इन लव

एक बार कविवर टैगोरके पास एक प्रेमी युगल गया। जाकर वन्दन किया। वे उनकी सर्द आहों, ज़र्द-रङ्ग, अश्कबारी, इन्तज़ारी, बेक़रारी, वग़ैरह प्रेम लक्षणोंसे उनकी मनोदशा समझ गये! पूछने लगे, "क्या बात है?"

"गुरुदेव, हम प्रेममें पड़ गये हैं।"

कवीन्द्रने एक गहरा निश्वास छोड़ा और गम्भीरतासे बोले, "इसीका मुझे दुःख है, मैं चाहता हूँ कि तुम-सरीखे स्त्री-पुरुष प्रेममें 'पड़ने' के बजाय प्रेममें 'चढ़ो'। जो व्यक्तिको गिराता है वह सच्चा प्रेम नहीं है। सच्चा प्रेम प्रेरणात्मक और ऊँचा चढ़ानेवाला होता है।"

अमर प्रेम

"क्या तुम मुझसे प्रेम करते हो?"

"हाँ, प्रिये।"

"क्या तुम मेरे लिए जान दे दोगे?"

"नहीं, मेरा प्रेम अमर है।"

मधुर स्वप्न

मिस मेरिया : "डाक्टर, मैं नशेकी-सी हालतमें रहती हूँ; दिलमें एक मीठा-दर्द होता रहता है; रातको सपनोंमें एक सुन्दर नवयुवक दिखा करता है जिसके इरादे शरीफ़ाना नहीं मालूम होते।"

डाक्टर : "ये लो, नींदकी गोलियाँ, रोज़ रातको सोते वक़्त एक खा लिया करना, चार दिन बाद तबीयतका हाल बताना !"

चार रातके बाद मिस मेरियाने दास्ताने-दर्देदिलकी रिपोर्ट यूँ दी, "डाक्टर, और तो सब ठीक; मगर वह नौजवान तो अब सपनोंमें दिखता ही नहीं !"

प्रेम-प्रतिक्रिया

"तुम कहते हो तुम्हारी माशूक़ाने तुम्हारे प्रेमको आंशिक रूपमें ही लौटाया ?"

"हाँ, उसने प्रेम-पत्र तो सब लौटा दिये मगर अँगूठी रख ली।"

लाहौल बिला क़ूवत !

पिता (अपने लड़केसे खफ़ा होकर) : "क्यों, तुम कल रात कहाँ थे ?"

लड़का : "कुछ लड़के मेरे मोटरपर चढ़नेके लिए रोज़ ज़िद करते थे, इसलिए तंग आकर उन लोगोंको ज़रा हवा खिलाने ले गया था।"

पिता : "अच्छा, तो अब उन लोगोंसे कह देना कि आइन्दा मोटरमें अपनी चूड़ियोंकी टूटन न छोड़ जाया करें !"

मस्का

खुशामदी प्रेमी (कमरेके भीतर आते हुए) : "प्रिये, तुम तो हारमोनियम खूब बजाती हो ! मैं बाहर सुन रहा था।"

प्रेमिका : "मैं बजाती नहीं थी, हारमोनियमकी धूल झाड़ रही थी !"

परिस्तान

"मैं होटल-हृदय आदमी हूँ—एक औरके लिए गुंजाइश रखता हूँ !"

भगीरथ

"तुम्हारी खातिर प्रिये, मैं पृथ्वीके छोर तक जाऊँगा।"
"यह तो ठीक, पर वहाँ क़याम भी कर सकोगे ?"

आत्महत्या

प्रेयसी : "डार्लिंग, अगर मैं तुम्हारे साथ शादी न करूँ तो क्या तुम आत्महत्या कर लोगे ?"

डार्लिंग : "मैं तो हमेशा यही करता हूँ।"

घरपर

प्रेयसी : "अगले इतवारको मैं घरपर ही रहूँगी।"

डाँवाडोल प्रेमी : "मैं भी घरपर ही रहूँगा।"

प्रेम

"प्रेम नितान्त मूर्खता है।—और ईश्वर करे मैं एक बार फिर मूर्ख बन जाऊँ !"

कार्य-कारण भाव

स्मिथ साहबकी दुख्तर एक रोज़ रातको एक नौजवानके साथ बड़ी देरसे लौटी।

मिस्टर स्मिथ : "इतनी रात गये मेरी लड़कीको लेकर आनेके क्या मानी ?"

नौजवान : "इनके पैसे खत्म हो गये थे !"

स्त्री

०

मुश्किल

चीनी चित्रलिपिमें 'मुश्किल' शब्द एक छप्परके नीचे दो स्त्रियां चित्रित करके लिखा जाता है।

सिंगार

"स्त्रियां सिंगारमें इतना वक़्त क्यों लगाती हैं!"

"क्योंकि वे जानती हैं कि पुरुषकी दर्शन-शक्ति विचार-शक्तिसे अधिक होती है।"

परीषह जय

"स्त्रियां खामोशीसे बर्दाश्त करती हैं।"

"हाँ, मेरा खयाल है कि जब वह खामोश हों तो समझ लो कि बर्दाश्त कर रही हैं।"

चिरयौवना

मजिस्ट्रेट : "श्रीमती ब्राइट, आपकी उम्र क्या है?"

मिसेज ब्राइट (मुसकराकर) **:** "बीस—और कुछ महीने।"

मजिस्ट्रेट : "कितने महीने?"

मिसेज ब्राइट : "दो सौ।"

चाभी

"कहिए, आपका वह लोहेका बक्स खुल गया ?"

"हाँ भाई, बड़ी तरकीबसे खुला।"

"क्या लुहार बुलवाया था ?"

"नहीं जी, जब सब तरहसे हार गया तब मैंने कह दिया कि इसमें मेरी पहली प्रेमिकाके पत्र रखे हुए हैं। इतना सुनते ही मेरी बीबीमें न जाने कहाँसे इतनी ताकत आ गयी कि उसने एक ही झटकेमें उसे खोल दिया।"

चिरयौवन

अधेड़ औरत : "देखो उस चुड़ैलको, मुझसे सन् सत्तावनके बलवेकी बातें पूछती है !"

तीसरी औरत . "जाने भी दो, आप उसकी बातका बुरा न मानें। वह इतना भी नहीं समझती कि उस जमानेकी बातें आप आज तक कैसे याद रख सकती हैं !"

तोबा

"तुमने अपने पतिको रातको बाहर रहनेकी आदत कैसे छुड़ायी ?"

"एक रातको वो देरसे आये। मैं अन्दरसे ही बोली, 'क्या तुम हो प्यारे ओरलेण्डो ?' मगर मेरे पतिका नाम जेम्स है।"

आरोह-अवरोह

"आपने ग़ौर फ़रमाया है कि जब औरत कोई चीज़ चाहती है तो अपनी आवाज़को किस क़दर मन्द कर देती है ?"

"जी हुज़ूर, मगर आपने देखा है कि जब नहीं पाती तो उसे कैसी बुलन्द कर देती है ?"

ऊँची एड़ी

क्रिस्टोफ़र मोरलेका कहना है कि ऊँची एड़ियोंकी आविष्कारक कोई ऐसी औरत रही होगी जिसे माथेपर चूमा गया होगा।

हसीन मूर्ख

पुरुष : "ईश्वरने स्त्रीको रूपके साथ इतनी मूर्खता क्यों दी ?"

स्त्री : "रूप इस लिए दिया कि पुरुषको आकृष्ट कर सके, मूर्खता इसलिए दी कि पुरुषकी ओर आकृष्ट रह सके।"

हविस

अकबर : "बीरबल, सुना है कि तुम्हारी स्त्री बड़ी खूबसूरत है।"

बीरबल : "जहाँपनाह, मुझे भी ऐसा ही गुमान था, लेकिन बेगम साहिबाको देखकर मैं उसे बिलकुल भूल गया हूँ।"

एक्सचेंज

एक देहाती कुछ अँग्रेज़ी भी पढ़ा हुआ था। एक बार जब वह शहरमें आया तो उसने एक जगह बड़ा साइनबोर्ड देखा, जिसपर लिखा हुआ था 'एम्प्लायमेण्ट एक्सचेंज।' दफ़्तरके अन्दर घुसनेपर एक बोर्ड देखा जिसपर लिखा हुआ था 'वीमेन्स एक्सचेंज'। वह इस बोर्डको कुछ देर तक घूरता रहा, फिर अन्दर घुस गया, वहाँ क्या देखता है कि एक महा मोटी स्त्री बैठी हुई है। उसने उस महिलासे पूछा, "क्या यह वीमेंस एक्सचेंज है ?"

"हाँ जी।"

"क्या आप ही एक्सचेंजपर हैं ?"

"जी हाँ, कहिए।"

"धन्यवाद ! मैं अपनी बीवीके साथ ही रहना पसन्द करूँगा"। इतना कहकर वह वहाँसे निकल भागा।

मेरा मुन्नू

मुन्नूकी माँने बड़ी अनिच्छासे अपने लाड़लेको स्कूल भेजा। उसने शिक्षकको बड़ी हिदायतें दीं,

"मेरा मुन्नू बड़ा नाजुक-मिजाज है," वह बोली, "उसे कभी भी न मारना। उसके पासवाले लड़केको तमाचा मार देना, इतनेसे ही मेरा मुन्नू डर जायेगा।"

आपसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई !

एक युवती महिला साहसपूर्वक एक ऐसी स्त्रीके पास गयी जिसे वह अस्पतालकी सुपरिण्टेण्डेण्ट समझ रही थी।

"क्या मैं कैप्टन रारासे मिल सकती हूँ?" उसने पूछा।

"क्या मैं पूछ सकती हूँ कि आप कौन हैं!"

"अवश्य! मैं उनकी बहन हूँ।"

"अच्छा! मुझे आपसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं उनकी माँ हूँ।"

आवाज़

स्त्री (अखबार पढ़ती हुई): "साइन्सदानोंने अब यह दिखला दिया है कि आवाज़ बीस हजार गुना बढ़ाई जा सकती है।"

पुरुष: "आवाज घटानेकी तरफ़ भी इन लोगोंने ध्यान दिया है?"

सौजन्य

एक देवीजी अपनी कारका अग्रभाग टूटी-फूटी हालतमें लेकर घर लौटीं। विवरणके दौरानमें अपने पतिको सोल्लास सुनाने लगीं, "और पुलिसमैनने तो अत्यन्त ही सौजन्य दर्शाया! कहने लगा, इरशाद फरमायें तो शहरके तमाम टेलिफोनके खम्भे हटवा दिये जायें।"

तुम्हारी दादी भी हो सकती है !

युवतियोंको 'मसाज' और 'मेक-अप' द्वारा अधिक सुन्दर और रूपवती बनानेके लिए अमेरिकामें 'ब्यूटीपार्लर' (सुन्दरताकी दुकानें) खुलने लगी हैं । उनमें एकके बाहर यह विज्ञापन लगा था,

"हमारे ब्यूटीपार्लरसे बाहर निकलती हुई स्त्रियोंपर सीटियाँ न बजाओ । मुमकिन है कि उनमें तुम्हारी दादी भी हो ।"

शक्ति

"पानीकी किस शक्लमें उसकी शक्ति सबसे ज्यादा होती है ।"

"स्त्रियोंके आँसूकी शक्लमें !"

खत-किताबत

एक साहब एक होटलको छोड़कर जाते वक़्त मैनेजरसे बोले, "देखिए, मेरे नामपर आनेवाली तमाम डाक मेरे नये पतेपर भेजते रहना; सिर्फ़ एक काली लम्बी औरतकी चिट्ठियाँ कचरेकी टोकरीमें फेंक देना ।"

मुझे पुरुष नहीं बनना !

प्रख्यात यूरोपियन लेखिका मेरी कोरेली कहती है, "मुझे किसी भाव पुरुष नहीं बनना; क्योंकि पुरुष हो गयी तो मुझे किसी-न-किसी स्त्रीसे शादी जो करनी पड़ेगी !"

स्त्रीके साथ बात

स्त्रीके साथ धर्मकी बातें करोगे तो वह जमुहाइयाँ लेने लगेगी; कला की बातें करोगे तो वह ऊबने लगेगी; विज्ञानकी बातें करोगे तो ऊँघने लगेगी; पर उसके कपड़ोंकी तारीफ़ शुरू करके देखो, उसका जी कानमें आकर बैठ जायेगा ।

अबला

कुछ कालेजियनोंने महात्माजीसे शिकायत की कि "इस बीसवीं सदीमें भी स्त्रियोंको अबला क्यूँ कहा जाता है ?"

"बला कहूँ तो भी तुम शिकायत करने हुए आओगे।"

पड़ोसिनें

पहली . "लो यह तेलकी शीशी, अपनी सिंगर मशीनमें डाल लेना ताकि शोर जरा कम हो।"

दूसरी : "ले जाओ, इसे तुम ही अपने रेडियोमें डाल देना जो कि आधी रात तक नींद हराम करता रहता है।"

झंझट

एक ग्यारह बच्चोंवाली स्त्रीसे उसके किसी मित्रने पूछा, "ये बच्चे तुम्हारे लिए परेशानीका बाइस तो नहीं होते ?"

"नहीं, परेशानीका नहीं, सिर्फ झंझटका कारण होते हैं। परेशानी दिली होती है, झंझट सिर्फ जिस्मानी," जननी बोली।

शान्ति शान्ति !!

दो औरतें खिड़कीके पास आमने-सामने बैठी हुई रेलमें सफर कर रही थीं। दोनोंमें भयंकर तू-तू-मैं-मैं होने लगी। एक चाहती थी खिड़की बन्द रहे क्योंकि उसे निमोनियाका शौक़ नहीं था। दूसरी कहती थी खिड़की खुली रहे क्योंकि वह घुटकर मरना नहीं चाहती थी। चख-चख चल ही रही थी कि टी. टी. आई. आ गया। पास बैठा हुआ एक सन्त्रस्त सद्गृहस्थ बोला,

"साहब, पहले खिड़की खुली रखिए ताकि एक खत्म हो; फिर खिड़की बन्द कर दीजिए ताकि दूसरीका दम निकले और तब जरा शान्ति मिले।"

फ़र्मां-बरदार

नौकर : "मेरी पत्नीने कहा है कि मैं आपसे तरक़्क़ी माँगूँ।"

मालिक : "बहुत अच्छी बात है। मैं अपनी पत्नीसे पूछूँगा तुम्हें तरक़्क़ी दी जाये या नहीं।"

गोपनीयता

"क्या तुम यह बात गुप्त रख सकती हो?"

"हाँ-हाँ, लेकिन अफ़सोस है कि जिनसे मैं यह बात कहूँगी वे उसे गुप्त नहीं रख सकेंगी।"

मासूम

"क्या तुम नहीं मानते कि वह कितनी अनजान है?"

"अनजान! ज़्यादातर विषयोंपर कमतर जाननेवाली उससे बढ़कर मैंने कोई औरत नहीं देखी!"

अशुद्धि

शिक्षक : "इस वाक्यमें क्या ग़लती है, 'घोड़ा और गाय खेतमें चर रही है'?"

विद्यार्थी : "स्त्रीका नाम हमेशा पहले आना चाहिए।"

हाई सोसाइटी

एक चतुर महिला किसी सार्वजनिक उत्सवमें निमन्त्रित हुई। उसे एक नेता और एक अभिनेताके बीच बिठाया गया। उसने इसे उच्च समाजमें घुसनेका अवसर बना देना चाहा चुनाँचे हँसती हुई बोली, "मैं तो पुराने क़रार और नये क़रारके बीचके वर्क़के मानिन्द लग रही हूँ।"

"देवीजी, वह वर्क़ तो कोरा होता है," अभिनेता बोला।

आदमजाद

चुनाव आन्दोलनमें एक स्त्री लैक्चर झाड रही थी,

"स्त्री न होती तो पुरुष आज कहाँ होता ?"

वो ज़रा रुकी; हॉलमें एक सिरेसे दूसरे सिरे तक एक सरसरी नज़र डालकर फिर बोलना शुरू किया,

"मैं पूछती हूँ, स्त्री न होती तो पुरुष आज कहाँ होता ?"

"वह अदनके बाग़में जामुनें खा रहा होता," श्रोताओंमें-से एक आवाज़ आयी।

देर आयद

"मैं कल अपनी पच्चीसवीं सालगिरह मना रही हूँ।"

"ज़रूर मनाओ बहन ! 'देर आयद दुरुस्त आयद।' "

शुभ-लाभ

मित्र : "यह शादी तुझे लाभदायक निकली मालूम होती है !"

नाटककार : "बहुत लाभदायक ! अपनी बीवीके पूर्वचरित्रपर मैंने अब तक तीन नाटक जो लिख डाले हैं !"

ज़बान

किसीने मिल्टनसे पूछा, "आप अपनी पुत्रीको कितनी ज़बानें सिखायेंगे ?"

"स्त्रीके लिए एक ही ज़बान काफ़ी है" कविने कहा।

माया

वृद्ध कुमार : "स्त्री धोखा है !"

युवती : "और आदमी किसी-न-किसी धोखेमें पड़ना ही रहता है !"

"नहीं, हवाई जहाजसे ।"

"मगर मुसाफ़िरोंके लिए अभी हवाई जहाज कहाँ चलता है यहाँसे ?"

"जब तक मेरी बीबीका शृंगार करना ख़तम होगा तब-तक चलने लगेगा ।"

धन्धा

सात लड़कों और पाँच लड़कियोंको एक अमेरिकन माँसे मर्दुमशुमारी वालेने पूछा, "आपका धन्धा ?"

इसने अपने छोकरोंकी तरफ़ इशारा करते हुए कहा, "औरत तो सिर्फ़ औरत है ।"

वागीश्वरी

"क्या तुमने कल सभामें मेरी स्त्रीका व्याख्यान सुना था ?"

"हाँ, एक दुबली और लम्बी औरत मंचपर खड़ी होकर कह तो रही थी कि मुझे अपने भावोंको प्रकट करनेके लिए शब्द नहीं मिलते ।"

"रहने दो, वह मेरी स्त्री नहीं थी ।"

भोजन-वसन

"वह पोशाक ऐसी पहनती है कि देखनेवालोंकी जान चली जाये ।"

"हाँ, और खाना भी वह ऐसा ही बनाती है ।"

उम्र

"तुम्हारी बहिनकी उम्र क्या है ?"

"पच्चीस वर्ष।"

"वह तो कहती थी बीस वर्ष।"

"वह भी ठीक ही तो कहती थी, पाँच वर्षकी उम्रमें तो उसने गिनना शुरू किया था।"

भाग्यवान् !

"कल रात मेरी पत्नीको स्वप्न आया कि उसने एक करोड़पतिसे विवाह किया है।"

"तुम भाग्यवान् हो भाई ! मेरी पत्नीको तो यह स्वप्न दिनमें ही आता रहता है !"

बड़प्पन

पहली : "मैं अपने ज़ेवरोंको क़ीमती रासायनिक पदार्थोंसे साफ़ करती हूँ...."

दूसरी : "मैं साफ नहीं करती, जब वे मैले हो जाते हैं तो उन्हें नौक-रानीको देकर दूसरे बनवा लेती हूँ"

○

शादी

●

इज़्तराब

"जॉन, क्या तुम मेरी लड़कीको वह चीज़ें देते रह सकते हो जिनकी उसे आदत पड़ गयी है ?"

"जी, ज़्यादा दिनों तक नहीं। इसीलिए मैं चाहता हूँ कि शादी जल्दी हो जाये।"

नाशादी

"जिस दिन मेरी पत्नी आयी उसी दिन मेरे यहाँ चोरी हो गयी।"

"मुसीबत कभी अकेली नहीं आती।"

ख़ुशनुमा सोसाइटी

मानव-समाज कैसा ख़ुशनुमा लगे अगर सब स्त्रियाँ विवाहिता हों, और सब पुरुष अविवाहित।

शिकंजा

"विदाके वक़्त यह दुलहिन ही क्यों रो रही है, दूल्हा क्यों नहीं रोता ?"

"वह तो दस मिनिट रोकर चुप हो जायेगी, मगर यह तो उसके बाद हमेशा रोता रहेगा।"

स्वार्थ

"सच-सच बताना—तुमने मुझसे शादी धनके लिए की थी या मेरे लिए ?"

"अपने लिए।"

शादी

"क्या तुम मानते हो कि शादी लॉटरी है ?"

"नहीं; लॉटरीमें तो चान्स भी होता है।"

ग़ैर जिम्मेदार

"अच्छा, तो मेरी लड़कीसे शादी करना तुम्हें मंजूर है ?"

"जी।"

"किस रोज करोगे शादी ?"

"यह मैंने पण्डितपर छोड़ दिया है।"

"विवाह सनातनी पद्धतिसे होगा या रजिस्टर्ड मैरिज होगी ?"

"यह मैंने शोभनाकी माताजीपर छोड़ दिया है।"

"विवाहके बाद तुम दोनों आजीविका कैसे चलाओगे ?"

"यह मैंने आपपर छोड़ दिया है।"

आशा

सम्युएल जॉनसनका कथन है कि दूसरी शादी अनुभवपर आशाकी विजय है।

दुर्गति

एक कुँवारा था। वह इतना बीमार रहा, इतना बीमार रहा, कि शादी-

वृद्ध-विवाह

एक अस्सी बरसका बूढ़ा बहादुर १६की एक लड़कीसे विवाह रचानेके लिए गिरजाघरमें आया। आकर पादरीको बताया, "कन्या यह रही।"

पादरी : "ओह! मैं तो समझा था आप इस बच्चीको नामकरण संस्कारके लिए आये हैं।"

•

दूर-दर्शन

लन्दनके रेन्ट-कन्ट्रोल आफ़िसमें किसीने अरजी दी कि "मुझे मकान दिलवाया जाये, मैं शादी करना चाह रहा हूँ।"

जवाब आया, "आप शादी तो कर सकते है मगर मकानके लिए इन्त-जार करना पड़ेगा।"

प्रार्थीने प्रत्युत्तर दिया, "मैने अरज़ी जान-बूझकर वक़्तसे काफ़ी पहले दी थी, ताकि शादीसे पहले मकान ज़रूर मिल जाये। मैं इन्तज़ार कर सकता हूँ, क्योंकि मेरी उम्र अभी सिर्फ़ ७ वर्ष की है।"

जूनी-पुरानी

"अख़बारमें अपनी शादीकी ख़बर पढ़कर बुलबुल बड़ी ग़ुस्सा गयी।"

"क्यों?"

"दम्पतिके फ़ोटूके नीचे पत्रने लिखा कि 'सुप्रसिद्ध' समाजसेविका कुमारी बुलबुलका विवाह कल श्री बिस्मिलके साथ सानन्द सम्पन्न हुआ। श्री बिस्मिल जूनी-पुरानी चीज़ोंका संग्रह करनेके बड़े शौक़ीन हैं।"

पसन्द

नवयुवक : "ऐडेना, उस नौजवानका क्या हुआ जो तुम्हारे लिए ख़ूबसूरत-ख़ूबसूरत फूल लाया करता था?"

ऐडेना : "उसने फूलवालीसे शादी कर ली।"

आश्चर्य

"ममी, तुमने डैडीसे शादी क्यों की थी ?"

"तुझे भी ताज्जुब होने लगा !"

भुक्त-भोगी

एक चिरपीडित पति स्वर्गमें आया तो क्या देखता है कि लोमड़ी वग़ैरह कितने ही जानवर चिकनी चमड़ी लिये ठिठुर रहे हैं और उसकी ओर एकटक देख रहे हैं।

उसने पूछा, "आप मुझमें इतनी दिलचस्पी क्यों दिखला रहे हैं ?"

एक बोला, "हम वह जानवर हैं जिनकी चमड़ियाँ तुम्हारी बीबीकी रूँएदार पोशाकोंके लिए उधेड़ी गयी।"

आदमी बोला, "ओ ! यह बात है। अगर मैं भी आपमें शामिल हो जाऊँ तो क्या आपको कोई ऐतराज है ?"

सेना

मैंने छह बच्चोंवाली विधवासे शादी की, पाँच बच्चे मुझे अपनी पहली बीबीसे थे। हमारी शादी हुए चार साल हो गये। इस दौरानमें तीन और हो गये। एक दिन मेरी बीबी दौड़ी हुई आयी और घबराती हुई बोली, "जरा जल्दी चलो, अहातेमें जंग मची हुई है, तुम्हारे बच्चे और मेरे बच्चे हमारे बच्चोंको मार रहे हैं !"

करनी-भरनी

नवयुवक : "श्रीमान्, आपकी पुत्रीने मेरी पत्नी बननेका निश्चय प्रकट किया है।"

पिता : "इसके लिए तो तुम्हीं अपराधी हो ! दिन-रात उसकी परिक्रमा काटते रहनेका नतीजा और होता भी क्या ?"

वर्थ-कन्ट्रोल

एक शादीशुदा नवयुवती अपनी नयी नौकरानीको खुश करनेके खयाल-से बोली,

"तुम यहाँ हर तरह आराम और सुखसे रहोगी। यहाँ तुम्हें तंग करनेके लिए बच्चे भी नहीं हैं।"

"पर मुझे तो बच्चे प्यारे लगते हैं! आप मेरे कारण अपनेको नियन्त्रणमें न रखें।"

दोस्तीमें खलल

पहली : "पुरुषोंमें तुम्हारा कोई जिगरी दोस्त भी है?"

दूसरी : "था तो, मगर........"

पहली : "मगर क्या हुआ? क्या मर गया?"

दूसरी : "नहीं, उसने शादी कर ली।"

पहली : "किससे?"

दूसरी : "मुझसे?"

खुशी

"मुझे खुशी है कि तुम्हारी शादी हो गयी।"

"तुम्हें खुशी क्यों हो रही है—मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"

क्लर्क

क्लर्क : "हुज़ूर, अगर आपको ग़ैर-मुहूलियत न हो तो मुझे अगले हफ़्तेकी छुट्टी अता फ़रमाइएगा।"

अफ़सर : "क्यूँ चाहिए छुट्टी?"

क्लर्क : "खुदावन्द, मेरी बीबी सुहागरात मनाने जा रही है, और मैं उसके साथ जानेका आरज़ूमन्द हूँ।"

विज्ञापन-छली

किसी पश्चिमी अख़बारमें एक विज्ञापन निकला—

"शादीसे पहले हर युवतीको क्या जानना चाहिए। सचित्र"

बड़ी भारी माँग हुई! हर एकके पास पाकशास्त्रकी एक किताब पहुँच गयी।

घरकी शादी

"तुम्हारे घरानेमें सबसे शानदार शादी किसकी हुई है?"

"सिर्फ़ मेरी बीबीकी।"

शादी

"मैं जानता हूँ शादी एक गम्भीर क़दम है।"

"क़दम नहीं मंज़िल! जिससे हर क़दमपर नाकमें दम आता है!"

नादानी

"पिताजी, मैं चाहता हूँ कि मेरी शादी हो जाये।"

"नहीं बेटे, अभी तुममें काफ़ी समझ नहीं आयी।"

"काफ़ी समझ कब आयेगी?"

"जब तुम यह ख़याल छोड़ दोगे कि मेरी शादी हो जाये।"

सुख

मित्र : "जब तुम अविवाहित थे तो बड़े दुखी थे, अब तो मज़ेमें हो? विवाहित जीवन कैसा होता है?"

नव विवाहित : "भाई, बहुत अच्छा होता है। पहले तो घर-बाहर सभी जगह दुःखी था; लेकिन अब तो घरसे निकलते ही सुख मालूम होता है।"

दुखद ज्ञान

एक नव-विवाहित दम्पतिको वहुत-सी चीज़ें भेंटमें मिलीं। उपनगरमें वे अपना घर वसाकर सुखसे रहने लगे। नज़रानोंका सिलसिला अभी जारी था। एक रोज़ उनके पास ड्रामेके दो टिकिट आये, साथमें एक पत्र भी था जिसमें लिखा था: "वताइए तो किसने भेजी है?"

नियत रात्रिको वे थ्येटर गये और वडी देरसे लौटे। यह देखकर उनको बड़ा धक्का लगा कि घरकी तमाम क़ीमती चीज़ें ग़ायव हैं!

ड्रॉइङ्-रूमकी एक टेवलपर यह पुरज़ा था—"अव आप जान गये।"

नाशादी

कॉलेजसे आया हुआ एक विद्यार्थी अपने घरसे आया हुआ पत्र पढ़ रहा था,

"मैं और तेरी माँ एक जगह वैठकर यह खत लिख रहे हैं। तू अव विवाह ज़रूर कर ले। गृहस्थाश्रमके सुखका क्या वर्णन करें!"

पुनश्च: "तेरी माँ अभी यहाँसे विना कारण ग़ुस्से होकर चली गयी है। मेरी सलाह माने तो शादी हरगिज़ न करना, ब्रह्मचारी ही इस दुनियामें सच्चा सुखी है।"

दूने पाठक

कवि सगर्व अपने मित्रसे वोला,

"मेरी कविताको अव दूने लोग पढ़ते हैं!"

मित्र: "अच्छा! तुम शादी कर लाये और मुझे खवर भी न दी?"

वोलती वन्द

"मैं कमसुख़न आदमी हूँ।"

"मैं भी शादीयाफ़ता हूँ।"

तलाकका कारण

वकील : "लेकिन क्या सुहागरातके रोज ही तलाक लोगी ? आखिर तुम लोगोंमें झगड़ा कब हुआ ?"

नयी दुल्हिन : "विवाहघरमें ही उसने रजिस्टरमें मुझसे बड़े अक्षरोंमें दस्तखत किये।"

सुहागरात

एक युगल सुहागरात मनाने जा रहा था। आनन्द-विभोर दूल्हेने एक टिकिट खरीद ली। उसकी दुल्हिनने याद दिलायी, "अरे, तुमने तो एक ही टिकिट खरीदी है।" तो नौशा मियाँ होशमें आकर बोले,

"तुमने ठीक याद दिलायी प्रिये! मैं अपनेको बिल्कुल भूल गया था।"

तलाक़

"उनके तलाक़का क्या कारण था ?"

"उनकी शादी।"

पूर्ति

"सुना है उन्होंने समानताके आधारपर शादी की है।"

"हाँ, वह आधा मदहोश था, वह आधी होशमें।"

चिरकुमारी

एक प्रौढ़ा कुमारीसे जब कोई उसके विवाहित न होनेपर दुःख प्रकट करता तो वह तिनककर कहती,

"गुर्रानेके लिए मेरे पास कुत्ता है, झूठी कसमें खानेके लिए तोता है, धुँआ उगलनेके लिए अँगीठी है, रात-भर घरसे बाहर रहनेके लिए बिल्ली है, मुझे पति किसलिए चाहिए ?"

जवाब-सवाल

ही : "मैं हफ़्तोंसे तुमसे एक सवाल पूछना चाहता रहा हूँ।"

शी : "और मैं महीनोंसे उसका जवाब लिये बैठी हूँ।"

अयोग्य वर

कन्याकी माँ : "मेरी लड़कीको गाना, बजाना, नाचना, तैरना और कार चलाना भी आता है।"

वरकी माँ : "पर मेरे लड़केको खाना पकाना, बरतन माँजना, कपड़े धोना और बच्चे खिलाना नहीं आता।"

बख़ुशी

पिता : "बेटी, उस युवकने तेरा पाणिग्रहण करनेकी इजाज़त चाही, मैंने अनुमति दे दी है।"

लड़की : "पर पिताजी, मैं माँको नहीं छोड़ना चाहती।"

पिता : "यह मैं जानता हूँ, बिटिया, मैं तुम्हारी ख़ुशीमें बाधक नहीं बनूँगा, अपनी माँको भी अपने साथ लेती जाओ।"

रजत-लग्न (सिलवर-मैरिज)

"भई, यह रजत-लग्न क्या होती है जिसे आज हम यहाँ देख रहे हैं?"

"ओ आप नहीं जानते ! मेरे चाचा और चाची बिना अलग हुए २५ वर्ष तक साथ रहे हैं।"

"अहा ! और अब शादी कर रहे हैं !! कमाल है !!"

शादीका लैसन्स

ही : "शादीके लैसन्समें मेरा क्या ख़र्चा पड़ेगा ?"

शी : "दो डालर, और ज़िन्दगी भर तककी आमदनी।"

विचित्र बिल

बोस्टन शहरके एक कुँवारेने उसके साथ शादी करनेसे इनकार करनेवाली तीन स्त्रियोंको अपनी मिल्कियत बाँट देनेके लिए लिखा और बतलाया कि, "अगर वे मेरे साथ शादी कर लेती तो अविवाहित जीवनकी सुख-शान्तिका अनुभव न कर सकता।"

चर्म-योगी

ही : "मुझे ताज्जुब होता है कि औरतें अपने दिमाग़की अपेक्षा अपने रूपपर क्यों ज़्यादा ध्यान देती है?"

शी : "क्योंकि मर्द चाहे कितना ही बेवकूफ हो, अन्धा नहीं होता।"

द्रव्य-दारा

"तुम कितनी आमदनीसे मेरी पुत्रीकी परवरिश करोगे?"

"पाँच हज़ार सालानापर।"

"ओ, यह बात है, तब वो पाँच हज़ारकी उसकी निजी आमदनीको मिलाकर तुम लोग शानसे····"

"उसे मैंने हिसाबमें ले लिया है।"

भरी परी

ही : "शादीके वक़्त मैंने समझा था कि तुम परी हो।"

शी : "सो तो साफ़ ज़ाहिर है। आपने सोचा था कि मैं कपड़े-लत्तो के बग़ैर भी चला लूँगी।"

स्वर्गमें शादी

शिशु : "पिताजी, स्वर्गमें शादियाँ क्यों नहीं होती?"

पिता : "बेटा, शादियाँ हों तो फिर वह स्वर्ग ही न रहे।"

दो फ़ैसले

पहली : "मैंने फ़ैसला कर लिया है कि जबतक २५ वर्षकी नहीं हो जाऊँगी, शादी नहीं करूँगी।"

दूसरी : "और मैंने फ़ैसला कर लिया है कि जबतक शादी न कर लूँगी २५ वर्षकी होऊँगी ही नहीं।"

सूची

प्रेमी : "किसी दिन मेरी शादी तुम्हारे साथ हो जाये तो कैसा अच्छा हो!"

नटी : "अच्छी बात है, मैं तुम्हारा नाम अपनी विवाह-सूचीमें लिख लूँगी।"

दबाव

पिता : "अगर तुमने उस नर्तकीसे प्रेम करना न छोड़ा तो मैं तुम्हारा माहवार खर्च भेजना बन्द कर दूँगा।"

लड़का : "अगर आपने उसे दूना न कर दिया तो मैं उससे शादी कर लूँगा।"

दो बटे तीन

"तो चची ईथिलने शादी ही नहीं करायी ?"

"एक बार उसकी दो तिहाई शादी हो गयी थी। वह थी, पुरोहित था, पर उसका होनेवाला पति आया ही नहीं।"

सपना

"क्या तुम सपनोंमें विश्वास करते हो ?"

"विवाह होनेसे पहले करता था, पर अब नहीं।"

शादी न करना !

एक प्रोफ़ेसर साहब अपनी शादीके लिए जानेवाले थे। मगर ट्रेन चूक गये। चुनांचे उन्होंने अपनी होनेवाली बीवीको तार दिया, "गाड़ी चूक गयी है, जबतक आ न जाऊँ शादी न करना।"

विवाहित

"आप कुँवारेकी बजाय विवाहित आदमीको अपनी मुलाज़िमतमें क्यों रखना चाहते हैं ?"

"क्योंकि मेरे भला-बुरा सुनानेपर विवाहित आदमी भड़कता नहीं।"

शादी या बरबादी

प्रेमिका : "प्यारे ! तुम्हारे दुःखोंमें साथ देना मेरा परम सुख होगा।"

प्रेमी : "मगर प्रिये, मुझे तो कोई दुःख नहीं है।"

प्रेमिका : "अभी नहीं। जब मेरे साथ तुम्हारी शादी हो जायेगी तबकी बात कहती हूँ।"

नम्बर प्लीज़

यह : "ज़रा मेरा तात्पर्य तो समझो ! मैं....मैं...मैं तुम्हारे साथ शादी करना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे बच्चोंकी माँ बनो।"

वह : "कितने बच्चे हैं आपके ?"

सह-शिक्षा

"कोई ऐसी अच्छीसे-अच्छी संस्था बताइए जहाँ स्त्री-पुरुष साथ-साथ शिक्षा पाते हों।"

"विवाह।"

सम्यक् बुद्धि

पुत्र : "पिताजी, कल मैंने सपनेमें देखा कि मेरा विवाह हो रहा है; उस समय एकाएक मैं विवाह-वेदीसे उठ बैठा और कहने लगा, 'मैं विवाह नहीं करूँगा' और फिर मैंने विवाह नहीं किया।"

पिता : "इसका अर्थ यह है कि सोतेमें तुम्हारी बुद्धि जागतेकी बनिस्बत ज़्यादा ठीक रहती है।"

दूसरी शादी

"तुम अपनी दूसरी शादी क्यों नहीं कर लेते ?"

"इसके चार कारण हैं।"

"वे क्या ?"

"तीन लड़कियाँ और एक लड़का।"

विवाहकी शर्त

एक बम्बइया नौजवान अपने दोस्तसे बोला, "जो खोली मिले तो फ़ौरन् विवाह कर लूँ।"

उसके दोस्तने सलाह दी, "पहले शादी तो कर ले, फिर ससुरके यहाँ ही डेरा डालना न।"

"अरे, यह नहीं हो सकता; मेरे होनेवाले ससुर अपने ससुरके यहाँ फैले हुए हैं !"

वापस

"तुमने अपनी सगाई क्यों तोड़ दी ?"

"हम एक मकान देख रहे थे, मेरी होनेवाली सास बोली कि यह तीन आदमियोंके लिए छोटा रहेगा, यह सुनकर मैंने शादीका खयाल छोड़ दिया।"

जीवन-तत्त्व

" 'रुको, देखो, सुनो' इन तीन शब्दोंमें ज़िन्दगीकी सारी फ़िलॉसफ़ी समायी हुई है।"

"कैसे ?"

"तुम एक सुन्दरीको देखकर रुकते हो, उसे देखते हो; और उसके प्रेममें पड़कर शादी करके ज़िन्दगी-भर उसे सुनते रहते हो।"

सुखका दिन

"मैं तुम्हें मुबारकबादी देना चाहता हूँ। आजका दिन तुम्हारे सुख-पूर्ण दिनोंमें-से एक है।"

"लेकिन मेरी शादी तो कल है।"

"इसलिए तो कहता हूँ कि आजका दिन तुम्हारे सुखपूर्ण दिनोंमें-से एक है।"

फ़ारवर्ड

एक पादरी साहब अपने रविवारीय प्रवचनके बाद गिरजाघरमें बोले, "अब जो लोग विवाहके पवित्र बन्धनमें बँधना चाहते हैं, आगे आ जायें।"

तेरह औरतें और एक आदमी वेदीके पास आकर खड़े हो गये।

महाकल्याण

भावी पत्नी : "प्रियतम! हमारी शादीपर मेरे पिता दस हज़ारका चैक देनेवाले हैं।"

भावी पति : "तब तो हम शनिवारकी सुबह ही शादी कर डालें।"

"क्यों ?"

"क्योंकि रविवारको बैंक बन्द रहता है।"

महाजागरण

"जब हमारी शादी हो गयी, तो मैं अपने पतिको हर-सुबह चूमकर जगाती थी।"

"और अब ?"

"अब तीन महीनेके बाद वे अलार्म घड़ी ले आये हैं।"

शान्ति-मार्ग

"तुम कहते हो कि बीबीसे तुम्हारा कभी झगड़ा नहीं होता ?"

"कभी नहीं, वह अपने रास्ते जाती है और मैं उसके रास्ते जाता हूँ।"

लम्प सम

"समझमें नहीं आता कि तुम अपने पतिसे पैसे कैसे ले लेती हो !"

"आसानीसे ! मैं सिर्फ़ कहती हूँ 'मैं तो मायके जाती हूँ', और वह फ़ौरन् भाड़ा मेरे हाथपर रख देता है।"

हार

वक्ता : "कोई आदमी ग़लतीपर हो और ग़लती मान ले वह अक़्लमन्द है, लेकिन जो आदमी सही होनेपर भी अपनेको ग़लत मान ले वह–"

"शादीयाफ़्ता है," श्रोताओंमें-से मन्द आवाज़ आयी।

बदतर

मेरिया : "मैंने विलियमसे शादी करनेका फ़ैसला कर लिया है।"

ग्लोरिया : "क्या कहती हो ! वह 'डबल लाइफ़' बसर न करें तो शर्त बद लो।"

मेरिया : "लेकिन अगर मैंने उससे शादी न की तो मुझे तो 'सिंगल लाइफ़' बसर करनी पड़ जायेगी। यह तो उससे भी बदतर बात होगी।"

विस्मरण

एक बहु-विवाहित हॉलीवुड अभिनेतासे एक सुन्दरी मिलने आयी। बोली, "मुझे भूल तो नहीं गये न ? दस वर्ष हुए आपने मुझसे कहा था कि मेरे साथ शादी कर लो !"

"यूँ के ?" अभिनेताने जम्हाई लेते हुए कहा, "फिर की थी क्या आपने मुझसे शादी ?"

शुभ

"क्या आपके विचारसे शादीका टालना अशुभ है ?'

"टालते ही रह सकें तो अशुभ नहीं।"

सुधार

शोहर (लड़ाईके बाद तानेसे) : "मैं बड़ा बेवकूफ़ था कि तुमसे शादी की।"

बीबी : "मैं यह जानती थी, मगर मेरा ख़याल था कि तुम शायद सुधर जाओगे।"

पति

"मैं किसी विधवाका दूसरा पति होना कभी पसन्द नहीं करूँगा।"

"मैं तो पहले पतिकी बजाय दूसरा पति होना ही पसन्द करूँगा।"

कालगति

पिता : "बेटी, उसके साथ शादी करनेका ख़याल छोड़ दो वह तो सौ रुपये महीने भी नहीं कमाता।"

बेटी : "लेकिन पिताजी पारस्परिकतामें तो महीना चुटकी बजाते गुज़र जाता है।"

परिचय-प्राप्ति

"देखा इनको ? दो हफ़्तेकी भी जान-पहचान न होगी कि शादी रचा रहे हैं !"

"परिचय प्राप्त करनेका यह भी एक तरीक़ा है।"

सीमा

आशिक (भावावेशमें) : "लीना, क्या तुम मेरे साथ शादी करोगी ?"

लीना : "ज़रूर"

यह सुनकर प्रेमी मौनके संसारमें खो गया, आखिर अकुलाकर लीना बोली,

"प्रिय ! तुम कुछ बोलते क्यों नहीं ?"

आशिक : "मेरे खयालसे बहुत कुछ बोला जा चुका है।"

सिद्धान्त

शादीसे पहले बच्चोंकी परवरिशपर मेरे पास छह सिद्धान्त थे, परन्तु अब मेरे यहाँ छह बच्चे हैं—और कोई सिद्धान्त नहीं।

नफ़ा-नुक़सान

पत्नी : "अब मुझे इत्मीनान हुआ—उसने मेरे बापका धन देखकर ही मुझसे विवाह किया था।"

पड़ोसिन : "तुम तो उस दिन कहती थीं कि उसे नफ़ा-नुक़सानका कुछ भी भान नहीं है।"

पागलपन

"क्या पागलपन तलाक़का कारण है ?"

"नहीं, वह विवाहका कारण है।"

सुखी या विवाहित

"कल सतीशने मुझसे कहा कि मेरे साथ शादी कर लो और मुझे दुनियाका सबसे सुखी आदमी बना दो।"

"तूने क्या तय किया? उसके साथ शादी करना या उसे सुखी बनाना?"

वंचना

एक पादरी साहब, जो पहले कभी मजिस्ट्रेट रह चुके थे, गिरजाघरमें एक शादीकी रस्म अदा करा रहे थे।

"क्या तुम इस शख्सको अपना पति बनाओगी?"

कन्या : "जरूर बनाऊँगी।"

पादरी (वरसे) "तुम्हें अपने बचावमें क्या कहना है?"

आधी शादी

"आपकी शादी हो गयी है?"

"आधी हो गयी है, आधी नहीं हुई।"

"वह कैसे?"

"मैं तो तैयार हूँ, दूसरे पक्षवाला कोई तैयार नहीं होता।"

दिल-पसन्द

एक स्कॉटने अपनी पसन्दकी लड़कीसे शादीका प्रस्ताव फ़ोनसे भेजा। सारे दिन इन्तज़ार करनेके बाद रातको स्वीकृति-सूचक जवाब आया।

ऑपरेटर बोला, "अगर आपकी जगह मैं होता तो ऐसी लड़कीसे शादी करना कभी पसन्द न करता जो मुझे सारे दिन इन्तज़ारमें रखे।"

स्कॉट बोला, "ना, ना! पर मेरे पसन्दकी लड़की तो वही है जो रातके रेटका इन्तज़ार करे।"

कविता

प्रशंसक (नवविवाहित युवतीसे) : "आपकी पोशाक तो एक कविता है।"

लेखक पति : "एक कविता नहीं, सोलह कविता, पांच छोटी कहानियां और नौ लेख।"

चित-पट

पत्नी : "इस झगड़ेके निपटनेकी दो ही सूरतें हैं।"

पति : "सुनूं तो।"

पत्नी : "हम दोनों मान लें कि मैं ही ठीक हूं।"

पति : "या ?"

पत्नी : "हम दोनों मान लें कि तुम ग़लत हो।"

फ़ैसलाकुन

"कल मुझमें और मेरी गृहिणीमें बहस हो गयी। मैं ताश खेलना चाहता था और वह सिनेमा चलनेकी जिद करती थी।"

"सिनेमा कैसा निकला ?"

शक्ति

"क्या तुम्हारी पत्नीका चित्र सजीव है ?"

"सजीव ! जब-जब देखता हूँ उछल पड़ता हूँ।"

बाशद ख़ामोशी

"मैं अपने ख़ाविन्दसे घण्टों बोलती रहती हूँ, मगर वह कुछ नहीं पाती, उसे ख़फ़क़ान तो नहीं है ?"

"ज़रूर नहीं, मेम साहिबा, यह तो वरदान है !" डॉक्टर बोला।

दम्पति

हमराही

"तुम अपनी पत्नीसे कभी एकमत भी हुए ?"

"हुआ था एक बार। जब हमारे घरमें आग लग गयी तो हम दोनोंने सामनेके दरवाज़ेसे एक साथ निकलना चाहा।"

बेचारा

पत्नी (पतिको रुष्ट देखकर) : "क्यों क्या बात हुई ?"

पति : "तुम जानती हो कि मुझे तुम नीची एड़ीके जूते पहने अच्छी नहीं लगती।"

पत्नी : "जब आपने दिलाये थे ये ऊँची ही एड़ीके थे।"

चिन्ता

"क्यों ? ऐसे चिन्तित क्यों नजर आते हो ?"

"श्रीमतीके कारण !"

"किसलिए ?"

"उसने कसम खायी थी कि पच्चीस दिन तक मुझसे नहीं बोलेगी।"

"इसमें चिन्तित होनेकी क्या बात है ?"

"आज पच्चीसवाँ दिन पूरा हो रहा है !"

हमराही

"तुम अपनी पत्नीसे कभी एकमत भी हुए ?"

"हुआ था एक बार। जब हमारे घरमें आग लग गयी तो हम दोनोंने सामनेके दरवाज़ेसे एक साथ निकलना चाहा।"

बेचारा

पत्नी (पतिको रुष्ट देखकर) : "क्यों क्या बात हुई ?"

पति : "तुम जानती हो कि मुझे तुम नीची एड़ीके जूते पहने अच्छी नहीं लगती।"

पत्नी : "जब आपने दिलाये थे ये ऊँची ही एड़ीके थे।"

चिन्ता

"क्यों ? ऐसे चिन्तित क्यों नज़र आते हो ?"

"श्रीमतीके कारण !"

"किसलिए ?"

"उसने क़सम खायी थी कि पच्चीस दिन तक मुझसे नहीं बोलेगी।"

"इसमें चिन्तित होनेको क्या बात है ?"

"आज पच्चीसवाँ दिन पूरा हो रहा है !"

कविता

प्रशंसक (नवविवाहित युवतीसे) : "आपकी पोशाक तो एक कविता है।"

लेखक पति : "एक कविता नहीं, सोलह कविता, पाँच छोटी कहानियाँ और नौ लेख।"

चित-पट

पत्नी : "इस झगड़ेके निपटनेकी दो ही सूरतें हैं।"

पति : "सुनूँ तो।"

पत्नी : "हम दोनों मान लें कि मैं ही ठीक हूँ।"

पति : "या ?"

पत्नी : "हम दोनों मान लें कि तुम ग़लत हो।"

फ़ैसलाकुन

"कल मुझमें और मेरी गृहिणीमें बहस हो गयी। मैं ताश खेलना चाहता था और वह सिनेमा चलनेकी ज़िद करती थी।"

"सिनेमा कैसा निकला ?"

शक्ति

"क्या तुम्हारी पत्नीका चित्र सजीव है ?"

"सजीव ! जब-जब देखता हूँ उछल पड़ता हूँ।"

बाशद ख़ामोशी

"डॉक्टर, "मैं अपने खाविन्दसे घण्टों बोलती रहती हूँ, मगर वह कुछ जवाब नहीं पाती, उसे खफ़क़ान तो नहीं है ?"

"ख़फ़क़ान नहीं, मेम साहिबा, यह तो वरदान है !" डॉक्टर बोला।

फ़ैशन

पत्नी : "क्या कोई नयी फ़ैशनकी साड़ी निकली है ?"

पति : "नहीं, वहाँ दो फैशन हैं—एक तो वह जो तुम्हें पसन्द नहीं है; दूसरी वह जिसके ख़रीदने लायक़ मेरे पास पैसे नहीं हैं।"

स्मृति-चिह्न

"प्रतीत होता है कि आप अपने लॉकिटमें कोई स्मृति-चिह्न धारण किये हुए है।"

"हाँ, इसमें मेरे पतिके बालोंकी लट है।"

"परन्तु आपके पति तो अभी जीवित हैं।"

"हाँ, पर उनके बाल चले गये हैं।"

अमूल्य

"आप अपने पतिको इस जन्म-दिनपर क्या भेंट दे रही हैं ?"

"सौ सिगरेट।"

"कितनेको पड़ी ?"

"मुफ़्तमें ! मैं उनके बक्ससे एक-दो निकाल लिया करती थी। और फिर अपनी पसन्दकी सिगरेट पाकर वो और भी ख़ुश होंगे।"

स्त्री-पुरुष

स्त्री (सरोष) : "पुरुषोंके तो दिमाग़ ही नहीं होता। उनसे व बात कहो तो एक कानसे अन्दर जाती है, दूसरेसे बाहर निकल आती है

पुरुष : "होता होगा ऐसा, लेकिन अगर स्त्रीसे कोई बात कहो वह दोनों कानोंमें जाती है और मुँहसे निकल जाती है।"

अर्थशास्त्री

एक अर्थशास्त्री अपनी जीवन-सङ्गिनीको बैंकोंकी वर्तमान ब्याजद बतलाकर, देशकी आर्थिक दुरवस्था और उसके उपायोंपर प्रवचन दे चुके तो उनकी धर्मपत्नी बोली,

"महान् आश्चर्य है कि आप-सरीखा अर्थतन्त्रका ज्ञाता इस क़दर निर्धन है।"

बलाये-नागहानी

क्लर्क : "मुझे अफ़सोस है मैडम, कि फ़र्लो साहब अभी अपनी बीवीको साथ लेकर खाना खाने चले गये हैं।"

श्रीमती फ़र्लो : "तो उनसे कह देना कि आपकी 'स्टेनोग्राफ़र' आयी थी।"

अन्दाज़ा

पुत्र और पत्नीकी ओर सख्तीसे देखते हुए वह बोला, "इस लड़केने मेरी जेबसे पैसे निकाले हैं!"

पत्नी : "आप ऐसा कैसे कह सकते हैं? यह भी तो हो सकता है कि मैंने निकाले हों!"

पति : "नहीं, तूने नहीं लिये; क्योंकि जेबमें अभी कुछ पैसे बचे हुए हैं!"

ब्रेख़ दी

पत्नी : "नहीं जी, मैं आपको लिखनेवाली मेजपर भोजन नहीं करने दूँगी।"

प्रोफ़ेसर : "क्यों प्राणेश्वरी, इसका कारण?"

पत्नी : "कारण? कारण यह है कि कल आप दूधसे लिखने लगे थे और रोशनाई पी गये थे!"

युद्ध

पुत्र : "पिताजी, युद्ध कैसे शुरू होते हैं।"

पिता : "इस तरह, मान लो अमेरिका और इंग्लैण्डमें झगड़ा हो गया, और"……"

माँ : "लेकिन इंग्लैण्ड और अमेरिकाको झगड़ना नहीं चाहिए।"

पिता : "मैं जानता हूँ—लेकिन मैं तो एक फ़र्जी मिसाल ले रहा हूँ।"

माँ : "तुम बच्चेको बहका रहे हो।"

पिता : "नहीं, मैं बहका नहीं रहा……"

माँ : "जरूर बहका रहे हो ……"

पिता : "मैं कहता हूँ मैं नहीं बहका रहा! यह तो तुम्हारी घोंघा-मुस्ती है……"

पुत्र : "ठीक है, पिताजी। भड़किए नहीं, मैं समझ गया कि युद्ध किस तरह शुरू होते हैं।"

पाकिटमार

"कल एक जेबकतरेने मेरी जेब कतरनी चाही, लेकिन मेरी पत्नीने बचा लिया।"

"तो क्या वह उससे भिड़ पड़ीं या चिल्लायीं?"

"नहीं रे! उसने एक रात पहले मेरी जेबोंको टटोल रखा था।"

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"अरे! [illegible] ठीक है!"

ओ. के.

"आप और आपकी पत्नी जब कभी छुट्टियोंमें बाहर जाते हैं तो प्रोग्राम कौन तय करता है?"

"जिस वक्त मैं निश्चित करता हूँ, वह तो महज अपनी पसन्दकी जगह [illegible] बता देती है और मैं कह देता हूँ—'ठीक है! यही तय रहा!'"

बोधपाठ

बसकी भीड़में एक अधेड़-महाशय एक सुन्दरी नवयुवतीसे सटे खड़े रहनेके कारण फूले नहीं समा रहे थे, यह देखकर उनकी धर्मपत्नी मन ही मन जली-भुनी जा रही थीं, जब बस रुकी तो एका-एक नवयुवतीने उतरते-उतरते अधेड़-मियाँके गालपर तड़ाकसे चाँटा रसीद किया और बोली, "यह लो परायी स्त्रीके चुटकी काटनेका फल!"

अधेड़-मियाँ भौंचक्केसे रह गये, सफ़ाई देते हुए अपनी स्त्रीसे बोले, "मैंने····मैंने उसके नहीं चूँटा था!"

उनकी श्रीमतीजीने बहलाते हुए कहा, "कोई बात नहीं, असलमें मैंनें चूँटा था उसे, आपको सबक़ सिखानेके हेतु!"

खतरनाक

एक देवीजी पागलखानेके सुपरिण्टेण्डेण्टसे बोलीं, "अरे बाप रे! बरामदेमें जो औरत हमें मिली कैसी क़हर-आलूदा निगाहोंसे देखती थी, ख़तरनाक मालूम होती है!"

"हाँ, है तो कभी-कभी खतरनाक ही!" सुपरिण्टेण्डेण्टने टालनेकी गरज़से कहा।

"लेकिन आप उसे इतनी स्वतन्त्रता देते ही क्यों हैं?"

"क्या करूँ कोई चारा नहीं!"

"पर क्या वह पागलखानेमें नहीं रहती, आपके कण्ट्रोलमें?"

"न वह पागलखानेमें रहती है, न मेरे कण्ट्रोलमें! वह मेरी बीबी है!"

चोर

"कल दो बजे रातको जब मैं क्लबसे घर आ रहा था तो मेरे मकानमें चोर घुसा था।"

"तो उसे कुछ मिला भी?"

"हाँ, जो कुछ मिलना था सो उसे मिल गया।"

"क्या मतलब?"

"यही कि, मेरी बीबीने समझा कि मैं हूँ, फिर क्या पूछना था! वह बेचारा अस्पतालमें है!"

अभिप्राय

नई-पत्नीसे उसके पतिने पूछा,
"मेरे रिश्तेदारोंके बारेमें तुम्हारा क्या अभिप्राय है?"
पत्नीने मन्दस्मितके साथ शर्मातें-शर्माते जवाब दिया,
"अपनी सासकी अपेक्षा मैं आपकी सासको अधिक चाहती हूँ।"

फिरसे गा !

पत्नी : "मैं अभी गा रही थी कि किसीने खिड़कीमें-से जूता फेंका !"

पति : "ऐसा हुआ ? तो फिरसे एक बार गा। शायद दूसरा जूता भी फेंके और हमें पूरा जोड़ा मिल जावे !"

थर्मोमीटर

डॉक्टर : "देखिए, इस थर्मामीटरको अपनी स्त्रीकी ज़बानके नीचे रख दीजिएगा और उनसे कहिए कि आधे-मिनिट तक मुँह न खोलें !"

पति : "अगर हो तो आधे-घण्टे वाला थर्मोमीटर दे दीजिए !"

मर्मज्ञा

पति : "प्रिये, मैं एक बहुत ही ज़रूरी कामसे एक जगह जा रहा हूँ, मैं बहुत ही जल्द, बस आध घण्टेमें वापस आ जाऊँगा, क्योंकि तुम जानती ही हो कि तुम्हारे बिना मुझे एक मिनिट भी चैन नहीं मिलता ! मगर शाम हो गयी है। इसलिए मुमकिन है मुझे वहाँ देर हो जाये और रात ज्यादा हो जानेकी वजहसे आज लौट ही न सकूँ, तो मैं वहाँसे किसी आदमीके हाथ तुम्हारे पास ख़त लिखकर भेज दूँगा !"

पत्नी : "ख़त भेजनेकी कोई ज़रूरत नहीं है, उसे मैंने पहले ही से तुम्हारी जेबसे निकाल लिया है !"

अक़्लमन्द पति

पत्नी : "क्यों जी, इतनी देर कहाँ रहे ?"

पति : "देखो, तुमने फिर ग़लती की ! अक़्लमन्द पत्नी अपने पतिसे ऐसी बातें नहीं पूछतीं।"

पत्नी : "मगर अक़्लमन्द पति तो अपनी पत्नीसे·······!"

पति : "रहने भी दो, अक़्लमन्द पतिके पत्नी होती ही नहीं !"

शर्म

पति (क्रोधसे) : "तीस रुपयेकी साड़ी लाते हुए तुम्हें शर्म आनी चाहिए थी।"

पत्नी (प्यारसे) : "क्या बताऊँ ? शर्म तो मुझे बड़ी आयी, लेकिन आपकी आमदनीका ख्यालकर सिर्फ तीसकी ही लायी हूँ !"

भाड़में

एक आदमीकी औरत बड़ी कर्कशा थी, एक रोज रातको घर पहुँचनेमें देर होती देख उसका दोस्त बोला, "आज तो भाभी अच्छी तरह इस्त-पान करेगी तुम्हारा !"

"आज उसके मुँहसे अगर पहला शब्द 'प्रियतम' न निकले तो मैं उसका खाविन्द नहीं !"

"अच्छा चलो देखें।"

दोनों घर पहुँचे, पतिने दरवाजा खटखटाते हुए कहा,

"प्रियतम आ गये हैं।"

"प्रियतम गये भाड़में" अन्दरसे आवाज आयी।

"देख ले ! नहीं कहा था मैंने तुमसे ?" उसने अपने दोस्तसे धीमे-से कहा।

कायर

एक बड़ा वीर पुरुष था। वह शेर पाला करता था। उसकी स्त्रीको इस बातसे सख्त चिढ़ थी कि उसका पति रातको देरसे घर लौटे ! मगर एक रात उसे बड़ी देर हो गयी। डरके मारे घर न आकर अपने शेरके पिंजड़ेमें घुस गया और शेरका तकिया बनाकर सो गया !

अगले दिन उसकी बीबी [illegible] वहाँ पहुँची, [illegible] में सोता देखकर [illegible]

धोखा

जज : "तुमने कैसे उसको धोखा दिया ?"

कैदी : "जी नहीं, हुजूर ! उल्टे इसीने मुझे धोखा दिया । इसने मुझसे कहा था कि मैं दस दिन बाद आऊँगा, मगर आ गया उसी रातको ।"

बेवफ़ा

पत्नी : "क्यों डियर ! अगर मैं कल मर जाऊँ तो तुम क्या करोगे ?"

पति : "वही जो मेरे मरने पर तुम करतीं ।"

पत्नी : "आह ! तो उस दिन तुम झूठी ही शेखी बघार रहे थे कि तुम कभी दूसरा विवाह न करोगे !"

सपनेकी बातें

पत्नी : "कल रात मैंने सपना देखा कि मैं और आप किसी गहनेवाले की दूकान पर गये हैं । वहाँ मेरे लिए...."

पति : "पर ये बातें तो सपनेकी हैं ।"

पत्नी : "आपने एक गहना खरीद दिया, तभी मैंने समझ लिया कि यह सब सपना है ।"

नाटी

रघुवीर : "भाई घनश्याम, तुम्हारी स्त्री तो बहुत-ही नाटी है !"

घनश्याम : "भाई मेरे, बला जितनी छोटी हो उतनी-ही अच्छी !"

आकुल-व्याकुल

"मैं उसके पास न होऊँ तो मेरी पत्नी व्याकुल हो जाती है।"
"मेरी धर्मपत्नी भी इसी तरह मेरा विश्वास नहीं करती।"

दो दो

"अफ़सोस है कि मेरे पतिको हमारी शादीकी तारीख याद नहीं रहती।"
"भुलक्कड़ तो मेरे पति भी हैं, पर मैं उन्हें जनवरी और जुलाईमें याद दिला देती हूँ और इस तरह दो बार भेंट ले लेती हूँ।"

सच बताना

पत्नी : "सच बताना, तुमने शराब पीना कैसे छोड़ा ?"
पति : "एक बार तेरा भाई छुट्टियाँ गुज़ारनेके बहाने हमारे यहाँ आया। 'रैशन'के ज़मानेमें भी घर छोड़नेका नाम न ले। एक रोज़ मैं पीकर घर आया तो मुझे वह एकके बदले दो दिखने लगा। तभीसे मैंने शराब छोड़ दी !"

ख़्वाबकी ताबीर

पत्नी : "कल मैंने सपना देखा कि आपने मुझे आज साड़ी खरीदनेके लिए उदारतापूर्वक दो सौ रुपये दिये, आशा है आप ऐसी कोई बात नहीं करेंगे जिससे मेरा सुन्दर सपना टूट जाये।"
पति : "कभी नहीं, तुम उन दो सौ रुपयोंको शौकसे अपने पास रखो।"

विश्वकोश

"यह विश्वकोश आपको दुनियाकी सब बातें बतलायेगा !"
"ज़रूरत नहीं है, वह तो मेरी बीवी सब बतला देती है, उसके अलावा भी बहुत कुछ।"

क्या करें ?

पत्नी : "तुमने सोचा है कि अगर तुम्हें 'रॉकफ़ेलर' की आमदनी हो तो तुम क्या करो ?"

पति : "नहीं, लेकिन यह मैं अक्सर सोचता हूँ कि रॉकफ़ेलरको मेरी आमदनी हो तो वह क्या करे !"

राजदाँ

"जो होता है मैं अपनी पत्नीको सब-सुना देता हूँ।"

"और मैं अपनी पत्नीको वो बेशुमार बातें सुनाता हूँ जो कभी नहीं होतीं।"

उलटा चोर

एक देवीजीकी कार अकस्मात् बिगड़ गयी। वह गैरेजमें पहुँची और परेशानीके आलममें बोली,

"क्या तुम आगेके 'फ़ैन्डर' इस तरह लगा सकते हो कि मेरे पतिदेवको पता न चल पाये ?"

अनुभवी गैरेजवाला बोला, "ऐसा तो नहीं कर सकते, मगर हाँ इस तरह ज़रूर बिठा सकते हैं उन्हें कि—कल आप अपने पतिसे पूछ सकें, 'गाड़ीकी यह दुर्दशा कैसे कर डाली आपने ?' "

काल-क्षेत्र

पत्नी : "आप स्टेशन जा रहे हैं तो ज़रा वहाँकी घड़ीका ठीक वक़्त लेते आना।"

पति : "पर वहाँ घड़ी है कहाँ, सुधरने गयी है।"

पत्नी : "तो स्टेशनमास्टरकी घड़ीका टाइम ही एक काग़ज़पर लिखते लाना।"

भला आदमी

"मेमसाहिबा, आपके स्वर्गीय पतिका समाधि-लेख क्या रहे ?"

"मैं कोई भावनात्मक, खुराफ़ाती चीज़ नहीं चाहती, वह मुख़्तसर और सादा हो जैसे—'विलियम जॉन्स्टन, उम्र ८५ वर्ष। भले आदमी जल्दी मर जाते हैं।'"

मतभेद

"क्या आपकी पत्नीके साथ आपका मतभेद भी होता है ?"

"ज़रूर होता है, लेकिन मैं उसे उसपर प्रकट नहीं होने देता।"

औरतकी जात

बाबा आदम जंगलमें सैर करने गये थे, बड़ी देरसे लौटे, हव्वा बोली, "कहाँ थे इतनी देरसे ? कहाँ रमते थे ? आप मुझसे छिपाते हैं, रास्तेमें ज़रूर कोई मिल गयी होगी।"

"पर तू जानती है कि इस दुनियामें हम दोनोंके सिवाय कोई मानव-प्राणी नहीं है।" यूँ सफ़ाई देकर आदम सो गये। जब उन्हें नींद आ गयी तो शकाशील हव्वाने उनकी पसलियाँ गिनना शुरू कर दी।

सुहागरात

पहली : "सखी मुबारक हो, कल तो तुम अपने पतिसे मिली होगी कहो कैसे आदमी हैं ?"

दूसरी : "आदमी नहीं उल्लू हैं।"

पहली : "क्या ? क्यों ?"

दूसरी : "कल उनके आनेसे पहले मैंने अपने कमरेके लैम्पकी बत्ती जान-बूझकर नीचे गिरा दी थी, मगर वे आकर सारी रात उसीको ठीक करते रहे !"

चिन्ता-चिता

"मेरे पतिकी तन्दुरुस्ती बहुत गिर गयी है, डॉक्टर।"

'धन्धेकी चिन्ता रहती है क्या?'

"ना, यह वजह नहीं हो सकती, धन्धा तो उन्हें हाल हीमें बन्द कर देना पड़ा है।"

गाढ़े दोष

दम्पति सुहागयात्रासे लौटकर घर आ गये। पति बोला,

"प्रिये, चूँकि अब हमारी शादी हो चुकी है और हमने घर बसा लिया है, अगर मैं तुम्हारे कुछ छोटे-छोटे दोष बता दूँ तो नामुनासिब न होगा, बल्कि इससे बड़ी मदद मिलेगी।"

पत्नीने मधुर उत्तर दिया, "प्रियतम, परेशान न हूजिए, मैं उन सबको जानती हूँ। उन्हींके कारण तो मैं कोई बेहतर पति न पा सकी!"

हमदर्द

रोएँदार कोटको पाकर 'श्रीमतीजी' उल्लसित हो उठीं, देर तक उसे हर्षसे गुलगुलाती रहीं, फिर एकाएक कुछ सहम गयीं, उन्हें शोकलोक में पहुँची हुई देखकर पति महोदय बोले,

"क्यों क्या हुआ? क्या पसन्द नहीं आया?"

"पसन्द तो आया, मगर मुझे बेचारे उस प्राणीका दुख है, जिसकी जानपर आ बनी होगी।"

"शुक्रिया!" पति-प्राणी बोला।

समाधि

स्त्री: "शायद चोरोंकी आवाज़ आ रही है। जागते तो हो?"

पति: "नहीं।"

प्रेमाहार

"प्रियतम, जीवनमें प्रेमके अतिरिक्त क्या है ?"

"कुछ नहीं, मधुरिमे ! खाना जल्दी ही तैयार हो सकेगा क्या ?"

पार-दर्शन

मियाँ (अमेरिकन मैगज़ीन देखकर झल्लाते हुए) : "फ़्रण्ट पेजपर वही खुराफ़ात, बैक पेजपर वही बकवास !"

बीबी : "मगर मिडिलमें तो एक नयी 'बेदिंग ब्यूटी' है !"

देर आयद

पत्नी : "इतनी देर रात गये आनेका मतलब ?"

पति : "कोई मुज़ायका नहीं, प्रिये ! मैंने समझा तुम अकेली होगी इसलिए ज़रा जल्दी आ गया। मगर देखता हूँ कि तुम्हारी जुड़वाँ बहन तुम्हारे पास है।"

ग़नीमत

पत्नी (पतिसे) : "विवाहसे पहले तुम मुझे देवी कहा करते थे।"

पति : "हाँ, कहा तो करता था।"

पत्नी : "और अब तुम मुझे कुछ नहीं कहा करते।"

पति : "ग़नीमत समझो कि मैं तुम्हें कुछ नहीं कहता।"

अपवाद

पत्नी : "यह वैज्ञानिक यह साबित करनेकी कोशिश कर रहा है कि कीड़े सोचते हैं।"

पति : "मैं सोचता हूँ....."

पत्नी : "आपकी और बात है।"

इन्तज़ार

पिता : "[illegible] है? [illegible] पास [illegible] बारेमें विचारने के लिए [illegible] है। कोई अच्छा आदमी आये तबतक इन्तजार कर [illegible] है।"

माता : "मैं नहीं समझती [illegible] किसी तक भी इन्तजार करती रहे। मैं जब [illegible] थी तो मैंने तो किया नहीं था।"

वापसी

स्त्री (अकड़कर गुस्सेमें) : "मैं अपनी माँके घर चली जाऊँगी।"

पति (शान्तिसे) : "अच्छा है, रेल भाड़ेके लिए पैसे यह लो।"

स्त्री (गिनकर) : "पर वापसी मुसाफ़िरीके लिए तो इतने पैसे काफ़ी न होंगे।"

कर्कशा

पत्नी : "क्या तुमने कभी दिलमें यह भी चाहा है कि मेरी शादी किसी औरसे हो जाती तो अच्छा होता ?"

पति : "नहीं, मैं किसी आदमीका बुरा क्यों चाहने लगा ? लेकिन यह भावना अक्सर उठा करती है कि तुम बुढ़ापे तक कुमारी ही रहतीं तो अच्छा होता।"

बस !

पति : "जब मैं आफ़िस चला जाऊँगा, तब तुम क्या करोगी ?"

पत्नी : "कोई खास काम नहीं है। खाना खाऊँगी, माँको चिट्ठी लिखूँगी, कुछ देर रेडियो सुनूँगी, फिर, बस...."

पति : "फिर बस करनेसे पहले जरा मेरी इस कमीजमें बटन लगा देना।"

खबर न होने देना

एक अमेरिकन : "मैंने तुमसे जो पाँच डॉलर उधार लिये हैं, इसकी खबर मेरी पत्नीको न होने देना।"

दूसरा : "और तुम भी मेरी पत्नीको यह खबर न होने देना कि मैंने तुमको पाँच डॉलर उधार दिये हैं।"

आधुनिक माँ

"माँ, मैं तैरने जाऊँ?"
"ना, बेटा, डूब जायेगा!"
"पर बापूजी तो तैर रहे हैं?"
"उनका तो बीमा है, बेटा!"

कम-अक्ल

पिता : "हमारे बेटेको अक्ल तो मुझीसे मिली है।"

माँ : "ज़रूर मिली मालूम होती है, क्योंकि मेरी अक्ल तो अभी तक मेरे पास है।"

सुधार

पति (लड़कर) : "मैं बड़ा बेवकूफ़ था जब मैंने तुमसे शादी की।"

पत्नी : "मैं यह जानती थी, मगर मुझे उम्मेद थी कि शायद तुम सुधर जाओ!"

पंक्चर

पति-पत्नी सैरको निकले। कुछ मील चलकर मोटर गड़बड़ करने लगी।

पति : "जैसा मैंने सोचा था, गाड़ी पंक्चर हो गयी।"

पत्नी : "तो यह आपने घरसे चलनेसे पहले क्यों नहीं सोचा?"

मिनिट

पत्नी : "एक मिनिटमें कितने सेकिण्ड होते हैं ?"

पति : "तुम्हारा मतलब किस मिनिटसे है ? सचमुचका मिनिट या तुम्हारे 'एक मिनिट ठहरो, अभी आती हूँ' वाले मिनिटोंका मिनिट ?"

जल्दी ही

पत्नी : "अगर तुम्हारे यही रंग-ढंग रहे, तो मैं जल्दी ही मैके चली जाऊँगी।"

पति : "कितनी जल्दी ?"

शासन

पति (झुंझलाकर) : "आज मैं यह जानना चाहता हूँ कि इस घरका मालिक मैं हूँ या तुम !"

पत्नी (मधुरतासे) : "आप यह जाननेकी कोशिश न करें तो ज्यादा सुखी होंगे।"

और लो !

पत्नी : "शादीसे पहले तो तुम कहा करते थे कि मैं तुझे रसोड़ेमें ही घुसा नहीं देखना चाहता।"

पति : "यह तो मैं अब भी कहता हूँ।"

पत्नी : "तो फिर यह....."

पति : "मुझे उम्मेद थी कपड़े धोनेमें भी तुम मेरी मदद किया करोगी।"

लायी है !

"मैं मानता हूँ कि तुम्हारी पत्नी अच्छे कुटुम्बसे आयी है।"

"आयी है ? कि सारे परिवारको साथ लायी है !!"

स्वार्थी

पति : "मैंने आज अपनी जिन्दगीका दस हज़ारका बीमा करा लिया है।"

पत्नी : "कैसे स्वार्थी हो, हमेशा अपना ही विचार किया करते हो।"

खुदकशी

पति (अत्यन्त आक्रोशसे) : "बस अब खत्म है। मैं इतने दिनों तक सब बरदाश्त करता रहा, मैं अभी नदीमें गिरकर सारा किस्सा खत्म किये देता हूँ।"

पत्नी : "लेकिन तुम तैरना तो जानते ही नहीं।"

पति : "ठीक है, तो मुझे कोई और रास्ता ढूँढना पड़ेगा।"

तर्कजाल

पति (लड़ाईकी रातको) : "प्रिये, वह सुबहका वाद-विवाद।"

पत्नी (रूठी हुई) : "सो ?"

पति : "मेरा विचार बदल गया है, अब मैं सोचता हूँ कि तुम ही ठीक थी।"

पत्नी : "मेरा भी विचार बदल गया है, मैं नहीं सोचती कि मेरा कहना ठीक था।"

गृह-विज्ञान

नयी पत्नी : "मैंने यह कब कहा कि तुम हमेशाकी तरह ग़लती पर हो ?"

पति (सरोष) : "तब क्या कहा तुमने ?"

नयी पत्नी : "मैंने तो सिर्फ़ यह कहा था कि मैं कह नहीं सकती कि तुम हमेशाकी तरह ग़लती पर हो।"

तरक़्क़ी

पत्नी (चिढ़कर) : "क्या कारण है कि तरक़्क़ीके वक़्त तुम्हें हमेशा नज़रअन्दाज़ कर दिया जाता है।"

पति : "मैं सोच नहीं सकता……"

पत्नी : "यही वजह मालूम होती है।"

निष्कण्टक

बालिका : "आप राक्षस हैं पिताजी ?"

पिता : "कौन कहता है मुझे राक्षस ?"

बालिका : "माँ कहती है आप बड़े राक्षस हैं।"

माँ : "मैंने नहीं कहा, मैंने तो यह कहा कि आप बड़े बुद्धिके राक्षस हैं।"

हुस्ने-तख़य्युल

अगली बार जब भगवान्के घरसे दुनियामें वापस आऊँगा तो नन्दन वनसे कल्पवृक्षकी इतनी क़लमें ज़रूर लाऊँगा कि दुनियाके घर-घरमें लगायी जा सकें। मुझे आशा है कि तब दुनिया दुःखरहित हो जायेगी। लेकिन जब यह अनमोल ख्याल मैंने अपनी पत्नीको सुनाया तो बोली, "१०४ बुख़ार है ! सन्निपात तो नहीं हो गया ! अभी डॉक्टरको फ़ोन करती हूँ !"

दम्पति

पति-पत्नी सैरको निकले। सहसा पत्नी बोल उठी,

"अरे मैं कपड़ोंपर-से इलेक्ट्रिक आयरन उठाना तो भूल ही गयी ! अब तो घरमें आग लग गयी होगी !"

पति : "फ़िक्र मत करो। मैं पानीका नल बन्द करना भूल आया हूँ। अपने घरमें आग-वाग नहीं लग सकती।"

खाता

पत्नी : "अब हमें बैंकमें दूसरा खाता खोल लेना चाहिए !"
पति : "क्यों ?"
पत्नी : "पहले खातेमें आना-पाइयोंके सिवाय कुछ नहीं रहा।"

कमसिन

एक शख्सके दो पत्नियाँ थीं, एक रोज़ वे अपने पतिसे पूछने लगीं, "हममें-से कौन ज्यादा उम्रकी लगती है आपको ?"
पति : "मुझे तुम दोनों एक दूसरीसे छोटी लगती हो।"

शादी-ओ-ग़म

"लीजिए आपके पहला नाती हुआ है !" पत्नीने पतिको खुश खबर सुनायी।

पति बोले, "मुझे बाबा हो जानेकी नाखुशी नहीं, मगर फ़िक्र इस बातकी है कि दादीका पति हो गया।"

व्याधि देवी

डॉक्टर : "आपके पतिदेवके लिए अद्भुत शान्ति चाहिए। यह लीजिए नींदकी पुड़िया।"
स्त्री : "यह मैं उन्हें कब दूँ ?"
डॉक्टर : "यह उन्हें नहीं देनी है, आपको लेनी है।"

बालक

१

होली लैंड

पादरी : "बच्चो ! ज़रा ध्यान दो। अफ़रीक़ामें साठ लाख वर्गमील जमीन ऐसी है जहाँ छोटे लड़के-लड़कियोंके लिए कोई सण्डे स्कूल नहीं है। तो बताओ हम सबको पैसा किस कामके लिए बचाना चाहिए ?"

"अफ़रीका जानेके लिए !" सब बच्चे एक साथ बोले।

जबरी

लड़का : "माँ, क्या तुम कभी सर्कसमें थीं ?"

माँ : "नहीं तो !"

लड़का : "तो फिर पड़ौसी ऐसा क्यों कहते हैं कि तुम पिताजीको अँगुलियों पर नचाती हो ?"

जीवनकी दौड़

"शीला, तेरी उम्र क्या है ?"

"ग्यारह वर्ष।"

"पिछले साल तू पाँच वर्ष की ही थी !"

"पाँच वर्षकी पिछले साल थी और छह वर्षकी इस साल हूँ, हो गये ग्यारह वर्ष।"

हड़प

माँ : "क्यों रमेश, सुरेश क्यों रो रहा है ?"
रमेश : "अम्मा, मैं अपनी मिठाई खा रहा हूँ तो रोता है।"
माँ : "उसकी मिठाई निबट गयी क्या ?"
रमेश : "हाँ, जब मैं उसकी खा रहा था तब भी रोता था।"

बताइए !

चार-पाँच सालकी एक लड़कीने अपने बड़े भाईसे पूछा, "भाई साहब, मैंने अपने रसोईघरमें एक ऐसी चीजको भागते देखा है, जिसके हाथ हैं न पाँव !"

विद्वान् भाई देरतक सोचा किये। आखिर हारकर बोले, "तू ही बता, क्या चीज थी ?"

"पानी !" लड़कीने विजय-गर्वसे कहा।

डेली-डोज

पिता : "बेटा, आज तुमने खाया नहीं !"
पुत्र : "खाया क्यों नहीं ? अभी-अभी मास्टर मार खाकर आ रहा हूँ।"

इससे क्या !

पिता : "तुम अपनी क्लासमें सबसे पीछे क्यों हो ?"
लड़का : "इससे क्या, पीछे और आगे वालोंको एक-सा पढ़ाया जाता है।"

कठिन पाठ

"तुम्हारे बच्चेने बोलना शुरू कर दिया ?"
"क्यों का, अब तो हम उसे चुप रहना सिखा रहे हैं।"

पलायन

तगादेवाला : "क्या तेरे बाप घर नहीं हैं ?" उनके कपड़े और जूते तो यहाँ दिखते हैं।

लड़का : "कपड़े और जूते पहनकर मन्दिरमें कैसे छिपा जा सकता है ?"

झड़ी

बाप : "तू जितने सवाल मुझसे पूछता है उतने अगर मैंने अपने बापसे पूछे होते तो खबर है क्या होता ?"

लड़का : "जी, तब आप मेरे सवालोंके अच्छी तरह जवाब दे सकते।"

समझदार

"बेटा मुन्नू, तुम्हारी क्लासमें सबसे होशियार लड़का कौन-सा है ?"

"भास्कर, किताबकी आड़में वह लगातार रेवड़ियाँ खाता रहता है, मगर अभीतक एक दफ़ा भी मास्टर नहीं देख पाया।"

अच्छी माँ

शिक्षिका : "क्यों रश्मि, 'मुझे माँ क्यों अच्छी लगती हैं ?' यह निबन्ध तू अपने पिताजीसे ही लिखवाकर लायी है न ?"

रश्मि : "नहीं नहीं, माँ तो उन्हें लिखने ही न देती थी।"

आश्चर्य

(चार वर्षकी) शशि : "अम्मा, जब मैं जन्मी तब तू घरपर ही थी न ?"

माँ : "ना बेटी, मैं तेरी नानीके यहाँ थी।"

शशि : "तो अम्मा, मुझे देखकर तुझे ताज्जुब हुआ होगा न ?"

सुलेमान

एक शिक्षक क्लासमें सन्त सुलेमान और उनके त्यागके विषयमें कह रहे थे,

"जब शेबाकी महारानीने अपने रत्न-जटित वस्त्राभूषण सुलेमानके सामने रख दिये तो वे क्या बोले ?"

एक लड़की : "इन सबका क्या लोगी ?"

पास कहाँसे हो !

लड़का : "पिताजी, देखिए रिजल्ट-कार्ड !"

पिताजी (विषयोंपर नजर डालकर) : "नालायक ! तीन-तीन विषयोंमें फ़ेल है ! पास भी कहाँसे हो, दिन भर तो खेलता रहता है। जब मैं तेरे बराबर था तो दर्जेमें अव्वल नम्बर आता था।"

लड़का : "पर पिताजी, यह तो आपका ही कार्ड है। अलमारीमें पड़ा था।"

छूत

बीमार पिता : "बेटा, मुझसे मत लिपटो, तुम्हें भी बुखार लग जायेगा।"

छोटा लड़का : "पिताजी, आप किससे लिपट पड़े थे ?"

सुलक्षण

एक आया अपने सुपुर्द किये हुए लड़कोंको सुलक्षण सिखा रही थी। वह एक हाथमें बड़ा और दूसरेमें छोटा चॉकलेट लेकर बोली,

"अच्छा देखूँ तुम दोनोंमेंसे कौन ज्यादा अच्छा लड़का है ?"

छोटा लड़का आनी बड़ा चॉकलेट छीनते हुए बोला,

"हमी।"

डिपॉज़िट-वाल्ट

"क्यों रे मुन्नू, खा गया तू दोनों लड्डू!"

"माँ, तूने ही तो कहा था कि ऐसी जगह रखना जहाँ चूहे न खा जायँ!"

क़सूर माफ़

"कल मैंने तुझे गणितके सवाल हल करनेमें मदद की यह तूने मास्टर को कहा था क्या?"

"हाँ"

"बड़ी सच्चाई दिखलायी तूने! फिर क्या बोले वो?"

"मास्टर बोले कि तेरे बड़े भाईको मूर्खताके लिए मैं तुझे सजा नहीं देता।"

बच्चे

"चचा, क्या आपको घरमें बच्चे अच्छे लगते हैं?"

"हाँ, जब वे सो जाते हैं तो स्थान कैसा अच्छा, शान्त और सुहावना लगने लगता है!"

हिंसा

शिक्षक : "किसी जीवको मारना पाप है।"

बालक : "तो आप हमें क्यों मारते हैं हम भी तो जीव हैं!"

क़ैंची

"क्यों रे बिल्लू, यहाँसे कैंची कहाँ चली गयी?"

"मुझे नहीं मालूम। लेकिन माँ मुझे लगता है खर्चेपर पड़ी होगी। कल पिताजी कह रहे थे न कि खर्चेपर कैंची चलानी है।"

दूरान्दूर

शिक्षक : "दूरका रिश्तेदार माने क्या है रे रामू ?"
रामू : "हमारे पिताजी ! आजकल वे कलकत्ता गये हुए हैं।"

मुँह बनाना

मेहमानने अपने मेजबानके छोटे लड़केसे कहा, "कुत्तेकी ओर ऐसा मुँह बनानेकी क्या जरूरत है ?"

लड़का : "मेरा कसूर नहीं है। कुत्तेने ही पहले शक्लें बनानी शुरू की थीं।"

स्वर्गसे

"क्यों अम्मा, छोटा मुन्नू स्वर्गमें-से आया है न ?"

"हाँ बेटा, क्यों ?"

"कैसा अजीब है यह ! कैसी भूल कर बैठा ! स्वर्ग छोड़कर इधर चला आया !"

सरमन

गिरजेमें लम्बे और डल सरमनसे कष्टाकर एक लड़का अपनी माँसे बोला,

"माँ, इसे चन्दा अभी दे दें तो क्या यह हमें जाने देगा ?"

मुश्किल

शिक्षक : "बेटे, तुम्हारी उम्र क्या है ?"

नया विद्यार्थी : "यह बता सकना बहुत मुश्किल है साहब ! जब मैं पैदा हुआ था मेरी माँकी उम्र चौबीस वर्षकी थी और अब तेईस साल की है।"

बच्चे

"पपा, क्या आपको घरमें बच्चे अच्छे लगते हैं?"

"हाँ, जब वे सो जाते हैं तो स्थान कैसा अच्छा, शान्त लगने लगता है!"

हिंसा

शिक्षक : "किसी जीवको मारना पाप है।"

बालक : "तो आप हमें क्यों मारते हैं?"

क़ैंची

"क्यों रे बिल्लू, यहाँसे कैंची कहाँ -

"मुझे नहीं मालूम। लेकिन माँ

कल पिताजी कह रहे थे न कि ..."

खबर

"राजकुमारी एलिजाबेथको कैसे मालूम हुआ कि वह बच्चेकी माँ बननेवाली है ?"

"अखबारोंसे।"

नाक

शिक्षक : "अब तुम पाँचो इन्द्रियोंके विषयमें समझ गये न ? बताओ रम्मू, नाक किस लिए है ?"

रम्मू : "चश्मा टिकानेके लिए।"

पेड़ेकी गुठली

एक बीमार बालककी माँने बालकको कुनैनकी गोली देना चाही पर उसने नहीं खायी, तब माँने कुनैनकी गोली पेड़ेके बीचमें रख दी और कहा, "लो बेटा, पेड़ा खालो।"

बालकने पेड़ा खा लिया। थोड़ी देर बाद माँने पूछा, "बेटा, पेड़ा खा लिया ?"

पुत्र : *"हाँ माँ, पेड़ा खा लिया, पर पेड़ेकी गुठली फेंक दी।"*

शाबाश

रम्मू बड़ा खिलाड़ी लड़का था, हमेशा स्कूलसे भाग जाया करता था। एक दिन उसके बाप घरपर नहीं थे। उसने छुट्टी मनानेका अच्छा मौक़ा देखा। आवाजको भारी बनाकर टेलिफोनपर मास्टरसे कहने लगा,

"मास्टर साहब, आज रम्मू स्कूल नहीं आयेगा; उसे बड़ा भारी काम है यहाँ। उसकी गैरहाजिरी माफ कीजियेगा।"

मास्टर : "अच्छा, मगर फ़ोनपर कौन बोल रहा है ?"

रम्मू (घबराकर) : "मेरा बाप !"

बाल

शिशु : "माँ, पिताजीके सरपर बाल क्यों नहीं हैं ?"

माँ : "बेटे, इसलिए कि वह विचार करते हैं।"

शिशु : "माँ, और तुम्हारे बाल इतने बड़े क्यों हैं ?"

माँ : "क्यों कि····चल जा यहाँसे और अपना सबक़ याद कर !"

होनहार

"क्या तुम वचन दे सकते हो कि बाल-अदालतमें तुम आखिरी बार आ रहे हो ?"

"जरूर, जज साहब, अगली बार तो मैं प्रौढ़ अदालतके लायक़ हो जाऊँगा।"

मातृभाषा

लड़का : "क्यों माँ ! भाषाको लोग मातृभाषा क्यों कहते हैं, पितृ-भाषा क्यों नहीं ?"

माँ : "इसलिए कि इसे माँ ज़्यादा बोलती है।"

लड़का : "तभी पिताजी खाली सुना करते हैं। तुम्हारे सामने कभी बोलते नहीं।"

रिश्वत

माँ : "देखो मोहन, अगर आज तुम शरारत न करोगे तो मैं तुम्हें मिठाई दूँगी।"

मोहन : "यह नहीं हो सकता माँ !"

माँ : "क्यों ?"

मोहन : "क्योंकि बाबूजी कहते हैं कि रिश्वत लेकर कोई काम करना बुरा है !"

अन्दाज़

एक बाला किसी ट्राममें चढ़ी, कण्डक्टरने मृदुलता-पूर्वक पूछा,

"बिटिया, तेरी उम्र क्या है ?"

पुतली खफ़गीके अन्दाज़में बोली,

"अगर कारपोरेशनको ऐतराज़ न हो तो पूरा किराया दे डालना पसन्द करूँगी मगर अपनी उम्रके आँकड़ोंको अपने ही पास रखे रहना चाहूँगी।"

जन्माधिकार

जॉनीकी माँने परिवारको अभी दो जुड़वाँ बच्चे पेश किये थे।

"तुम अपनी शिक्षिकासे कहना, वह छुट्टी दे देगी," उसके पिता बोले।

जॉनीने वही किया और खुश-खुश घर लौटा।

"कल छुट्टी हमारी।" उसने सगर्व घोषित किया।

"कहा था न तुमने अपनी शिक्षिकासे जुड़वाँ भाइयोंके बारेमें" पिताने पूछा।

जॉनी : "मैंने उससे एकका ज़िक्र किया। दूसरेकी बात अगले हफ़्ते करूँगा।"

दीजिए जवाब !

हिमांशु : "पण्डितजी, मैं भी पूजा करूँ ?"

पण्डितजी : "तुझे यहाँ आना हो तो चमड़ेकी बेल्ट उतारकर आ।"

हिमांशु : "मेरी बेल्ट तो दो अंगुल ही चौड़ी है, मगर पप्पा तो आपके पास इतनी बड़ी मृगछाला पर बैठे हुए हैं।"

दूल्हा

शिक्षक (सात वर्षकी बालिकासे) : "दूल्हा किसे कहते हैं।"

बालिका : "दूल्हा वह है जो शादियोंमें होता है।"

ग़ैरइन्साफ़ी

दो लड़के स्कूलमें झगड़ पड़े। मास्टरने सज़ा सुनायी कि तुम दोनों स्कूलके वाद अपना-अपना नाम पाँच-पाँच-सौ दफ़े लिखो। पन्द्रह-वीस मिनिटके वाद एक गुस्से और रंजसे रोता हुआ वोला,

"हमें वरावरकी सज़ा नहीं दी गयी उसका नाम कमल है, मेरा वैंकटरमन।"

ग़प

पहला : "मेरे वापका एक वड़ा अस्तवल था, लम्वा इतना जैसे वम्वई से कलकत्ता, चौड़ा इतना जैसे दिल्लीसे मद्रास।"

दूसरा : "और हमारे वापके पास इतना ऊँचा भाला था कि जिससे वह आसमानको छेद-छेदकर जव चाहे पानी वरसा लेते थे।"

पहला : "पर वह इतने वड़े भालेको रखते कहाँ होंगे?"

दूसरा : "तुम्हारे वापके अस्तवलमें।"

दासी

एक छोटा लड़का अपने माँ-वापकी शादीके फ़ोटो देख रहा था, जव उसने उपहारोंसे भरे एक कमरेका चित्र देखा तो उसकी आँखें चमक उठीं। वोला, "माँ! क्या यह सव देकर तुम्हें हमारा काम करनेके लिए लाया गया।"

अरे-अरे!

"मेरे माता-पिताके एक वच्चा था, पर वह न मेरा भाई था और न मेरी वहिन, वताओ वह कौन था?"

"यह तो वड़ी कठिन पहेली है, आखिर वह कौन था?"

"मैं स्वयं।"

अन्दाज़

एक बाला किसी ट्राममें चढ़ी, कण्डक्टरने मृदुलता-पूर्वक पूछा,
"बिटिया, तेरी उम्र क्या है ?"
पुतली सक़ुचीके अन्दाज़में बोली,
"अगर कारपोरेशनको ऐतराज न हो तो पूरा किराया दे डालना पसन्द करूँगी मगर अपनी उम्रके आँकड़ोंको अपने ही पास रखे रहना चाहूँगी।"

जन्माधिकार

जॉनीकी माँने परिवारको अभी दो जुड़वाँ बच्चे पेश किये थे।
"तुम अपनी शिक्षिकासे कहना, वह छुट्टी दे देगी," उसके पिता बोले।
जॉनीने वही किया और खुश-खुश घर लौटा।
"कल छुट्टी हमारी।" उसने सगर्व घोषित किया।
"कहा था न तुमने अपनी शिक्षिकासे जुड़वाँ भाइयोंके बारेमें" पिताने पूछा।
जॉनी : "मैंने उससे एकका ज़िक्र किया। दूसरेकी बात अगले हफ़्ते करूँगा।"

दीजिए जवाब !

हिमांशु : "पण्डितजी, मैं भी पूजा करूँ ?"
पण्डितजी : "तुझे यहाँ आना हो तो चमड़ेको बैल्ट उतारकर आ।"
हिमांशु : "मेरी बैल्ट तो दो अंगुल ही चौड़ी है, मगर पप्पा तो आपके पास इतनी बड़ी मृगछाला पर बैठे हुए हैं।"

दूल्हा

शिक्षक (सात वर्षकी बालिकासे) : "दूल्हा किसे कहते हैं।"
बालिका : "दूल्हा वह है जो शादियोंमें होता है।"

धूम्रपान

पिता : "जब मैं तुम्हारी उम्रका था सिगरेट नहीं पीता था। मगर तुम जब हमारी उम्रको पहुँचोगे तब भला यह बात अपने लड़कोंसे किस तरह कह सकते हो ?"

लड़का : "इतनी सफ़ाईसे तो नहीं कह सकूँगा जितनी सफ़ाईसे आप मुझसे कह रहे हैं।"

फ़िजूल

एक बालक अपनी माँसे बिछुड़ गया, उसे भटकता देख एक बुढ़िया उसके पास गयी और दयार्द्र होकर बोली,

"मैं पहुँचाती हूँ तुझे तेरी माँके पास, पर तू अपना और अपनी माँका नाम तो बता, बेटा ?"

बालक : "माँको वे दोनों नाम मालूम हैं, तुम योंही क्यों पूछती हो ?"

रेखा

गणितका अध्यापक : "रेखा किसे कहते हैं ?"

लड़की : "हमारी छोटी बहन को।"

देवदर्शन

नर्स : "बिल्लू, एक देव तुम्हारे लिए एक छोटी-सी बहिन लाया है ! देखोगे, कैसी है ?"

बिल्लू : "नहीं, लेकिन उस देवको देखना चाहता हूँ।"

अहम

शिक्षिका : "अच्छा रश्मि, बताओ वह अहम चीज़ क्या है, जो आज मगर चालीस बरस पहले नहीं थी ?"

रश्मि : "मैं।"

जीव-दया

मास्टर 'भूतदया' पर कुछ कह रहे थे। बीचमें पूछा, "अरे रामू, तेरे पिता प्राणियों पर दया दिखाते हैं न ?"

"हाँ मास्टर साहब, कल ही हमारे पड़ोसीसे कह रहे थे, 'हमारे कुत्तेके हाथ लगाया तो तेरा खून कर दूँगा ?"

राजनीतिज्ञ

पिता (गर्वसे) : "निश्चय ही हमारा लल्ला एक महान् राजनीतिज्ञ होगा।"

माँ : "आपने यह कैसे जाना, अभी वह तीन महीनेका है ?"

पिता : "बिलकुल साफ़ दीखता है—वह बातें ऐसी करता है जो लगती तो मीठी हैं, मगर होती हैं बिलकुल बेमानी !"

जहन्नुमरसीद

बच्चा : "क्यों अम्माँ, जब बाबूजी मरेंगे तब स्वर्गमें जायेंगे न ?"

माँ : "बक मत ! ऐसा वाहियात ख्याल तुझे कैसे पैदा हुआ ?"

फ़ैसला

बालकके शीशा तोड देने पर उसकी माँ आजिज आकर बोलीं, "बस हो गया फ़ैसला, तुम्हें इकलौता रखा जायगा।"

अक्रोध

माँ : "क्यों चन्दू, तू फिर किसीसे लड़कर आ रहा है ! तुमसे मैंने कहा नहीं है कि जब गुस्सा आया करे, सौ तक गिना कर ?"

चन्दू : "यह तो मुझे याद है, मगर दूसरे लड़केकी माँने उसे पचास तक ही गिननेको कहा है।"

शिशुपालन

कलिका : "पिताजी, माँसे न कहना; मगर मेरा ख्याल है कि वह बच्चे पालना नहीं जानती।"

पिता : "क्यों बिटिया, ऐसा कैसे कहती हो ?"

कलिका : " वह मुझे, जब मैं खूब जगी होती हूँ, सो जानेको कहती है; और जब मैं बड़ी गहरी नींदमें होती हूँ, जागनेको कहती है।"

नया बच्चा

बालक : "चाचीजी, हमारे यहाँ एक नया बच्चा आया है।"

चाचा : "भाई आया है या बहन ?"

बालक : "यह तो मुझे पता नहीं, क्योंकि अम्माने उसे अभी कपड़े नहीं पहनाये हैं।"

पूर्वज

"पिताजी, पूर्वज क्या होते हैं ?"

"बेटे, तुम्हारा पूर्वज एक मैं हूँ, एक तुम्हारे बाबा हैं।"

"ओह ! तब लोग उनके बारेमें शेखी क्यों बघारा करते हैं ?"

स्वादिष्ट खाना

मेहमान : "ऐसा स्वादिष्ट खाना तो हमें कभी-कभी ही मिलता है।"

छोटा लड़का : "हमें भी कभी-कभी ही मिलता है।"

बच्चे

"मेरी बीबी पियानो बहुत बजाया करती थी, मगर जबसे बच्चे आये उसे वक़्त ही नहीं मिल पाता।"

"बच्चे भी बड़ी राहतका कारण होते हैं ?"

पुश्तैनी

बालक : "पिताजी, जेब-खर्चके लिए ज्यादा पैसे मुझे कब दोगे ?"

पिता : "ज्यादा ? जब मैं छोटा था, मुझे तुम्हारी बराबर भी पैसे नहीं मिलते थे।"

बालक : "मैं नहीं जानता था कि बाबा तुमसे भी ज्यादा मूँजी थे !"

बिल्ली क्या खायेगी ?

रसोईघरमें विमला खिचड़ी खा रही थी और उसकी छोटी बहन मुन्नी दूध परसे सारी मलाई उतारकर खाये जा रही थी। विमला बोली, "मुन्नी, तू तमाम मलाई खाये जा रही है, बिल्ली क्या खायेगी ?"

मुन्नी : "बिल्ली खिचड़ी खायेगी।"

काट खायेगी !

माँ : "रम्मू ! कुतियाकी पूँछ मत खींच, काट खायेगी !"

रम्मू : "पूँछके क्या दाँत हैं जो काट खायेगी ?"

पालक

माँ : "अपनी पालककी भाजी खा लो बेटा, इससे दाँत मजबूत होते हैं।"

बेटा : "तुम इसे बाबाको क्यों नहीं खिलातीं ?"

गलतियाँ

शिक्षक (छोटे मियाँका होम-वर्क देखते हुए) : "समझमें नहीं आता कि एक आदमीसे इतनी गलतियाँ कैसे हो सकती हैं ?"

छोटू (गर्वसहित) : "एकको नहीं हैं, पिताजीने भी मेरी मदद की थी।"

बेचारा

चुन्नू : "पिताजी, इस पौधेको लगा दें तो इसपर नारंगियाँ आयेंगी ?"

पिता : "हाँ बेटा, आयेंगी ।"

चुन्नू : "कितनी अजीब बात होगी, पिताजी, क्योंकि यह तो नीबूका पौधा है !"

गुपचुप

एक छोटे लड़केको सिगरेट पीते देखकर एक सम्भ्रान्त महिला अपनी कारसे सचिन्त निकली और उस लड़केके पास जाकर बोली,

"क्या तुम्हारी माँको मालूम है कि तुम सिगरेट पीते हो ?"

"क्या तुम्हारे पतिको मालूम है कि तुम अजनबी लोगोंको सड़कपर रोककर उनसे बातें करती हो ?" लड़केने उलटकर पूछा ।

क्या होना चाहती है ?

शिक्षिका : "सुषमा, बता तेरी उम्र क्या है ?"

सुषमा : "दस वर्षकी ।"

शिक्षिका : "तू क्या बनना चाहती है ?"

सुषमा : "ग्यारह वर्षकी ।"

परोपदेश

माँने अपनी दो बरसकी लड़कीको उपदेश दिया कि "मुन्नी, धूपमें नंगे पैरों न जाया करो ।"

मगर अगले दिन सख्त दुपहरीमें भी मुन्नी घरसे गायब ! माँ ढूँढ़ने निकली । देखा कि वह धूपमें खेल रही है, माँको आती देख मुन्नी भागी । आगे-आगे मुन्नी पीछे-पीछे माँ । भागते-भागते मुन्नी बोली, "माँ, तुम ... नंगे पैरों भागती आ रही हो ।"

दिशा-ज्ञान

शिक्षक : "मनोहर, तेरे सामने उत्तर है, पीछे क्या है ?"
मनोहर : "मेरी कमीज़में लगी हुई थेगली।"

टिट फ़ार टैट

करीब तीन सालके एक लड़केने बरातमें आकर देखा कि शादीमें तो खूब मिठाइयाँ खानेको मिलती हैं, एक और दावत पक्की करनेकी आशासे उसने अपने बापसे पूछा,

"पिताजी, आपकी शादी हो गयी ?"

बाप (हँसकर) : "हाँ, बेटे, हो गयी।"

बालक : "आप मुझे अपनी शादीमें नहीं ले गये ! मैं भी आपको अपनी शादीमें नहीं ले जाऊँगा।"

ज़ालिम ज़माना

बेबी मरियम : "माँ, अगर मेरी शादी हुई तो डैडी-सरीखा पति मिलेगा न ?"

माँ : "यस, डीयर।"

बेबी : "और अगर मैंने शादी न की तो मैं चाची अगाथा-सरीखी बुढ़िया कुमारी बन जाऊँगी न ?"

माँ : "यस, डीयर।"

बेबी : "माँ ! दुनिया हम स्त्रियोंके लिए बड़ी सख्त है, है न ?"

अव्वल नम्बर

दो भाई लड़कर बैठे थे।

पिता : "अच्छा इस बार किसने शुरू किया था लड़ना ?"

टॉमी : "इसकी शुरुआत तब हुई जब जॉनीने मुझे पलटकर मारा।"

कारण

"बापू ! तुम्हारे सिरके बीचमें बाल नहीं हैं; बिलकुल सूखा-सपाट है, इसका क्या कारण है ?"

"वेटा, मुझे बहुत काम करना पड़ता है इसलिए सिरके बाल उड़ गये हैं"

"हूँ ! मेरी माँको बहुत बोलना पड़ता है इसीलिए उसके मुँहपर आप सरीखी मूँछें नहीं हैं ! एं बापू ?"

सेब

"तुमने अपनी छोटी बहनको क्यों मारा ?"

"बात यह हुई कि हम 'आदम और हव्वा' खेल रहे थे, मगर वह बजाय इसके कि सेबसे मुझे प्रलोभित करती, उसे खुद ही खा गयी।"

सहयोग

"पिताजी, आप छोटे थे तो आपके पिताजी आपको मारते थे ?"

"हाँ बेटा।"

"और उन्हें उनके पिता मारते थे ?"

"ज़रूर"

क्षणभर सोचकर बच्चा बोला, "आपका सहयोग मिल जाता तो यह पुश्तैनी हुड़दंग बन्द हो जाता !"

बटुककी परेशानी

माँ : "बटुक, तू आज गुमसुम और बेचैन क्यों है ?"

बटुक : "माँ, कल स्कूलमें मास्टरने सिखाया कि दो और दो—चार होते हैं, यहाँ पिताजीसे सुना कि तीन और एक—चार होते हैं, मैं उल[illegible] [illegible]का कहना ठीक है या पिताजीका।"

दिशा-ज्ञान

शिक्षक : "मनोहर, तेरे सामने उत्तर है, पीछे क्या है ?"

मनोहर : "मेरी कमीज़में लगी हुई थेगली।"

टिट फ़ार टैट

क़रीब तीन सालके एक लड़केने बरातमें जाकर देखा कि शादीमें तो खूब मिठाइयाँ खानेको मिलती हैं, एक और दावत पक्की करनेकी आशासे उसने अपने आपसे पूछा,

"पिताजी, आपकी शादी हो गयी ?"

बाप (हँसकर) : "हाँ, बेटे, हो गयी।"

बालक : "आप मुझे अपनी शादीमें नहीं ले गये ! मैं भी आपको अपनी शादीमें नहीं ले जाऊँगा।"

ज़ालिम ज़माना

बेबी मरियम : "माँ, अगर मेरी शादी हुई तो डैडी-सरीखा पति मिलेगा न ?"

माँ : "यस, डीयर।"

बेबी : "और अगर मैंने शादी न की तो मैं चाची अगाथा-सरीखी बुढ़िया कुमारी बन जाऊँगी न ?"

माँ : "यस, डीयर।"

बेबी : "माँ ! दुनिया हम स्त्रियोंके लिए बड़ी सख्त है, है न ?"

अव्वल नम्बर

दो भाई लड़कर बैठे थे।

पिता : "अच्छा इस बार किसने शुरू किया था लड़ना ?"

टॉमी : "इसकी शुरुआत तब हुई जब जॉनीने मुझे पलटकर मारा।"

बेचारा

चुन्नू : "पिताजी, इस पौधेको लगा दें तो इसपर नारंगियाँ आयेंगी ?"
पिता : "हाँ बेटा, आयेंगी ।"
चुन्नू : "कितनी अजीब बात होगी, पिताजी, क्योंकि यह तो नीबूका पौधा है !"

गुपचुप

एक छोटे लड़केको सिगरेट पीते देखकर एक सम्भ्रान्त महिला अपनी कारसे सचिन्त निकली और उस लड़केके पास जाकर बोली,
"क्या तुम्हारी माँको मालूम है कि तुम सिगरेट पीते हो ?"
"क्या तुम्हारे पतिको मालूम है कि तुम अजनबी लोगोंको सड़क रोककर उनसे बातें करती हो ?" लड़केने उलटकर पूछा ।

क्या होना चाहती है ?

शिक्षिका : "सुषमा, बता तेरी उम्र क्या है ?"
सुषमा : "दस वर्षकी ।"
शिक्षिका : "तू क्या बनना चाहती है ?"
सुषमा : "ग्यारह वर्षकी ।"

परोपदेश

माँने अपनी दो बरसकी लड़कीको उपदेश दिया कि "मुन्नी, धूपमें नंगे पैरों न जाया करो ।"
मगर अगले दिन सख्त दुपहरीमें भी मुन्नी घरसे ग़ायब ! माँ ढूं[illegible] निकली । देखा कि वह धूपमें खेल रही है, माँको आती देख मुन्नी भा[illegible] आगे-आगे मुन्नी पीछे-पीछे माँ । भागते-भागते मुन्नी बोली, "माँ, तुम [illegible] भागती आ रही हो ।"

पाथेय

मौसी : "बेटा रमेश, कुछ और नहीं लोगे ?"

रमेश : "ना मौसी, खूब डटकर खाया है।"

मौसी : "तो कुछ फल और मिठाई अपनी जेबोंमें रख लो रास्तेमें खा लेना।"

रमेश : "नहीं, जेबें भी भरी हुई हैं।"

तस्वीर

"क्या कर रही है मुन्नी ?"

"ईश्वरका चित्र बना रही हूँ।"

"पर कोई नहीं जानता कि ईश्वर कैसा है।"

"मैं बना चुकूँगी तब सब जान जायेंगे।"

बचत

"माँ !"

"हाँ बेटा, क्या है ?"

"तूने कहा था न कि मैं तूफ़ान नहीं करूँ तो तू मुझे दो आना देगी?"

"हाँ, तो ?"

"तेरे दो आने बचा दिये।"

शहर और नरक

मेज़बान : "कहो भाई यशवन्त, हमारा शहर आपको कैसा लगा ?"

मेहमान : "शहर ? आप मुझसे शहरकी बात पूछते हैं ? शहर हमेशा नरक-नगरोंमें होते हैं.......।"

कचन (मेज़बानकी छोटी लड़की) : "तो काका, तुम नरकमें भी हो आये हो ?"

यूँ और वूँ

मालिकिन : "तुम्हें मेहमानोंकी खातिर भी करनी आती है ?"

उम्मीदवार : "जी हाँ, दोनों तरहसे !"

मालिकिन : "दोनों तरह कैसे ?"

उम्मीदवार : "यों भी कि वे एक बार आकर फिर कभी न आयें, और इस तरह भी कि वे कभी जानेका नाम भी न लें।"

जयन्ती

"आज हमारी नौकरानीकी रजत-जयन्ती है।"

"क्या उसे तुम्हारे यहाँ काम करते हुए पच्चीस साल हो गये ?"

"नहीं, आज हमने पच्चीसवीं नौकरानी रखी है।"

अज्ञानी

"मालिकिन : "चले आओ, यह कुत्ता काटता थोड़े ही है।"

"आगन्तुक : "मगर भौंक तो भयंकर रहा है !"

मालिकिन : "जानते नहीं, भौंकता कुत्ता काटता नहीं ?"

आगन्तुक : "मैं यह तो जरूर जानता हूँ, मगर सोच रहा हूँ कि कुत्तेको भी इसकी जानकारी है या नहीं ?"

दुबारा

"क्या आप वक़्त ख़राब करनेवालोंसे परेशान हैं ? मेरी तदबीर क्यूं नहीं आजमाते ?"

"आपकी तदबीर क्या है ?"

"अन्दर बुलानेसे पहले मैं अपना टोप सरपर रख लेता हूं। अगर कोई ऐसे महानुभाव हुए जिनसे मैं मिलना नहीं चाहता, तो मैं सिर्फ़ यह कहता हूं, 'अफ़सोस है कि मैं अभी बाहर जा रहा हूं।' और अगर कोई सज्जन ऐसे निकले जिनसे मैं मिलना चाहता हूं तो कहता हूं, 'कैसी खुश-क़िस्मती है, मैं अभी बाहरसे आया हूं।'"

साफ़-जंगली

"मैं रास्तेमें मिलती हूं तो तुम्हारे पति कभी टोप उठाते ही नहीं। वजह क्या है ? क्या सभ्यता-शून्यता ?"

"नहीं, केवल बाल-शून्यता।"

रेजिश

पाँच बच्चोंसे उलझी हुई एक औरत बसमें चढ़ी।

कण्डक्टर : "ये सब आपके हैं या यह कोई पिकनिक है ?"

औरत : "ये सब मेरे हैं। और सच मानना यह पिकनिक नहीं है, भाई।"

ख़ैर-ओ-ख़बर

"मेरे पिता अगर कभी आधी रातसे ज्यादा बाहर रहते तो मेरी माँ तमाम अस्पतालोंको चैक कर डालती थी !"

"यह मालूम करनेके लिए कि क्या वे वहाँ हैं ?"

"नहीं, उन्हें दाखिल करानेके लिए।"

भाड़ा

मेहमान : "मेरा खयाल है कि ये इस फ्लैटका भाड़ा बहुत माँगते है।"

मेज़बान : "बेशक, पिछले महीने उन्होंने हरिहरसे सात बार माँगा।"

तीसमार खाँ

मिस्टर कण्टाला : "बस जनाब, फिर क्या था ! बन्दूकसे गोलीका निकलना था कि भेड़िया मरा पड़ा नज़र आया !!"

श्रान्त श्रोता : "कबका मरा पड़ा था वह ?"

संयोग

"पिताजी, आप कहाँ पैदा हुए थे ?"

"कलकत्तेमें।"

"माँका जन्म कहाँ हुआ था ?"

"बम्बईमें।"

"और मैं कहाँ जन्मा था ?"

"कोलम्बोमें।"

"कैसे संयोगकी बात है कि हम एक जगह मिल गये।"

क्वेकर और चोर

क्वेकर लोग बड़े शान्त और मृदुल स्वभावके होते है। एक रोज किसी क्वेकरके घरमें चोर घुस आया। क्वेकर बन्दूक लेकर उस कमरेमें पहुँचा जहाँ चोर लूट मचा रहा था।

"मित्र, मैं तुमको, या दुनियामें किसीको, कोई क्षति नहीं पहुँचाना चाहता। लेकिन तुम वहाँ खड़े हुए हो जहाँ मैं गोली चलानेवाला हूँ।"

चोर जरा हटकर खड़ा हो गया।

गैर-ठिकाना

"अपना नाम अखबारमें देखकर, आपको आनन्द नहीं होता ?"

"बिलकुल नहीं। इससे मेरे कर्जख्वाहोंको मेरा ठीक पता मालूम हो जाता है।"

सबूत

सेठजी : "पर तुम्हारे पास इसका क्या सबूत है कि तुमने सेठ घनश्यामदासके यहाँ छह महीने भोजन बनाया है ?"

रसोइया : "मेरे पास कई बरतन हैं जिनपर उनके नाम खुदे हुए हैं।"

शेक्सपीयर

"मैंने अपने कुत्तेका नाम शेक्सपीयर रखना चाहा, मगर माँने रोक दिया, बोली, इससे उस महाकविका अपमान होगा। तब मैंने उसे तुम्हारा नाम देना चाहा, मगर मेरी माँने रोक दिया।"

"कितनी नेक हैं तुम्हारी माँ !"

"बोली, 'इससे कुत्तेका अपमान होगा।'"

धनवान् पिता

सज्जन : "आपका लड़का तो हवाई जहाजमें सफर करता है, मगर आप रेलगाड़ीसे ही...."

धनकुबेर रॉक फ़ेलर : "हाँ, उसका बाप धनवान् है।"

उपदेश

एक पादरी साहब अपनी छोटी लड़कीको एक लाजवाब कहानी सुना रहे थे। सुनकर साहबजादी बोली, "पिताजी, यह सच बात है या महज उपदेश है ?"

भरमार

मेज़बान : "आपके बग़ैर आपकी पत्नी और बच्चोंको खाली-खाली-सा लगता होगा। है न ?"

मेहमान : "हाँ, सचमुच। मैं, उन्हें आज ही ख़त लिखता हूँ यहाँ चले आनेके लिए।"

चश्मा

छोटा लड़का : "पिताजी, आप सोते वक़्त भी चश्मा क्यों पहने रहते हैं ?"

पिता : "ताकि सपनोंको साफ़ देख सकूँ।"

क्वेकर

एक लड़केने 'क्वेकर' लोगोंपर एक निबन्ध लिखा। उसने बताया कि क्वेकर लोग शान्ति-प्रिय होते हैं, कभी झगड़ा नहीं करते, कभी लड़ते नहीं, कभी नोचते-काटते-बकोटते नहीं।

अन्तमें उसने लिखा, "पिताजी क्वेकर हैं, मगर माँ नहीं है।"

घमण्ड

"एक ज़माना था कि मेरी अपनी गाड़ी थी !"

"हाँ, और तुम्हारी माँ उसे धकेलती थी।"

चौकस

किरायेदार : "जब मैं मकान छोड़ने लगा तो मेरा पहला मालिक-मकान बहुत रोया।"

नया मालिक-मकान : "पर इतमीनान रखिए, मैं नहीं रोनेका। मैं तो एक महीनेका किराया पहले ही जमा करा लेता हूँ।"

गैर-ठिकाना

"अपना नाम अखबारमें देखकर, आपको आनन्द नहीं होता ?"

"बिलकुल नहीं। इससे मेरे कर्ज़ख्वाहोंको मेरा ठीक पता मालूम हो जाता है।"

सबूत

सेठजी : "पर तुम्हारे पास इसका क्या सबूत है कि तुमने सेठ घनश्यामदासके यहाँ छह महीने भोजन बनाया है ?"

रसोइया : "मेरे पास कई बरतन हैं जिनपर उनके नाम खुदे हुए हैं।"

शेक्सपीयर

"मैंने अपने कुत्तेका नाम शेक्सपीयर रखना चाहा, मगर माँने रोक दिया, बोली, इससे उस महाकविका अपमान होगा। तब मैंने उसे तुम्हारा नाम देना चाहा, मगर मेरी माँने रोक दिया।"

"कितनी नेक हैं तुम्हारी माँ !"

"बोली, 'इससे कुत्तेका अपमान होगा।' "

धनवान् पिता

सज्जन . "आपका लड़का तो हवाई जहाजमें सफ़र करता है, मगर आप रेलगाड़ीसे ही...."

धनकुबेर रॉक फ़ैलर · "हाँ, उसका बाप धनवान् है।"

उपदेश

एक पादरी साहब अपनी छोटी लड़कीको एक लाजवाब कहानी सुना रहे थे। सुनकर साहबजादी बोली, "पिताजी, यह सच बात है या महज़ उपदेश है ?"

शान्ति

पड़ोसी : "आपकी पुत्री संगीत सीखती है तो किसी दिन किसी पब्लिक हॉलमें उसका कोई सार्वजनिक प्रोग्राम रखिए।"

पिता : "क्या आपका खयाल है कि यह इतना अच्छा गाती है?"

पड़ोसी : "ना, पर एकाध दिन शान्ति मिले ऐसी इच्छा है?"

अनाथ

"पिताजी, क्या आदम और हव्वा पहले पुरुष और स्त्री थे?"

"हाँ बेटा।"

"क्या उनके कोई माँ-बाप न थे?"

"ना।"

"तो क्या वे बिलकुल अनाथ थे?"

प्रत्युत्तर

पिता : "बेटा, तुम बालिग़ हो रहे हो। अब वक़्त हो गया है कि तुम जीवनको गम्भीरतासे लो और कुछ अपने भविष्यकी सोचो। मान लो मैं एकाएक मर गया, तो तुम कहाँ होगे?"

साहबज़ादा : "मैं तो यहीं हूँ पर यह बताइए कि आप कहाँ होंगे?"

भेद

पहली : "वह बताती थी कि, तुमने उसे वह बात बता दी जिसके बारेमें मैंने तुमसे कहा था कि उसे न बताना।"

दूसरी : "मैंने तो उससे कह दिया था कि वह तुम्हें न बताये कि मैंने उसे बता दिया है।"

पहली : "अच्छा, उसे न बताना कि मैंने तुम्हें बता दिया कि उसने वह बात मुझे बता दी थी।"

सफ़ाई

माँ : "क्यों रे रमेश ! कल मैंने मर्तबानमें दो पेड़े रखे थे, आज एक ही क्यों है ?"

रमेश : "दूसरा मुझे अँधेरेमें दिखा नहीं होगा।"

गायक

"लाओ भाई, स्नान कर डालें।"

"बेहतर है, मगर तुम अपना वह लम्बा गाना मत गाने लगना जिसे तुम स्नानघरमें गाया करते हो—हमारे यहाँ साबुनकी छोटी-सी ही टिकिया बची है।"

पाक-प्रवीणा

एक : "क्यों सखी, क्या अपने हाथसे खाना बनानेमें किफ़ायत है ?"

दूसरी : "बिला शक ! क्योंकि मेरा मर्द जितना पहले खाता था अब उसका आधा भी नहीं खाता।"

दानशीला

सेठानी : "तुमने मेरी हीरेकी अँगूठी देखी ?"

पड़ोसिन : "हाँ, जब तुमने गांधी-कोषमें एक पैसा डाला था उस वक़्त देखी थी।"

खुशी

पिता (सगर्व) : "अब तो तुम खुश हो कि बहन पानेकी तुम्हारी प्रार्थना मंजूर हो गयी ?"

बालक (जुड़वाँ बहनोंको एक नज़र देखकर) : "और आपको खुशी है न कि मैंने प्रार्थना यहीं रोक दी ?"

गोद

किसी धनवान्‌को लड़का गोद लेना था। उम्मीदवारोंमें एक सफ़ेद दाढ़ी वाला बुड्ढा भी था।

"आप!"

"हाँ, हाँ। मेरे गोद लेनेसे आपको एक विशिष्ट फ़ायदा रहेगा।"

"क्या?"

"आपको गोद लेनेकी तीन पुश्त तक फ़िक्र नहीं रहेगी; क्योंकि मेरे बेटे, नाती और पन्ती भी हैं।"

सयानी

पति : "आज चौबेजीको भी भोजनके लिए क्यों न बुला लें?"

पत्नी : "वे तेरहवें मेहमान हो जायेंगे।"

पति : "तो क्या हुआ, वे कोई वहमी आदमी थोड़े ही हैं!"

पत्नी : "न होंगे, लेकिन हमारे यहाँ काँटे और छूरियाँ तो बारह ही हैं!"

पसन्दगी

एक : "अफ़सोस कि हम अपने वाल्दैनको नहीं चुन सके!"

दूसरा : "इसमें अफ़सोस काहेका? यह तो इनसाफ़की बात है—वो भी तो आपको नहीं चुन सके!"

नास्तिक

"पिताजी, नास्तिक किसे कहते हैं?"

"जो वेदको छोड़ अन्य धर्मग्रन्थको मानने लगे।"

"और जो अन्य धर्मग्रन्थको मानना छोड़कर वेदको मानने लगे?"

"दीक्षित।"

दावत

अशोकने भीमको निमन्त्रण दिया, मगर भीम नहीं आया। चन्द रोज बाद दोनों मिले तो अशोकने शिकायत की—"

"भाई, उस रोज तुम खाना खाने नहीं आये!"

भीम : "कौन? मैं? नहीं आया?"...... "ओ! याद आया!—मुझे भूख नहीं थी।"

हुआ नहीं!

एक गोष्ठीमें ज़िक्र हो रहा था कि घटनाओंका गर्भस्थ बच्चेपर असर ज़रूर पड़ता है। एक नवयुवती बोली,

"ग़लत बात है! मेरी ही मिसाल लीजिए—गर्भावस्थामें मेरी माँ एक पुराना रिकार्ड हमेशा बजाया करती थी। लेकिन मुझपर तो उसका कोई असर कोई असर कोई असर........"

परितृप्त

"छह लाख रुपयोंवाला आदमी ज्यादा सुखी है या छह बच्चों-वाला?"

"छह बच्चोंवाला?"

"क्यों?"

"क्योंकि छह लाखवाला हमेशा और चाहता है।"

ज़रा-सी भूल

रसोइन : "तनक-सी भूलपर ईता गुस्सा न करो मालिकिन!"

मालिकिन : "तनक-सी भूल है यह?"

रसोइन : "और क्या। दूध पहले गरम करके फिर जामन लगाना था, मैंने पहले जामन देकर बादमें गरम किया।"

बिम्ब-प्रतिबिम्ब

एक देवीजी अपनी यकसाँ जुड़वाँ लड़कियोंको किसी कपड़ेवालेकी दुकानपर लायीं। एक ही क़िस्मके उन्होंने दो कोट चुने। दुकानदारने कहा,

"इन्हें दर्पणके सामने ले चलिए न।"

"दर्पणकी ज़रूरत नहीं है। एक दूसरीको देख ले, इसीसे काम चल जायेगा।"

दुरुस्त आयद

किसी दावतमें रंजना अपना गाना सुनाकर सब मेहमानोंका रंजन-कर रही थी। लेकिन गाना बिगड़ गया। मेज़बान घबराकर उठा और यूँ क्षमा-याचना करने लगा,

"देवियो और सज्जनो, श्रीमती रंजना देवीने गाना शुरू करनेसे पहले मुझसे कहा था कि उनका गाना खराब हो रहा है; गाना जम नहीं सकेगा। यह मैं शुरूमें आपसे अर्ज़ करना भूल गया, अब करता हूँ।"

एलजबरा

स्कूलके बोर्डिंगसे लड़की घर आयी हुई थी। वह अपने पितासे एल-जबरा, अरिथमैटिक सीखनेकी बात कह रही थी। यह माँने याद रखा। दोपहर बाद पड़ोसिन घर मिलने आयी तो माँ लड़कीसे बोली, "बेटी, इन्हें एलजबरेमें नमस्कार करके तो बता।"

नक़्शे-क़दम

"तुम्हारे पिता तो हलवाई थे, तुम उनके पद-चिह्नोंपर क्यूँ न चले?"

"तुम्हारे पिता तो बड़े भले आदमी थे, तुम उनके नक़्शे-क़दमपर क्यूँ न चले?"

आजकलकी औलाद

पिता (मनमोहन-आमेज लहजेमें) : "देखो बेटा, मकड़ी कैसा जाला है ! आदमी चाहे जितनी कोशिश करे, ऐसा जाला नहीं बना सकता।"
साहबजादे बोले, "सो क्या हुआ ? मैं अपनी पतंगके लिए ऐसा बनाता हूँ कि कोई मकड़ी लाख कोशिश करनेपर भी हरगिज नहीं सकती।"

जनरल शर्मन

एक आदमी अपने लड़केके साथ एक बगीचेमें घूमने जाया करता था। एक घोड़ेपर सवार जनरल शर्मनकी मूर्ति थी। उसे देखकर लड़का क भाव-विभोर रहा करता था। उस आदमीको जब किसी और को जाना पड़ गया, तो वे आखिरी बार उस बगीचेमें आये। लड़केने ी बाँहें मूर्तिके गलेमें डाल दीं और सुबकते हुए बोला,
"अलविदा, शर्मन।"
पिता लड़केकी इस राष्ट्र-भक्तिसे बड़ा प्रभावित हुआ। आखिर का हाथ थामकर लौटने लगा। लड़का फिर बोला,
"पिताजी, यह शर्मनकी पीठपर कौन सवार है ?"

ऐक्सेलैण्ट

सोहनके पिता उसके प्रगति-कार्डको देखकर बोले, "अंग्रेजी बहुत जोर, हिन्दी कमजोर, गणित बहुत कमजोर, ड्राइंग साधारण;…हूँ ! यह है तुम्हारी तरक्की ?"
सोहन : "जी, यहाँतक तो रिपोर्ट सचमुच अच्छी नहीं है, लेकिन ी पढ़िए।" उसने नीचेकी एक लाइनपर अँगुली रखकर बतलाया। लिखा था,
"तन्दुरुस्ती, बहुत लाजवाब।"

मुसद्दी

"पिताजी, 'मुसद्दी' किसे कहते हैं ?"

"स्त्रीके साड़ी माँगनेपर यह समझा सकनेवाला पुरुष कि सच्ची ज़रूरत तो उसे मेहँदीकी है।"

वंशानुगतिकता

"क्या तुम वंशानुगतिकतामें विश्वास करते हो ?"

"क्यों नहीं ? अवश्य ! उसीकी बदौलत तो मुझे यह सब दौलत मिली है।"

पूर्वज

"कभी तुम मर्दाने दिखते हो कभी ज़नाने !"

"यह तो वंशानुवंश गत है। मेरे पूर्वजोंमें आधे पुरुष थे और शेष स्त्री।"

क़र्ज़की अदायगी

शिक्षक : "मनोहर, खड़ा हो। अगर तेरे पिताको किसीके दो-सौ रुपये देने हों, और वे बीस रुपया महीना देनेका वायदा करें तो कुल रक़म चुकानेमें तेरे पिताको कितना समय लगेगा ?"

मनोहर : "दो-सौ महीने।"

शिक्षक : "तुझे अंकगणितकी साधारण समझ भी नहीं है। तू होशमें तो है ?"

मनोहर : "साहब, आपको मेरे बापके चलन-व्यवहारकी जानकारी नहीं है। मैं उन्हें आपसे ज़्यादा जानता हूँ। दो-सौ महीनेमें भी उसके रुपये वसूल हो जायें तो बड़ा नसीबदार है।"

खाली पेट

"खाली पेट तुम कितनी रोटियाँ खा सकते हो ?"

"छह"

"नही, एक हो ! क्योंकि एक रोटो खा चुकनेके बाद तुम्हारा पेट खाली नही रहता ।"

दोपारोपण

"देखिए, आप मेरे पुरखोंके कारण मुझे दोष न दीजिए ?"

"तुम्हे दोष नही देता । मैं तो तुम्हारे कारण उन्हें दोष दे रहा हूँ ।"

मजबूरी

लन्दन क्लबमें एक शख्सने सजीदगीसे अपने एक अत्यन्त बहरे दोस्तसे हाथ मिलाते हुए कहा,

"मुझे तुम्हारे चचाकी मृत्युका समाचार जान कर रंज हुआ ।"

"क्या कहा ?"

"मुझे यह जानकर दु:ख हुआ कि तुम्हारे चचा मर गये ।"

"जरा जोरसे बोलो भाई, मैं सुन नही सका ।"

"दु:ख है कि तुमने अपने चचाको दफ़ना दिया ।"

"दफ़नाता नही तो क्या करता ? वह मर जो गया था !"

रसोड़े की रानी

"यदि घरकी रानीको अच्छी रसोई आती हो फिर भी न बनावे, किसी पतिके लिए इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है ?"

"यह कि न आती हो और बनाने बैठ जाये ।"

परिभाषाएँ

वक्ता

वक्ता–वह शख्स जो अपने देशके लिए आपकी जान देनेके लिए हमेशा तैयार रहता है।

दृढ़ता

दृढ़ता–वह गुण जो हममें हो तो सत्याग्रह, दूसरेमें हो तो दुराग्रह।

पड़ोसी

पड़ोसी–वह महानुभाव जो आपके मामलोंको आपसे ज्यादा जानते हैं।

शादी

शादी–यह मालूम करनेका तरीक़ा कि आपकी बीबीको कैसा खाविन्द पसन्द आता।

ऐक्सपर्ट

विशेषज्ञ–वह आदमी है जो कमसे-कम चीजोंके बारेमें ज्यादा-से-ज्यादा जानता है, आखिर वह लगभग न कुछके बारेमें तक़रीबन् सब कुछ जान जाता है।

विशेषज्ञ

विशेषज्ञ—वह शख्स जिसे, ज्यादा से ज्यादा, सीधी बातको उलझाना आता है।

धोबी

धोबी—वह आदमी जो कमीज़में पत्थर तोड़कर अपनी रोज़ी कमाता है।

सभ्य व्यवहारकी परिभाषा

मुँह बन्द करके जम्हाई लेना।

दरख्त

दरख्त वह चीज़ है जो एक जगहपर बरसों खड़ी रहेगी, और फिर एकाएक किसी लेडी ड्राइवरके सामने जा गिरेगी।

शक्कर

शक्कर—वह चीज़ जिसके बग़ैर चाय महा वाहियात लगती है।

मज़ाक

मज़ाक़ मानें कुछ न करनेके लिए कुछ करना।

आमदनी

आमदनी—जिसमें रहा न जा सके और जिसके बग़ैर भी न रहा जा सके।

ज़मीर

वह लघु ध्वनि जो तुम्हें लघुतर महसूस कराती है।

मनोवैज्ञानिक

मनोवैज्ञानिक–वह शख्स, जो किसी खूबसूरत लड़कीके कमरेमें दाखिल होनेपर उसके सिवाय सबको गौरसे देखता है।

राजनेता

राजनेता–ऐसा आदमी जो धनवान्से धन और गरीबसे वोट इस वादेपर बटोरता है कि वह एकको दूसरेसे रक्षा करेगा।

—गवर्नर मोदी

आशावादी

आशावादी–वह शख्स है जो सिगरेट माँगनेसे पहले अपनी दियासलाई जला ले।

दोस्त

दोस्त–वह शख्स जिसके वही दुश्मन हैं जो तुम्हारे हैं।

राय

राय–वह इकलौती वस्तु जिसका देना अधिक सुखद है उसके लेनेकी अपेक्षा।

लोकप्रियता

लोकप्रियता–बेशुमार नीरस और बेमजा लोगोंको जाननेका गुण।

साड़ी

नयी साड़ी–जिससे स्त्रीको उतना ही नशा हो जितना पुरुषको शराबकी एक पूरी बोतल पीकर होता है।

शीर्षासन

"क्या तुम अपने सरपर खड़े हो सकते हो ?"

"ना, बहुत ऊँचा है।"

मुसीबत

ऑफ़िसबॉय : "आपके मुलाक़ाती मुझसे नहीं रुकते साहब ! जब मैं कहता हूँ कि आप बाहर गये हैं तो विश्वास नहीं करते, कहते हैं, 'हमें जरूर मिलना है।' "

एडीटर : "उनसे कहा करो कि यह तो सब ही कहते हैं। सख्त बनकर भी उन्हें रोको। मुझे खलल नहीं चाहिए।"

उसी दिन एक महिला मिलने आयी। लड़केने जतला दिया कि मुलाक़ात नामुमकिन है।

स्त्री : "लेकिन मैं जरूर मिलूँगी ! मैं उनकी पत्नी हूँ !"

लड़का : "यह तो सब ही कहती हैं !"

क़ुदरत

"क़ुदरत भी क्या करिश्मासाज है ! दस लाख बरस पहले उसे क्या मालूम था कि हम चश्मा पहनेंगे, फिर भी देखो उसने हमारे कानोंको किस तरह खड़ा-खड़ा रखा है !"

मूल व्याधि

"आज खफ़ा-खफ़ा-से क्यों हो, दोस्त ?"

"इन पत्रिकाओंमें जब देखो सिगरेट और शराबकी बुराइयोंका ही जिक्र रहता है !"

"तुम इनमें-से किसका त्याग कर रहे हो ?"

"पढ़नेका ।"

इनसे मिलिए !

"एक बार जब मैं अफरीक़ाके घने जंगलोंमें-से गुज़र रहा था, मुझे एक शेर मिला। उस वक्त मेरी बन्दूक मेरे पास नहीं थी। इसलिए मैंने एक बालटी पानी लेकर उसके सिरपर डाल दिया। शेर भाग गया।"

"यह तो तुमने सच्ची बात कही। इसकी तो मैं भी गवाही दे सकता हूँ। उस वक़्त मैं भी अफ़रीक़ाके उसी जंगलमें था। शेर भागकर मेरे पास आया। मैंने उसकी गरदनके बालोंपर हाथ फेरा-भीगे हुए थे।"

रेज़गारी

ग्राहक : "क्या हुआ इसका ?"

सेल्समर्न : "नौ रुपये पन्द्रह आने ग्यारह पाई।"

ग्राहक (सब जेबें टटोलता हुआ) : "देखता हूँ छुट्टे पैसे हैं या नहीं, मैं दस रुपयेका नोट नहीं तुड़ाना चाहता।"

दर्शन-दिग्दर्शन

"आपकी सेक्रेटरी तो बड़ी होशियार दिखती है !"

"हाँ, यह उसकी विशेषता है।"

"होशियारी ?"

"नहीं, होशियार दिखना।"

शिक्षित

किसीने बर्नार्ड शॉसे पूछा : "शिक्षित आदमी किसे कहना चाहिए ?"

बर्नार्ड शॉ : "अफ़सोस है कि मुझे ऐसा कोई आदमी आज तक मिला ही नहीं है !"

अन्दाज़े-बयाँ

एक खबर यूँ निकली,

"अफ़वाह है कि कतिपय कथित प्रतिष्ठित महिलाओंको कहीं दावत दी गयी । कहा जाता है कि कोई श्यामला देवी मेजबान थीं । वो किसी नन्दनन्दनकी बीबी होनेका दावा करती बतायी जाती हैं ।"

तारीख

"आज क्या तारीख है ?"

"ला तेरे अखबारसे देखकर बताऊँ ।"

"कुछ फ़ायदा नहीं, यह अखबार तो कलका है ।"

शनाख्त

एक रूपवती नवयुवती बैंकमें चैक भुनाने गयी । क्लर्कने उसे ग़ौरसे देखा और पूछा, "अपनी शनाख्त दे सकती हैं ?"

युवतीकी शक्लपर ज़रा परेशानीके आसार नुमायाँ हुए । उसने अपने हैण्डबेगमें हाथ डालकर एक दर्पण निकाला । उसमें मुखड़ा देखा और तब बोली, "हाँ, मैं ही तो हूँ !"

कर्मफल

झटकेदार लिफ़्टमें घबरा कर एक मेम साहिबा ऑपरेटरसे बोलीं, "अगर केबिल टूट गये तो हम नीचे जायेंगे या ऊपर ?"

"यह तो इसपर निर्भर है कि आप किस तरहकी जिन्दगी बसर करती रही हैं ।" जवाब मिला ।

'समझता था बहुत मशहूर हूँ मैं'

अमेरिकाके महान् गायक ऐनरिको कैरूसोका कहना है कि "कोई आदमी उतना मशहूर नही होता जितना मशहूर वह अपनेको समझता है।" एक बार भूले-भटके वो किसी किसानके यहाँ पहुँच गये।

"आपका नाम ?"

"कैरूसो।"

"अहा ! क्रूसो !! मैं सपनेमें भी नही सोच सकता था कि इस गरीब की कुटियामें संसारका महान् यात्री, रौबिन्सन क्रूसो, आयेगा !" किसान खुशीसे उछलकर बोला।

स्टेशन

मुसाफिर : "उन लोगोंने स्टेशनको शहरसे इतनी दूर क्यों बनाया ?"

रेलवे अधिकारी : "क्योंकि वे उसे रेलवे लाइन्सके पास बनाना चाहते थे।"

याचना

"भीखकी बनिस्बत तुम्हें सीख माँगनी चाहिए।"

"मैंने वह चीज माँगी जिसे मैं आपके पास समझता था।"

प्रस्ताव पास

विद्वानोंकी एक सभाका सभापतित्व करते हुए वह साहब एक प्रस्ताव पर यूँ बोले,

"मैं इस प्रस्तावको सर्वसम्मतिसे पास करता हूँ।"

योजना

पंजाबके कुछ गाँवोंमें पचवर्षीय योजनाको 'श्रीमती योजना' कहते हैं।

मौत

सवाल : "अगर दुनियामें मौत न होती तो ?"

जवाब : "लोग बे-मौत मर जाते !"

दीर्घजीवी

दो जुड़वां भाई अपनी ९५वीं सालगिरह मना रहे थे। सारे गांवमें धूम मची हुई थी।

नवागन्तुक : "वे अपनी लम्बी उम्रकी वजह क्या बताते हैं ?"

"एक कहता है कि वह सवेरे उठा करता है, दूसरा कहता है कि वह सवेरे-सवेरे कभी नहीं उठता।"

भोंड़ी दुनिया

ग्राहक : "खुदाने छह दिनमें दुनिया बना दी और तुम्हें एक पतलून सीनेमें छह महीने लग गये ?"

दर्जी : "ज़रा दुनियाको देखिए फिर इस पतलूनको देखिए।"

आख़िरी फ़ैसला

मि० कण्टाला : "मैंने तो तय कर लिया है कि मुझे जलाया जाये, दफ़नाया न जाये।"

श्री संत्रस्त : "टैक्सी लाऊँ ?"

कला-विहीना

विदेशी आगन्तुक : "मुझे आपकी चित्रकारियां समझ नहीं पड़ीं।"

पॅब्लो पिकासो : "क्या आप चीनी बोल सकते हैं ?"

"नहीं।"

"६० करोड़ लोग ऐसे हैं जो बोल सकते हैं।"

दाढ़ी

"मेरे भी दाढ़ी थी तुम्हारी-जैसी मगर जब मैंने देखा कि कैसा भयंकर दिखता हूँ तो मैंने वह कटा डाली।"

"और मेरी शक्ल थी तुम्हारी-जैसी मगर जब मैंने देखा कि कैसा भयंकर दिखायी देता हूँ तो मैंने दाढ़ी रख ली।"

'और वह मैं हूँ'

एक सहभोजके खत्म होनेके बाद एक सज्जन छाता उठाकर चलनेका उपक्रम करने लगे तो किसी दूसरे सज्जनने उनसे पूछा,

"क्या आपका शुभ नाम कैलाश है?"

"नहीं।"

"माफ़ कीजिए, जो छाता आप लिये जा रहे हैं वह कैलाशका है। और वह मैं हूँ।"

सेव

माली (सेवके पेड़के पास घूमते हुए लड़केसे) : "क्या तुम सेवकी फ़िराक़में हो?"

लड़का : "नहीं मैं यह कोशिश कर रहा हूँ कि न लूँ।"

मैच

मैनेजरने दफ़्तरके छोकरेको फुटबॉलका मैच देखते पाया तो नज़दीक जाकर बोले,

"अच्छा यही है आपके चचाकी श्मशान-यात्रा जिसमें आपको शामिल होना था!"

लड़का फ़ौरन् सँभलकर बोला,

"जी, मालूम तो ऐसा ही होता है, वो इसमें रेफ़री हैं।"

तीसरा हौज

मित्र : "ये तीन हौज कैसे हैं?"

महाराजा : "एक गरम पानीका है, एक ठण्डे पानीका।"

मित्र : "लेकिन यह तीसरा तो खाली है!"

महाराजा : "यह तो उन लोगोंके लिए है जो तैर नहीं सकते!"

बन्दर

आदमी : "अगर तुम इस दर्पणमें अपना मुँह देखोगे तो तुम्हें बन्दर दिखायी देगा।"

लड़का : "तुम्हें कैसे मालूम हुआ?"

हरा चश्मा

एक घोड़ा-गाड़ीवालेने अपने घोड़ेको हरा चश्मा पहना रखा था।

किसीने पूछा, "इसे हरा चश्मा क्यों पहनाया है?"

घोड़ा-गाड़ीवाला बोला, "घास सूखी है, हरे चश्मेसे इसे हरी दीखे, इसलिए।"

देनेवाला

मतवाला : "ऐ सनम! जिसने तुझे चाँद-सी सूरत दी है। उसी अल्लाहने मुझको भी मुहब्बत दी है।"

सती स्त्री : "उसी अल्लाहने मुझको भी कटारी दी है।"

नी-की

अमेरिकन : "तुम कौनसे 'नी' हो?—चीनी, जावानी या जापानी?"

चीनी : "मैं तो चीनी हूँ। मगर तुम कौनसे 'की' हो?—मंकी, डंकी या यंकी?"

दीनाई

"मैं नौ करोड मील दूरकी चीज भी देख सकता हूँ।"

"जरा होशमें रह; अक्लकी बात कर।"

"सूरज ९ करोड ३० लाख मील दूर है, और मैं उसे देख सकता हूँ या नहीं ?"

सर्वोत्तम ग्रन्थ

पहला : "कुछ कहो भई, मगर लोकमान्यके 'गीतारहस्य' के मुक़ाबले की किताब नहीं हो सकती !"

दूसरा : "सचमुच ! बड़ी आलीशान किताब है !"

पहला : "पढ़ी है क्या तुमने ?"

दूसरा : "नहीं, तुमने पढ़ी है ?"

पहला : "नहीं।"

फ़र्क़

"तुम अंग्रेज, स्कॉच और आइरिशका फ़र्क़ जानते हो ?"

"नहीं तो, क्या है ?"

"यह है कि गाड़ीमें-से उतरते वक़्त आइरिश तो बिना पीछे देखे, कि कोई चीज रह तो नहीं गयी, सीधा चला जाता है, अंग्रेज मुड़कर देखता है कि उसका कुछ रह तो नहीं गया; और स्कॉच यह देखनेके लिए पीछे मुड़कर ताकता है कि कोई और तो कुछ नहीं छोड़ गया।"

तजुर्बेकार

वार्डर (नामी चोरसे) : "चल वे कालू, हमारे जेलर साहब अपनी तिजोरी खुलवानेके लिए तुझे बुला रहे हैं। तिजोरीकी चाभी उनसे खो गयी है !"

पूर्ण इतिहास

पाठक : "मैं एक पुस्तक ढूँढ़ रहा हूँ, मगर मिल नहीं रही। आपके पास है क्या ?"

लाइब्रेरियन : "किस विषयकी ?"

पाठक : "सृष्टिकी उत्पत्तिसे प्रलयतकका इतिहास चाहिए मुझे।"

निर्माण

चित्रकार : "यह मेरा नवीनतम चित्र है, इसका नाम है 'निर्माण करनेवाले निर्माण कर रहे हैं।' यह अत्यन्त वास्तविक है।"

मित्र : "परन्तु ये वास्तवमें निर्माण-कार्य कर तो नहीं रहे।"

चित्रकार : "यही तो वास्तविकता है।"

खाद

एक किसान गाड़ी लिये किसी पागलखानेके पाससे गुज़र रहा था। खिड़कीमें-से एक पागल बोला, "क्या लिये जा रहे हो ?"

"खाद।"

"क्या करोगे ?"

"फलोंमें लगाऊँगा।"

"हम तो फलोंमें मलाई लगाते हैं। और फिर भी लोग कहते हैं कि हम पागल हैं।"

मौसम

दो जन बैठे गप्पें लगा रहे थे। कहनेको कुछ बाक़ी नहीं रहा था, इसलिए एक बोला, "आज मौसम कैसा है ?"

दूसरा : "कहा नहीं जा सकता, आज हमारे यहाँ अख़बार नहीं आया।"

बचाओ

एक आदमी मैनहोलमें गिर गया।

"बचाओ! बचाओ।"

"कैसे गिर गये तुम इसमें ?"

"गिर नहीं गया, मैं तो यहीं था। उन्होंने मेरे चारों तरफ़ सड़क बना दी।"

रस्मे-अदायगी

एक स्कॉच और एक अंग्रेज़ किसी जंगलमें-से होकर गुज़र रहे थे, कि एकाएक एक डाकू आ गया। उसने अपनी बन्दूक़ तान दी।

स्कॉचने, जो कि तेज़दिमाग़ था, अपनी जेबसे रक़म निकाली और अपने अंग्रेज़ दोस्तको देते हुए कहा,

"लो भाई, तुम्हारे वह दस पौण्ड जो तुमने मुझे उधार दिये थे।"

अक्लमन्द

मुसलमान : "यहूदी लोग इतने अक़्लमन्द क्यों होते हैं ?"

यहूदी : "क्योंकि हम लोग एक ख़ास किस्मका सेब खाते हैं। कहो तो तुम्हें उसकी एक प्लेट दूँ। दो रुपयेकी होती है।"

मुसलमानने दो रुपये दे दिये तश्तरी आ गयी।

मुसलमान (चखकर) : "यह तो नाशपाती है।"

यहूदी : "देखो! तुम अक़्लमन्द होने लगे!!"

डायरी

"मैं अपनी डायरीमें निकम्मी बातें ही लिखती हूँ। अहम बातोंको तो मैं ज़बानी याद रखती हूँ।"

—एक बाँगल लड़की

[illegible]

[illegible]

कोई हर्ज नहीं हुआ !

एक मालिक अपने [illegible] [illegible] पास आया एक रजिस्टर थोड़ी देर के लिए [illegible] उसको [illegible] किसी कामसे चले गये। थोड़ी देरमें वापस आकर देखते हैं, तो रजिस्टरमें कागज फाड़-फाड़कर सोख्ता [illegible] [illegible] दिया जा रहा है! उन्होंने घबराकर रजिस्टर उठाया तो कुछ [illegible] [illegible] [illegible] बोले,

"अच्छा, तुम रुक गये थे! मुझे ख्याल ही नहीं रहा। खैर कोई हर्ज नहीं हुआ। कोरा कागज एक भी नहीं छुआ, सिर्फ लिखे-लिखे ही फाड़े हैं।"

बाईमान !

"लोगोंमें-से मेरा विश्वास उठता जा रहा है।"

"क्यों क्या हुआ ?"

"कल मैंने रुपयेकी रेजगारी ली, उसमें उसने दुअन्नी खोटी मढ़ दी! वह तो अच्छा हुआ कि मैंने उसे ट्रामकी टिकिट खरीदते वक़्त सरका दी, वाक़ी अब, अपने लोगोंसे मेरी श्रद्धा उठती जा रही है।"

मेहरबान

अकबर : "बीरबल ! जिस लफ़्ज़के आखिरमें 'बान' लगा रहता है अकसर उस नामवाले आदमी बड़े दुष्ट होते हैं; जैसे पीलवान, गाड़ीवान, दरबान,....."

बीरबल : "हाँ मेहरबान।"

लन्दनका मौसम

"लन्दनका मौसम कैसा था ?"

"क्या मालूम इस क़दर कुहरा छाया हुआ था कि कहा नही जा सकता।"

युगलिया

दोस्त : "भई प्रोफेसर, सुना है तुम्हारी बीवीके दो बच्चे हुए हैं। लड़के हैं या लड़कियाँ ?"

प्रोफ़ेसर (ग़ैरहाज़िर-दिमाग़ीसे) : "हुए तो हैं। मेरा खयाल है एक लड़का है, एक लड़की। लेकिन यह भी मुमकिन है कि एक लड़की, और एक लड़का हो।"

तात्पर्य

एक ग़ैरहाज़िर-दिमाग़ आदमी बहुत दिनों बाद अपने एक दोस्तसे मिला। पूछने लगा,

"कहो यार कैसे हो ? तुम्हारी बीवी कैसे है ?"

"पर मैं तो अविवाहित हूँ !"

"अच्छा, आ ! तो गोया तुम्हारी घरवाली अभी तक अकेली ही है ?"

भेड़ोंकी संख्या

किसान (अपने दोस्तको दूरसे अपना खेत दिखाते हुए) : "तुम्हारे ख़यालसे उस खेतमें कितनी भेड़ें होंगी ?"

दोस्त : "क़रीब पाँच-सौ।"

किसान : "बिलकुल ठीक ! तुमने कैसे जाना ?"

दोस्त : "मैंने उनकी टाँगें गिन डाली और फिर चारसे भाग दे दिया।"

दुनियासे ईमानदारी जाती रही

एक : "यार, क्या बतायें—दुनियासे ईमानदारी जाती रही मालूम होती है ! कल मैं एक सूटकेस लाया था। मेरा नया नौकर उसे लेकर चम्पत हो गया !"

दूसरा : "कैसा था वह सूटकेस ? कहाँसे लिया था ?"

पहला : "बड़ा खूबसूरत ! रेलमें कोई मुसाफ़िर छोड़ गया था; मैं लेता आया।"

बहरहाल अदायगी

दो गप्पी यह तय करके गप्पें लड़ाने बैठे कि एक दूसरेकी बातका खण्डन न करें; जो खण्डन करे वह दूसरेको पाँच-सौ रुपये जुर्मानेके दे।

पहला बोला, "हमारे बापने एक बार अपनी ज़मीनपर गेहूँ बोये। बड़े ज़ोरकी फ़सल आयी। बालें आसमान तक चली गयी थीं। उन्हें काटनेके लिए मीलों ऊँची नसेनियाँ लानी पड़ी थीं।"

दूसरा समर्थन करता हुआ बोला, "बेशक, फ़सल ऐसी ही ज़ोरदार हुई थी। मगर बोते वक़्त बीजके लिए तुम्हारे बापने हमारे बापसे पाँच-सौ रुपये उधार लिये थे, जो कि अभी तक नहीं लौटाये गये। तुम्हें अपने बापका वह क़र्ज़ मुझे इसी वक़्त अदा कर देना चाहिए।"

बचनेका कोई रास्ता न था। पहलेको पाँच-सौ रुपये देने पड़े।

खिज़ाब

एक दिन अकबर बादशाह खिज़ाब लगाते हुए बीरबलसे बोले, "क्यों बीरबल, खिज़ाब लगानेसे दिमाग़को कोई नुक़सान तो नहीं होता ?"

बीरबल : "हुज़ूर, खिज़ाब लगानेवालोंके दिमाग़ होता ही नहीं। अगर होता तो बूढ़ेसे जवान बननेकी कोशिश न करते।"

विस्मरण

"मैंने तुझ-सा बेवकूफ नहीं देखा !"

"आप अपने-आपको भूल जाते हैं।"

टाइम

"केशव, देख तो कितने बजे हैं घड़ीमें ?"

"साढ़े—"

"साढ़े कितने ?"

"क्या मालूम ! आपकी घड़ीमें घण्टेकी सुई टूटी हुई है, सिर्फ मिनिट की सुई छहपर है।"

गुठलियाँ

दो आदमी कहीं आम खाने गये। जब वे दोनों आम खा रहे थे तो उनमें-से एक आदमी अपनी गुठलियाँ दूसरेके सामने खिसकाता जाता था। कुछ देर बाद उसने दूसरेसे मज़ाकमें कहा, "कितने खाऊ हो ! कितने आम खा गये ! गुठलियोंका ढेर तो देखो !"

दूसरेने जवाब दिया, "मगर तुमने तो गुठलियाँ भी नहीं छोड़ीं।"

'वो' स्टेशन

वेल्सके एक नये यात्रीने बताया है कि जब कभी ये गाड़ियाँ LLANFE-CHPWLLGOGERYCH पर ठहरती हैं, तो कण्डक्टर सिर्फ यह कहता है, "यही है 'वो' स्टेशन; उतरना है किसीको ?"

डबल भूल

"आप इस लड़कीकी माँ मालूम होती हैं।"

"यह लड़की नहीं है लड़का है; और मैं इसकी माँ नहीं हूँ, बाप हूँ।"

स्थिति

"[illegible] कहाँ है जी ?"

"टेबलके सामने।"

"टेबल कहाँ है ?"

"अलमारीके सामने।"

"मगर वे दोनों कहाँ हैं ?"

"एक दूसरेके सामने।"

भिखारी

"बाई ! क्या मुझे ग्यारह आने दे सकती हो ताकि मैं अपने परिवारवालोंसे जा मिलूँ ?"

"अरे बेचारा ! जरूर !! लेकिन वे तुम्हें छोड़कर चले कहाँ गये?"

"सिनेमा चले गये।"

चिम्मीकी माँ

चिम्मी बड़ी शरीर लड़की थी। उसकी शरारतोंसे चिढ़कर एक दिन मास्टरनी बोली,

"चार दिनके लिए मैं तेरी माँ होती तो····"

"अच्छा मैं बापूसे कहती हूँ वह इन्तजाम करनेके लिए।"

स्वर्ग-नरक

जिल : "तुम्हें मालूम है कि जब मैं स्वर्गमें जाऊँगा तो वहाँ शेक्सपीयरसे मिलूँगा और कहूँगा कि, 'मैं नहीं मानता कि वे सब ड्रामे तुमने लिखे थे।'"

डिल : "और वह वहाँ न हुआ तो ?"

जिल : "तो तुम उससे कह सकते हो।"

समझ

किसीने बर्नार्ड शासे पूछा, "मैं अपने कुत्तेका नाम शॉ रखना चाहता हूँ, आपको कोई ऐतराज़ तो नहीं है ?"

शॉ : "मुझे तो नहीं है, मगर कुत्तेसे पूछ लो, उसे ज़रूर ऐतराज़ होगा।"

गंगाजल

अकबर : "बीरबल, उत्तम पानी किस नदीका है ?"

बीरबल : "जमुनाका"

अकबर : "और गंगाजलकी जो महिमा गायी जाती है ?"

बीरबल : "जहाँपनाह, गंगाजल तो अमृत है, पानी नहीं।"

नम्बर

"तुम सड़कपर चलते हुए हमेशा नोटबुक और पेन्सिल क्यों लिये रहते हो ?"

"इसलिए कि अगर किसी मोटरके नीचे दब जाऊँ तो फौरन् उसका नम्बर नोट कर सकूँ।"

टोपके पीछे

एक तंग-नजर आदमीका टोप तेज़ हवासे उड़ गया। वह उसके पीछे भागा। पासके मकानसे एक औरत चिल्ला कर बोली,

"यह तुम क्या करते हो ?"

"अपना टोप पकड़ने दौड़ रहा हूँ।"

"अपना टोप पकड़ने ? तुम तो हमारी काली मुर्गीके पीछे भाग रहे हो !"

शुक्र है

महिला : "ले भाई, पैसा। लंगड़ा होना सचमुच महा दुखद बात है। लेकिन सोचो तो अगर तुम अन्धे हुए होते तो कितनी बदतर बात हुई होती।"

भिखारी : "हाँ देवी, जब मैं अन्धा था तो लोग मुझे खोटे ही सिक्के दिया करते थे।"

बेतकल्लुफ़ी

"कल सवेरे मेरे साथ भोजन करनेमें आपको कोई आपत्ति तो नहीं है ?

"जी नहीं।"

"तो कल दस बजे मैं आपके यहाँ पहुँच जाऊँगा।"

पुलिसमैन

"क्षमा कीजिए, महाशय, आपने यहाँ आस-पास कोई पुलिसका आदमी तो नहीं देखा ?"

"पुलिसवालेका तो यहाँ नामोनिशान नहीं ?"

"जी, तब ठीक है, अपनी घड़ी और बटुआ फ़ौरन् हवाले कर दीजिएगा।"

फल-स्वरूप

सरदारजी : "इस राज्यमें भी कोई इन्साफ़ है ?"

नागरिक : "क्यों क्या हुआ, सरदारजी ?"

सरदारजी : "जुर्म कोई करता है, पकड़ा कोई जाता है! देखी नहीं आजके अखबारमें खबर····

'रामस्वरूपने चोरी की, फलस्वरूप पकड़े गये····बेचारा फलस्वरूप!'"

बीमा एजेण्ट

एक : "हमारी बीमा कम्पनी लेने-देनेका काम बड़ी द्रुत गतिसे करती है। आज कोई आदमी मरे तो उसके बीमेकी रकम अगले दिन सुबह ही उसकी पत्नीको दे दी जाती है।"

दूसरा : "बस इतना ही! हमारे यहाँ काम इससे भी तेज़ रफ्तारसे होता है। हमारे दफ्तरकी चौथी मंज़िलसे अगर कोई बीमाधारी गिर पड़े तो दूसरी मंज़िलसे गुज़रते वक़्त ही, जहाँ हमारा पेमेण्ट डिपार्टमेण्ट है, उसे चैक थमा दिया जाता है।"

सन्तोष-वाहक

एक सेल्समैनको उसकी काहिलीके कारण बरखास्त कर दिया गया। उसने जाते वक़्त एक सिफ़ारिशी ख़त चाहा कि फ़र्मको उसके कार्यसे सन्तोष रहा है। भूतपूर्व मालिकने क्षणभर सोचा और लिखकर दे दिया कि,

"इस पत्रका वाहक हमें दो वर्षके बाद छोड़ रहा है और हमें सन्तोष है।"

निकम्मा

"वह यहाँ सारे दिन बैठा-बैठा वक़्त बरबाद करता रहा।"

"तुम्हें कैसे मालूम ?"

"मैं उसे लगातार देखता रहा हूँ।"

सीज़न

"सीज़न कितने होते हैं ?"

"दो : बिज़ी और डल।"

'डू-इट-नाउ'

एक व्यापारिक संस्थाका प्रेसिडेण्ट बहुतसे 'अभी कीजिए' के बोर्ड बनवा लाया। और उन्हें कारिन्दोंको प्रोत्साहित और क्रियाशील बनानेके खयालसे दफ़्तरमें टँगवा दिया। एक दिन उसके एक दोस्तने उससे पूछा कि उस योजनाका स्टाफ़पर कैसा असर हुआ। मालिक बोला, "मैं जैसा सोचता था वैसा नहीं हुआ। खजांची तीस हज़ार रुपये लेकर चम्पत हो गया। हेडक्लर्क लेडी प्राइवेट-सेक्रेटरीको लेकर भाग गया। तीन क्लर्कोंने तरक़्क़ीकी माँग पेश कर दी। चपरासी बैंकके डकैतोंमें जा मिला।"

कुफ़्

एक पागल (नाम पूछे जानेपर) : "मेरा नाम हज़रत मुहम्मद।"

दूसरा पागल : "नहीं यह झूठ बोलता है, मैंने इसे पैग़म्बर बनाके नहीं भेजा।"

उलट-पुलट

किसी सोसाइटीके चेयरमैन उसके वार्षिक अधिवेशनमें बोल रहे थे। "इस तरहके संघटनोंमें कमेटीके आधे लोग सारा काम करते हैं, बाक़ी आधे कुछ नहीं करते। लेकिन जिस सोसाइटीका चेयरमैन होनेका मुझे फ़ख्र हासिल है उसमें बात इससे ठीक उलटी है।"

ईमानदार साथी

"तुमने यह अकेले हाथ ही चोरी की ?" चोरकी स्त्रीने चकित होकर पूछा।

"और क्या! इस धन्धेमें ईमानदार साथी मिलते कहाँ हैं ?" चोर बोला।

नक़ली

"जनाब, आपके वह हाथी दाँतके गहने तो सब बनावटी निकले!"

"मुझे लगता है, उस हाथीके दाँत ही बनावटी रहे होंगे।"

समानता

एक दिन एक पागल पागलखानेके नये सुपरिण्टेण्डेण्टके पास गया और बोला, "अबतक जितने सुपरिण्टेण्डेण्ट यहाँ आये, उनमें आप हम सब लोगोंको अधिक पसन्द हैं।"

सुपरिण्टेण्डेण्ट साहबने पसन्न होकर पूछा, "क्यों ?"

"क्योंकि आप हम लोगोंकी तरह ही मालूम होते हैं।" पागल बोला।

ज़िम्मेदार

"इस कामके लिए मुझे एक ज़िम्मेदार आदमी चाहिए।"

"तब तो मुझसे अच्छा आपको कोई नहीं मिलेगा। जहाँ मैंने काम किया, वहाँ हर चौपटपनके लिए लोगोंने मुझे ही ज़िम्मेदार ठहराया।"

ताकि खो न जाये

एक लड़की किसी फण्डके लिए चन्दा लेने एक दफ्तरके मैनेजरके कमरेमें जा पहुँची। मैनेजरने बालिकासे विनोदमें कहा, "देखो! यह चवन्नी है और यह एक रुपयेका नोट है जो चाहो उठा लो।"

लड़की बोली, "मेरी माँने सिखाया है कि जहाँ बड़ी और छोटी चीजोंमें-से कुछ भी लेनेकी आजादी हो, तो हमेशा कमक़ीमती चीज लेना। इसलिए मैं चवन्नी ही लेती हूँ। मगर यह कहीं खो न जाये इसलिए इस 'काग़ज़' में लपेटकर रखे लेती हूँ।" यह कहते हुए वह सफ़ाईसे दोनों चीजें लेकर चलती बनी।

खोद बीन

एक कर्मशीला नारीको कुत्तेने काट खाया। उसे दुर्घटना बुरी तो लगी, फिर भी तत्परतासे अपने दफ़्तरका काम करती रही। पर एक नयी बला उठ खड़ी हुई, उसके परिचित लोग उससे तरह-तरहके बेकार सवालोंसे परेशान करने लगे।

"फ़ेन्सी ! क्या तुम्हें कुत्तेने काट खाया ?"

"हाँ, काट तो खाया है।"

"फिर भी तुम यहाँ बदस्तूर काम कर रही हो ?"

"नहीं; उन लोगोंकी फ़हरिस्त बना रही हूँ जिन्हें पागल हो जानेपर काटूँगी।"

अचरज

"तो तुम अमेरिका जा रहे हो ! मालूम है जब यहाँ दिन होता है तब वहाँ रात होती है ?"

"हाँ, पहले पहल तो बड़ा अचरज लगेगा।"

सुस्वागतम्

स्वर्गीय जार्ज पञ्चम जब प्रिन्स ऑफ़ वेल्सके तौरपर हिन्दुस्तान आये तो लाहौरमें उनके स्वागतार्थ जगह-जगह ध्वजा-पताकाएँ वग़ैरह लगायी गयीं। कहीं सत्कारमें पीछे न रह जाये इसलिए एक क़बरिस्तानकी मैनेजिंग कमिटीने उत्साहमें आकर क़बरिस्तानपर भी 'वैलकम' लगा दिया !

राज्याभिषेक

एक राजाका राज्याभिषेक हो रहा था, राजाने किसी त्रुटिकी ओर संकेत किया, कारबारी डरकर बोला, "भूल हो गयी सरकार, आइन्दा ऐसे मौक़ेपर ऐसी ग़लती आपकी नज़र नहीं आने दी जायेगी।"

बहरा

एक बूढ़ा धनवान् बहरा आदमी एक दूकानसे आधुनिक गुप्त श्रवण-यन्त्र खरीद कर ले गया। दो हफ्ते बाद दूकानवालेके पास हर्ष प्रकट करते हुए बोला,

"अब मुझे बहुत अच्छा सुनायी देता है! दूसरे कमरे तककी बातें सुन सकता हूँ!"

"तब तो आपके रिश्तेदार बडे ही खुश होंगे कि आप सुनने लगे?"

"नहीं, मैंने उन्हें बतलाया नहीं है। उनकी बातें सुन-सुनकर मैंने अपने वसीयतनामेको तीन बार बदला है!"

जहान्की माँ

शेख नामक एक शायरा थी, उसके पतिका नाम 'आलम' और पुत्र का नाम 'जहान्' था। (दोनोंका मतलब है 'दुनिया'।)

औरंगज़ेबके शाहज़ादा मुअज्जमने एक बार उससे भरे दरबारमें मजाक की,

"तू तो आलमकी पत्नी है न?"

शेख हँसकर बोली, "जो सरकार, मैं ही जहान्की माँ हूँ।"

टाइम

महारानी: "कितने बजे है?"

दासी: "जितने महारानी चाहें।"

बेचारा

वृद्ध सज्जन: "आज अखबारमें आया है कि न्यूयार्कमें हर आध घण्टे बाद एक आदमी मोटरसे कुचल जाता है।"

बुढ़िया: "हाय, हाय! बेचारा।"

तब तो !

"हाँ भाई, एक बात बताओ। जब मैं तुमसे बाजारमें मिला, तब मैं चौककी ओरसे आ रहा था, या उस ओर जा रहा था ?"

"उस ओरसे आ रहे थे।"

"ठीक ! तब तो मैं खाना खा चुका हूँ।"

अकालका कारण

मोटा ताजा आदमी (अपने दुबले-पतले मित्रसे) : "वाह भाई, कैसा हड्डियोंका पंजर लिये फिरते हो ! तुम्हें कोई देखे तो यही समझे कि देशमें अकाल पड़ा हुआ है।"

मित्र : "जी हाँ, और अगर तुम्हें भी देख ले तो समझ जाये कि अकाल किस कारण पड़ा हुआ है।"

एक और एक

एक और एक ग्यारह होते हैं, बशर्ते कि उनके नौ बच्चे हों।

ईमानदारी

एक औरतने एक बकरी रखी थी। वह उसका रेशन-कार्ड खा गयी। औरतने दूसरे कार्डके लिए दरख्वास्त दी, 'पुनश्च' में लिखा,

"मैं एक ईमानदार औरत हूँ"

जवाब आया, "दूसरा कार्ड दे दिया जायेगा।" 'पुनश्च'में था,

"सिर्फ़ बकरीकी ईमानदारीमें शक है।"

आज़माइश

"वह इतना ईमानदार है कि एक पिन भी नहीं चुरायेगा।"

"पिन-परीक्षाको मैं महत्त्व नहीं देता। छतरीसे जाँचिए।"

दिन

"चन्द्रका एक दिन पृथ्वीके चौदह दिनके बराबर होता है।"

"हमारे दर्जीका भी ऐसा ही है!"

मशहूर जनरल

अमेरिकाकी नागरिकता पानेके लिए जो कोई अर्जी देता है उससे अमेरिका-सम्बन्धी बहुत-से सवाल पूछे जाते हैं। इसी सिलसिलेमें एक हंगेरियन लड़कीसे पूछा गया, "अमेरिकाके सबसे बड़े और मशहूर जनरलका नाम बताओ" लड़कीने बिना हिचकिचाहट जवाब दिया, "जनरल मोटर्स"

अँगुलियाँ

"टुनमुनकी सीधे हाथकी अँगुलियाँ कहाँ गयी?"

"घोड़ेके दाँत गिननेके लिए उसने उसके मुँहमें हाथ डाला·····"

"फिर क्या हुआ?"

"घोड़ेने यह जाननेके लिए अपना मुँह बन्द कर लिया कि उसके हाथमें कितनी अँगुलियाँ हैं?"

सान

फेरीवाला : "किसीको चाकू-कैंची तेज कराना है?"

एक हजरत : "अक़्ल भी तेज कर सकते हो?"

फेरीवाला : "जी हाँ, है क्या आपके पास?"

अमन-पसन्द

स्मिथ महोदय : "कल मैं छतरी तो नहीं छोड़ गया?"

हज्जाम : "कैसी छतरी?"

स्मिथ साहब : "कैसी भी हो, मुझे झगड़ा थोड़े ही करना है!"

टिकिट-बटोरा

एक लड़केको अपने विलायती आल्बममें टिकिटें इकट्ठी करनेका शौक़ हो गया। एक रोज़ उसके यहाँ एक मेहमान आया, उसने लड़केसे पूछा, "अच्छा बताओ हंगेरी कहाँ है?"

लड़का स्टाम्प-बुककी तरफ़ नज़र डाले बग़ैर बोला, "इटलीसे दो पन्ने आगे।"

अतल तल

"इस दलदलमें सख़्त तली है क्या?"

"है।"

"........"

"कहाँ! मैं तो गले तक फँस गया!"

"अभी तो तुमने उसका आधा भी रास्ता तय नहीं किया।"

छुट्टी

"तुम हफ़्तेके छह दिन क्या काम करते हो?"

"कुछ नहीं।"

"और इतवारको।"

"छुट्टी मनाता हूँ।"

ज़्यादा कंजूस कौन?

"तू मोचीकी लड़की होकर भी फटे हुए चप्पल पहनती है! तेरा बाप ज़रूर कंजूस होना चाहिए।"

"मेरा बाप तेरे बापसे ज़्यादा कंजूस नहीं है। तेरा बाप दाँतका डॉक्टर है। मगर तेरा छोटा भाई सात महीनेका हो गया फिर भी उसके मुँहमें एक ही दाँत है!"

मिलत-बिछुरत

कुछ लोग ऐसे हैं कि जहाँ कहीं पहुँचे आनन्द देते हैं, कुछ ऐसे हैं कि जब कभी विदा हों आनन्द देते हैं।

घण्टाघर

टावरकी घड़ीको दुरुस्त करके उतरते हुए घड़ीसाजसे किसीने पूछा, "क्यों साहब, क्या घड़ीमें कुछ खराबी थी ?"

घड़ीसाज : "जी नहीं, मुझे दीखता कुछ कम है, टाइम देखनेके लिए चढ़ा था।"

बगुला

"बगुला एक टाँगपर क्यों खड़ा रहता है ?"

"क्योंकि अगर दूसरी उठावे तो गिर पड़े।"

प्रतिध्वनि

स्कॉट (पहाड़ी इलाक़ेमें) : "देखा ! हमारे इस इलाक़ेमें प्रतिध्वनि चार मिनिट बाद आती है। आपके देशमें ऐसा कमाल कहीं नहीं मिल सकता।"

अमेरिकन : "हमारे मुल्कमें इससे कहीं बढ़कर प्रतिध्वनि आती है। रॉकी पर्वतोंमें मैं अपने कैम्पमें रातको सोते वक्त खिड़कीके बाहर मुँह करके चिल्लाता हूँ, "उठो सवेरा हो गया!" और आठ घण्टेके बाद प्रतिध्वनि वापस आती है और मुझे जगा देती है।"

बदतर

"यहाँ लँगोट पहनकर आनेसे बदतर बात क्या होगी ?"

"बिना लँगोट पहने आना।"

यमसम

"पण्डितजी, आप तो कहते थे कि विना वक्त आये कोई मर नहीं सकता; फिर यह बन्दूक लेकर जंगलमें क्यों आये हैं ?"

"इसलिए कि शायद कोई ऐसा हिंस्र पशु मिल जाये जिसका वक्त आ गया हो।"

निराशा

ज्योतिषी : "तुम्हारे पासवाले आदमीको तुमसे आज बड़ी निराशा होगी।"

आदमी : "जी हाँ, ठीक है। आज मैं अपना बटुआ घरपर ही भूल आया हूँ।"

दूरकी

चार यार थे। एक गूँगा और बहरा था, दूसरा अन्धा, तीसरा लँगड़ा, चौथा नंगा। चारों किसी यात्राको जा रहे थे। रास्तेमें एकाएक गूँगा और बहरा बोल उठा, "यारो ! कुछ आवाज आ रही है !"

अन्धा : "देखते नहीं, डाकू आ रहे हैं !"

लंगड़ा : "मैं तो भागा जाता हूँ !"

नंगा : "हाँ भाई, तुम सब भागकर मेरे ही कपड़े उतरवाओगे !"

चाल

यात्री : "आपका विज्ञापन तो कहता है कि आपका होटल स्टेशनसे पाँच मिनिटपर है। हमें तो यहाँतक आनेमें घण्टा-भर लग गया !"

होटलवाला : "ओ हो ! आप चलकर आये मालूम होते हैं। हमारा होटल पद-यात्रियोंके लिए नहीं है।"

बकझक

बकी : "क़ाबिले-तारीफ़ बस दो ही शख्स हैं।"

झकी : "वाक़ई ! दूसरा कौन है ?"

क़यामतके बाद

राजनीतिज्ञ फ़ॉक्सने किसी यहूदीसे कभी कोई क़र्ज लिया था। तक़ाज़ा किये जानेपर उसने कहा, "मेरे पास इस वक़्त पैसा नहीं है।"

"तो कोई तारीख़ मुक़र्रिर कर दीजिए।"

"अच्छा तो क़यामतका रोज़ रखो।"

"साहब, उस रोज़ तो हमारे लिए बड़ी भीड़ रहेगी।"

"ठीक, अगर उसके बादका दिन रखें तो कैसा रहेगा ?"

आजकी तारीख़

"आज कौन-सी तारीख़ है ?"

"कलसे एक ज्यादा।"

"कल तो ३१ थी।"

भविष्यवाणी

ज्योतिषी : "अगले चार वर्ष तुम्हारे लिए बहुत कठिन हैं।"

ग्राहक (उत्सुकतासे) : "उसके बाद क्या होगा ?"

ज्योतिषी : "उसके बाद तुम उसके आदी हो जाओगे।"

पस्ती

होटलवाला : "पहली मंज़िलके कमरेका किराया बीस रुपये है, दूसरीका पन्द्रह रुपये, तीसरीका दस।"

मुसाफ़िर : "अच्छा साहब, चल दिये। यह होटल काफ़ी ऊँचा नहीं है।"

रोजने-अर्श

"आपकी छतरीमें तो बहुत बड़ा छेद हो गया है।"

"बारिश बन्द हो गयी या नहीं, इसीमें-से देखता हूँ।"

कौन किसका

"यह गाय और बछड़ा किसका है?"

"गायकी तो खबर नहीं, मगर बछड़ेकी मालूम है।"

"किसका है?"

"गायका।"

जीमा कौन ?

जगन्नाथ महादेव क्षेत्रमें तीस मन लड्डू तैयार हुए और ब्राह्मण जीमे। मिष्टान्नसे अटी हुई वेद-मूर्तियाँ हाल-बेहाल हो रही थीं। एकको दो जन सहारा देकर चलनेमें मदद दे रहे थे। किसीने पूछा, "क्यों मायाशंकर! जीमे?"

"मैं क्या जीमा! जीमे तो दयाशंकर, जो कि चारपाईपर पड़कर आ रहे हैं।"

आगे जाकर देखा कि चार आदमी एक चारपाईको कन्धोंपर सँभाले हुए हैं, ऊपर दयाशंकर चित्त पड़े हैं, साँस लेना भी मुश्किल हो रहा है।

"क्यों भाई दयाशंकर! जीमे?"

बड़ी मन्द आवाजसे दयाशंकर बोले,

"अरे मैं क्या जीमा? जीमे तो जयाशंकर महाराज कि जो ठामपर ही रहे!"

वहाँ जाकर पूछा तो जयाशंकरजी मरते-मरते मिष्टान्न भण्डारकी ओर अँगुलीसे इशारा करते हुए बोले, "अभी बहुत बाकी रहा।"

दो खोपड़ियाँ

यात्री (मिस्रके अजायबखानेमें दो खोपड़ियोंपर) : "यह क्या है?" एक ही नाम देखकर,

गाइड : "यह कल्योपैट्राकी खोपड़ी है।"

यात्री : "और यह ?"

गाइड : "यह उसीकी बचपनकी खोपड़ी है, पहलीवाली जवानी की है।"

ग़नीमत

लड़ाईमें एक आदमीका लड़का मारा गया।

"गोली कहाँ लगी थी ?"

"आँखके नीचे।"

"ग़नीमत हुई, आँख बच गयी !"

मतिमान

दो ड्राइवर अजायबखाने गये। वहाँ एक मिस्री ममी (सुरक्षित लाश) रखी थी। उसके नीचे "1046 B. C." लिखा हुआ था।

एक : "इसका क्या मतलब है ?"

दूसरा : "शायद यह उस मोटरका नम्बर है जिससे दबकर इसकी मौत हुई।"

नित्यनूतन

"तुम्हारा टोप तो बड़ा ख़ूबसूरत है !"

"हाँ, मैंने इसे चार साल पहले खरीदा था। दो बार साफ़ करवा चुका हूँ; एक बार तो यह एक होटलमें किसी औरके टोपसे बदला भी जा चुका है, फिर भी नया-जैसा दिखता है।"

दुधारा छुरा

वकील : "डॉक्टर कभी गलती करते हैं या नहीं ?"

डॉक्टर : "वकीलोंकी तरह उनसे भी गलतियाँ होती हैं।"

वकील : "लेकिन डॉक्टरकी गलती आदमीको जमीनमें कभी छह फुट नीचे गाड़ देती है।"

डॉक्टर : "वकीलोंकी गलतीसे भी हवामें कभी छह फुट ऊँचा लटकना पड़ जाता है।"

गुरुत्वाकर्षण

एक अमेरिकन और एक स्कॉट उत्तरी स्कॉटलैण्डकी ठण्डके बारेमें चर्चा कर रहे थे।

अमेरिकन : "अमेरिकाकी ठण्डके मुकाबलेमें स्कॉटलैण्डकी ठण्ड कुछ नहीं। मुझे याद आता है जाड़ेके दिनोंमें एक बार एक भेड़ पहाड़ीसे मैदान में कूदी कि ठण्डके मारे बीचमें ही जम गयी और हवामें बर्फ-खण्डकी तरह अटक गयी।"

स्कॉट : "लेकिन गुरुत्वाकर्षणके सिद्धान्तके कारण ऐसा होना मुमकिन नहीं है।"

अमेरिकन : "पर गुरुत्वाकर्षणका सिद्धान्त भी जम गया था।"

यादगारे-खुदा

एक रिपोर्टर किसी अल्ट्रा-मौडर्न (अभिनव) टेलिफोन बिल्डिंगका निरीक्षण कर रहा था। विज्ञानकी करिश्मासाजियोंपर वह आश्चर्य-चकित था। एक जगह उसे एक ग्लास-केसमें कुछ रंगीन मछलियाँ तैरती दिखी। उसने गाइडसे पूछा, "यह यहाँ किसलिए है ?"

"यह याद दिलानेके लिए कि कुछ चीजोंका आविष्कार खुदाने भी किया है," गाइड बोला।

टुप्पई टुप्प

मंगो अपने सेठकी लड़कीके लिए योग्य वर ढूँढ़नेके लिए निकला। एक गाँवमें एक मालदार पटेलके तीन लड़के थे तो खूबसूरत मगर तुतलाते थे। किसी क़दर बेवक़ूफ़ भी थे।

पटेलने मंगोको बड़ी आवभगत की। तीनों छोकरोंको सख्त ताकीद कर रखी थी कि कोई हर्गिज़ न बोले।

मंगो : "पटेल साहब, आपके लड़के हैं तो रत्न-जैसे, मगर बोलते क्यों नहीं ?"

पटेल : "ये शर्माते ज्यादा हैं।"

मंगोको शक हुआ। वह उन्हें बाहर घुमाने ले गया। और बड़े लड़केको अलग ले जाकर धीरेसे बोला, "तीनों भाइयोंमें तुम मुझे सबसे ज्यादा सुन्दर लगते हो। मैं तो सेठकी लड़कीकी सगाई तुम्हारे ही साथ कर देना चाहता हूँ।"

लड़का इस बातसे फूल उठा। सब भूल-भालकर कहने लगा, "अबी चण्डन-वण्डन नईं लगो नईं टो औरऊ सुन्डर डिखटे !"

यह सुनकर मँझला लड़का बोल उठा, "बापूने ना टरी टी, टू टयों बोलो ?"

छोटा लड़का बोल पड़ा, "टुम बोले, टुम बी बोले, अम टो टुप्पई टुप्प (चुप ही चुप)।"

विशाल क्षेत्र

एक : "हमारे एक खेतमें किसान अगर बसन्तमें जुताईको एक बार डालना शुरू करे तो वह पतझड़में पूरी कर पाता है। लौटते वक्त वह फ़सल काटता आता है।"

दूसरा : "हमारे खेतमें तो यह आम बात है कि नवदम्पति गायको दुहने जाते हैं, और उनके बच्चे दूध लेकर आते हैं।"

मिली भगत !

एक फटेहालने रास्तेमें एक सज्जनको रोककर कहा, "साहब, क्या आप यह सोनेकी अँगूठी सिर्फ चालीस रुपयेमें लेंगे ?" भला मनुष्य शककी नजरोंसे उसे देखता हुआ आगे बढ़ गया।

कुछ ही दूरपर एक उजले-पोश मिला। बोला, "आपको रास्तेमें मेरी सोनेकी अँगूठी पड़ी हुई तो नहीं दिखी ? कोई लाकर दे दे तो सौ रुपये इनाम दूँ !" बेचारा भला आदमी लालचमें आ गया। उसे वहीं खड़ा रखकर लौटा, पहले आदमीसे अँगूठी खरीदकर वापस आया तो उस उजले-पोशका पता न था !

समाज-सुधार

भूतपूर्व खजांची : "तुमने अपने इस सड़ियल परचेके जरिये मेरा अपमान किया ! इसके मानी ! !"

सम्पादक : "जरा ठहरिए, देखिए न समाचार हू-बहू वैसे ही छपा है जैसा आपने दिया था, "श्री भवानीशंकरजीने भाटिया पब्लिक ट्रस्ट फ़ण्डके खजांची पदसे इस्तीफ़ा दे दिया।"

भूतपूर्व खजांची : "पर तुमने 'समाज सुधार'के स्तम्भमें छापा है यह !"

तुषारपात

बेटर : "साहब, यह चाय दार्जिलिंगसे आयी है !"
ग्राहक : "तभी इतनी ठण्डी है।"

सद्‌गत

ग्राहक (असन्तुष्ट) : "इस ढाबेका मालिक कहाँ है ?"
बेटर : "जी, वो दूसरे ढाबेमें खाना खाने गये हैं।"

नवागन्तुक

नववधू : "प्री····तम····।"

पति : "हाँ, प्रिये।"

"मैं कैसे कहूँ?"

"क्या?"

"कि····कि शीघ्र ही एक तीसरा हमारे घरमें आ जाने वाला है।"

"प्रि····य···त····मे! तुम्हें निश्चय है?"

"बिलकुल। भाईका खत आया है कि वह अगले शनिवार तक यहाँ पहुँच जायेगा।"

लुई द फ़ोर्टीन्थ

एक औरत अपनी नयी सहेलीको अपनी बाल-मण्डलीका परिचय कराते हुए बोली,

"और इसका नाम हमने लुई रखा है।"

"क्यों?"

"क्योंकि यह मेरी चौदहवीं सन्तान है।"

आसान और दुश्वार

शिक्षिका : "वह क्या चीज है जिसमें घुसना आसान है, निकलना मुश्किल?"

विद्यार्थिनी : "बिस्तर।"

बेज़बानी

मालिक-मकान : "मुझे खुशी है कि अब आप पलस्तर गिरनेकी शिकायत नहीं करते।"

किरायेदार : "क्योंकि जो रहा-सहा था वह भी कभीका गिर चुका।"

ज्योतिषी

एक राजाने अप्रसन्न होकर एक ज्योतिषीको फाँसीपर चढ़ा देनेकी सज़ा सुना दी।

एक मित्रने सान्त्वना देते हुए उससे पूछा, "क्या तुम्हें अपने भविष्य की जानकारी थी ?"

ज्योतिषी बोला, "ग्रहोंके अनुसार तो मृत्युके समय मुझे कोई उच्च स्थान प्राप्त होना चाहिए था। परन्तु यह मुझे कैसे ज्ञात होता कि वह ऊँचाई फाँसीके तख़्तेकी ऊँचाई है !"

यथातथा

"आप हमेशा अपने मरीज़ोंसे यह क्यों पूछते हैं कि वे क्या खाते हैं ?"

"वह तो सबसे अहम सवाल है। मैं अपना बिल उनके 'मैनू' को देखकर बनाता हूँ।"

वापस

डाक्टर : "मुझे कहते हुए संकोच होता है, मगर आपने जो चैक दिया था वापस आ गया।"

मरीज़ : "अजीब इत्तिफ़ाक़ है मेरा! कमरका दर्द भी वापस आ गया।"

मिडिल

एक पुराने बुज़ुर्गने एक नये जवानसे पूछा,

"भैया! कहाँतक पढ़े हो ?"

युवक : "एम. ए. तक।"

बुज़ुर्ग : "एम. ए., फ़ॅम. ए. तो ठीक, पर अभी तक मिडिल भी पास किया है या नहीं ?"

पैसा

"मैं मानता हूँ कि बहुत-सी चीजें ऐसी हैं जो कि पैसेसे भी ज्यादा कीमती हैं—लेकिन उन्हें खरीदनेके लिए आपके पास पैसा चाहिए।"

लाभ-शुभ

"पैसा कमानेके हजारों तरीक़े हैं, मगर ईमानदारीसे कमानेका एक ही तरीक़ा है।"

"वह कौन-सा ?"

"अहा, मैं जानता था कि तुम्हें मालूम न होगा।"

लखपती

"मैं लगभग लखपती हो गया !"

"लखपती हो गये ?"

"हाँ, सिर्फ़ एककी कमी है। सिफ़र तो सब मिल गये।"

धारावाहिक

वार्डन (बिजलीकी कुरसीपर बैठे हुए अपराधीसे) : "करेण्ट चालू की जाये उससे पहले तुम्हें कुछ पूछना है ?"

अपराधी : "हाँ, कलके मौसमके बारेमें अखबार क्या कहता है ?"

अज्ञान

एक मौलवी साहब पहली बार सिनेमा देखने गये। एक सीनमें हाथीको अपनी तरफ़ आता हुआ देखकर डरने लगे। पास बैठा हुआ दर्शक बोला, "यह तो सिनेमा है, डरते क्यों हैं ?"

"भई, मैं तो जानता हूँ कि यह सिनेमा है, पर वह हाथी तो नहीं जानता !" मौलवी साहबने समझाया।

पीना हराम

एक विज्ञापन : "आप हमारी तितली छाप एक सिगरेट पीकर देखिए। फिर आप दूसरी न पीयेंगे।"

यथातथ्य ✓

एक सम्पादक यथातथ्यताका बड़ा आग्रही था। वह अपने नये संवाद-दाताओंसे यथातथ्य ही रिपोर्ट देनेका आग्रह किया करता।

एक बार एक नया रिपोर्टर किसी सार्वजनिक सभाका समाचार लाया। सम्पादक पढ़ते-पढ़ते इस वाक्यपर आया, "तीन हज़ार नौ-सौ *निन्नानवे आँखें वक्तापर जड़ी थी।"*

सम्पादक गुस्सेसे बोला, "इस ऊलजलूल बकवासका मतलब ?"

"बकवास नहीं है, तथ्य बात है, श्रोताओंमें एक काना आदमी भी था," रिपोर्टर बोला।

नरकगामी

एक ज़मींदारने अपने अमेरिकन मेहमानसे पूछा,
"आपको हमारा गाँव कैसा लगा ?"
"बिलकुल नरक-जैसा !"
"कोई ऐसी जगह भी है जहाँ अमेरिकन न गये हों ?"

अभिप्राय

एक उदीयमान लेखक बर्नार्ड शॉको अपना नाटक सुनाने आया। पहले अंकके बाद शॉको नींद आने लगी। लेखक नाराज़ होकर बोला, "मिस्टर शॉ, मैं आपका अभिप्राय लेने आया हूँ, मगर आप तो नींद ले रहे हैं।"

"नींद भी एक अभिप्राय ही है न ?" शॉ बोले।

संस्कृत-हिन्दी

एक महाशय संस्कृत, हिन्दी या व्रजभाषाके अलावा किसी और जबानका एक लफ़्ज भी नहीं बोलते थे। कड़ा नियम था। किसीसे बात-चीतके दौरानमें बन्दूकका प्रसंग आ गया। आपने बन्दूक चलानेका बयान यूँ ईर्शाद फ़र्माया,

"लौह-नलिकामें श्याम चूर्ण प्रवेश करिकै अग्नि दीनी तो भड़ाम शब्द भयौ।"

चमत्कार

सरहदपर किसी बूढ़े यात्रीको 'कस्टम पुलिस' ने रोका।

यात्री : "मेरे पास कोई ऐसी चीज नहीं जो आपत्ति-जनक हो या जिसपर चुंगी लगायी जा सके।"

पुलिस : "इस बोतलमें क्या है?"

यात्री : "कुछ नहीं, पवित्र जल है इसमें।"

लेकिन जब बोतल खोली गयी तो उसमें शराबकी बू आयी।

बुड्ढेने फ़ौरन् अपनी आँखें आस्मानकी तरफ़ उठाकर कहा, "लाख लाख शुक्र है, खुदा! आज तूने मुझे प्रत्यक्ष चमत्कार देखनेका सौभाग्य दिया।"

—"द' कन्ट्रीमैन" से

महत्त्वाकांक्षा

बुजुर्ग : "और तुम क्या बनना चाहते हो बेटे? अपने पिताकी तरह महान् लेखक?"

बालक : "नहीं, मैं तो बड़ा आदमी बनना चाहता हूँ ताकि जो कुछ कह दूँ सो छपे!"

वीरचक्रम

तमाम लड़ाईमें जित्तू अपने कप्तानके नजदीक रहा। उसके पीछे-पीछे सायेकी तरह लगा रहा। लड़ाई खत्म होनेपर कप्तानने जित्तूको बुलाया।

"आज तुमने बड़ी वीरता दिखायी। लेकिन तुम मेरे लिए अपनी जान खतरेमें क्यूँ डालते रहे?"

"इसकी वजह यह थी साहब, कि अबकी छुट्टियोंमें जब मैं घर गया तो मेरी घरवालीने कहा, "लड़ाईमें हमेशा कप्तानके पास रहना। वे लोग कभी नहीं मरते।"

२ अक्टूबर

श्री श्रीप्रकाशजी : "आज तो महात्माजी! आपने और भी अधिक काम किया।"

गांधीजी : "भाई, आज मेरी वर्षगांठ है न!"

विनोदी गाँधीजी

गांधीजी जब घूमने निकलते तो अक्सर पीछे खेलते-कूदते आते हुए बकरीके बच्चेका कान पकड़ कर कहते, "क्यों, फिर शरारत करने लगा? तेरी माँका दूध मैं पी जाता हूँ इसलिए ईर्ष्यासे उपद्रव करना शुरू किया है क्या? आइन्दा ऐसा न करना। तू तो मेरा दूध-भाई है।"

वंश

एक पादरीसे किसीने पूछा, "खुदाने शुरूमें आदम और हव्वा सिर्फ़ दो ही शख्सोंको क्यों बनाया?"

पादरी : "इसलिए कि कोई अपनेको दूसरेसे ऊँचे खानदानका न बता सके।"

—'इट्स नॉट ए जोक' से

वीरचक्रम

तमाम लड़ाईमें जित्तू अपने कप्तानके नजदीक रहा। उसके पीछे-पीछे सायेकी तरह लगा रहा। लड़ाई खत्म होनेपर कप्तानने जित्तूको बुलाया।

"आज तुमने बड़ी वीरता दिखायी। लेकिन तुम मेरे लिए अपनी जान खतरेमें क्यूँ डालते रहे ?"

"इसकी वजह यह थी साहब, कि अबकी छुट्टियोंमें जब मैं घर गया तो मेरी घरवालीने कहा, "लड़ाईमें हमेशा कप्तानके पास रहना। वे लोग कभी नहीं मरते।"

२ अक्टूबर

श्री श्रीप्रकाशजी : "आज तो महात्माजी ! आपने और भी अधिक काम किया।"

गांधीजी : "भाई, आज मेरी वर्षगाँठ है न !"

विनोदी गाँधीजी

गाँधीजी जब घूमने निकलते तो अक्सर पीछे खेलते-कूदते आते हुए बकरीके बच्चेका कान पकड़ कर कहते, "क्यों, फिर शरारत करने लगा ? तेरी माँका दूध मैं पी जाता हूँ इसलिए ईर्ष्यासे उपद्रव करना शुरू किया है क्या ? आइन्दा ऐसा न करना। तू तो मेरा दूध-भाई है।"

वंश

एक पादरीसे किसीने पूछा, "खुदाने शुरूमें आदम और हव्वा सिर्फ दो ही शख्सोंको क्यों बनाया ?"

पादरी : "इसलिए कि कोई अपनेको दूसरेसे ऊँचे खानदानका न बता सके।"

—'इट्स नॉट ए जोक' से

सबसे छोटा खत

विक्टर ह्यूगोकी एक नयी किताब प्रकाशित हुई थी। यह जाननेके लिए कि वह कैसी बिक रही है उन्होंने अपने प्रकाशकको लिखा,

"? विक्टर ह्यूगो।"

प्रकाशकने जवाब भी वैसा ही संक्षिप्त दिया ?

"!"

—'टाइम्स ऑफ़ इण्डिया' से

विराट्

प्रिंस्टनके प्रसिद्ध खगोल शास्त्री हैनरी नारिस रसलने आकाश-गंगापर अपना व्याख्यान समाप्त किया। एक स्त्रीने उनसे प्रश्न किया, "अगर हमारी पृथ्वी इतनी छोटी और ब्रह्माण्ड इतना बड़ा है, तो भला भगवान् हमारा ध्यान कैसे रखता होगा ?"

डॉक्टर रसलने उत्तर दिया, "देवीजी ! यह इसपर निर्भर करता है कि आप कितने बड़े भगवान्में विश्वास करती हैं !"

—'वाशिंग्टन पोस्ट' से

विधवाएँ

वर्धामें कांग्रेसकी वर्किंग कमेटीकी मीटिंग हो रही थी। सख्त गरमी थी। गाँधीजीके पास सरदार पटेल और चक्रवर्ती राजगोपालाचारी गरमी की वजहसे अपने सरपर तौलिया डाले बैठे थे। सरोजिनी नायडू किसी कामसे बाहर आयीं। एक विदेशी संवाददाता लपककर उनके पास आकर पूछने लगा,

"गाँधीजीके पास ये और दो महिलाएँ कौन हैं ?" सरोजिनी देवीने मुड़कर देखा और हँसते-हँसते बोलीं,

"ओह ! वे ? वे तो गाँधीजीकी विधवाएँ हैं !"

नामकरण

सृष्टिकी रचनाके बाद आदम और हव्वा जानवरोंका नामकरण करने निकले तो एक तेंदुआ पाससे गुज़रा। आदमने पूछा,

"इसका क्या नाम रखें ?"

"इसका नाम 'तेंदुआ' रखा जाये !"

"पर तेंदुआ ही क्यों ?"

"क्योंकि यह तेंदुएसे ही ज्यादा मिलता-जुलता है।"

मिथ्यात्व

एक महात्माजी सामनेसे मत्त हाथीको आता हुआ देख भागने लगे। शिष्य बोला, "महाराज ! आप तो जगको मिथ्या बताते थे, तो यह हाथी भी मिथ्या हुआ। फिर क्यों भागे जा रहे हैं ?"

"बेटा ! पलायन भी मिथ्या है !!" महात्माजी भागते हुए कहते गये।

नामावलि

प्रधानमन्त्री श्री नेहरू अपने मन्त्रिमण्डलकी नामावलि देनेके लिए गवर्नर जनरल लार्ड माउण्टबेटनके पास गये। नामावलिका एक मुहरबन्द लिफ़ाफ़ा दे दिया। उनके चले जानेके बाद लार्ड माउण्टबेटनने नामावलि देखनेके लिए लिफ़ाफ़ा खोला। मगर वह बिलकुल खाली था !

रचनात्मक ग़फ़लत

गांधीजीके सामने एक अखबारी टीका पढ़ी जा रही थी। उसमें 'गांधी की रचनात्मक ग़फ़लतें' ये शब्द आये। महादेवभाईने गांधीजीसे पूछा, "रचनात्मक ग़फ़लत कैसी होती है ?"

वल्लभभाई बोल उठे, "जैसे तेरी दाल जल गयी थी आज।"

सुनकर गांधीजी खिलखिलाकर हँस पड़े।

भजनका वज़न !

एक बूढ़ा था और एक बुढ़िया। दोनों बिलकुल अपढ़ और बड़े सरल। गिनती तो बीस तक आती थी, पर कच्ची-कच्ची। जब वे भजन करने बैठते तो एक-एक सेर गेहूँ या चना तौलकर अपने-अपने सामने रख लेते थे। 'राम' कहते जाते और एक-एक दाना अलग रखते जाते। जब सब दानोंको अलग कर लेते तो समझते कि 'एक सेर भजन हुआ'! इसी तरह कभी दो-सेर कभी तीन-सेर भजन करते। कभी पाँच-सेर भी!

गाँधीकी लाठी

एक बार जवाहरलाल नेहरू अपने पिताके साथ गाँधीजीके आश्रममें गये। कोनेमें रखी हुई बापूकी लठियासे टकराकर नेहरूजी गिर गये। उन्हें मज़ाक़ सूझा। बोले,

"बापू, आप तो अहिंसाके पुजारी हैं। यह लाठी क्यों रखते हैं?"

"तुम जैसे शरारती लड़कोंके लिए" बापूने मुसकराकर जबाब दिया।

यरवडा मन्दिर

जब गाँधीजी यरवडा जेलमें थे तब उनके पास 'यरवडा मन्दिर' पता किये हुए पत्र आते थे। डाकखानेने भी यह परिभाषा स्वीकार कर ली थी। वल्लभभाई कहते, "मन्दिर तो है, सिर्फ़ प्रसादके विषयपर रोज़ मारा-मारी होती है।"

ब्रिटिश बाइबिल

एक बार एक किताब पढ़ते-पढ़ते गाँधीजीको उसमें 'ब्रिटिश बाइबिल' लिखा मिला। पूछने लगे,

"ब्रिटिश बाइबिल'? यह क्या चीज़ होगी?"

वल्लभभाई : "पौण्ड शिलिंग पेन्स।"

चारा भी !

एक दिन गांधीजी, सरदार पटेल और कुमारप्पा एक साथ खाना खाने बैठे। गांधीजीने प्रेमसे एक चम्मच नीमकी चटनी कुमारप्पाकी थाली में भी रख दी।

सरदार गम्भीर मुद्रा बनाकर बोले, "आपने देखा ? बापू अबतक तो बकरीका सिर्फ़ दूध ही पीते थे, पर अब तो वे बकरीका चारा भी खाने लगे है !"

विदाई

कांग्रेसका १९३४ का अधिवेशन, जो कि बम्बईमें हुआ था, खत्म हो चुका था। सब नेता जानेकी तैयारीमें थे। इस अधिवेशनकी सबसे अहम बात थी गांधीजीका कांग्रेससे अलग होना। वातावरण पूरी तरह गम्भीर था। राजेन्द्रबाबूने सजलनेत्र होकर गांधीजीके चरण छूकर विदा माँगी। वातावरणकी गम्भीरता और भी असह्य हो गयी। इसी समय महात्माजी ने एक स्वयंसेवककी टोपी उतारकर वल्लभभाई पटेलके सिरपर रखते हुए कहा, "किसीकी विदाईके वक़्त खुले सिर नहीं रहना चाहिए।" यह सुनकर सभी ठहाका मारकर हँस पड़े, जरा ही देर पहले आँसू-भरी आँखो से विदा माँगनेवाले राजेन्द्रबाबू भी !

—'गोष्ठीरूप गांधीजी' (साने गुरुजी)

सर्कस

नागपुर जेलमें किसीने विनोबाजीसे पूछा, "कहिए जेलखाना कैसा लग रहा है ?"

विनोबाजीने जवाब दिया, "बहुत अच्छा है। यह तो एक सर्कस है। फ़र्क इतना ही है कि सर्कसमें आदमी जानवरोंपर अधिकार चलाते है और यहाँ जानवर आदमियोंपर !"

पासमें खड़े जेलरकी यह सुनकर क्या हालत हुई होगी !

बापूका काम

गांधीजी जब आग़ाखाँ-महलसे छूटकर जमनालालजी बजाजके घर-पर पहुँचे तो बजाजजीकी वृद्धा माताने कहा, "बापू! आप तो जेलसे छूटकर आ गये, अब आप राधाकृष्ण (जमनालालजीके भतीजे) को भी जेलसे छुड़वा दीजिए।"

बापू हँसकर बोले, "मेरा काम तो जेल भिजवाना है, जेलसे छुड़वाना नहीं।"

भाव-विभोर !

एक बार डॉ० राजेन्द्रप्रसाद विधान-परिषद्के अध्यक्षकी हैसियतसे लार्ड माउण्टबेटनके पास गवर्नर जनरलका पद स्वीकार कर लेनेके लिए निवेदन करने गये थे। माउण्टबेटनने उनसे हाथ मिलाया और स्वागत किया। डॉ० प्रसादने भी बड़ी ख़ुशी ज़ाहिर की, पर जिस कामके लिए वे वहाँ गये थे वह उन्हें बिलकुल याद ही नहीं रहा! इधर-उधरकी बातें करके लौट आये।

संस्कृत और अंग्रेज़ी

विनोबाजी श्रीपरांजपे महाराजके यहाँ गये। परांजपे संस्कृतके बड़े पण्डित थे। उन्होंने अपने बच्चोंको बहुत छोटी उम्रमें ही संस्कृत और अंग्रेज़ी पढ़ा दी थी। उनके ज्ञानका विनोबाजीके आगे उन्होंने प्रदर्शन कराया। बादमें परांजपे महाराजने सगर्व पूछा, "कैसा लगा आपको?"

विनोबाजीने कहा, "अच्छा है। मैं इस फ़िक्रमें पड़ गया हूँ कि एक तरफ़ संस्कृतकी बैटरी, दूसरी तरफ़ अँग्रेज़ीकी बैटरी—इनमें-से कौन-सी बैटरी इन बच्चोंकी पहले जान लेगी।"

बेचारे महाराज देखते रह गये!

काव्यका प्रसव

एक बार आचार्य क्षितिमोहन सेन कवीन्द्र रवीन्द्रके साथ सैर कर रहे थे। आचार्यने गुरुदेवको कोई काव्यप्रेरणा होती देखी। वे चुपके-से अलग हो गये।

गुरुदेवने काव्य पूरा किया और क्षितिबाबूको ढूँढने लगे। मिलनेपर बोले, "आप कहाँ गये थे? अभी इस काव्यका प्रसव हुआ है।"

"पर गुरुदेव, प्रसव-समय कोई पुरुष थोड़े हाजिर रह सकता है" क्षितिबाबूने कहा।

ईसा

एक बार जब सर सैयद अहमदख़ाँ इंग्लैण्ड जा रहे थे तो उनके साथ सफर करनेवाले एक शख़्सने ब्रिटिश साम्राज्यकी तारीफ करनी शुरू कर दी, "जनाब! आप नहीं जानते इस दौलत-ओ-हश्मतकी ख़ास वजह है हमारा ईसाई धर्म।"

सर सैयदने फ़ौरन् जवाब दिया, "लेकिन हज़रत ईसा तो दौलत-मन्द नहीं थे!"

—कर्नल ग्रैहम लिखित 'सर सैयदकी जीवन-गाथा' से

यादगार

इटलीके कवि रोसिनी एक बार फ़्रान्स आये। उनके प्रशंसकोंने उनकी एक प्रतिमा स्थापित करनेका फैसला किया। जब रोसिनीको यह मालूम हुआ तो उन्होंने पूछा,

"क्यों भाई, इस प्रतिमाकी स्थापनामें क्या खर्च पड़ेगा?"

"करीब एक करोड़ फ़्रैंक।"

कवि: "एक करोड़ फ़्रैंक! आप लोग मुझे पचास लाख फ़्रैंक ही दे दें, तो प्रतिमाकी जगह मैं खुद खड़ा हो जाऊँ।"

रोशनी

एक दिन कोई सज्जन मिर्ज़ा ग़ालिबसे मिलने आये। जब वह जाने लगे तो मिर्ज़ा हाथमें शमादान लेकर नीचे पहुँचाने आये।

आगन्तुक महाशय बोले, "क़िबला, आपने क्यों तकलीफ़ की ?"

मिर्ज़ाने अपने मख़सूस अन्दाज़से जवाब दिया, "मैं आपको जूता दिखानेके लिए शमादान नहीं लाया हूँ, बल्कि इस लिए लाया हूँ कि कहीं अँधेरेमें आप मेरा नया जूता पहनकर चलते न बनें।"

लफ़्ज़–लफ़्ज़

अंग्रेजीका मशहूर हास्य-लेखक मार्क ट्वेन अक्सर चर्चमें उपदेश सुनता था। एक दिन पादरीसे बोला,

"डॉक्टर जोन, आपका सरमन सुनकर मुझे ऐसी खुशी होती है मानो किसी पुराने दोस्तसे मिल रहा हूँ; क्योंकि मेरे पास एक किताब है जिसमें आपके उपदेशोंका हर लफ़्ज़ है।"

"बिलकुल ग़लत बात है यह !" पादरी बोला।

"नहीं सचमुच है मेरे पास वह किताब।"

"अच्छा, उसे भिजवाना मेरे पास।"

"ज़रूर।" और अगले दिन ट्वेनने बड़ा शब्दकोश पादरीके पास भिजवा दिया।

जटिल !

ऍटम युगके प्रवर्त्तक आइन्स्टाइन नहाने, कपड़े धोने और दाढ़ी बनाने के लिए एक ही साबुन इस्तेमाल किया करते थे। किसीने इसकी वजह पूछी तो ब्रह्माण्डकी जटिलताओंको सुलझानेवाला वैज्ञानिक बोला, "इस लिए कि कई तरहका साबुन इस्तेमाल करनेसे जीवन जटिल हो जाता है।"

मार्क ट्वेन

मशहूर लेखक मार्क ट्वेन बड़े विनोदी स्वभावके थे। उनका एक दोस्त उनसे भी ज्यादा विनोदी था। एक दिन किसी सभामें बोलनेका दोनोंको आमन्त्रण मिला। पहले मार्क ट्वेनने एक बहुत ही सुन्दर भाषण दिया। श्रोता मुग्ध हो गये। उनके बाद उनके मित्रने बोलना शुरू किया,

"दोस्तों! सभामें आनेसे पहले मुझमें और ट्वेनमें यह तय हो गया था कि मेरा भाषण वह सुनायेंगे और उनका भाषण मैं। ट्वेनने मेरा लैक्चर तो दे दिया, अब मुझे उनका लैक्चर पढना है। मगर अफसोस है कि उनके भाषणकी पाण्डुलिपि मुझसे कहीं खो गयी। इसलिए मजबूरन बिना कुछ कहे मैं अपना स्थान ग्रहण करता हूँ।"

ट्वेनके भाषणसे भी ज्यादा मज़ा श्रोताओंको उनके दोस्तकी इस तक़रीरमें आया।

तुर्की-बतुर्की

प्रेसीडेण्ट लिंकन एक बार सैरको निकले। साथमें उनका अंगरक्षक भी था। रास्तेमें सड़कके किनारे एक लड़का मिला। कुछ दूर आगे जाकर लिंकन गार्डसे बोले,

"देखा तुमने, लड़केने क्या किया?"

"जी नहीं।"

"उसने मेरी तरफ मुँह बिचकाया। और जानते हो मैंने क्या किया? मैंने उसकी ओर मुँह बिचका दिया।"

शॉ

एक बार जार्ज बर्नार्ड शॉसे पूछा गया कि दुनियाके दो महान् लेखक कौन हैं? शॉने जवाब दिया,

"जार्ज बर्नार्ड शॉ और जी. बी. शॉ."

रोशनी

एक दिन कोई सज्जन मिर्ज़ा ग़ालिबसे मिलने आये। जब वह जाने लगे तो मिर्ज़ा हाथमें शमादान लेकर नीचे पहुँचाने आये।

आगन्तुक महाशय बोले, "क़िबला, आपने क्यों तकलीफ़ की ?"

मिर्ज़ाने अपने मख़सूस अन्दाजसे जवाब दिया, "मैं आपको जूता दिखानेके लिए शमादान नहीं लाया हूँ, बल्कि इस लिए लाया हूँ कि कहीं अँधेरेमें आप मेरा नया जूता पहनकर चलते न बनें।"

लफ़्ज़-लफ़्ज़

अंग्रेजीका मशहूर हास्य-लेखक मार्क ट्वेन अक्सर चर्चमें उपदेश सुनता था। एक दिन पादरीसे बोला,

"डॉक्टर जोन, आपका सरमन सुनकर मुझे ऐसी ख़ुशी होती है मानो किसी पुराने दोस्तसे मिल रहा हूँ; क्योंकि मेरे पास एक किताब है जिसमें आपके उपदेशोंका हर लफ़्ज़ है।"

"बिलकुल ग़लत बात है यह !" पादरी बोला।

"नहीं सचमुच है मेरे पास वह किताब।"

"अच्छा, उसे भिजवाना मेरे पा ।"

"ज़रूर।" और अगले दिन , शब्दकोश पा भिजवा दिया।

ऍटम युगके

के लिए एक

पूछी

f

ईमानदार गाय

जनरल आइसेन हावरने नेशनल प्रेस क्लबमें बोलते हुए कहा कि मुझे अफसोस है कि मैं आपके सामने कोई लम्बी-चौड़ी बात नही बघार सकता।

"इससे मुझे कानसम फार्मपर गुजारे हुए अपने बचपनके दिन याद आ जाते हैं।" वह वहाँका एक दिलचस्प किस्सा सुनाते हुए बोले, "एक बूढ़े किसानके पास एक गाय थी जिसे हम खरीदना चाहते थे। हम उससे मिलने गये और गायकी नस्लके बारेमे पूछा, बिचारा बूढा किसान समझता ही नहीं था कि नस्ल क्या होती है, इसलिए हमने पूछा कि वह घी कितना देती है। आखिर हमने पूछा कि 'क्या तुम्हें अन्दाज़ा है कि वह सालमें कितना दूध देती है?'"

किसान सिर हिलाकर बोला, "मुझे नही मालूम। लेकिन यह बूढ़ी गाय ईमानदार है; उसके जितने दूध होगा सब दे देगी।"

"तो," जनरल बोले, "मैं उस गायकी तरह हूँ; मुझमे जितनी क्षमता है, सारीकी-सारी आपकी सेवामें अर्पित कर दूंगा।"

बताइए!

"क्या आप वही सज्जन हैं जिसने मेरे लड़केको कल डूबनेसे बचाया था?

"जी हाँ, मगर इस विषयमे अधिक प्रशंसात्मक शब्द कहकर मुझे लज्जित न कीजिए।"

"कहूँ कैसे नही? बताइए उस लड़केकी टोपी कहाँ है?"

आ-राम

यह कितनी अच्छी बात है कि कुछ काम करनेको न हो। और उसके बाद आराम किया जाये!

वक़्तकी वर्बादी !

मशहूर लेखक आस्कर वाइल्डके यहाँ एक मेहमान ठहरे हुए थे। एक दिन वाइल्ड बड़ी देरसे घर लौटे।

अतिथि : "कहिए, दिन-भर कहाँ रहे ?"

वाइल्ड : "एक बड़े ज़रूरी काममें फँसा था, अपनी एक किताबके प्रूफ़ देख रहा था।"

अतिथि : "यह भी कोई काम है !"

वाइल्ड : "क्यों नहीं ? बड़ा अहम काम है। आखिर मैंने प्रूफ़में-से एक ग़ैर-ज़रूरी कॉमा हटा दिया।"

अतिथि : "दिन-भरमें सिर्फ़ एक कॉमा निकालनेका काम ! इस कला-वलाके चक्करमें पड़ना वक़्त ही हत्या करना है।"

वाइल्ड : "जी हाँ। बिलकुल ! उस कॉमाके बारेमें मैंने काफ़ी सोच-विचार किया तो वह अपनी जगह ठीक मालूम पड़ा। इसलिए मैंने उसे फिर वहीं लगा दिया।"

बला

"तीन सालसे मुझे आँखोंकी ऐसी तकलीफ़ थी कि मैं कुछ देख नहीं सकता था !"

"डॉक्टरने क्या नुस्खा तजवीज़ किया ?"

"यह कि बाल कटवा डालो।"

फ़रियाद

एक भिखारी अपनी करुण कथा सुना-सुनाकर भीख माँग रहा था,

"दयालु सज्जनो ! मेरी तरफ़ देखो। मेरे कभी बाप नहीं था। मैं लड़का-ही-लड़का हूँ। मेरे सिर्फ़ माँ है। मेरे सिवाय मेरा कोई भाई नहीं।"

वक़्तकी बर्बादी !

मशहूर लेखक आस्कर वाइल्डके यहाँ एक मेहमान ठहरे हुए थे। एक दिन वाइल्ड बड़ी देरसे घर लौटे।

अतिथि : "कहिए, दिन-भर कहाँ रहे ?"

वाइल्ड : "एक बड़े ज़रूरी काममें फँसा था, अपनी एक किताबके प्रूफ़ देख रहा था।"

अतिथि : "यह भी कोई काम है !"

वाइल्ड : "क्यों नहीं ? बड़ा अहम काम है। आखिर मैंने प्रूफ़मेंसे एक ग़ैर-ज़रूरी कॉमा हटा दिया।"

अतिथि : "दिन-भरमें सिर्फ़ एक कॉमा निकालनेका काम ! इस कदर बलाके चक्करमें पड़ना वक़्त ही हत्या करना है।"

वाइल्ड : "जी हाँ। बिलकुल ! उस कॉमाके बारेमें मैंने काफ़ी गौर विचार किया तो वह अपनी जगह ठीक मालूम पड़ा। इसलिए मैंने उसे फिर वहीं लगा दिया।"

बला

"तीन सालसे मुझे आँखोंकी ऐसी तकलीफ़ थी कि मैं कुछ देख नहीं सकता था !"

"डॉक्टरने क्या नुस्खा तजवीज़ किया ?"

"यह कि बाल कटवा डालो।"

फ़रियाद

एक भिखारी अपनी करुण कथा सुना-सुनाकर भीख माँग रहा था, "दयालु सज्जनो ! मेरी तरफ़ देखो। मेरे कभी बाप नहीं था। मैं लड़का-ही-लड़का हूँ। मेरे सिर्फ़ माँ है। मेरे सिवाय मेरा कोई भाई नहीं।

ठीक है

आइन्स्टाइन अपनी प्रयोगशालामें विचारमग्न थे। एकाएक उनकी पत्नी भड़कती हुई आयी,

"आपने यह नया नौकर भी क्या रखा है, बिलकुल गधा है। उसे फ़िलफ़ौर निकाल देना चाहिए।"

आइन्स्टाइनने विचारमें मग्न रहते हुए कह दिया, "ठीक है।"

पत्नी चली गयी। लेकिन दूसरे दरवाज़ेसे नौकरने आकर आक्रोशपूर्वक कहा, "प्रोफेसर! आपकी पत्नीमें नाम मात्रकी भी मनुष्यता नहीं है..."

"ठीक है!"

पत्नीने बरामदेसे यह सुन लिया। झपटकर फिर कमरेमें आकर बोली, "आप नौकरके सामने मेरा अपमान कर रहे हैं.......आप पागल तो नहीं हो गये हैं?"

"ठीक है!" आइन्स्टाइन इतमीनानसे बोले, सुनकर पत्नी और नौकर एक दूसरेकी तरफ देखकर हँसने लगे।

—'पर्सनलिटी' से

सत्यमप्रियं

"क्या आप इसलिए परेशान हैं कि वह आपके बारेमें झूठी बातें कहता फिरता है?"

"झूठी बातोंकी मुझे परवा नहीं, लेकिन अगर उसने सच बात कह दी तो मैं उसकी गरदन तोड़ दूँगा।"

झुकी हुई मीनार

इटालियन गाइड : "और यह 'लीनिंग टॉवर ऑफ़ पीसा' है।"

अमेरिकन दर्शक : "बिलकुल मेरे मकानके ठेकेदारकी कलाकृति जान पड़ती है।"

फिर कभी !

एक वार स्वार्थमोर कॉलेजके प्रेसीडेण्ट, डाक्टर फ्रेंक एडलटने अलवर्ट आइन्स्टाइनके सम्मानमें दावत दी। जब आइन्स्टाइनसे वोलनेकी दरख्वास्त की गयी तो वे वोले, "देवियो और सज्जनो, मुझे अफ़सोस है कि मुझे कुछ नहीं कहना।"

इतना कहकर वह वैठ गये। जब उन्होंने मेहमानोंको घुसपुस सुनी तो वे उठकर वोले,

"अगर मुझे कुछ कहना होगा, तो मैं फिर आ जाऊँगा।"

छह महीनेके वाद उन्होंने डाक्टर एडलटको तार किया, "अव मुझे कुछ कहना है।" एडलटने फिर एक भोजका फ़ौरन् आयोजन किया, जिसमें आकर आइन्स्टाइन वोले।

वहुरूपिया

एक वहुरूपिया शिवका रूप रखकर किसीके घर आया। घरका मालिक उसे एक रुपया देने लगा, मगर उसने नहीं लिया। वहुरूपियेने अपने यहाँ जाकर वेश उतारा और उस मालिक-मकानके पास आकर रुपया माँगने लगा।

उससे पूछा गया, "रुपया तुमने उस वक़्त क्यों नहीं लिया ?"

"उस वक़्त तो मैं शिवका रूप धारण किये हुए था। संन्यासी रुप कैसे ले सकता था ?"

चतुरता

एक रईसने मथुराजीके चौवेसे पूछा, "क्या आप तामिल समझ सक हैं ?"

चौवेने पेटपर हाथ फेरते-फेरते कहा, 'हाँ सरकार, यदि वह भाप वोली जावे।"

ठीक है

आइन्स्टाइन अपनी प्रयोगशालामें विचारमग्न थे। एकाएक उनकी पत्नी भड़कती हुई आयी,

"आपने यह नया नौकर भी क्या रखा है, बिलकुल गधा है। उसे फ़िलफ़ौर निकाल देना चाहिए।"

आइन्स्टाइनने विचारमें मग्न रहते हुए कह दिया, "ठीक है।"

पत्नी चली गयी। लेकिन दूसरे दरवाज़ेसे नौकरने आकर आक्रोशपूर्वक कहा, "प्रोफ़ेसर ! आपकी पत्नीमें नाम मात्रकी भी मनुष्यता नहीं है ..."

"ठीक है !"

पत्नीने बरामदेसे यह सुन लिया। झपटकर फिर कमरेमें आकर बोली, "आप नौकरके सामने मेरा अपमान कर रहे हैं.......आप पागल तो नहीं हो गये हैं ?"

"ठीक है !" आइन्स्टाइन इतमीनानसे बोले, सुनकर पत्नी और नौकर एक दूसरेकी तरफ देखकर हँसने लगे।

—'पर्सनलिटी' से

सत्यमप्रियं

"क्या आप इसलिए परेशान हैं कि वह आपके बारेमें झूठी बातें कहता फिरता है ?"

"झूठी बातोंकी मुझे परवा नहीं, लेकिन अगर उसने सच बात कह दी तो मैं उसकी गरदन तोड़ दूँगा।"

झुकी हुई मीनार

इटालियन गाइड : "और यह 'लीनिंग टॉवर ऑफ पीसा' है।"

अमेरिकन दर्शक : "बिलकुल मेरे मकानके ठेकेदारकी कलाकृति जान पड़ती है।"

सादगियाँ

निवास-स्थानके एक सख्त ज़रूरतमन्दने एक प्रकृतिवादीसे पूछा, "क्या आप बता सकते हैं कि मुझे मकान कहाँ मिल सकता है ?"

"मकान ? लड़के, तुम बहुत नाज़ुक होते जा रहे हो ! खुली हवामें क्यों नहीं रहते ? प्रकृति माता तुम्हें तारों-जड़ा कम्बल उढ़ायेगी; आसमान तुम्हारी छत होगा ?"

"साहब, बात यह है कि मैं इससे किसी क़दर छोटी चीज चाहता था ।"

फाँसी

एक साहबने ज़िन्दगीसे किसी क़दर ऊब कर आत्महत्या करनेका फ़ैसला किया । कमरेमें एक दोस्त आया तो देखता है कि हजरत कमरमें रस्सी बाँधे खड़े हैं ।

"यह क्या माजरा है ?"

"फाँसी लगा रहा हूँ ।"

"तो रस्सी कमरमें क्यों बाँधी है ?"

"क्योंकि गलेमें बाँधनेसे दम घुटता था ।"

कमज़ोर निकली

एक लबाड़ आदमी पैसे झाड़नेके इरादेसे दूसरेसे बोला, "क्या करूँ भाई ! बेकारीके मारे जान निकली जा रही है । कल तो आत्महत्या करनेका इरादा कर लिया था । एक पेड़से रस्सी बाँधी और सोचा कि फाँसी दे लूँ ।"

"फिर क्या हुआ !"

रस्सी देखी तो कमज़ोर निकली," पहला बोला ।

हैं

राय बहादुर निगम साहबको मरे हुए चार महीने हो चुके थे। नीचे दरवाज़ेपर "हैं," 'नहीं हैं" की पट्टी लगी हुई थी। जब वो बीमार थे तो "नहीं हैं" लगा रखा था, क्योंकि आनेवालोंसे मिलना नहीं चाहते थे। जब उनका जनाज़ा बाहर निकला तो नौकरने "नहीं हैं" को ढककर "हैं" खोल दिया। क्योंकि उसने देख रखा था कि वे बाहर जाते वक़्त उसे बदल दिया करते थे।

रिस्टवॉच

एक शख़्स अपने बाबाकी पुरानी दीवारघड़ी लेकर शहरके भीड भरे सदर रास्तेमें घड़ीसाज़के यहाँ मरम्मत करानेके लिए जा रहा था। घड़ीके कारण सामनेका रास्ता कम दीखता था। सहज रूपसे किसी स्त्रीसे टक्कर जो हुई तो वह स्त्री गिर पड़ी, अपनी बिखरी हुई चीज़ोंको समेट कर, सँभलकर उठते हुए, झुँझलाकर बोली, "तुम और लोगोंकी तरह रिस्टवॉच पहनकर क्यों नहीं निकलते?"

फ़र्क़

एक मोटी स्त्री अपनी सहेलीसे कहने लगी, "मैं अपनी चर्बी कम करनेके लिए इस रॉलरको तीन महीनेसे इस्तेमाल कर रही हूँ।"

"कुछ फ़र्क़ पड़ा?"

"देखो न, रॉलर कितना पतला हो गया है!"

चीप लेबर

एक : "मुझे देखो मैं स्व-निर्मित आदमी हूँ।"

दूसरा : "सस्ती मजदूरीकी यही तो खराबी है।"

चूहेका दिल

स्पेनकी एक लोककथा बहुत मशहूर है। एक चूहेपर एक जादूगरको बड़ी दया आयी और उसने उसे बिल्ली बना दिया, ताकि वह आरामसे रह सके। लेकिन बिल्ली बन जानेपर उसे कुत्तेका डर बना रहा। जादूगरने उसे कुत्ता बना दिया पर अब वह शेरसे डरने लगा। उसे शेर भी बना दिया गया, लेकिन अब वह शिकारियोंसे डरने लगा।

खीजकर जादूगरने उसे फिर चूहा बना दिया और कहा, "मैं तेरी कुछ मदद नहीं कर सकता। आखिर दिल तो तेरा चूहेका ही है!"

बहरा

"अरे भाई दुलीचन्द !"

"क्या कहा ? मुझे बुलाया क्या ?"

"हाँ, तुमको ही बुलाया।"

"ऐसा ! मैं समझा कि तुमने मुझे बुलाया।"

समाधि लेख

अधिकांश लोगोंकी समाधियोंपर लिखा जाना चाहिए, "३० में मरे, ६० में दफ़नाये गये।"

खतरा !

बिजलीवाला : "जरा, इस तारको पकड़ना।"

नौसिखिया : "पकड़ लिया। अब ?"

बिजलीवाला : "कुछ मालूम पड़ता है ?"

नौसिखिया : "कुछ नहीं।"

बिजलीवाला : "तो देखो, दूसरे तारको मत छूना। उसमें तीन हज़ार वोल्टवाली बिजली चल रही है।"

नीलाम

नीलाम हो रहा था। नीलाम करनेवालेके पास एक पुरजा आया। उसने बीच ही में उसे देखकर कहा,

"सज्जनो, किसीका बटुआ खो गया है। उसमें पचास रुपये हैं। मिल जाये तो बटुएवाला दस रुपये दे रहा है।"

"ग्यारह," पीछेसे एक आवाज़ आयी।

फ़ैसलाकुन

होटलवाला : "अच्छा, आज आप जा रहे हैं? यह चौपानिया (ट्रैक्ट) लेते जाइए। इसमें हमारे होटलके बारेमें कुछ बड़े-बड़े लोगोंकी रायें हैं।"

मुसाफ़िर : "पर मैं अपनी ख़ुदकी जो राय लिये जा रहा हूँ वह काफ़ी नहीं है क्या?"

मर-मरके जीना

"अजीब बात है कि बीमा करानेके बाद इतनी जल्दी आपके पति मर गये!"

"अजीब क्या है, बीमेके प्रीमियम भरनेके लिए उन्हें जो सख़्त मेहनत करनी पड़ती थी उससे क्या कोई ज़्यादा दिन जीनेकी उम्मेद कर सकता था?"

बिजली

पति : "मेरे लिए यह बड़े रहस्यकी बात है कि बिजली कैसे काम करती है।"

पत्नी : "बिलकुल आसान बात है! बटन दबा दो कि काम करने लगती है!"

क़ुदरती उपाय

"कैसे हालचाल हैं ?"

"काफ़ी अच्छे", ठूँठपर बैठा हुआ खूसट बोला,

"मुझे कुछ दरख़्त काटने थे, मगर तूफ़ानने आकर मेरी तकलीफ़ बचा दी।"

"अच्छा !"

"हाँ, और तब बिजली आ गिरी, मुझे कूड़ेके ढेरको जलाना न पड़ा।"

"बहुत खूब !! पर अब क्या प्रोग्राम है ?"

"कुछ नहीं। बस ज़रा भूचालका इन्तज़ार है कि आकर ज़मीनसे मेरे आलू निकाल दे।"

सुशंका

ब्राउनकी बीबीने तीन शिशुओंको जन्म दिया। अगले दिन दफ़्तरकी तरफ़से उसे इस 'जनसेवा' के उपलक्ष्यमें एक कप प्रदान किया गया।

मिस्टर ब्राउन एक मधुर धर्मसंकटमें पड़कर बोले, "शुक्रिया, लेकिन यह कप अब मेरा हो गया, या इसे मुझे लगातार तीन साल तक जीतना होगा ?"

क़ासिद

स्पेनके फ़िलिप द्वितीयने एक शहरके अधिकांश वासियोंके लिए [illegible] का फ़रमान निकाल दिया। उसके एक दरबारीने उसे इत्तिला दी कि वह सज्जन फ़लां जगह छिपे हुए हैं, उनका नाम गिरफ़्तारीकी फ़ेहरिस्तमें नहीं आया है।

"बेहतर होता कि आप जाकर उनसे कहते कि मैं यहाँ हूँ, बजाय इसके कि आप मुझसे कहें कि वह कहाँ है।" बादशाह बोला।

कामिनी

वह अपने पिताका फ़ोटोग्राफ़ है और अपनी माँका फ़ोनोग्राफ़।

ओ तेरेकी !

एक विदेशी : "जब मैं हिन्दुस्तानमें था तो छड़ियोंको साँप समझता था !"

दूसरा : "कोई हानि नहीं।"

पहला : "लेकिन मैं उन्हें मारनेके लिए साँपोंको उठा लिया करता था।"

फ़ैसला

"मैं हाथियोंको कोई बड़ी हस्ती नहीं मानती," मक्खी बोली, "वह छतोंपर तो चल ही नहीं सकते।"

तारणतरण

"बीस बरसकी उम्रमें समझता था कि मैं दुनियाको बचा लूँगा।"

"आप तो अब तीस बरसके हो गये होंगे।"

"हाँ, अब मानता हूँ कि अगर अपनी तनख्वाहमें-से कुछ बचा सकूँ तो अपनेको खुशक़िस्मत समझूँ !"

दुआ

एक भिखारी एक जेंटिलमैनके पास आकर भीख माँगने लगा। जेंटिलमैनने बिना कुछ बोले अपनी जेबमें हाथ डाला। भिखारीने तत्काल दुआ देनी शुरू की। "ईश्वर तुम्हें सदा सुखी......" लेकिन उस सज्जनने सिर्फ़ अपना रूमाल निकाला और आगे चल दिया। इसपर भिखारी भी धारावाहिक बोलता गया, "......रखना चाहे मगर रख न सके।"

स्व-निर्मित

एक राजनीतिज्ञ बोला, "मैं स्व-निर्मित आदमी हूँ।"

श्रोता : "इससे बेचारा सर्वशक्तिमान् एक भयंकर ज़िम्मेदारी बच गया।"

चुनाव

"अगर आप चुन लिये गये तो आप क्या करेंगे?"

"अरे यह पूछो कि अगर न चुना गया तो क्या करूँगा।"

सर्वसम्मति

एक प्रस्तावपर अध्यक्षने लिखा, "प्रस्ताव सर्वसम्मतिसे पास हुआ, विरोधमें सिर्फ़ दो थे।"

चादरके रूमाल

वाशिंग कम्पनीके मालिकसे एक ग्राहकने शिकायत की, "आपने कपड़े देनेमें भूल की मालूम होती है। मैंने तो एक ही कपड़ा दिया था, मगर इस बण्ड्लमें चार-पाँच कपड़े रखे मालूम होते हैं।"

मालिक : "हमारी कम्पनीमें भूल होती ही नहीं, बात यह हुई कि धोनेमें आपकी चादरके पाँच टुकड़े हो गये। वे सब सँभालकर इस बण्ड्लमें बाँध दिये गये हैं। हमारी प्रामाणिकताका इससे बड़ा सबूत और क्या होगा कि धुलाई पाँच कपड़ोंकी लेनेके बजाय एक ही कपड़ेकी ली है।"

बाथ

लेडी : "क्या आप मुझे एक रूम और बाथ दे सकते हैं?"

क्लर्क : "मैं आपको रूम तो दे सकता हूँ, मेडम, मगर अपनी बाथ आपको स्वयं लेनी पड़ेगी।"

भूदान

"भूदान-यज्ञमें कोई आहुति डालिए !"

"मेरे पास ज़मीन नहीं है।"

"तो कुछ सम्पत्तिदान कीजिए ?"

"मैं तो कर्ज़दार हूँ !"

"तो कुछ श्रम-दान दीजिए ?"

"मैं कुछ श्रम करनेकी स्थितिमें नहीं हूँ—डॉक्टरने मुझे पूर्ण विश्राम लेनेकी सलाह दी है !"

"तो जीवन-दान दीजिए ?"

"बेकारी, ग़रीबी, भुखमरी, बीमारीके मारे मेरा जीवन-दीप इसी क्षण बुझा चाहता है !"

"तो हमें पिण्ड-दान ही दीजिए।"

"???"

सो तो है ही

"आपको मेरा नया टोप कैसे लगता है ?"

"टोप है क्या यह ? बिलकुल रद्दीकी उलटी टोकरी-सा मालूम होता है।"

"लेकिन यह रद्दीकी उलटी टोकरी ही तो है।"

अख़बारका चमत्कार

एक साहबकी क़ीमती घड़ी खो गयी। उन्होंने फौरन् स्थानीय दैनिक पत्रमें विज्ञापन दे दिया और इन्तज़ार करते रहे। एक रोज़ उन्हें दूसरे कोटकी जेबमें वह रखी मिल गयी। मिलते ही उन्होंने अख़बारके सम्पादकको धन्यवाद-सूचक पत्र लिखा, "शुक्र है कि आपके अख़बारकी बदौलत मुझे मेरी खोयी हुई घड़ी मिल गयी।"

प्रेरणा

एक शख्स जिसकी शक्लपर परेशानीके आसार थे, बीमा कम्पनीके दफ़्तरमें आया। क्लर्कने उससे बहुत-से सवाल पूछे,

आदमी बोला, "नहीं, ज़्यादा नुक़सान नहीं हुआ, सिर्फ़ दरवाज़ेका किवाड़ जल गया।"

"आग कब लगी ?"

"क़रीब आठ साल हो गये होंगे।"

"आठ साल !"

"हाँ, तभीसे मेरी बीवी पीछे पड़ी रही है कि, "कीजिए इसके लिए कुछ-न-कुछ !"

लेनेके देने

एक रोज़ शामको पति-पत्नी मोटर लेकर सैरको निकले, रास्तेमें एक शरीफ़-लगते युवकको लिफ़्ट दी, थोड़ी ही देर बाद पतिने देखा कि घड़ी ग़ायब है ! उसने जेबसे छुरी निकाली और युवकके सीनेपर तानकर बोला, "घड़ी रख दे !"

युवकने चुपचाप घड़ी दे दी, उसे वहीं उतार दिया गया। कुछ आगे जानेपर पत्नी बोली, "तुम भी ग़ज़बकी हिम्मतवाले हो ! चलते वक़्त जब तुम घड़ीको टेबलपर ही भूल आये तो मुझे फ़िक्र हुई थी कि 'टाइम कैसे देखेंगे ?' "

अन्दाज़ा

"ओ मटरू, ज़रा टाइम बताना।"

"तुमने कैसे जाना कि मेरा नाम मटरू है ?"

"अन्दाज़ेसे।"

"तो फिर टाइमका भी अन्दाज़ा लगा लो।"

जवाबे जाहिलाँ बाशद खामोशी

अकबर : "बीरबल, अगर बेवकूफ सामने आकर ज़बर्दस्ती करने लगे तो क्या करना चाहिए ?"

बीरबल : "जहाँपनाह, एकदम खामोश रह जाना चाहिए !"

छूटी औलाद

जो : "क्या कहा तुमने कि तुम्हारी बीबी और चार बच्चे इंग्लैण्ड में हैं और तुमने *एक नहीं देखा !"*

हो : "जी हाँ, मैंने उनमें एकको कभी नहीं देखा, अन्तिमको।"

जालसाज़

वह इतना जालसाज़ है कि उसके हाथ मिलानेके बाद मैं हमेशा अपनी अँगुलियाँ गिन लेता हूँ।

फ़र्स्ट हैण्ड

"दोस्त, अब तुम कल्पना भी नहीं कर सकोगे कि मेरी कार सैकण्ड हैण्ड है !"

"सचमुच नहीं कर सकता ! ऐसी लगती है मानो तुमने ही बनायी है !"

तफ़रीह

एक दानीने किसी पागलखानेमें नहानेका तालाब बनवा दिया। उसने *वार्डनसे पूछा,*

"वे लोग उसे कैसा पसन्द करते है ?"

वार्डन : "वे तो दीवाने हो गये हैं उसके पीछे ! जब हम उसे पानी से भर देते हैं तब तो वे उसे और भी पसन्द करते हैं।"

समानता

"जब-जब तुझे देखता हूँ तब-तब मुझे छगन याद आता है।"
"पर हम दोनोंमें तो कोई समानता नहीं।"
"क्यों नहीं ? तुम दोनोंसे मुझे दस-दस रुपये लेने हैं न !"

बहरे

दो बहरे रास्तेमें मिले, एकने कहा, "कहो, क्या घूमने जा रहे हो ?"
दूसरा : "नहीं, घूमने जा रहा हूँ।"
पहला : "अच्छा, मैंने समझा था शायद घूमने जा रहे हो।"

एक हाथ

क्या आपने उस खिलाड़ीका क़िस्सा सुना है जिसके पास तेरह तुरुपके पत्ते थे, फिर भी सिर्फ़ एक ही हाथ बना सका ? उसके साथीके पास एक इक्का था जिसपर तुरप लगनी ही थी, लग गयी। इसपर, तैशमें, उसके साथीने उसे उठाकर खिड़कीके बाहर फेंक दिया।

समाधि-लेख

"यहाँ वह सज्जन सोये हुए हैं जो दो-मार्गी रास्तेपर एक तरफ़ देखते हुए चल रहे थे।"

ग़लती कहाँ हुई ?

एक शख्स अपनी मामूली-सी घड़ीको लेकर एक जौहरीके यहाँ मरम्मत लेने पहुँचा।

"ग़लती मुझसे यह हुई कि यह घड़ी हाथसे गिर पड़ी !"

जौहरी बोला, "मेरे ख़यालसे इसका गिर जाना आपके वशकी बात नहीं थी। ग़लती तो आपसे यह हुई कि आपने इसे उठा लिया !"

खूब बचे

"भई ! आज तो खूब बचे !"

"क्या हुआ ?"

"मेरे ऊपरसे मोटर निकल गयी, यार !"

"फिर कैसे बचे ?"

"मैं पुलके नीचे खड़ा था।"

दरगुज़र

टेलिफोनपर एक नवयुवतीकी आर्त-वाणी सुनायी दी, "अफ़सर महोदय, दो नवयुवक खिड़कीकी राह मेरे कमरेमें घुसनेकी कोशिश कर रहे हैं।"

"क्षमा कीजिए देवीजी, यह फ़ायर-स्टेशन है, पुलिस-स्टेशन नहीं।"

"यह मैं जानती हूँ। मुझे फ़ायर-स्टेशन ही चाहिए। उन्हें ज़रा और बड़ी नसैनीकी ज़रूरत है।"

दीर्घायु

"आपकी दीर्घायुका रहस्य क्या है ?"

"यह कि मैं दीर्घ काल पहले पैदा हुआ था !"

पानीकी कमी

सेल्स-मैनेजर : "हमारे बीकानेरके प्रतिनिधिके पत्रसे लगता है कि वहाँ पानीकी कमी फिर हो गयी है !"

सहायक : "पर बीकानेर रेगिस्तानमें तो पानीकी कमी हमेशा ही रहती है !"

सेल्स-मैनेजर : "मालूम है। पर इस बार तो उसके पत्रमें टिकिट भी पिनसे लगे हैं !"

इत्तिला

एक साहबके टेलिफ़ोनमें कुछ गड़बड़ थी। वे ऑपरेटरसे भड़ककर बोले, "या तो मेरा दिमाग़ खराब हो गया है, या फिर तुम ही खब्ती हो।"

"मुझे अफ़सोस है महाशय," वह अपने मधुरतम अन्तर्राष्ट्रीय स्वरमें बोली, "कि हमारे पास इसकी कोई इत्तिला नहीं है।"

लुटेरे

गाँव जाते हुए एक बूढ़ेको दो नक़ाब-पोश आदमियोंने लूटना चाह लेकिन जब उसने दयाकी प्रार्थना की तो उन्होंने उसे छोड़ दिया और ज दिया। वह उनका पिता था जो तीर्थयात्रासे वापस लौटा था!

सफल

"आपकी सफलताका रहस्य क्या है?"

"सही फ़ैसलेपर अमल करना।"

"लेकिन सही फ़ैसले आप करते किस तरह हैं?"

"तजुर्बोंसे।"

"और तजुर्बे आपको किस तरह हासिल होते हैं?"

"ग़लत फ़ैसलोंपर अमल करनेसे।"

—'तरंगावली' से

उस तरफ़!

एक आदमी तार देने गया। अपने पास क़लम न होनेकी वजहसे उसने तार-घरकी क़लमसे तार लिखना शुरू किया। दो-तीन फ़ार्म बिगाड़ चुकनेके बाद उसने तारबाबूसे पूछा, "क्या यह वही क़लम है जिससे क्लाइव ने मुग़ल बादशाहके साथ सुलहनामा लिखा था?"

"पूछ-ताछकी खिड़की उस तरफ़ है, जनाब!" जवाब मिला।

आभार-प्रदर्शन !

रातके तीन बजे फोनकी घण्टी बज उठी। प्रोफ़ेसरको नींदसे उठना पड़ा। फोनके उस सिरेसे कोई स्त्री बोली, "आपका कुत्ता बड़ा बदतमीज़ है। उसके भूँकते रहनेसे हर-रात हमारी नींद हराम हो जाती है। ज़रा भी आँख नहीं लग पाती।" प्रोफ़ेसरने माफ़ी माँगते हुए उसका पता नोट कर लिया।

दूसरे दिन रातके दो बजे वह स्त्री फोनकी घण्टी सुनकर उठ बैठी। फोनके उस सिरेपर प्रोफ़ेसर था। बोला, "महाशया! आपकी कलकी कृपाके लिए अत्यन्त आभारी हूँ; लेकिन एक बात बताना तो मैं भूल ही गया था कि मेरे पास कोई भी कुत्ता नहीं है।"

—'दिस इज़ इट' से

शेखीखोर

एक खरगोश एक हिरनसे मिला। उसने डींग हाँकी, "अभी-अभी मेरी दो विशाल हाथियोंसे मुलाक़ात हुई थी।"

"पर इस जंगलमें हाथी तो हैं ही नहीं," हिरन बोला।

"सच!" खरगोशने ताज्जुबसे कहा, "यह तो मुझे मालूम ही नहीं था कि यहाँ हाथी नहीं हैं।"

—वी. इवानोव

चिरसंगी

मुलाक़ातके रोज एक क़ैदीसे कोई मिलने नहीं आता था। जेलके वार्डनने हमदर्दीसे पूछा, "क्यों बिल्लू, तुमसे कोई मिलने नहीं आता। क्या तुम्हारे कोई दोस्त नहीं है?"

बिल्लू : "हैं क्यों नहीं, मगर वे सब यहीं हैं।"

याददाश्त

"तो आपका खयाल है कि इस इलाजसे आपकी याददाश्त सुधर रही है ? अब आपको बातें याद रहती हैं ?"

"बिलकुल ऐसी बात तो नहीं है, लेकिन इतना सुधार ज़रूर हुआ है कि मुझे अकसर याद आ जाता है कि मैं कुछ भूल गया हूँ, बशर्ते कि वह भूली हुई चीज़ याद आ जाये ।"

सफ़ाई

शिक्षक : "तुम तो कहते थे कि मुझे डॉक्टरको देखने जाना है, मैंने तो तुम्हें क्रिकिटका मैच देखते पाया ।"

विद्यार्थी : "जी हाँ, डॉक्टर पहला खिलाड़ी था ।"

ज़बाँदराज़ी

"पुरुष गंजे क्यों हो जाते हैं ?"

"दिमागी कामकी वजहसे ।"

"तो फिर स्त्रियाँ ?"

"इसी वजहसे उनके दाढ़ी नहीं आती ।"

तुम्हारा सिर घूम रहा है

एक आदमी सायकिलपर सवार होकर कहीं जा रहा था । रास्तेमें एक भँगेड़ीने कहा, "बाबू साहब, सुनिए !"

वह ज़रा तेज़ीसे जा रहे थे; ब्रेक लगाकर बोले, "क्या बात है ?"

उसने कहा, "आपका पिछला पहिया घूम रहा है ।"

बाबू साहब बोले, "सायकिलका पहिया नहीं, तुम्हारा सिर घूम रहा है ।"

जेवरा

एक महानुभाव अपने एक दर्जन लड़के-लड़कियोंको लेकर चिड़ियाघर देखने गये। गाइडसे बोले,

"भई, हम लोग नीलगायको अन्दर जाकर देख सकते हैं क्या ?"

गाइड . "इस सारी मण्डलीको अहातेके अन्दर ले जाना चाहते हैं ?"

"हाँ।"

"ये सब आपकी ही औलाद है क्या ?"

"हाँ हाँ।"

"तब ठहरिए यहीं, आपको अन्दर नहीं जाना पड़ेगा, नीलगाय खुद आपको देखने यहीं आयेगी।"

परम वीर

"मोटे आदमियोंका स्वभाव क्यों अच्छा होता है ?"

"क्योंकि वे न तो दौड़ सकते हैं न लड़ सकते हैं।"

अपेक्षावाद

जब एक वक्ता आइन्स्टाइनकी 'थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी' पर ऊल-जलूल लेक्चर झाड़ चुका, तो एक श्रोता बोला, "आपका भाषण सुनकर ऐसा लगा कि आप इस विषयमें स्वयं आइन्स्टाइनसे भी बढ़कर हैं। आइन्स्टाइनको दुनियामें बारह आदमी समझते हैं, लेकिन आपको कोई नहीं समझ सका।"

ब्रिटिश साम्राज्य

अंग्रेज (सगर्व) : "ब्रिटिश साम्राज्यमें सूरज कभी नहीं डूबता !"

भारती : "जी हाँ। वह इसलिए कि ईश्वरको डर है कि अंधेरेमें आप लोगोंपर विश्वासकर कहीं धोखा न खा जाये !"

नवागन्तुक बाज़ी मार ले गया

एक घुड़दौड़की घोड़ीका मालिक बड़ा शेखीखोर था। "जी हाँ, एक वार बारह घोड़ोंकी दौड़मे मेरी घोड़ी भी दौड़ी। आस-पासके बहुतेरे घोड़े थे वह। जैसो कि मुझे उम्मेद थी, मेरी घोड़ी आगे रही। पर अन्तमें मैंने उसे धीमे पड़ते देखा। वहीं बच्चा दिया उसने।"

"अरे अरे ! किस तरह हारी बिचारी !"

"हारनेकी बात कौन कह रहा है ? हारनेवाली तो वह थी ही नहीं। बच्चा दिया फिर भी अव्वल रही ! और बच्चा दूसरे नम्बरपर आया !!"

तोबड़ा

भोजनोपरान्त एक वक्ता महोदय आधा घण्टा बोल चुकनेके बाद बोले,

"ऐसे दिव्य भोजनके पश्चात् मुझे प्रतीत हो रहा है कि यदि मैं किंचित् भी अधिक खा लिया होता तो मेरे लिए बोलना असम्भव हो जाता।"

"इनको एक लड्डू और दो," पीछेसे एक आवाज आयी।

शिकार

पति (शिकारकी शेखी बघारते हुए) : "आज तो यह तय हो चुका था कि या तो शेर मरेगा या मैं !"

पत्नी : "मुझे खुशी है कि शेर ही मरा, वर्ना हमें ऐसी बढ़िया खाल कहाँ मिलती !"

गुप्त

"वे दोनों अपनी सगाईकी बातको गुप्त रखे हुए हैं न ?"

"जी। सबसे वे कहते तो यही फिर रहे हैं।"

पहचान

"तुम मगनको पहचानते हो ?"

"हाँ। मैंने कल ही उसे पचास रुपये उधार दिये हैं।"

"तब तुम उसे नहीं पहचानते।"

सुबहकी डाक

पागलखानेमें एक पागल पत्र लिखने बैठा। राउण्डपर निकले हुए सुपरिण्टेण्डेण्टने पूछा, "क्या चल रहा है ?"

"घर खत लिख रहा हूँ।"

"क्या लिखा ?"

"अभीसे कैसे खबर पड़े ? सुबहकी डाकमें डिलीवरी हो तब मालूम हो सकता है।" पागलने होशियारी दिखलायी।

पहले क्यों नहीं कहा ?

मालिकिन : "आग क्यों नहीं जलायी ?"

नौकरानी : "लकड़ी खतम हो गयी है।"

मालिकिन : पहले क्यों नहीं कहा।"

नौकरानी : 'पहले थी।"

नग्न सत्य

एक महानुभावको एक सुपरिचिता एक रोज अप्रत्याशित ठाठ-बाटके साथ उनके सामने आयीं, बोलीं,

"बन्दीकी शानके मुताल्लिक क्या खयाल है आपका ?"

"कमाल है! तुम्हारे खाविन्दको बहतर काम मिल गया मालूम होता है।"

"नहीं! मैंने बहतर खाविन्द कर लिया है।"
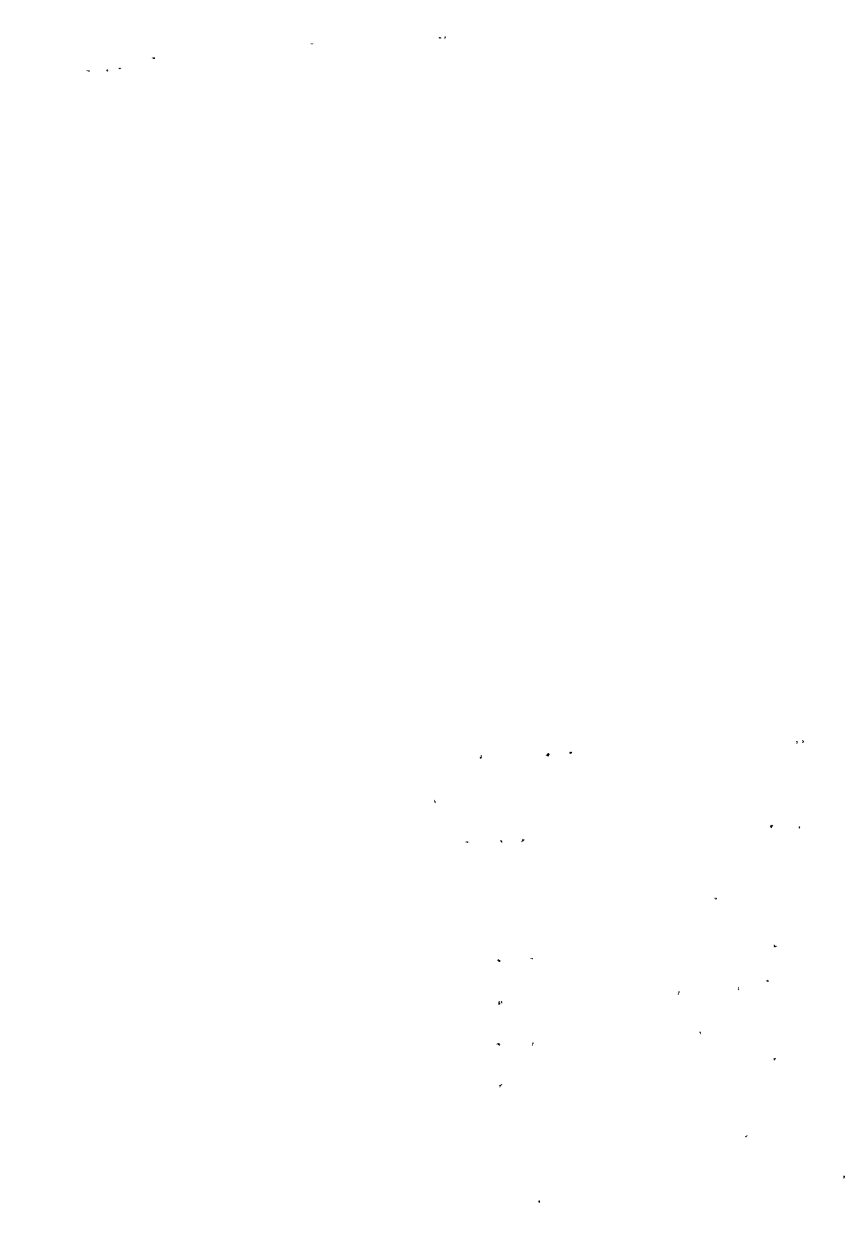
समानता

प्रसिद्ध मूर्तिकार गिलबर्ट स्टुअर्टको बोस्टनकी सड़कपर एक बार एक स्त्री मिली। वह उसे नमस्कार करती हुई बोली,

"ओह मिस्टर स्टुअर्ट! मैंने अभी आपकी मूर्तिको देखकर चूमा, क्योंकि वह इस क़दर आपके समान थी।"

"और उसने भी आपको चूमा था नहीं?"

"क्यों? नहीं तो।"

"तो वह मेरे समान नहीं थी।"

ख़ज़ाना

एक लड़कीके पास बड़े-बड़े लोगोंसे मिले हुए ख़तोंका शानदार संग्रह था, जिसे वह अपने मित्रोंको दिखला कर आनन्द लिया करती थी। अगर्चे वह प्रसिद्ध नाटककार मौस हार्टसे कभी नहीं मिली थी, मगर वह उसे लिखती रही कि कुछ अवश्य लिख भेजें ताकि उसकी अलबम पूरी हो जावे। आख़िर, परेशान आकर उसने यह सन्देश भेज दिया,

"मौस हार्टकी ओरसे माइल्ड्रडको—उन मधुर दिनोंकी यादमें जब कि हम मियामीमें एक दूसरेकी भुजाओंमें बँधे रहते थे।"

नक़ली चोर

एक सिनेमाकी नटीने अपने क़ीमती हारको चोरोंसे बचानेके लिए एक तरकीब की। वह जब ड्रेसिंग टेबलके खानेमें अपना हार रखती तब उसके साथ एक चिट रख देती कि, "यह हार नक़ली है; असली हार तो बैंकमें है।"

एक बार उसने देखा कि हार गायब है। खानेमें एक चिट थी, "मुझे नक़ली हार ही चाहिए। मैं भी नक़ली ही चोर हूँ। असली चोर तो जेलमें है।"

बढ़कर

"आदमीसे जानवर अच्छे। घुड़दौड़में तीस घोड़े दौड़ते हैं और पचास हज़ार आदमी देखने जाते हैं, लेकिन तीस आदमियोंकी दौड़को एक भी घोड़ा देखने नहीं जायेगा !"

शर्त

"मैं अब कभी शर्त नहीं बदा करूँगा।"
"अरे, तुम ज़रूर बदा करोगे।"
"कभी नहीं बदा करूँगा। आओ शर्त बद लो।"

बढ़कर कौन ?

रमेश : "विश्वासपात्र मित्रसे बढ़कर कुछ नहीं है।"
सुरेश : "एक चीज़ है।"
रमेश : "क्या ?"
सुरेश : "ऐसा मित्र जो हमपर पूर्ण विश्वास रख सके।"

गंज

"आपके बाल कैसे उड़ गये ?"
"चिन्ताके कारण।"
"किस बातकी चिन्ता थी ?"
"बाल उड़ जानेकी।"

वक़्त चाहिए

"बच्चोंके फ़ोटो उतारनेका आप क्या लेते हैं ?"
"पाँच रुपये दर्जन।"
"आपको मुझे कुछ और मोहलत देनी होगी, अभी मेरे दस ही हैं।"

ईडियट

"मैं यह 'ईडियट' लफ़्ज़ बराबर सुन रहा हूँ। तुम मुझको तो 'ईडियट' नहीं कह रहे?"

"इतने आत्म-प्रतिष्ठावान् न बनो। दुनियामें और ईडियट है ही नहीं क्या!"

बख्शिश

एक टेलिफ़ोन ऑपरेटर किसी आम जगहसे एक बुढ़ियाके लिए ट्रंक-कॉल ठीक कर रही थी। बोली, बक्समें साढ़ेचार रुपये डाल दो, लेकिन जबतक जवाब न आये बटन 'ए' को मत दबाना।"

"शुक्रिया बेटी," बुढ़िया कृतज्ञताके स्वरमें बोली, "तूने बड़ी मदद की है। मैं बक्समें एक दुअन्नी और डाल रही हूँ—तू कुछ लेकर खा लीजो।"

कायापलट

"यार, बड़े दिनों बाद मिले! तुम तो बिलकुल बदल गये हो! पहले कैसे मोटे-ताज़े थे, अब कितने दुबले-पतले हो गये हो; सारे घुंघराले बाल झड़ गये; गुलाब-सा चहरा ज़र्द पड़ गया। तुम्हें देखकर मुझे तो बड़ी हैरत हो रही है दोस्त मटरूमल!"

"मेरा नाम मटरूमल थोड़े ही है।"

"अरे! तो क्या नाम भी बदल डाला?"

टेलिफ़ोन नम्बर

"आपका टेलिफोन नम्बर?"

"टेलिफ़ोन-डायरेक्टरीमें दिया है।"

"आपका नाम?"

"वह भी डायरेक्टरीमें है।"

दीर्घजीवनी

एक आदमी सौ वरसकी उम्र पूरी करनेपर प्रसिद्धि पा गया। अख़-बारोंके संवाददाता उसके दीर्घ जीवनका रहस्य जानने आने लगे और सवालोंकी झड़ी लगाने लगे। बहुत देर विचार करनेके बाद बूढ़ा बोला, "मैं आज सौ वर्षका हूँ, इसका प्रधान कारण यह है कि मैं १८५६में जन्मा था।"

ज़्यादा किराया

दो मुसाफ़िर नावमें सफ़र कर रहे थे। एकाएक नदीमें तूफ़ान आया। एकने कहा, "यार कहीं डूब न जाये!"

दूसरा बोला : "डूब भी जाने दे, सालेने किराया बहुत बढ़ा रखा है!"

हास्यास्पद

एक अंग्रेज़को कोड़े लगानेकी सज़ा हुई। जब कोड़े लगाये जा रहे थे तो वह हर कोड़ेपर अधिकाधिक हँसता जाता था।

"हँसते क्यों हो?" सार्जेण्टने पूछा।

"तुम ग़लत आदमीको कोड़े लगा रहे हो।"

लायसेन्स

एक देवीजी अपनी कारको राहपर लानेकी कोशिश कर रही थीं। पहले तो उनकी गाड़ी सामनेवाली एक गाड़ीसे टकरायी, फिर एक पीछे-वालीसे, अन्तमें, सड़कपर आकर, भिड़न्त हुई एक डिलीवरी ट्रकसे। एक पुलिसवाला जो यह सब देख रहा था पास आकर बोला, "आप लायसेन्स दिखलाइए।"

"क्यूँ मूर्खता दिखलाते हैं!" वह बोली, "मुझे लायसेन्स कौन देगा?"

फलित ज्योतिष

पहला : "अबे, खम्भेसे क्यों टकराया जा रहा है ?"

दूसरा : "जन्म-कुण्डली कहती है कि आज मेरा गलत क़दम नहीं पड़ सकता।"

लालटेन

"सड़कपर यह लाल बत्ती क्यों है ?"

"ताकि आने-जानेवालोंको पत्थरोंका ढेर दिख सके।"

"और सड़कपर यह पत्थरोंका ढेर क्यों है ?"

"लाल बत्तीको रखनेके लिए !"

अपना-पराया

एक लड़का भागकर गश्त लगानेवाले सिपाहीके पास जाकर बोला, "ज़रा उस मकान तक चलो। मेरे पितासे एक बदमाश दो घण्टेसे लड़ रहा है !"

सिपाही : "तुमने और जल्दी खबर क्यों नहीं दी ?"

लड़का : "उस वक़्त पिताजी उसे पीट रहे थे।"

तड़क-भड़क

एक देशके बाशिन्दे भड़कीली पोशाकों और कीमती गहनोंके बड़े शौक़ीन थे। साधुशील राजाको यह महा खराब लगता था कि धनिक लोग अपने धनका यूँ प्रदर्शन करें। उसने क़ानून बना दिया कि 'क़ीमती वस्त्राभूषण पहनना वर्ज्य है।' मगर कोई न माना। राजाको एक तरकीब सूझी। उसने कानूनमें

संयोग

"मैं और मेरे पतिका जन्म एक ही दिन हुआ था। कैसा संयोग!"

"इसमें क्या है? मेरी और मेरे पतिकी शादी एक ही रोज हुई थी।"

कुछ मुज़ाइका नहीं!

"रजिस्टरकी भूलसे एक क़ैदी एक हफ़्ते ज़्यादा रोक लिया गया। जेलरने अपनी ग़लती मानते हुए क़ैदीसे माफ़ी चाही। क़ैदीने कहा, "कुछ मुज़ाइक़ा नहीं; अगली बार एक हफ़्ते पहले छोड़ दीजिएगा।"

जेलमें

"क्यों साहब, आपके साहबज़ादे आजकल कहाँ हैं?"

"जेलमें।"

"जेलमें !!"

"जी हाँ, वहाँ २० रुपये महीनेका क्लर्क है।"

रात्रिगमन

स्त्री (पड़ोसीसे): "मैं अपने पतिको बहुत-कुछ समझाती हूँ, पर वे रातको घरपर रहते ही नहीं। मैं सब-कुछ करके हार गयी पर उनका रातका जाना बन्द नहीं हुआ।"

पड़ोसी: "एक उपाय और कर देखो। तुम ख़ुद रातको बाहर जाना शुरू कर दो।"

ठाकुरसाहबका फ़ोटो

एक ठाकुर साहब फ़ोटो खिचवा रहे थे। एकाएक बोल उठे, "भाई फ़ोटोवाले, ज़रा ठहरना; मैं इत्र लगाना तो भूल ही गया! अभी लगाकर आया!"

हैट

एक लेडी, हैट पहने, सिनेमा देख रही थी। अपने पीछे बैठे हुए सज्जनकी ओर मुड़कर बोली,

"अगर मेरे हैटकी वजहसे आप पिक्चर न देख सकते हों तो मैं इसे उतार लूँ।"

सज्जन : "कृपया मत उतारिए। पिक्चरसे आपका हैट ज्यादा मज़ेदार है।"

भिक्षा

सज्जन : "तुम्हें भीख माँगते हुए शर्म आनी चाहिए!"

भिखारी : "मैं आपसे भिक्षा माँग रहा हूँ, शिक्षा नहीं।"

दशा

"क्या आपकी कार 'साउण्ड कण्डीशन' (अच्छी दशा) में है ?"

"निस्सन्देह—हॉर्नके अलावा हर चीज़ आवाज़ करती है।"

विचित्र जन्तु

"देखा है आपने इस आदमी-सरीखा कोई जीव ?"

"यहाँसे सर्कस चले जानेके बाद नहीं।"

नाआदना

बैंकर : "तो आप अभिनेता हैं! बड़ी खुशीकी बात है। लेकिन मुझे लज्जापूर्वक क़बूल करना चाहिए कि मैं पिछले दस वर्षसे किसी थ्येटरमें नहीं गया।"

एक्टर : "कृपया लज्जित न होइए। मैं तो इससे भी बड़ी मुद्दतसे किसी बैंकमें नहीं गया।"

मालिकी !

"आप पैदल चलनेवालोंमें कुछ तो ऐसे चलते हैं मानो सड़क उन्हीं की हो ?"

"हाँ, और आप मोटर चलानेवालोंमें कुछ ऐसे चलाते हैं मानो मोटर उन्हींकी हो ।"

चीनकी पैदावार

"चीनमें और देशोंकी बनिस्बत किस चीजकी पैदावार ज़्यादा है?" शिक्षकने पूछा,

'चीनियोंकी', आश्चर्यजनक जवाब मिला ।

रेडियो

दर्शनशास्त्रके एक विद्यार्थीको एक सुन्दर सहयोगिनी मिल गयी। वह प्रेम, जीवन, मृत्यु, इतिहास, संस्कृति, पुरातत्त्व, आदि-आदि विषयोंपर रायज़नी करके उसे प्रभावित करना चाह रहा था ।

"मसलन्", वह कह रहा था, "आधुनिक समाजका एक अभिशाप है विशेषज्ञता । मुझे ही लो : मुझे कलाओंकी खासी जानकारी है, लेकिन रेडियो कैसे बजता है इसका मुझे ज़रा भी ज्ञान नहीं ।"

"हाय राम !" सुन्दरी बोली, "यह तो बेहद आसान है । घुण्डी घुमा दो, वह बजने लगता है ।"

स्वर्ग-परी

"यह है मेरी प्रेयसीकी तस्वीर ।"

"ओह हो ! कमालकी लड़की होगी ?"

"बड़ी बाकमाल ! सीधी स्वर्गसे मेरी भुजाओंमें गिरी ।"

"शक्लसे मालूम होता है मुँहके बल गिरी है ।"

फाँसी

"क्या फाँसीकी सजामें तुम्हारा विश्वास है ?"

"हाँ, अगर सख्त न हो।"

डाकिया

"भाई, मेरा भी कोई खत है क्या ?"

"आपका नाम ?"

"खतपर लिखा होगा।"

वजह

डिकिन्सन : "मिस्टर ब्राउन, मेरी समझमें नहीं आता कि आप अपनी लड़कीको उस शख्सके साथ क्यों फिरने देते हैं। उसने पाँच बरस तो जेलखानेमें गुजारे हैं !"

ब्राउन : "बड़ा झूठा है ! मुझे तीन बरस बताता था !"

क्यों मारा ?

"तूने मेरे कुत्तेको भालेसे क्यों मारा ?"

"तेरे कुत्तेने मुझे क्यों काटा ?"

"तो तूने भालेके दूसरे सिरेसे उसे क्यों न मारा ?"

"तेरा कुत्ता दुम आगे करके मेरी तरफ क्यों नहीं आया ?"

सीधी तरफ़ देखना !

पहाड़की कठिन चढ़ाई चढ़ते-चढ़ते पथप्रदर्शकने प्रवासीको चेतावनी दी, "यहाँ सावधान रहना। ज़रा चूके कि गहरी घाटीमें जा गिरोगे; लेकिन अगर गिरो भी तो गिरते-गिरते सीधी तरफ़ देखना, हिमालयका भव्य प्राकृतिक सौन्दर्य देखनेको मिलेगा।"

चोर

किसी नेतनुमाने दुर्भाग्यवश अपनी कारकी चोरीकी रिपोर्ट पुलिसमें लिखा दी। पुलिसने पता लगाया कि वह कार एक बार पहले भी चुरायी जा चुकी थी—नेतनुमा-द्वारा।

अजीव गाय

एक शहरी सुन्दरी देहातमें किसी किसानके खेतपर पहुँची।

सुन्दरी : "वाह ! कैसी अजीव गाय है ! पर उसके सींग क्यों नहीं है ?"

किसान (धैर्यपूर्वक) : "खैर, बात यह है कि कुछ गायोंके सींग हटा दिये जाते हैं; और कुछ गायें तो बिना सींगके ही जन्मती हैं, फिर बादमे उनके सींग कभी आते ही नहीं; और कुछ गायोंके सींग गिर जाते हैं। लाखों कारण हैं कुछ गायोंके सींग न होनेके। लेकिन उस गायके सींग न होनेकी वजह यह है कि वह गाय ही नहीं है····वह तो खच्चर है।"

ज्योतिषी

एक आदमी : "महाराज, तुम कहते हो कि तुम्हारा भविष्य सच्चा निकलता है ?"

ज्योतिषी : "हाँ भाई, निकलता तो है।"

आदमी : "तो बताइए अगर यह लट्ठ मैं आपके सिरपर जड़ूँ तो आपकी खोपड़ी कहाँसे तड़केगी ?"

आत्मघात

टैक्सी ड्राइवर : "कहाँ जाइएगा, साहब ?"

साहब : "किसी ऊँची पहाड़ी चोटीसे घाटीमें तेज़ीसे चले चलो; मुझे आत्म-हत्या करनी है।"

रिकार्ड क़ायम

एक छतरीधारी उड़ाका (पैराशूटिस्ट) उतरते-उतरते एक शाह-बलूतके पेडमें उलझ गया।

"मैं रिकार्ड क़ायम कर रहा था," उसने नीचे खड़े हुए एक किसानसे चिल्लाकर कहा।

किसान बोला, "रिकार्ड तो तुमने कायम कर दिया, क्योंकि इस इलाक़ेमें पेड़पर चढ़े बग़ैर उतरनेवाले तुम पहले आदमी हो।"

अविश्वास

सेक्रेटरी बराबर कह रही थी कि उसके मालिक ऑफिसमें नहीं हैं, मगर भेंटके लिए आनेवाले महोदयको विश्वास ही नहीं हो रहा था। अन्तमें उसने पूछा, "तो, मैं क्या सचमुच विश्वास कर लूँ कि तुम्हारे मालिक यहाँ नहीं हैं?"

सेक्रेटरीने तनकर कहा, "आपको उनके शब्दोंपर भी विश्वास नहीं है!"

जवाब

"तुमसे मिले करीब तीन बरस हो गये। मैं तो तुम्हें पहचान ही नहीं पाया—इतने बूढ़े लगने लगे हो।"

"सचमुच ! मैं भी तुम्हें कपड़ोंसे ही जान सका।"

बोलती बन्द

दन्दानसाज़की लड़की अपने प्रेमीसे बोली,

"पूछा तुमने पिताजीसे शादीके बारेमें ?"

"ना, जब-जब उनके दफ़्तरमें जाता हूँ, मेरे तो होश उड़ जाते हैं। आज मैंने अपना एक और दाँत उन्हें उखाड़ लेने दिया !"

इन्सान

"खुदाने इन्सानको हवा, पानी, आसमान और धरती वग़ैरह बनाने के बाद सबसे आखिरमें क्यों बनाया ?"

"क्योंकि उसे डर था कि कहीं इन्सानको पहले बना दिया तो वह ये सब चीज़ें खुद बना लेगा और फिर ख़ुदाको अपनी करामात दिखलाने का मौक़ा किसी भी हालतमें नहीं मिल सकेगा।"

रिश्तेदार

रेलके किसी सफ़रमें एक भारतीय सज्जनके पास एक स्कॉच महोदय भी बैठे हुए थे जिनकी गोदमें एक कुत्ता था।

भारती : "बड़ा सुन्दर कुत्ता है। बड़ा ही समझदार मालूम होता है। इसकी नस्ल क्या है ?"

स्कॉच (चिढ़कर) : "यह आधा भारती और आधा बन्दरकी नस्ल का है।"

भारती : "तब तो यह मेरा सम्बन्धी होनेके साथ-साथ आपका भी रिश्तेदार निकला।"

बाली उमर

प्रौढ़ा : "आपको मेरी उम्र क्या लगती है ?"

मेहमान : "शरीरसे आप दस वर्ष छोटी लगती हैं, बुद्धिसे दस वर्ष बड़ी।"

मिलनसारी

"दुनियामें सबसे ज़्यादा ग़ैर-मिलनसार कौन है ?"

"मीलके पत्थर, क्योंकि उनमें-से किन्हीं दो-को तुम पास-पास नहीं देखोगे।"

टेलिफ़ोन

दूकानदार : "जनाब, हमारा टेलिफ़ोन महीने-भरसे काम नहीं दे रहा। कई बार आपके पास शिकायतें लिखकर भेजीं, मगर आपने कुछ खयाल नही किया।"

अफ़सर : "वाह ! खयाल क्यों नहीं किया। मैंने कई दफ़े आपसे टेलिफ़ोनपर पूछा कि क्या बिगड़ा है। मगर आपने ही कोई जवाब नहीं दिया तो मैं क्या करता ?"

महापुरुष

शी : "प्रतिभाशाली महापुरुष अच्छे पति होते हैं या नहीं ?"

ही : "यह सवाल तो आप मेरी पत्नीसे पूछिए।"

सवाल-जवाब

अर्थशास्त्री : "पाँच-छह सालसे इम्तहानमें वही सवाल आ रहे हैं।"

विद्यार्थी : "तो फिर प्रोफ़ेसर क्यों रखे जाते हैं, एक किताब छपा दी जाये ?"

अर्थशास्त्री : "इसलिए कि उनके जवाब बदलते रहते हैं।"

अवसरवादी

एक स्कॉट अपने एक दोस्तसे लन्दन मिलने गया, मगर वहीं रम गया। बहुत दिन हो गये मगर मेहमान जानेका नाम ही न ले। आख़िर मेज़बानने एक मृदुल संकेत छोड़ा,

"क्या आप नहीं सोचते कि आपकी बीबी और बच्चे आपसे फिर मिलना चाहते होंगे ?"

"बहुत-बहुत शुक्रिया ! आपकी बड़ी मेहरबानी ! मैं उन्हें बुलाये लेता हूँ।"

अफ़सोस !

श्याम : "इतने उदास क्यों नजर आ रहे हो, पंकज ?"

पंकज : "मैंने पिताजीको किताबोंके लिए रुपये भेज देनेके लिए लिखा था। रुपयोंकी बजाय उन्होंने मुझे किताबें भेज दीं।"

प्रयोग

"भला, यह कछुआ तुम क्यों पाले हुए हो ?"

"सुना है कि कछुआ डेढ़-सौ बरस जीता है। इसीको आजमानेके लिए।"

छायामें

"पिछली गरमियोंमें जहाँ आपने छुट्टियाँ बितायीं वह जगह ज्यादा गरम तो नहीं थी ?"

"सख्त गरम ! और कोई दरख्त नहीं ! हम नम्बरवार एक दूसरेकी छायामें बैठकर दुपहरी गुजारते थे।"

त्रिगुणात्मक लड़की

"मैं ऐसी लड़की चाहता हूँ जो सुन्दर, होशियार और भली हो।"

"तो यह कहो कि तुम्हें एक लड़कीकी नहीं, तीन लड़कियोंकी जरूरत है।"

दूसरा कौन ?

हमेशा अपनी ही बातें करते रहनेवाले एक गप्पीने कहा, "मैं तो दो ही शख्सोंकी तारीफ़ करता हूँ....."

"दूसरा कौन ?" सुननेवालेने कहा।

सर्वश्रेष्ठ सु

एक बार नैपोलियनकी रानी जोसेफ़ि
मिला।

रानी : "आप सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी किसे
कभी मिले ?"

"सम्राज्ञी, कलतक तो ऐसी किसी सु
रानी मुसकरा दी। अफ़सरको तरक्क़ी

बीमा

एक बीमा कम्पनीका विज्ञापन,

"कल अकस्मात् मर जानेवालेको हम
रोकड़ा अदा किया है। कल शायद आपको
सौभाग्य प्राप्त हो सकता है। इसलिए हम

...रिय

"गाँवमें रहना कितना सुखकारी है !
घी-दूध,···मैं जबतक वहाँ रहा कभी
"डाक्टर यही तो शिकायत करता था

लापता

"क्या तुम मुझे अपने दर्ज़ीका पता बता
"ज़रूर, बशर्ते कि तुम उसे मेरा पता

[illegible]

"अगर आज शेक्सपीयर आ जाये तो
"हाँ, अब तो वह ३५० बरसमें ज़्याद

अफ़सोस !

श्याम : "इतने उदास क्यों नजर आ रहे हो, पंकज ?"

पंकज : "मैंने पिताजीको किताबोंके लिए रुपये भेज देनेके लिए लिखा था। रुपयोंकी बजाय उन्होंने मुझे किताबें भेज दी।"

प्रयोग

"भला, यह कछुआ तुम क्यों पाले हुए हो ?"

"सुना है कि कछुआ डेढ़-सौ बरस जीता है। इसीको आजमानेके लिए।"

छायामें

"पिछली गरमियोंमें जहाँ आपने छुट्टियाँ बितायी वह जगह ज्यादा गरम तो नहीं थी ?"

"सख्त गरम ! और कोई दरख्त नहीं ! हम नम्बरवार एक दूसरेकी छायामें बैठकर दुपहरी गुजारते थे।"

त्रिगुणात्मक लड़की

"मैं ऐसी लड़की चाहता हूँ जो सुन्दर, होशियार और भली हो।"

"तो यह कहो कि तुम्हें एक लड़कीकी नहीं, तीन लड़कियोंकी जरूरत है।"

दूसरा कौन ?

हमेशा अपनी ही बातें करते रहनेवाले एक गप्पीने कहा, "मैं तो दो ही शख्सोंकी तारीफ करता हूँ....."

"दूसरा कौन ?" सुननेवालेने कहा।

हजामत

शी : "तुम दिनमें कितनी वार शेव करते हो ?"

ही : "क़रीब ४० या ५० वार।"

शी : "तुम पागल तो नहीं हो ?"

ही : "नहीं, मैं हज्जाम हूँ।"

उधार-प्रसार

"नमस्ते जी, सोचा कि लाओ आपके यहाँसे अपना छाता लेता चलूँ।"

"अफ़सोस है कि उसे तो मेरे एक दोस्त ले गये हैं। क्या आपको उसकी जरूरत थी ?"

"मुझे तो नहीं थी, मगर जिन सज्जनसे मैं उसे माँगकर लाया था वे कह रहे हैं कि छतरीवालेको उसकी ज़रूरत है।"

का हानि ?

कप्तान : "वस सव समाप्त है ! हम जहाज़को नहीं वचा सकते।"

मंगलू : "सुनता है इकलू ? कप्तान कह रहा है कि जहाज डूबने वाला है !"

इकलू : "डूबने दे, हमें क्या ? हमारा थोड़े ही है।"

याददहानी

"आपके रूमालमें गाँठ क्यों लगी हुई है ?"

"यह तो मेरी वीवीने खतको डाकमें डालनेकी याददहानीके लिए लगा दी थी।"

"फिर डाल दिया ख़त आपने ?"

"उसे वह मुझे देना ही भूल गयी।"

शिकारी

जंगली : "साहब, मैंने यहाँसे एक मील उत्तरकी ओर चीतेके पैरोंके निशान देखे !"

शिकारी . "अच्छा ! दक्खिन किस तरफ है ?"

कमसखुन

"वह अल्पभाषी है न ?"

"जी हाँ, आज सारे दिन वह मुझसे यही कहता रहा ।"

गोल्फ़

एक साहब बहादुर 'गोल्फ़' खेलना सीख रहे थे। खेलमें बिलकुल अनाड़ी होनेकी वजहसे वह कोशिशें करनेपर भी डण्डेसे गोली न मार पाये। हर बार उनका डण्डा जमीनपर पड़ता और जमीन खुद जाती। तब बेचारे अपने अनाड़ीपनको निबाहनेके लिए अपने सहायक छोकरेसे कहने लगे, "हमारा भाई, जो आजकल अमेरिकामें है, इस खेलको खूब खेलता है। मगर उसकी भी पहले पहल यही हालत थी।"

छोकरा : "अमेरिका है कहाँ ?"

साहब : "इस जमीनके नीचे।"

छोकरा : "फिर क्या है ! यों ही कोशिश किये जाइए, कभी आप उसे खोदकर निकाल लेंगे।"

नातमाम

गृहस्थ : "ये सब चीजें चुपचाप फ़ौरन् उस कोनेमें रख दो। समझे हो कि नहीं ?"

चोर : "सब नहीं साहब, जरा इन्साफ़ कीजिए। इनमेंसे आधा पड़ोसकी है।"

नम्बर शुमार

"कल डण्डी शहरमें बड़ा भयङ्कर अकस्मात् हो गया !"

"अरे, अरे !"

"दो टैक्सियाँ लड़ गयीं, बीस स्कॉच ज़ख्मी हो गये ।"

फ़र्लो

एक उत्तप्त फ़ौजी रंगरूटने अपने कम्पनी कमाण्डरसे कहा कि उसे फ़ौरन् फ़र्लोपर जाने दिया जाये—उसकी औरतके बच्चा होनेवाला है। इजाज़त मिल गयी, जब सिपाही जाने लगा, उसके अफ़सरने पूछा कि बच्चेका जन्म किस दिन होनेवाला है। "मेरे घर पहुँचनेके क़रीब नौ महीने बाद, सर।" रंगरूटने सहज भावसे जवाब दिया।

आपका फ़ोन

टेलिफ़ोनकी घण्टी बजती है।

"हलो।"

"हलो। क्या तुम सोहन हो ?"

"हाँ, सोहन ही हूँ।"

"तुम सोहन नहीं मालूम होते।"

"लेकिन मैं हूँ सोहन ही।"

"तुम्हें पूरा यक़ीन है कि तुम सोहन हो ?"

"वि. ल. कु. ल.।"

"अच्छा सोहन, सुनो, मैं मोहन बोल रहा हूँ। क्या तुम मुझे [illegible] रुपये उधार दे सकते हो ?"

"जब सोहन आयेगा, मैं इत्तिला दे दूँगा कि आपका [illegible] आया था।"

हैसियत

एक व्यापारी : "आपके पड़ोसीकी हैसियत क्या है ?"

लिंकन : "उसके एक बीवी और दो बच्चे हैं जिनकी कीमत पाँच लाख डालर होगी। उसके दफ्तरमें एक टेब्ल और तीन कुरसियाँ हैं जिनका मूल्य क्रमशः डेढ और एक डालर होगी। उसके ऑफिसमें एक चूहेदान है जिसकी कीमतका अन्दाजा लगाना मुश्किल है।"

आगा पीछा

"अगर कोई शेर तुम्हारे पीछे साठ मील फी घण्टाकी रफ्तारसे भागता हुआ आवे तो तुम क्या करोगे ?"

"सत्तर।"

धैर्य

"धैर्यसे आदमी सब कुछ कर सकता है।"

"क्या धैर्यसे चलनीमें पानी रखा जा सकता है ?"

"हाँ, अगर उसके जम जाने तक धैर्य रखा जावे !"

कोई मुजायक़ा नहीं

"क्या हाइड्रोजन बमसे दुनिया खत्म हो जावेगी ?"

"तो क्या हुआ ? पृथ्वी सिर्फ एक छोटा-सा ग्रह है।"

आसान बात है

महेश : "ओ सुरेन्द्र, सरकसमें एक आदमी कूदकर घोड़ेपर चढ़ता है, फिसलकर नीचे आता है, उसकी दुम पकड़ता है और आखिरमें गरदन !"

सुरेन्द्र : "यह तो आसान बात है। जब पहले-पहल मैं घोड़ेपर चढ़ा तो यह सब मैंने भी किया था।"

फलित आशा

"क्या तुम्हारे बचपनकी कोई आशा फलित हुई ?"

"हाँ, जब माँ मेरे बाल खींचती तो मैं चाहा करता था कि म
न रहें तो अच्छा।"

मसका

"सिम्पसन, तुम्हारी लड़की सचमुच हजारमें एक है। कितन
सूरत है ! और नाच तो ग़जबका करती है····हाँ, भई, जरा पाँच र
तो देना कल तकके लिए उधार।"

"सौरी ! वह तो मेरी पहली पत्नीके पहले पतिकी लड़की है
पाँच रुपयेकी बात, सो मेरे पास हैं नहीं।"

लाहौल !

एक पादरी साहबने एक दुलहिनको मुबारकबादीका तार भेजा,
अन्तमें था, "देखो आई. जॉन सी. ४, वी. १८." इंगित कविता थी,
में भय नहीं········।"

लेकिन तारमें किसी कारण 'आई'की जगह 'ऐस' हो गया। दुल
जब हवाला देखा तो दिल दहल गया, "तू पाँच पति कर चुकी है;
जिसे तू अब कर रही है वह तेरा पति नहीं है।"

दूनी बुद्धि

"तुममें इतनी भी बुद्धि नहीं है कि बारिशसे बचकर गाँवमें
जाओ !"

"तुमसे दूनी बुद्धि है।"

"कैसे ?"

"बारिश हो ही नहीं रही है !"

चिन्ता

"कोई मेरी चिन्ताएँ ले ले तो मैं उसे हजार रुपये दूँ ?"
"मैं लिये लेता हूँ। लाइए हजार रुपये।"
"यह तुम्हारी पहली चिन्ता है।"

हँसीकी वजह

एक अमेरिकन : "आप हँसते क्यों हैं ?"
लिंकन : "इसलिए कि मुझे रोना न चाहिए।"

पिताजी !

दो नवयुवतियाँ बाजार गयीं, पहलीने काफी सामान खरीदा जिसमें एक सुन्दर शिशु-आकार बोलता खिलौना भी था। वह उसने अपनी सहेलीको ले चलनेके लिए दे दिया, शेष स्वयं लेकर चली। रास्तेमें कल दब जानेसे खिलौना हाथ बढ़ाकर 'पिताजी ! पिताजी !' पुकारने लगा। रास्ते चलते पुरुष यह सुनकर आकृष्ट होने लगे। युवतीका बुरा हाल था ! झुँझलाकर अपनी सहेलीसे बोली,

"अगली बार अगर बोलता खिलौना खरीदो तो उसे खुद ही लेकर चलना !"

सूखे बच गये

"कल मैंने एक ऐसी बड़ी मछली देखी जो हमारी नावसे भी बड़ी थी !"

"और मैंने ऐसी बड़ी मछली देखी जिसकी दुमके फटकारनेसे हमारी नाव ही उलट गयी और मैं पानीमें जा पड़ा !"

"तब तो तुम भीग गये होगे।"

"नहीं, मैं मछलीकी पीठपर गिरा था !"

जोड़

"क्या तुम्हें जोड़ना अच्छी तरह आता है ?"

"मुझे और जोड़ना आये ! मैंने इस हिसावका जोड़ दस व
ये रहे दस मुख्तलिफ़ जवाव।"

श्रीगणेश

जेलमें एक अधेड़ महिला क़ैदियोंसे प्रश्न पूछ-पूछकर उन्हें तंग
थी। एक क़ैदीसे उसने सबसे अधिक प्रश्न पूछे। जब महिलाने पूछ
यहाँ क्यों आये ?" तो उस क़ैदीने कहा, "श्रीमतीजी, मेरी इच्छ
बननेकी थी, इसलिए मैंने सोचा कि इसके लिए सबसे नीचेके पदसे
किया जाये।"

दो ठग

ठग : "क्षमा कीजिए, महाशय, क्या आप एक पैसा उधार देकर
आभारी बनायेंगे ?"

सज्जन : "क्यों नहीं जरूर मगर पैसा चाहिए किसलिए ?"

ठग : "मेरा साथी और मैं पैसा उछालकर इस झगड़ेको तै करन
चाहते हैं कि हममें-से आपकी घड़ी कौन लेगा और मनीबेग कौन ?"

सिर्फ़ एक चीज़की कमी है !

एक दौलतमन्द ईरानीने अपने जीवन-कालमें ही एक खूबसूरत आली-
शान मक़बरा बनवाया। बन चुकनेपर वह उसका आख़िरी मुआइना करने
गया। राजसे पूछा, "सब पूरा हो गया, कुछ बाक़ी तो नहीं रहा न ?"

राज : "साहब, सब पूरा हो गया है; सिर्फ़ एक चीज़की कमी है।"

ईरानी : "किस चीज़की ?"

राज : "आपकी लाशकी।"

देरी की वजह

"आखिर, इतनी देर-में तुम कहाँ थे !"

"डाकखाने गया था।"

"एक खत डालनेमें तीन घण्टे लगते है ?"

"नही, साहब, तीन खत थे।"

अर्धनारीश्वर

"मैंने आपकी पत्नीसे कह दिया है कि वे पहाडोको चली जायें।"

"यह तो ठीक है, डॉक्टर साहब, अब मुझसे कहिए कि मैं समन्दरके किनारे चला जाऊँ।"

नयी जेल

अधिकारी बोला, "हम पुरानी जेलके मलबेसे नयी जेल बना सकते हैं और जबतक नयी जेल न बने कैदियोंको पुरानी जेलमे रख सकते हैं और जब पुरानी जेल तोडी जा रही हो उन्हें नयी जेलमें रख सकते हैं।"

प्रेमकी मात्रा

"क्या तुम दिसम्बरमें भी मुझसे उतना हो प्यार करोगे जितना आज फ़रवरीमे कर रहे हो ?"

"उससे भी अधिक, प्रिय ! दिसम्बरमें तो और भी ज्यादा दिन होते है।"

कीर्तिका शिखर

"कब कहा जा सकता है कि कोई आदमी कीर्तिके शिखरपर पहुँच गया ?"

"जब कि कोई पागल भी वह आदमी होनेका दावा करने लगे।"

अव्वल

डॉक्टरकी दुकानपर मरीजोंकी भीड़ लगी हुई थी। उन्होंने दुकान खोलते हुए कहा, "आप लोगोंमें सबसे ज्यादा देरसे कौन रुका हुआ है?"

"मैं!" एक दर्जीने बिल पेश करते हुए कहा, "जो कपड़े आप इस वक्त पहने हुए हैं उन्हें मैंने ढाई बरस पहले बनाकर दिया था। उसीका यह बिल है।"

उधार

भिखारी : "बाबूजी! कुछ····।"

सज्जन : "भाई, इस वक़्त मैं बड़ी जल्दीमें हूँ, लेकिन कल तुम्हें कु जरूर दूँगा।"

भिखारी : "यह नहीं चलेगा, साहब! आप कल्पना नहीं कर सकते कि मैं ऐसे उधारखातेमें कितना धन खोता हूँ।"

जैण्टिलमैन!

बैंजामिन फ्रेंकलिन जब इंग्लैण्डसे अमेरिका लौटा तब उससे पूछ गया, "आपने इंग्लैण्डमें क्या देखा?"

बैंजामिनने कहा, "इंग्लैण्डमें सारे लोग उद्यमी हैं। वहाँ हर आदमी कुछ-न-कुछ करता ही है···· सब श्रमजीवी हैं। वहाँ मुझे एक ही जैण्टिल-मैन दिखायी दिया।"

सबने एक साथ पूछा, "वह कौन?"

बैंजामिनने कहा, "सूअर! वहाँ सिर्फ़ सूअर ही कुछ काम न करता।"

मनोरंजक सूक्तियाँ

•

तन्दुरुस्ती वह चीज है जिससे आपको यह मालूम होता है कि सालका यही बहतरीन वक्त है।

—आद्म्स

हम आगामी सन्ततिके लिए कुछ-न-कुछ हमेशा करते रहते हैं, लेकिन मुझे यह देखकर खुशी होगी कि आगामी सन्तति भी हमारे लिए कुछ करे।

—जोसेफ़ एडीसन

पैसा कमानेमें मैं अपना वक्त खराब नहीं कर सकता।

—अगासिज़

कुछ सिनेमा-सुन्दरियाँ गिरजाघरमें भी धूपका चश्मा पहनकर बैठती हैं; उन्हें डर लगा रहता है कि कहीं खुदा उन्हें पहचानकर आटोग्राफ़ न माँग बैठे।"

—ऐलेन

मेरे दोस्तो! दोस्त हैं ही नहीं।

—अरस्तू

अनुभव हमारे ज्ञानको बढ़ा देता है लेकिन हमारी बेवकूफियोंको कम नहीं करता।

सदा बेवकूफोंको महफूज रखे, उन्हें खत्म न हो जाने दे; क्योंकि अगर वो न रहे तो समझदारोंकी रोजी मुश्किल हो जायेगी।

अपनी आमदनीके अन्दर खर्च करो, चाहे इसके लिए तुम्हें कर्ज ही लेना पड़े।

नाश्तेसे पहले कभी कुछ काम न करो, अगर नाश्तेसे पहले कुछ करना ही पड़े, तो पहले नाश्ता करो।

गरीबोंको याद रखो—इसमें कुछ खर्चा नहीं पड़ता।

कुछ लोगोंको अतिशयोक्तिकी ऐसी लत होती है कि वे झूठ बोले बगैर सच नहीं बोल सकते।

कई बीवियाँ रखनेमें एक फ़ायदा है; वे अपने खाविंदसे लड़नेके बजाय आपसमें ही लड़ती हैं।

जब कोई आदमी मुझसे सलाह लेने आता है, तो मैं मालूम कर लेता हूँ कि उसे कैसी सलाह चाहिए, और वैसी ही दे देता हूँ।

जब मैं किसी कम-अक़्लको ठाठदार पोशाकमें देखता हूँ तो मुझे हमेशा अफ़सोस आता है—कपड़ोंपर।

पुण्यात्मा स्वर्ग जानेके लिए इतनी मेहनत नहीं करते जितनी दुष्ट लोग नरक पहुँचनेके लिए करते हैं।

—बिलिंग्ज़

हम चीनमें मिशनरी भेजते हैं ताकि चीनी लोग स्वर्ग जा सकें, लेकिन हम उन्हें अपने देशमें नहीं आने देते।

—पर्ल बक

सच तो कोई भी बेवक़ूफ़ बोल सकता है, लेकिन अच्छी तरह झूठ बोलनेके लिए आदमीमें चतुराई चाहिए।

शैतानने ख़ीस्तको प्रलोभित किया, लेकिन वह ख़ीस्त ही थे जिन्होंने शैतानको प्रलोभित किया कि वह उन्हें प्रलोभित करे।

कोई झूठ बोले तो मुझे बुरा नहीं लगता, लेकिन यथातथ्य न बतलाये तो मुझे शख़्त नफ़रत छूटती है।

कोशकारके लिए भगवान् महज़ 'भग' के बाद आनेवाला लफ़्ज़ है।

—सेमुएल बटलर

मौतसे सब ट्रेजडियाँ खत्म हो जाती हैं; और तमाम कॉमेडियाँ खत्म हो जाती हैं शादीसे।

अँग्रेज़ी शरद् ऋतु—जुलाईमें खत्म होकर, अगस्तमें फिर शुरू हो जाती है।

पुराने ख़तोंके पढ़नेकी एक ख़ुशी यह है कि उनके जवाब देनेकी ज़रूरत नहीं।"

—बायरन

बेवक़ूफ़ लोग अक़्लमन्दोंसे इतना नहीं सीखते जितना अक़्लमन्द बेवक़ूफ़ोंसे।

—केटो

औरतें सब उपयोगी हैं—निरुपयोगी, या सदुपयोगी।"

हर आदमी वैसा ही है जैसा ईश्वरने उसे बनाया, और अकसर उससे भी कहीं बदतर।

मैं जब मौका मिलता है पीता हूँ, और कभी-कभी बेमौक़े भी पी लेता हूँ।

—सर्वेन्टीज़

खूबसूरत औरत आँखोंके लिए स्वर्ग है, आत्माके लिए नरक है, और जेबके लिए दिवाला है।

औरत फाँसी चढ़ने जा रही हो तो भी सिंगारके लिए कुछ वक़्त माँगेगी।

समाज दो वर्गोंमें बँटा हुआ है, वे जिनके पास भूखसे ज्यादा खाना है, और वे जिनके पास खानेसे ज्यादा भूख है।

अक्लमन्दोंसे बेवक़ूफ़ोंकी तादाद ज्यादा है, अक़्लमन्दमें भी अक़्लसे ज्यादा बेवक़ूफ़ी भरी होती है।

—चैम्फ़र्ट

चापलूस दोस्त लगते हैं, जैसे भेड़िये कुत्ते दिखते हैं।

जवान लोग बूढ़ोंको बेवक़ूफ़ समझते हैं; लेकिन बूढ़े लोग जानते हैं कि जवान लोग बेवक़ूफ़ हैं।

—चैपमैन

शादीकी कामयाबी हनीमूनकी नाकामयाबीके बाद आती है।

—चैस्टरटन

आदमीको अकेला नहीं रहने देते—उसके साथी, उसके देवता, उसकी पार्ये।

—कॉनरेड

हमारी आधी ज़िन्दगी हमारे वाल्देन बिगाड देते हैं और बाक़ी आधी मारे बच्चे।

—दैरो

बाबा आदमके ज़मानेसे बेवकूफ़ बहुमतमें रहते आये हैं।

—दिलविन

आदमीका अन्दाज़ा उसके कपड़ोंसे नहीं उसकी बीबीके कपडोंसे करो।

—ड्वेर

हर औरतको शादी करनी चाहिए—किसी मर्दको नहीं।

आदमीसे उसीके बारेमें बातें करिये वह घण्टों तक सुनता जायेगा।

—डिज़राइली

बहुत रेंकना पड़ेगा गधेको, पेश्तर इसके कि वह सितारोंको गिरा दे।

—जार्ज ईलियट

जिसे हम प्रगति कहते हैं वह एक बेहूदगीकी जगह दूसरी बेहूदगीकी स्थापना है।

सभ्य लोग प्रशान्त क्षेत्रमें आये, साथमें शराब, सिफ़लिस, पतलून और बाइबिल लाये।

—हैवलॉक एलिस

संस्कृति एक चीज़ है, वार्निश दूसरी।

मानव जातिका अन्त यह होगा कि आखिर एक रोज़ वह स
घुट मरेगी।

—

क्या यह अजीव वात नहीं है कि मैंने सिर्फ़ अ-लोकप्रिय कितावें
और इतना लोकप्रिय हो गया !

—अलवर्ट आइन

अगर बुरे लोग न होते, तो अच्छे वकील न मिलते।

ऐसी भी कितावें हैं जिनका सिर्फ़ कवर अच्छा होता है।

—चार्ल्स

उन्होंने निश्चय कर लिया है कि अनिश्चित रहेंगे, तय कर लिया
कुछ तय नहीं करेंगे, वे डटे हुए हैं मनमाना बहकनेके लिए, सर्वशक्ति
हैं नामर्द बने रहनेके लिए।

—विन्स्टन च

मैंने तीन शाहंशाहोंके नग्न रूपको देखा है; दृश्य प्रेरक नहीं था

—विन्

कागज़का रूमाल धोवीके यहाँसे नहीं लौटता, और न प्रेम अदाल
ज़ियारतसे।

—जॉन बैरी

आरामकी ज़िन्दगी मुश्किल मंज़िलत है।

—विलियम

अमेरिकाका धन्धा है धन्धा।

—कालविन कूलिज (प्रेसीडेण्ट ऑफ़ दी U.S.A.)

अगर हर आदमी साफ़गो हो तो बात-चीत नामुमकिन हो जाये।

जो लेखक अपनी ही किताबोंका जिक्र करता रहता है लगभग उतना ही बुरा है जितनी कि वह माँ जो अपने ही बच्चोंके बारेमें बोलती रहती है।

—डिज़राइली

खेतपर कुत्ता ही एक ऐसा प्राणी है जिसकी चैनसे गुजरती है।

सावधान रहो, तो तुम बहुत-से लोगोंको तुम्हें लूटनेके पापसे बचा लोगे।

अपने बच्चोंके गुण गिनानेमें किसी आदमीका टाइम न लो; वह आपको अपने बच्चोंकी गुणावली सुनाना चाहता है।

कुछ लोगोंके पास सिवाय आदर्शोंके कभी कुछ नहीं होता।

मैं नहीं चाहता कि मेरे दोस्त मेरे लिए जान दें; अगर वो तमीज़से पेश आयें और मुझे अकेला रहने दें, तो मुझे सन्तोष है।

अगर दुनियाके तमाम लोग किसी वक़्त किसी आदमीके प्रति सहानुभूति दर्शायें, तो भी वे उसके सिरका दर्द दूर नहीं कर सकेंगे।

अगर किसी लोफ़रको तुम बवाले जान नहीं समझते, तो यह इस बातकी अलामत है कि तुम खुद कुछ-कुछ लोफ़र हो।

—ऐडगर वाटसन

अगर बेवक़ूफ़ लोग दुनियाके शासक नहीं हैं तो इसकी यह वज
है कि वे बहुमतमें नहीं हैं ।

मुझे कोई ऐसा तुच्छ आदमी नहीं मिला जिससे अपनी तारीफ़ सु
मुझे खुशी न हुई हो ।

अपने 'दुश्मनोंको प्रेम' करनेके बजाय, अपने दोस्तोंसे ज़रा और अ
व्यवहार करो ।

मेरा खयाल है कि मैं उन लोगोंसे अच्छा हूं जो मुझे सुध
चाहते हैं ।

बहुत-से लोग उसे कल तक उठा रखते हैं जिसे उन्हें कल ही कर डा
चाहिए था ।

दुनियाकी एक अजीब बात यह है कि एक तुच्छ आदमी भी अ
को बड़ा इज़्ज़तदार समझता है ।

कुछ लोगोंको खुश करनेका एक ही तरीक़ा है कि आप फिसल
जा पड़ें ।

शायद एक रंडुआ अपनी दूसरी जोरूसे उतना ही मज़ा पाता
जितना कि एक विधवा अपने पतिके बीमे-से पाती है ।

—ऐडगर वाटस

क़र्ज़दारसे क़र्ज़ख्वाहकी याददाश्त अच्छी होती है ।

—हॉवेल

मृत्यु—पापधाराका एकाएक रुक जाना ।

—अलबर्ट हब्बार्ड

हर आदमी हर रोज कमसे-कम पाँच मिनिट मूर्ख रहता है; अक़्लमन्दी इसमें है कि इस सीमाको पार न करे।

हर अत्याचारी आज़ादीका विश्वासी होता है—अपनी आज़ादीका।

दोस्त—जो तुम्हारे विषयमें सब-कुछ जानता है फिर भी तुम्हें प्यार करता है।

प्रतिभाकी सीमाएँ हैं, मूर्खताकी कोई नहीं।

कब्रिस्तान ऐसे लोगोंसे भरे पड़े हैं जिनके बग़ैर दुनियाका काम ही न चलता।

—एलबर्ट हब्बार्ड

मैंने कोई ऐसी पहलवान लड़की नहीं देखी जो अपनेको घरका काम करनेमें समर्थ समझती हो।

यह कहना मुश्किल है कि आनन्द किससे मिलता है; ग़रीबी और दौलतमन्दी तो दोनों नाकामयाब हो गयीं।

कुछ लोगोंकी मेहमानवाज़ी सिर्फ़ इसलिए होती है कि आप उन्हें सुनते रहिए।

दुनिया हर रोज़ बेहतर हो जाती है—शामको फिर बदतर हो जाती है।

—फ्रैंक मैकिनी

अगर किसी आदमीको सभ्य बनाना चाहते हैं तो उसकी नानीसे शुरू कीजिए।

—विक्टर ह्यूगो

दस वरसकी उम्र तक हम सव प्रतिभाशाली रहते हैं ।

—आल्डूस हक्सले

जव आप सचाई और आज़ादीके लिए लड़ने वाहर जायें तो अपनी वढ़िया पतलून पहनकर कभी न जाइए ।

—इब्सन

भेड़ोंका शाकाहारके पक्षमें प्रस्ताव पास करना फ़िजूल है जवतक कि भेड़ियेकी राय कुछ और है ।

—विलियम राल्फ़ इंग

नये वकील अदालतोंमें हाज़िर रहते हैं, इसलिए नहीं कि वहाँ उन्हें काम है वल्कि इसलिए कि और कहीं उन्हें कोई काम नहीं ।

—वाशिंग्टन इर्विंग

वहुत-से लोग सोचते हैं कि वे सोच रहे हैं जव कि वे महज़ अपने पूर्वग्रहोंको नयी तरतीव दे रहे होते हैं ।

—विलियम जेम्स

जो आदमी क़तई कुछ नहीं पढ़ता उस आदमीसे वेहतर शिक्षित है जो सिवाय अखवारोंके कुछ नहीं पढ़ता ।

—थॉमस जफ़रसन

कुछ लोग वदक़िस्मतीके ऐसे प्रेमी होते हैं कि उससे मिलने आधे रास्ते पहुँचते हैं ।

आदमीको सुधारना कठिन और अनिश्चित श्रम है; उसे फाँसी दे देना एक मिनिटका सुनिश्चित काम है ।

—डगलस जिरॉल्ड

मैं सारी मानव जातिसे प्रेम करनेको तैयार हूँ, सिवाय अमरीकीके।

कुदरतने स्त्रियोंको कितनी शक्ति दे रखी है! बड़ी समझदारीका काम किया है क़ानूनने कि उन्हें बहुत कम बल दिया है।

सिवाय कूड़मग़ज़के पैसेके लिए कोई कभी नहीं लिखता।

तमाम शोरोंमें, मेरा ख़याल है संगीत सबसे कम नाखुशगवार है।

दूसरी शादी : अनुभवपर आशाकी विजय।

जब दो अंग्रेज मिलते हैं तो पहले मौसमकी बात करते हैं।

देखने लायक़ है? हाँ, मगर देखनेके लिए जाने लायक नहीं है।

आप आवाज़ बुलन्द कर देते हैं जब कि आपको अपनी दलील पुरज़ोर बनानी चाहिए।

आपकी पाण्डुलिपि अच्छी भी है और मौलिक भी; लेकिन जो अंश अच्छा है वह मौलिक नहीं है, और जो अंश मौलिक है वह अच्छा नहीं है।

—डाक्टर सेमुएल जॉन्सन

आदमी और उसकी औरत मिलकर एक बेवकूफ़ है।

—बैन जॉन्सन

वह औरत जो लिखती है दो पाप करती है, किताबोंकी संख्या बढ़ाती है, और स्त्रियोंकी संख्या कम करती है।

—अलफॉंज़

ब्राण्डी और पानीका मिश्रण दो चीज़ोंको बिगाड़ देता है।

—चार्ल्स लैम्ब

मेरी दिलचस्पी भविष्यमें है, क्योंकि मुझे अपनी शेष जिन्दगी वहीं तो गुजारनी है।

—कैटरिंग

बाग 'अहो! कैसा सुन्दर' गाकर, और सायेमें बैठकर नहीं लगाये जाते।

होशियार आदमीको तो मूर्ख स्त्री भी चला सकती है, लेकिन मूर्ख को चलानेके लिए बड़ी चतुर औरत चाहिए।

—क़िपलिंग

ईश्वर तुम्हारे पापोंको माफ़ कर भी दे, लेकिन तुम्हारा तन्तुजाल नहीं करेगा।

—अल्फ़्रेड कोरज़िबिस्की

यह जानवर बड़ा दुष्ट है; जब इसपर हमला किया जाता है तो यह अपने-आपको बचाता है।

—ला फ़ौण्टेन

ज्यों-ज्यों लोगोंके प्रतिनिधियोंको देखता हूँ, त्यों-त्यों अपने कुत्तोंका प्रशंसक बनता जाता हूँ।

—लैमर्टीन

नये सालका दिन सबका जन्म-दिन है।

—चार्ल्स लैम्ब

हर आदमी अपनी स्मरण-शक्तिकी शिकायत करता है, अपने विवेक की कोई नहीं।

—रोशे

अगर हम अपनी कषायोंका प्रतिरोध कर सकते हैं तो इसलिए नहीं कि हम शक्तिशाली हैं वल्कि इसलिए कि वे कमजोर हैं।

चतुराईको छिपानेके लिए बड़ी चतुराई चाहिए।

हमारे विषयमें स्वयं अपनी रायकी अपेक्षा हमारे दुश्मनोंकी राय ज्यादा सच्ची है।

तत्त्वज्ञान गत और अनागत मुसीबतोंको आसानीसे पछाड़ देता है, लेकिन मौजूदा मुसीबतें तत्त्वज्ञानको पछाड़ देती हैं।

ऐसा कोई शख्स नहीं जो मज़के उतर जानेपर अपनी कामुकतापर शर्मिन्दा न होता हो।

सच्चा प्रेम भूतकी तरह है। चर्चा उसकी सब करते हैं, देखा किसी-ने नहीं।

हम छोटे-छोटे दोषोंको तसलीम कर लेते हैं ताकि लोग समझें कि हम-में बड़े दोष नहीं हैं।

हम अपने वास्तविक गुणोंसे इतने हास्यास्पद नहीं बनते जितने उन गुणोंसे जिनके होनेका हम ढोंग करते हैं।

जो हमसे सहमत नहीं होते, ऐसे बहुत कम लोगोंको हम समझदार समझते हैं।

हम अकसर अपने अच्छेसे-अच्छे कामोंके लिए भी शर्मिन्दा हों अगर दुनिया उनके पीछे रहे हुए इरादोंको जान जाये।

—रोशे

जिसे हम उदारता कहते हैं वह अकसर दानशीलताका दिखावा होता है।

दूसरोंकी शान हमें इसलिए असहनीय होती है कि वह हमारी शानको किरकिरी करती है।

तुम उतने बेवक़ूफ़ कभी नहीं बनते जितने उस वक़्त जब कि तुम किसी और को बेवक़ूफ़ बना रहे होते हो।

—रोशे

प्रेम भूखसे नहीं, क़ब्ज़से मरता है।

—निनौन

मैं नहीं जानता मेरा दादा कौन था; मुझे फ़िक्र यह जाननेकी है कि उसका नाती कैसा होगा?

मैं अर्थायी गयी बातोंके अर्थाये जानेसे घबराता हूँ।

अगर यह कॉफ़ी है, तो मुझे कुछ चाय ला दीजिए; लेकिन अगर यह चाय है, तो मुझे कुछ कॉफ़ी ला दीजिए।

शादी न स्वर्ग है न नरक; वह तो सिर्फ़ भट्टी है।

जब मैं किसीको ग़ुलामीके पक्षमें बोलते सुनता हूँ, तो मेरी तीव्र इच्छा होती है कि उसीपर उसका प्रयोग होते देखूँ।

—अब्राहम लिंकन

वह ज्ञानवृक्षपर चढ़नेके लिए नहीं बनाया गया था।

—सिगर्टड

उबा देनेवाले आदमीके सिवा हर क़िस्मका आदमी अच्छा है।

विचार दाढ़ियोंकी तरह हैं, जबतक आदमी बड़ा नहीं होता आते नहीं।

अगर ईश्वर न भी हो तो उसका आविष्कार कर लेना ज़रूरी है।

तुच्छतम आदमी महत्तम अहंकारी होता है।

कायरके लिए एक ही साहसिक कार्य खुला हुआ है, शादी।

किताबोंका बाहुल्य हमें अज्ञानी बना रहा है।

उबानेका तरीक़ा है सब-कुछ कह जाना।

पैसेके मामलेमें सबका मजहब एक है।

—वॉल्टेर

कला और जीवनकी फ़ौरन् फिरसे शादी कर देनी चाहिए और उन्हें साथ-साथ रखा जाना चाहिए।

—होरेस वाल्पोल

हम सब सुखमें रहें और अपनी साधन-सामग्रीकी मर्यादामें रहें, चाहे इसके लिए हमें क़र्ज़ ही लेना पड़े।

—वार्ड

हमें जीना चाहिए और सीखना चाहिए; लेकिन जब हमारा सीखना खत्म होता है तब जीनेके लिए वक़्त नहीं रह जाता।

—केरोलिन

मैं बुरेसे-बुरा हूँ, लेकिन शुक्र है खुदाका, मैं अच्छेसे अच्छा हूँ।

—वाल्ट व्हिटमैन

अगर आदमीके रास्तेमें वाधा न आये तो वह कमबख्त ज़िन्दगीमें करेगा भी क्या ?

—ऐच. जी. वेल्स

वहस करना महा जंगलीपनकी निशानी है, क्योंकि अच्छी सोसाइटीमें सबकी एक रायें होती हैं ।

वर्नार्ड शॉ वड़ा अच्छा आदमी है; दुनियामें उसका कोई दुश्मन नहीं, और उसके दोस्तोंमें कोई उसे चाहता नहीं ।

साहित्य और जर्नलिज़्ममें फ़र्क़ यह है कि जर्नलिज़्म पढ़ने लायक़ नहीं और साहित्य पढ़ा नहीं जाता ।

जो पढ़नेके अयोग्य हो गया उसने पढ़ानेका धन्धा शुरू कर दिया ।

ज़िन्दगीमें पहली ड्यूटी यह है कि जितना हो सके उतने वनावटी वनो; दूसरी ड्यूटी क्या है, उसका अभी तक किसीने पता नहीं पाया ।

वह असूलन् देर करके आता है, उसका असूल है कि वक़्तकी पावन्दी वक़्तकी चोर है ।

मैं सिवाय प्रलोभनके हर चीज़का प्रतिरोध कर सकता हूँ ।

मैं उस चीज़को पसन्द नहीं करता जो मेरे क़ुदरती अज्ञानमें खलल डाले ।

मैं ऐसे किसी कामको कभी कल तक नहीं टालता जिसे मैं परसों कर सकता हूँ ।

—आस्कर वाइल्ड

परीक्षाओंमें बेवकूफ लोग ऐसे सवाल पूछते हैं, अक्लमन्द जिनके जवाब नहीं दे सकते।

दुनियामें दो ही ट्रेजेडी हैं, एक है इच्छित वस्तुका न पाना, दूसरी है उसे पा जाना।

सलाह देना सदा बेवकूफोंका काम है, लेकिन अच्छी सलाह देना तो नितान्त विघाती है।

नैतिकता बघारनेवाला अकसर धूर्त होता है।

शादी ही एक विषय है जिसपर सब औरतें सम्मत हैं पर सब मर्द असम्मत।

पत्ते अच्छे हों तो आदमीको ईमानदारीसे खेलना चाहिए।

आदमीकी सच्ची जिन्दगी अकसर वह होती है जिसे वह जीता ही नहीं।

सन्त और पापीमें केवल यह अन्तर है कि हर सन्तका एक भूतकाल होता है और हर पापीका एक भविष्य।

समाज दुष्टोंको पैदा करती है, और तालीम एक दुष्टको दूसरेसे बढ़कर बनाती है।

लन्दनमें बातचीत करने लायक सिर्फ पाँच औरतें हैं, और उनमें-से दोको शिष्ट समाजमें प्रविष्ट नहीं होने दिया जा सकता।

हम उस ज़मानेमें जी रहे हैं जिसमें अनावश्यक वस्तुएँ ही आवश्यक वस्तुएँ हैं।

—आस्कर वाइल्ड

जवानीमें सोचा करता था कि पैसा जिन्दगीकी सबसे अहम चीज है अब बुढ़ापेमें मुझपर यह हक़ीक़त रोशन हो गयी है।

जब देवगण हमें सज़ा देना चाहते हैं तो हमारी प्रार्थनाओंको मंजूर कर लेते हैं।

औरत आदमीकी दस्तदराज़ियोंके प्रतिरोधसे शुरू करती है और उसके बच निकलनेके मार्गको अवरुद्ध करके खत्म करती है।

आधुनिक संस्कृति आधीसे अधिक इस बातपर निर्भर है कि क्या नहीं पढ़ा जाये।

वो बहसमें रोशनीसे ज़्यादा गरमी लाते हैं।

—आस्कर वाइल्ड

सच बात कह दो, तुम्हारे विरोधी भौंचक्के रह जायेंगे और किंकर्तव्य विमूढ़ हो जायेंगे।

—हेनरी वॉटन

वह बेवक़ूफ़ है जो शादी करता है; लेकिन जो बेवक़ूफ़ शादी नहीं करता वह और भी बड़ा बेवक़ूफ़ है।

—विलियम विचर्ली

अगर मैं अपनी 'क्वालिटी' से प्रभावित न कर पाया, तो मैं अपनी 'क्वान्टिटी' आतंकित कर दूँगा।

परिपूर्णता ऐसी बेहूदगी है कि मुझे अक्सर अफ़सोस होता है कि मैंने तम्बाकू-सेवन क्यों छोड़ दिया।

—एमिल ज़ोला

शादीकी साँकल इतनी भारी है कि उसे उठानेके लिए दोकी जरूरत पड़ती है, कभी तीनकी।

मूर्खसे मुझे दुष्ट पसन्द है; दुष्ट कभी थम तो जाता है।

औरत अक्सर हमें महान् कार्योंकी प्रेरणा देती है और उन्हींको करने नहीं देती।

—एलेग्ज़ेण्डर ड्यूमा

लोग धर्मके लिए आपा-धापी करेंगे, उसके लिए लिखेंगे, उसके लिए लड़ेंगे, उसके लिए मरेंगे, सब करेंगे पर उसके लिए जियेंगे नहीं।

—कोल्टन

बहादुर आदमी साधारण आदमीसे ज्यादा बहादुर नहीं होता, लेकिन वह पाँच मिनिट ज्यादा बहादुर रहता है।

शान्त रहो, सौ बरस बाद सब एक हो जायेगा।

जितनी मेहनतसे लोग नरकमें जाते हैं उससे आधीसे स्वर्गमें जा सकते हैं।

सोसाइटी लाइलाजोंका अस्पताल है।

शेखी बघारनेमें एक फायदा यह है कि बोलने वाला अनजानमें अपना आदर्श बता देता है।

हम [illegible] करते रहते हैं, जीते कभी नही।

—एमर्सन

करोड़ों लोग अमरता चाहते हैं जिन्हें यह नहीं मालूम कि वर्षा किसी इतवारके तीसरे पहर क्या करें।

—अ

जब अन्धा अन्धेको रास्ता बताता है तब दोनों जा गिरते हैं—शादी खन्दकमें।

—फ़र्कूह

हर विवाहित युगलमें एक बेवक़ूफ़ ज़रूर होता है।

—हैनरी फ़ीलिंडग

तीन चीज़ें ऐसी हैं जिनसे मुझे हमेशा प्रेम रहा लेकिन समझ कभी न पाया—कला, संगीत और स्त्री।

—फ़ॉण्टेनल

जिन किताबोंकी सब तारीफ़ करते हैं वे वह किताबें होती हैं जिन्हें कोई नहीं पढ़ता।

—अनातोले फ्रांस

लम्बी ज़िन्दगी सब चाहते हैं, बूढ़ा होना कोई नहीं चाहता।

वह इतना विद्वान् था कि नौ भाषाओंमें 'घोड़ा' शब्द जानता था; लेकिन इतना अनजान कि सवारीके लिए गाय खरीद लाया।

अगर आदमीकी आधी इच्छाएँ पूरी हो जायें तो उसकी मुश्किलें दूनी हो जायें।

अगर लोग धर्मको पाकर भी इतने दुष्ट हैं, तो उसके बगैर उनका क्या हाल हो?

—बेंजामिन फ्रैंकलिन

अगर धन तुम्हारा है, तो तुम उसे परलोकमें अपने साथ क्यों नहीं ले जाते ?

अगर तुम किसी बार-बार आनेवाले दुष्टसे पिण्ड छुड़ाना चाहते हो, तो उसे कुछ पैसा उधार दे दो।

तीन आदमी भेदको छिपाये रख सकते हैं अगर उनमें-से दो मर जायें।

जितने पैसेसे एक व्यसनका निर्वाह होता है उससे दो बच्चोंकी परवरिश हो सकती है।

—बेंजामिन फ्रैंकलिन

बच निकलनेका सबसे अच्छा रास्ता हमेशा बीचमें-से है।

कूटनीतिज्ञ वह आदमी है जो किसी स्त्रीकी जन्मगाँठ तो याद रखता है लेकिन उसकी उम्र कभी नहीं।

किसी माँको अपने लड़केको आदमी बनानेमें बीस बरस लगते हैं, और एक अन्य स्त्री उसे बीस मिनिटमें बेवकूफ बना देती है।

—रॉबर्ट फ्रॉस्ट

आप नमस्यासे जितनी दूर होंगे उतने ही आदर्शवादी होंगे।

—जॉन गाल्सवर्दी

हो भाव पड़ता है।

—जिम्म

कूटनीति बुरीसे बुरी बातको अच्छीसे अच्छी तरह कहना है।

—गोल्डबर्ग

व्याकरणकी तरह जीवनमें भी यह होता है कि अपवादोंकी संख्या नियमोंसे भी बढ़ जाती है।

आदमीने अपनी अक़्लसे काम लिया है; उसने बेवक़ूफ़ी खोज निकाली।

तमाम धर्म यौनिक सवालोंकी दीवानावार परिक्रमा कर रहे हैं।

स्त्री प्रथम चुम्बनको याद रखती है, जब कि पुरुष अन्तिमको भी भूल चुका होता है।

—गोरमॉण्ट

मुतवातिर खुशहालीकी बनिस्बत दुनियाकी हर चीज़ क़ाबिले-बरदाश्त है।

—गेटे

हमें जो कुछ सिखाया गया है उस सबको भूल जानेके बाद जो कुछ बाक़ी रहता है उसे शिक्षण कहते हैं।

—हैलीफ़ैक्स

बात-चीतकी कलाका महान् रहस्य है खामोशी।

—हैज़लिट

स्त्रियोंके विषयमें चालीस वर्षसे ऊपरकी उम्रवाले आदमीकी रायकी कोई क़ीमत नहीं।

—बेन हेक्ट

इतिहाससे हम यह सीखते हैं कि हम इतिहाससे कुछ नहीं सीखते ।

—हीगल

अगर रोमनोंको लैटिन सीखनेके लिए मजबूर किया जाता तो उन्हें दुनियाको जीतनेका कभी वक्त ही न मिल पाता ।

आम तौरसे वह पागल रहता था, लेकिन कुछ मधुर क्षण ऐसे भी होते थे जब कि वह सिर्फ़ अहमक़ होता था ।

—हैनरिच

कूटनीति–शाही शानसे झूठ बोलना ।

चिड़ियाघर–आदमियोंकी आदतोंका अध्ययन करनेके लिए जानवरोंके वास्ते बनायी गयी जगह ।

मेरी सबसे बड़ी महत्त्वाकांक्षा क्या है ? मेरी हमेशा यह इच्छा रही है कि बिजलीके पंखेमें अण्डा फेंक दूँ ।

—हरफ़ोर्ड

औरतें हमें शान्ति देती हैं, लेकिन अगर औरतें न होतीं तो हमें शान्ति की जरूरत ही न होती ।

डॉक्टर समझते हैं कि बहुत-से मरीज अच्छे हो गये जब कि वे सिर्फ़ परेशान होकर छोड़कर चले जाते हैं ।

यह नहीं हो सकता कि आप ज़िन्दगीको जी-भरकर जी भी लें और दार्शनिक भी बने रहें ।

—डीन इंगस्ट

काम दुनियामें सबसे बड़ी चीज़ है, इसलिए हमें चाहिए कि हमेशा कुछ कलके लिए भी रहने दिया करें।

बहुत-से लोगोंके पास चारित्र होता है, और कुछ नहीं होता।

शादी जवानीकी एक भूल है—जो कि हम सबको करनी चाहिए।

मौतकी तरह, शादीकी कोई फ़िक्र न करो।

लोगोंकी पत्नियाँ अपने पतियोंसे दिमाग़ी तौरपर घटकर और रूहानी तौरपर बढ़कर होती हैं; इससे उनको दुहरी यन्त्रणा होती है।

किसी औरतके पास इतने ज़्यादा कपड़े नहीं होने चाहिए कि वह पूछे, "क्या पहनूँ ?"

खुशी मुसीबतसे भी बड़ी मुसीबत है।

कुछ लोगोंके पास सिवाय अनुभवके कुछ नहीं होता।

—डॉन हेरॉल्ड

अगर मैंने औरोंके बराबर पढ़ा होता, तो मैं उनसे ज़्यादा न जान पाता।

—थॉमस हॉब्स

हर बच्चेका शिक्षण उसके पैदा होनेके सौ बरस पहले शुरू हो जाना चाहिए।

हमें ज़िन्दगीके ऐशका सामान दे दो, हम उसकी ज़रूरियातके बग़ैर चला लेंगे।

—वैण्डेल हो...

मैं उस मरीज़को 'अच्छा मरीज़' कहता हूँ जो, अच्छा डॉक्टर पाकर, मरने तक उसे न छोड़े।

—वैण्डेल होम्स

तीन चीज़ें हैं जिनके लिए पब्लिक देर-सवेर हमेशा पुकार मचायेगी, और वे हैं—नूतनता, नूतनता, नूतनता।

—थॉमस हुड